विजयेश्वर पञ्चाङ्ग

वसुदेव सुतं देवं कंसचाणूर मर्दनम् देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगत् गुरुम्।

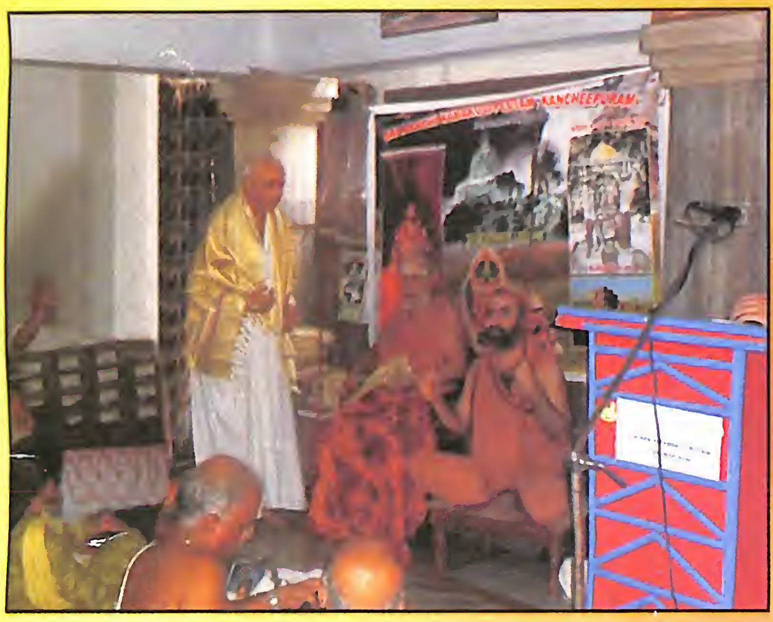

श्री काञ्ची कामकोटि पीठाधीश्वर जगद्गुरु
श्री जयेन्द्र सरस्वती शंकराचार्य स्वामी जी
'विजयेश्वर पञ्चांग' के सम्पादक को
सम्मानित करते हुये और आर्शीवाद देते हुये

श्री काञ्ची कामकोटि पीठाधीश्वर जगद्गुरु
श्री जयेन्द्र सरस्वती शंकराचार्य स्वामी जी को
'विजयेश्वर पञ्चांग' भेंट करते हुये
पं. ओंकार नाथ शास्त्री

ॐ

प्रवर्तक
ज्यो॰ आफताब शर्मा

संस्थापक
पं॰ प्रेमनाथ शास्त्री

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग

सप्तर्षि
5087

निर्वासन संवत 22

विक्रमी
2068

सम्पादक
ओंकार नाथ शास्त्री

प्रकाशक
अवतार कृष्ण ज्योतिषी

गणित कर्ता
भूषण लाल ज्योतिषी
एम. ए. साहित्यचार्य

Price : Rs. 70.00

विषय सूची

विषय सूची	2
इन को भूलिये मत	4
श्रीमुख	5
संशोधन	6
भारती संस्कृति	6
पाठ प्रकारण	8
नित्य नियम विधि	9
गणपति स्तोत्र	13
गणेश स्तुति	17
आरती गणेशजी	18
गणेश स्तुति	19
शंकर पूजन	20
अभिनवगुप्त शिवस्तुति	22
शिव संकल्प	25
शिवाष्टकम्	26
शंकर प्राथ्रना	29
लिंगाष्टकम्	30
शिवोऽहं शिवोऽहं	31
शिवपंचाक्षर स्तोत्र	32
शिवषऽक्षरस्तोत्र	34
श्री रुद्राष्टकम्	34
शिवस्तुतिः	36
शिव चामर स्तुतिः	37
आरती शंकर जी	38
शिवाय नमः	40
भवसर कुस तरि	41
तेरे पूजन को भगवान्	43
शिवजी की आरती	44
चन्द्रशेखराष्टकस्तोत्र	45
विल्वाष्टकम्	49
शंकरा चन्द्रशेखरा	51
शिवनामावल्याष्टकम्	52
दया करो हे दयालु भगवान	54
गुरुस्तुतिः	56
कांह मास, तरि व अपोर	58
प्रभात आव	59
मांस खाना निषेध	64
ब्राह्मी विद्या	65
विष्णु प्रार्थना	67
विष्णु स्तुति	68
कृष्णं वन्देजगत् गुरुम्	69
अष्टादशश्लोकी गीता	72
सप्तश्लोकी गीता	77
वन्दे महापुरुषं	79
अच्युताष्टकम्	82
भजगाविन्दं	84
श्री राम स्तुतिः	87
श्री हनुमान चालीसा	90
गौरी स्तुतिः	97
देवी सुक्तम्	100
दुर्गा सिद्ध मन्त्र स्तोत्र	102
सप्तश्लोकी दुर्गा	104
गायत्री चालीसा	105
अपराध स्तोत्रम्	110
आरतियां	112
नवग्रह स्तोत्रम्	116
इन्द्राक्षी	117
आरती	118
प्रातः स्मरणीय स्तोत्र	120
पुरुष सूक्तम्	126
सूर्याष्टकम्	127
शान्ति पाठ	128
गायत्री मन्त्र का महत्व	129
क्या महिलाओं को गायत्री का अधिकार है ?	133
यज्ञोपवीत कब	136
धर्मशास्त्र	137
श्राद्ध	142
जन्म दिन पूजा	145
प्रेप्युन	151
प्राणायाम	155
जप विधि	158
सन्ध्या	162
गोत्र	165
काश्मीरी पण्डितों के गोत्र	166
शिवरात्री पूजा	172
धर्मशास्त्र	201
यज्ञ, यज्ञोपवीत इत्यादि की सामग्री	202
ऋतु पति	207

कुम्भ देने की विधि	208
आमदनी खर्च	209
जातक मिलाप	212
यात्रा प्रक्करण	220
राशिफल	223
साढसती	255
ढय्या	256
मुहूर्त 2012 के लिए	257
महात्माओं के श्राद्ध	259
महात्माओं की जयन्तियां	262
महत्वपूर्ण यात्रायें	264
पंचक	265
हमारें पर्व और त्यौहार	266
महत्वपूर्ण यज्ञ	268
व्रतों की सूची	269
गण्डान्त	270
पवन सन्ध्या	272
आप का जन्मदिन कब	272
विजया सप्तमी	274
निषेध समय	274
प्रस्थान	274
मूल निवास चक्र	275
सिक्ख पर्व	278
आश्लेषा चित्र	279
मुला चित्र	280
ग्रहण	281
ज्योतिष के दर्पण में 2011	282
यात्रा के लियं शुभ शुकुन	286
पंचांग	287
मुहूर्त प्रकरण	311
यज्ञोपवीत मुहूर्त	312
विवाह मुहूर्त	314
प्रवेश मुहूर्त	321
बुनियाद मकान	322
जरकासय मुहूर्त	323
वाग्दान मुहूर्त	325
जातकर्म	326
विद्यारम्भ मुहूर्त	328
दधि मुहूर्त	329
दिवचक्षीर मुहुर्त	330
नया मकान, फ्लैट खरीदना	330
नया काम आरम्भ करना	331
शिशर मुहूर्त	332
पन्न मुहूर्त	333
दीपदान मुहूर्त	333
अन्न प्राशन मुहूर्त	333
छत डालना	335
गाडी, स्कूटर लाना	335
निया चुल्हा जलाना	336
कर्ण छेदन मुहूर्त	338
वस्त्र धारण मूहूर्त	339
र्सवार्थ सिध्दि मुहूर्त	341
यात्रा मुहूर्त	344
राशि के अनुसार यज्ञोपवीत	349
राशि के अनुसार विवाह	351
राशि के अनुसार प्रवेश	356
राशि के अनुसार बुनियाद मकान	357
अन्तिम संस्कार विधि	358
कलश चित्र	369
शारदा पढिये	371
कुशल होम	373
ज़रा ध्यान दें	374
हमारे प्रकाशन	375

नमस्कार

1. यदि आप को विजयेश्वर पंचांग के विषय में कोई सुझाव अथवा किसी प्रकार की शिकायत हो।

2. यदि आप को धर्म शास्त्र के विषय में कोई समस्या हो।

3. यदि आप पंचांग के सम्पादक ओंकारनाथ शस्त्री से मिलना चाहते है तो सम्पर्क करें।

94191-33233

2555607

इनको भूलिये मत

हमारी सभ्यता तथा संस्कृति के मूल स्त्रोत

- सन्धया चोंग
- सन्यवारी
- ब्रान्द फश
- हून्य म्यट
- तरंग गण्डुन
- देव गौण
- द्वार पूजा
- पोश पूजा
- फिर थुर
- आलथ
- व्यूग
- क्रूल खारुन
- लाय बोय
- दयबत
- मास अबीद
- वारिदान
- दिवत गूल्य
- दिवच तबचि
- बूठ मुचरिथ कमरस मंज अचुन

- मनन माल
- रत्न चाँगिजि
- क्रूल पछ
- गौर त्रय
- अनथ
- थाल भरुण
- थालस बुथवुछुन
- तहर बनावन्य
- वरी बनावन्य
- बिहिथ ख्योंन
- न्यश पत्रि बुथ बुछुन
- न्यशत्र थालस प्यठ थावन्य
- शंख वायुन
- मेखला संस्कार
- मॉलिस माजि हुँज सेवा
- गुल्य गंडिथ नमस्कार करुन
- जिठ्यन आदर करुन
- गुरुस आदर करुन

यज्ञोपवीत का संस्कार घर पर करें

घर पर काश्मीरी भाषा में बात करें

बच्चे को 12 वर्ष की आयु तक यज्ञोपवीत धारण करायें

जन्म दिन तिथि के अनुसार मनायें

JAGADGURU SRI SANKARACHARYA SWAMIGAL

Srimatam Samsthanam

तिथेः श्रियमवाप्नोति वारादायुष्यवर्धनम्।

नक्षत्राद्धरते पापं योगाद्रोगविनाशनम्।

करणात्कार्यसिद्धिश्च पञ्चाङ्गफलमुत्तमम्।।

वैदिककर्मणामनुष्ठाने तिथिवारनक्षत्रादयः अतीव मुख्यतामावहन्ति। लौकिकेष्वपि यात्रादिषु इयमेव स्थितिः सुदृढा भवति। वेदपुरुषस्य नेत्राङ्गत्वेन वेदाङ्गत्वेन विराजमानज्योतिश्शास्त्रेण एते निर्धारिताः भवन्ति। एतेषां तुल्यतया परिगणितानां आकार एव पञ्चाङ्गम् इति भाव्यते।

अतिपवित्रभारतदेशान्तर्गतकाश्मीरवंशजाः इदानीं जम्मुप्रदेशवासिनः भूतनाथोपाह्वपण्डित्श्री ओङ्कारनाथ शास्त्रिमहाभागाः परम्परया श्रीविजयेश्वर पञ्चाङ्गम् इति नाम्ना गणितं पञ्चाङ्गं दृष्ट्वा प्रमोदभरितान्तरङ्गाः भवामः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यम्बासमेतश्रीचन्द्रमौलीश्वरकृपया श्रीविजयेश्वरपञ्चाङ्गम् अस्मद्देशीयानां विदेशीयानां काश्मीराणां च महदुपकारकं मनश्शान्तिप्रदायकं च विलसतु। गणनकर्तारश्च लोकोपकारकं कुर्वन्तः धार्मिकाश्च व्रतोत्सवादीन् अनुतिष्ठन्तः श्रेयःपरम्पराम् अवाप्नुयुरित्याशास्महे।

नारायणस्मृतिः।

Date : 12-9-2010

संशोधनः

जब किसी के माता अथवा पिता का देहान्त होता है यदि उस का लड़का घर पर नहीं हो कहीं बाहर नौकरी करता हो तो उसके माता अथवा पिता का दाह संस्कार कोई भी कर सकता है, उस अवसर पर लड़के के आने की कोई आवश्यकता नहीं है परन्तु अपने माता पिता के दसवें ग्यारहवें तथा बारहवें दिन पर लड़के का आना ज़रूरी है नवें दिन तक उसके आने की आवश्यकता नहीं है। इस संशोधन को कश्मीरी पण्डित सम्मेलन में 13 सितम्बर 2009 को सर्व सम्मति से पारित किया गया।

– सम्पादक

सूचनाः बडिया, छपाई, बडिया कागज़ तथा बडिया बाइंडिंग और कागज़, छपाई, तथा मजदूरी महंगी होने के कारण मूल्य वृद्धि करनी पड़ी।

– समपादक

भारतीय संस्कृति

- **आगतं स्वागतं कुर्यात्**
  गच्छन्तं वृष्ठतोन्वियात्

अर्थः अतिथि के आने पर आगे बढ कर उस का स्वागत करें और उनके प्रस्थान (जाते) करते समय कुछ दूर तक उनके पीछे पीछे जायें।

- **आचारहीनं न पुनन्ति वेदा**

आचार हीन व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते हैं।

- देवी की परिक्रमा एक बार, सूर्य भगवान की 7 बार गणेशजी की 3 बार, विष्णु जी की 4 बार तथा शिव जी की आधी प्रदक्षिणा करनी चाहिये।
- भगवान् विष्णु के सामने 12 बार, भगवान् सूर्य के सामने 7 बार, देवी के सामने 9 बार, शंकर के सामने 11 बार और गणेश जी के सामने 4 बार आरती घुमानी चाहिये।

अग्निहोत्रं गृहं क्षेत्रं मित्र भार्या सुतं शिशुम्।
रिक्त पर्णिन पश्येद्य राजानं देवतां गुरुम्।।

अर्थातः यज्ञ, घर, तीर्थ, मित्र, पत्नी, पुत्र, बालक, राजा, देवता, गुरु के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहिये।

ग्रहण काल में क्या करें? ग्रहण के समय इष्ट देव भगवान् की पूजा, पाठ, जपादि करना चाहिये। ग्रहण के पश्चात् अन्न, वस्त्र फलादि का दान करना चाहिये। गर्भवती महिलाओं को ग्रहणकाल में उत्तेजित कार्यों से परहेज़ करना चाहिये तथा धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करते हुये प्रसन्नचित रहना चाहिये।

स्वयं सिद्ध मुहूर्तः

चैत्रशुकल प्रतिपदा, श्रीरामनवमी, अक्षयातृतीया, विजयादशमी, दीपावली परिस्थिति वश आप इन पांच मुहूर्तों पर कोई शुभ कार्य कर सकते हैं।

गोधूलि मुहूर्तः यदि आप को किसी समय विवादि मुहूर्त की आवश्यकता हो और विवाह करना जरूरी हो तो उस समय आप गोधूति मुहूर्त का प्रयोग कर सकते हैं।

गोधूलि मुहूर्त किस को कहते हैं?

जब सूर्यअस्त होने वाला हो और गाय आदि चौपाय अपने अपने गृह को लौटते हुये अपने खुरों से धूलि को आकाश में उडा कर जाने लगें उस काल को 'गोधूलि मुहूर्त' कहते हैं। (मुहूर्त चिन्तमणि)

कांचना भूषणे प्रशस्तौ, भौम, मार्तण्डौ
रविजो लोह कमर्णि।

अर्थः सोने के आभूषणों के लिये रविवार तथा मंगलवार शुभ है। लोहे के लिये शनिवार शुभ है।

लल्ल प्रकाश

महायोगिन् लल्लेश्वरी ने वेदों, उपनिषदों, एवं दर्शनशास्त्रों का सार वाखों के द्वारा कश्मीरी भाषा में जनमानस तक पहुंचाने का प्रयास किया है पं० प्रेम नाथ शास्त्री ने इन वाखों की व्याख्या कश्मीरी भाषा में 7 कैस्टों में रिकार्ड की है उन्हीं वाखों का हिन्दी रूपान्तरण में प्रकाशित करने जा रहा हूँ। इस समय लल्ल प्रकाश छप रहा है शीघ्र ही आप के सम्मुख प्रकाशित किया जाएगा।

– ओंकार नाथ शास्त्री

ॐ

पाठ प्रकरण

इस पाठ प्रकरण में मैंने संस्कृत श्लोकों का इस प्रकार सन्धिछेद किया है जो व्याकरण के अनुसार अशुद्ध है परन्तु यह पाठ प्रकरण उन महानुभावों के लिए है जो संस्कृत अच्छी प्रकार से पढ़ नहीं सकते हैं यह जनता जर्नादन की मांग है तथा समय की आवश्यकता है इस लिये किसी प्रकार की आलोचना की जरूरत नहीं है

सम्पादक

नित्य नियम विधि

प्रातः काल ब्राह्मी मुहूर्त में नीन्द से उठते ही, दोनों हाथों की हथेलियों को देखते हुये पढ़ेः-

कराग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती । करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम्।।

अर्थः- हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी, हाथ के मध्य भाग में सरस्वती और हाथ के मूलभाग में ब्रह्माजी निवास करते हैं।

बिस्तरे से उठने पर यह श्लोक पढ़ेः-

समुद्र वसने देवि पर्वतस्तनं मण्डिते । विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

अर्थः- समुद्ररूपी वस्त्रों को धरण करने वाली, पर्वत रूपस्तनों से शोभायमान भगवान् विष्णु की पत्नी पृथ्वी देवी! आप मेरे पाद-स्पर्श को क्षमा करें।

शौच आदि से निवृत होकर बायां पैर धोते हुए पढ़ेः- **नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षि-शिरोरु बाहवे। सहस्र-नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटी-युगधारिणे नमः।**

दायां पैर धोते हुए पढ़ेः- **ॐ नमः कमलनाभाय-नमस्ते जल शायिने। नमस्ते केशवानन्त-वासुदेव नमोस्तुते।**

मुंह धोते हुए पढ़ेः- **गंगा, प्रयाग, गयनै मिष पुष्करादि-तीर्थानि, यानि भुवि सन्ति-हरिप्रसादात् आयान्तु तानि करपद्मपुटे मदीये प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलंकम्। तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मा नः शंस्यो अरुरुषो धूर्ति प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।**

मुंह धोकर यज्ञोपवीत धोते हुए तीन बार पढें:- ॐ गायत्र्यै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

यज्ञोपवीत गले में फिर से धरण करते हुए पढें:- यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्-आयुष्यम्-अग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु तेजः। यज्ञोपवीतम्-असि यज्ञस्यत्वा-उपवीतेन- उपनह्यामि।।

स्नान इत्यादि करके पूर्व दिशा की ओर मुंह करके धूप, दीप जला कर शुद्ध आसन पर बैठ कर आदि देव-भगवान् गणेश का ध्यान करते हुए पढें:-

प्रातः-स्मरामि-गणनाथम्-अनाथ बन्धुं, सिन्दूर-पूरपरि-शोभित-गण्ड-युग्मम्।
उद्दण्ड-विघ्न-परि-खण्डन-चण्ड-दण्डम्, आखण्ड-लादि-सुरनायक-वृन्द-वन्द्यम्।।

अर्थः- अनाथों के बन्धु, सिन्दूर से शोभायमान दोनों गण्ड-मुकट वाले, प्रबल विध्न का नाश करने में समर्थ एवं इन्द्रादि देवों से नमस्कार किये हुये श्री गणेश का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

प्रातः-स्मरामि-भवभीति-महार्ति-नाशं, नारायणं-गरुड-वाहनम्-अब्जनाभम्।
ग्राहाभिभूत-वर-वारण-मुक्ति-हेतुं, चक्रायुधं-तरुण-वारिज-पत्र-नेत्रम्।।

अर्थः- संसार के भयरूपी महान् दुःख को नष्ट करने वाले, मगरमच्छ से गजराज को मुक्त करने वाले, चक्रधारी एवं कमलदल के समान नेत्र वाले, पद्मनाभ गरुडवाहन् भगवान् श्री विष्णु का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

प्रातः स्मरामि भव-भीतिहरं-सुरेशं, गङ्गाधारं वृषभ-वाहनम्-अम्बिकेशम्।
खट्वाङ्ग-शूल-वरदा-भय-हस्तम्-ईशं, संसार-रोगहरम्-औषधम्-अद्वितीयम्।।

अर्थः- संसार के भय को नष्ट करने वाले, सुरेश गङ्गाधर, वृषभवाहन, पार्वतीपति हाथ में खट्वाङ्ग एवं त्रिशूल लिये हुये और संसार के रोगों का नाश करने के लिये अद्वितीय औषध-स्वरूप अभय एवं वरद मुद्रा युक्त हस्त वाले भगवान् शिव का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ।

ब्रह्मा-मुरारिः-त्रिपुरान्तकारी, भानुः-शशी-भूमिसुतो-बुधश्च।

गुरुश्च-शुक्रः-शनि-राहु-केतवः, कुर्वन्तु-सर्वे-मम-सु प्रभातम्।।

अर्थः- ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये सभी मेरे प्रातः काल को मंगलमय करे।

भृगुः वसिष्ठः क्रतुः, अङ्गिगराश्च, मनुः पुंलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।

रैभ्यो मरीचिः-च्यवनश्च दक्षः, कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

अर्थः-भृगु, वसिष्ठ, क्रतु, अगिरा, मनु, पुलस्त्य, पुलह, गौतम, रैभ्य, मरीचि, च्यवन और दक्ष-ये सभी मुनिगण मेरे प्रातः काल को मंगलमय करें।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतु-र्भुजम्, प्रसन्न वदनं ध्यायेत्, सर्वविघ्नोप-शान्तये।

अभिप्रीतार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि, सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै, गणा-धिपतये नमः।

बिभ्रत्-दक्षिण-हस्तपद्म-युगले, दन्ताक्षसूत्रे शुभे,

वामे मोदक-पूर्णपात्र, परशु नागो-पवीति त्रिदृक्।

श्रीमान्-सिंहयुगासनः श्रुतियुगे, शंखौ वहन् मौलिमान्,

दिशयात्-ईश्वरपुत्र-ईश भगवान् लम्बोदरः-शर्म-नः।।

सिन्दूर-कुंकुम-हुताशन-विद्रुमार्क, रक्ताब्ज-दाडिम-निभाय-चतु-र्भुजाय।
हेरम्ब-भैरव गणेश्वर-नायकाय, सर्वार्थसिद्धि-फलदाय गणेश्वराय।।

मुख्यं द्वादश-नामानि गणेशस्य महात्मनः। यः पठेत्-तु शिवोक्तानि स लभेत्-सिद्धिम्-उत्तमाम्। प्रथमं वक्रतुण्डं तु, चैकदन्तं द्वितीयकम्, तृतीयं कृष्णपिंगं तु, चतुर्थं च कपर्दिनम्, लम्बोदरं पंचमं तु, षष्ठं विकटम्-एव च, सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं, धूम्रवर्णं तथाष्टमं। नवमं भालचन्द्रं तु, दशमं तु विनायकम्, एकादशं गणपतिं, द्वादशं मन्त्र-नायकम्। पठते शृणुते यस्तु, गणेश-स्तवम्-उत्तमं, भार्यार्थी लभते भार्या, धनार्थी विपुलं धनम्। पुत्रार्थी लभते पुत्रम्, मोक्षार्थी परमं पदम्, इच्छाकामं तु कामार्थी, धर्मार्थी धर्मम्-अक्षयम्।। सुमुखैश्चैक-दन्तश्च, कपिलो गजकर्णकः, लम्बोदरश्च विकटो, विघ्नराजो गणाधिपः। धूम्र-केतु-गणाध्यक्षो, भालचन्द्रो गजाननः, द्वादशै-स्तानि-नामानि, गणेशस्य महात्मनः, य पठेत्-शृणुयात्-वापि स लभेत् सिद्धिम्-उत्तमाम्। विद्यारम्भे, विवाहे च, प्रवेशे निर्गमे तथा संग्रामे संकटे चैव, विघ्नस्तस्य न जायते।।

गणपति स्तोत्रम्

जेतुं यस्त्रिपुरं हरेण हरिणा व्याजाद्बलिं बघ्नता
स्त्रष्टुं वारिभवोद्भवेन भुवनं शेषेण धर्तुं धराम्।
पार्वत्या महिषासुर प्रमथने सिद्धाधिपैः सिद्धये।
ध्यातः पंचशरेण विश्वजितये पायात्स नागाननः।।

अर्थः त्रिपुरासुर को जीतने के लिये शिव ने, बलि को छल से बाँधते समय विष्णु ने, जगत् को रचने के लिये ब्रह्मा ने, पृथ्वी धारण करने के लिए शेषनाग ने, महिषासुर को मारने के समय पार्वती ने, सिद्धि पाने के लिए सिद्धों के अधिपतियों (सपकादि ऋषियों) ने और सब संसार को जीतने के लिये कामदेव ने जिन गणेश जी का ध्यान किया है, वे हम लोगों को पालन करें।

विघ्न ध्वान्त निवारणै कतरणिर्विघ्नाट वीह व्यवाड्
विघ्न व्यालकुलाभिमान गरुडो विघ्नेभ पंचाननः।
विघ्नोतुङ्ग गिरि प्रभेदनम विर्विघ्नाम्बु धेर्वाडवो
विघ्नाघौघ घनप्रचण्ड, पवनो विघ्नेश्वरः पातु नः।।

अर्थः विघ्नरूप अन्धकार का नाश करने वाले एकमात्र सूर्य, विघ्नरूप वन के जलाने वाले अग्नि, विघ्नरूप सर्पकुल का दर्प नष्ट करने के लिये गरुड, निघ्नरूप हाथी को मारने वाले सिंह, विघ्नरूप ऊँचे पहाड़ के तोड़ने वाले वज्र, विघ्नरूप महासागर के वडवानल, विघ्नरूपी मेघ-समूह को उड़ा देने वाले प्रचण्ड वायुसदृश गणेश जी हम लोगों का

पालन करें।

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं, प्रस्यन्दन-मदगन्धलुब्ध-मधुप-व्यालोल-गण्डस्थलम्।
दन्ताघात विदारितारि रुधिरैः सिन्दूर शोभाकरं, वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्।।

अर्थः जो नाटे और मोटे शरीर वाले हैं, जिनका गजराज के सम्मान मुँह और लंबा उदर है, जो सुन्दर हैं तथा बहते हुए मद की सुगंन्ध के लोभी भौंरों के चाटने से जिनका गण्डस्थल चपल हो रहा है, दाँतों की चोट से विदीर्ण हुए शत्रुओं के खून से जो सिन्दूर की सी शोभा धारण करते हैं, कामनाओं के दाता और सिद्धि देने वाले उन पार्वती के पुत्र, गणेश जी की मैं वन्दना करता हूँ।

श्वेताङ्ग श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः, क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरनरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम्।
दोर्भिः पाशाङ्कुशब्जा भयवरमनसं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं, ध्ययायत्-शान्त्यर्थमीशं गणपतिम्-अमलं श्रीसमेतं प्रसन्नम्।।

अर्थः जिनका शरीर श्वेत है, कपड़े श्वेत हैं, श्वेत फूल, चन्दन और रत्नदीपों से क्षीर समुद्र के तट पर जिनकी पूजा हुई हैं, देवता और मनुष्य जिनको अपना प्रधान पूज्य समझते हैं, जो रत्न के सिंहासन पर बैठे हैं, जिनके हाथों में पाश (एक प्रकार की डोरी), अंकुश और कमल के फूल हैं, जो अभयदान और वरदान देने वाले हैं, जिनके सिर में चन्द्रमा रहते हैं और जिनके तीन नेत्र हैं, निर्मल लक्ष्मी के साथ रहने वाले उन प्रसन्न प्रभु गणेश जी का, अपनी शान्ति के लिये ध्यान करें।

आवाहये तं गणराजदेवं रक्तोत्पलाभासम् अशेषवन्द्यम्।,
विघ्नान्तकं विघ्नहरं गणेशं भजामि रौद्रं सहितं च सिद्ध्या।।

अर्थः जो देवताओं के गण के राजा हैं, लाल कमल के समान जिनके देह की शोभा है, जो सबके वन्दनीय हैं, विघ्न के काल हैं, विघ्न के हरने वाले हैं, शिवजी के पुत्र हैं, उन गणेश जी का मैं सिद्धि के साथ आवाहन और भजन करता हूँ।

यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय।।

अर्थः जिनको वेदान्ती लोग ब्रह्म कहते हैं और दूसरे लोग परम प्रधान पुरुष अथवा संसार की सृष्टि के कारण या ईश्वर कहते हैं, उन विघ्नविनाशक गणेश जी को नमस्कार है।

विघ्नेश वीर्याणि विचित्रकाणि वन्दीजनैमार्गधकैः स्मृतानि।
श्रुत्वा समुत्तिष्ठ गजानन त्वं ब्राह्मे जगन्मङ्गलकं कुरुष्व।।

अर्थः हे विन्घेश! हे गजानन ! मागध और वन्दीजनों के मुख से गाये जाते हुए अपने विचित्र पराक्रमों को सुनकर, ब्राह्ममुहूर्त में उठो और जगत् का कल्याण करो।

गणेश हेरम्ब गजाननेति महोदर स्वानुभवप्रकाशिन्।
वरिष्ठ सिद्धिप्रिय बुद्धिनाथ वदन्त एवं त्यजत प्रभीतीः।।

अर्थः हे गणेश! हे हेरम्ब ! हे गजानन ! हे लम्बोदर! हे अपने अनुभव से प्रकाशित होने वाले। हे श्रेष्ठ ! हे सिद्धि के प्रियतम ! हे बुद्धिनाथ! ऐसा कहते हुए, हे मनुष्यो ! अपना भय छोड़ दो।

अनेकविघ्नान्तक वक्रतुण्ड स्वसंज्ञवासिंश्च चतुर्भुजेति।
कवीश देवान्तक नाशकारिन् वदन्त एवं त्यजत प्रभीतीः।।

अर्थः 'हे अनेक विघ्नों का नाश करने वाले! हे वक्रतुण्ड ! हे गणेश आदि अपने नाम वालों में भी निवास करने वाले! हे चतुर्भुज! हे कवियों के नाथ! हे दैत्यों का नाश करने वाले!' ऐसा कहते हुए, हे मनुष्यों! अपने भय को भगा दो।

अनन्तचित्-रूपमयं गणेशं ह्यभेदभेदादि विहीनम्-आद्यम्।
हृदि प्रकाशस्य धरं स्वधीस्थं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थः जो गणेश अनन्त हैं, चेतनरूप हैं, अभेद और भेद आदि से रहित और सृष्टि के आदि कारण हैं, अपने हृदय में जो सदा प्रकाश धरण करते हैं तथा अपनी ही बुद्धि में स्थित रहते हैं, उन एकदन्त गणेश जी की शरण में हम जाते हैं।

विश्वादिभूतं हृदि योगिनां वै प्रत्यक्षरूपेण विभान्तमेकम्।
सदा निरालम्ब समाधिगम्य तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थः जो संसार के आदि कारण हैं, योगियों के हृदय में अद्वितीय रूप से साक्षात् प्रकाशित होते हैं और निरालम्ब समाधि के द्वारा ही जानने योग्य हैं, उन एकदन्त गणेश की शरण में हम जाते हैं।

यदीयवीर्येण समर्थभूता माया तया संरचितं च विश्वम्।
नागात्मकं ह्यात्मतया प्रतीतं तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थः जिनके बल से माया समर्थ हुई है और उसके द्वारा यह संसार रचा गया है, उन नागस्वरूप तथा आत्मरूप से प्रतीत होने वाल एकदन्त गणेश जी की शरण में हम जाते हैं।

सर्वान्तरे संस्थितम्-एक मूढं यदाज्ञया सर्वमिदं विभाति।
अनन्तरूपं हृदि बोधकं वै तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थः जो सब लोगों के अन्तःकरण में अकेले गूढ़भाव से स्थित रहते हैं, जिनकी आज्ञा से यह जगत् विराजमान है, जो अनन्तरूप हैं और हृदय में ज्ञान देने वाले हैं, उन एकदन्त गणेश की शरण में हम जाते हैं।

यं योगिनो योगबलेन साध्यं कुर्वन्ति तं कः स्तवनेन नौति।
अतः प्रणामेन सुसिद्धिदोऽस्तु तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।

अर्थः जिनको योगीजन योगबल से साध्य करते (जान पाते) हैं, स्तुति से उनका वर्णन कौन कर सकता है? इसलिये हम उनको केवल प्रणाम करते हैं कि हमें सिद्धि दें, उन प्रसिद्ध एकदन्त की शरण में हम जाते हैं।

देवेन्द्र मौलिमन्दार मकरन्द कणारुणाः, विघ्नान् हरन्तु हेरम्ब चरणाम्बु जरेणवः।।

अर्थः जो इन्द्र के मुकुट में गुँथे हुए मन्दार कुसुमों के मकरन्द कणों से लाल हो रही है, वह गणेश जी के चरण-कमलों की रज विघ्नों का हरण करे।

एकदन्तं महाकायं लम्बोदर गजाननम्।, विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थः एक दाँत वाले, बड़े शरीर स्थूल उदर वाले, हाथी के समान मुख वाले और विघ्नों का नाश करने वाले गणेश देव को मैं प्रणाम करता हूँ।

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।, तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।

अर्थः हे देव! जो अक्षर, पद अथवा मात्रा छूट गयी हो, उसके लिये क्षमा करो और हे परमेश्वर! प्रसन्न होओ।

गणेश स्तुतिः

आयसय शरण करतम क्षमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
गणपंत गणेश्वर हे प्रभो, कलिराज़ राज़न हुन्द विभो।।

पज़ि लोलु पादन तल नमः, ओं श्री गणेशाये नमः।
गुडनी च्यय छुय आधिकार, कलिकालकुय चुय ताजदार।

पजि़ लोल पादन तल प्यमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
मूषक च़्य वाहन शूभवुन, त्रन लूकनय मंज फेरवुन,
सहायक म्य रोज़तम हर दमः, ओं श्री गणेशाये नमः।
यज्ञस ज़पस व्यवहारसय, गुड्‌ छिय सुरान प्रथकारसय,
कारस अनान छुख चय जमः, ओं श्री गणेशाये नमः।
सुन्दर लम्बोदर एक दन्त, स्मरन चाञ वंतिन म्ये अन्द।
रति वेल, सुन्दर छुम समः, ओं श्री गणेशाये नमः।
स्मरन यि चोनी यिम करान, भवुसागरस अपोर तरान,
रट्‌अ सानि नावे चुय नमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
स्मरन यि चानी भक्ति जन, पूरण गछान तम्यसुन्द छु प्रन,
चरणोदकुक अमृत चमा, ओं श्री गणेशाये नमः।

ज़गतुक महेश्वर च्य पिता, सति रूप सीति धर्मुच सत्ता,
माता च़्य गौरी श्री वुमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
बाह नाव सुन्दर शूभुवुञ, स्वर्गस गछान तिम बोलुवुञ,
पूरण करुम पूरण तमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
आमुत भक्त च़्येय छुय शरण, प्योमुत खोरन तल छुय परण,
वर दिय कास्तम चुय गमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
सुबह प्यठ भखत, छिय लारान, प्रेम पोश ह्यय छिय प्रारान,
छुयख च्यानि पूजि लागनुक तमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
गणिशबल प्यठ आख चलिथय, अंग अंग स्यंदरा मलिथय,
गोअड़ बोअज म्यन प्रार्थना, ओं श्री गणेशाये नमः।

आरती गणेश जी

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी। मस्तक पर सन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया। बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लड्डुअन का भोग लगे, संत करे सेवा।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

गणेश स्तुति

हेमजा सुतं भजे गणेशं ईश नन्दनम्। एकदन्त वक्र तुण्ड नाग यज्ञ सूत्रकम्।।
रक्त गात्र धूम्र नेत्र शुक्ल वस्त्र मण्डितम्। कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।
पाशपाणि चक्रपाणि मूषकाधि रोहिणम्। अग्निकोटि सूर्य ज्योति वज्रकोटि पर्वतम्।।
चित्रमाल भक्तिज़ाल भालचन्द्र शोभितम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
विश्ववीर्य विश्वसूर्य विश्वकर्म निर्मलम्। विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम्।।
चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितं चतुर्युगम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
भूत भव्य हव्य कव्य भर्गो भार्गव वन्दितम्। देव वह्नि काल जाल लोकपाल वन्दितम्।।
पूर्ण ब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषं पुरान्तकम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।

ऋद्धि बुद्धि अष्टसिद्धि नव निधान दायकम्। यज्ञकर्म सर्वधर्म सर्व वर्ण अर्चितम्।।
भूतधूत दुष्ट मुष्ट दान्वै सदार्चितम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
हर्ष रूप वर्ष रूप पुरुष रूप वन्दितम्। शोर्प कर्ण रक्त वर्ण रक्त चन्दन लेपितम्।।
योग इष्ट योग सृष्ट योग दृष्टि दायकम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।

शंकर पूजन

भगवान् शंकर पर जल चढ़ाते हुए पढ़ें:- असंख्याताः सहस्त्राणि ये रुद्रा अधि-भूम्याम्। तेषां सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ।1। यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु य औषधीषु यो वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः ।2। भवायदेवाय शर्वायदेवाय रुद्रायदेवाय पशुपतयेदेवाय उग्रायदेवाय महादेवाय भीमायदेवाय ईशानायदेवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय जलं समर्पयामि नमः।

नेत्र स्पर्श करते हुए पढ़ें:- तेजोरूप ! महेशान ! सोमसूर्याग्निलोचन प्रकाशय परंतेजो नेत्रस्पर्शेन शंकर ! भवायदेवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय नेत्रस्पर्श परिगृहणामि नमः।

तिलक लगाते हुये पढ़ें:- ***सर्वेश्वर जगद्वन्द्य*** दिव्यासनसुसंस्थित। गन्धं गृहाण देवेश दिव्यगन्धोपशोभितम्। भवाय देवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय समालभनं गन्धो नमः।

फूल चढ़ाते हुए पढ़ें:- सदाशिव शिवानन्द प्रधान करणेश्वर। पुष्पाणि बिल्वपत्राणि विचित्राणि गृहाण मे। भवाय देवाय उमा सहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय पुष्पं समर्पयामि नमः।

रत्नदीप कपूर चढ़ाते हुए पढ़ें:- हिरण्यबाहो सेनानीः औषधीनां पते शिव। दीपं गृहाण कर्पूर कपिलाज्य त्रिवर्तिकम्। भवाय देवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय रत्नदीपं कर्पूरं परिकल्पयामि नमः।

दोनों हाथों में पुष्पांजलि पकड़ते हुए निम्नलिखित तीन श्लोक पढ़कर फूल चढ़ावें-

आत्मा त्वं गिरिजामतिः सहचराः प्राणः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधि स्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधि स्तोत्राणि सर्वा गिरो,
यत् यत् कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ।।1।।

अर्थः *हे शम्भो ! मेरी आत्मा तुम ही हो, मेरी बुद्धि तुम्हारी शक्तिरूपिणी पार्वती है, मेरे प्राण (अपान समान आदि) तुम्हारे साथी है, मेरा शरीर तुम्हारा घर या मन्दिर है, विषय भोग के लिये जो मेरे व्यापार होते हैं वही तुम्हारी पूजा है, मेरी जो निद्रा है वही तुम्हारी समाधि की स्थिति है, मेरे पाँवों का चलना तुम्हारी प्रदक्षिणा है, मैं जो कुछ बोलता हूँ सब तुम्हारा स्तोत्र है, सारांश यह है कि मैं कोई कर्म करता हूँ सभी तुम्हारी आराधना है।*

पुष्पाणि सन्तु तव देव ममेन्द्रियाणि, धूपो गुरु र्वपुरिदं हृदयं प्रदीपः।
प्राणान् हविषि करणानि नवाक्षतानि, पूजाफलं व्रजतु साम्प्रतमेष जीवः ।।2।।

अर्थः- हे शम्भो ! मेरे सभी ज्ञानेन्द्रिय आपके पूजा के फूल बनें, यह मेरा शरीर धूप का काम दे, मेरा हृदय तुम्हारी पूजा में दीप का स्थान ले, मेरे प्राण तुम्हारे पूजा रूपी यज्ञ में आहुति का काम दें, मेरे कर्मन्द्रिय अक्षत (पूजा के लिये बिना किसी जखम के चावल) का काम दें, हे भगवन् ! मेरा यह जीवात्मा अभी उत्तम पूजा के फल को प्राप्त हो।

जन्मानि सन्तु मम देव शताधिकानि, माया च मे विशतु चित्तमऽबोध हेतु।
किन्तु क्षणार्धमपि त्वच्चरणारबिन्दात्, मा पैतु मे हृदयमीश नमो नमस्ते ।।3।।

अर्थः इस स्तुति में भक्त भगवान् शंकर से पूजा का फल यह नहीं माँगता है कि मेरा आवामगन छूट जाये, अपितु बार-बार जन्म लेने की मुझे परवाह नहीं, मेरे सैकड़ों जन्म होने दीजिये, मैं यह नहीं माँगता हूँ तेरे चित्त से अज्ञान के कारण बना हुआ माया का पर्दा छिन्न-भिन्न हो जाये, बल्कि वह माया बिना किसी रोक-टोक के मेरे चित्त में प्रवेश करे, केवल आपसे प्रार्थना है आपके चरण कमल आधे क्षण के लिये भी मेरे चित्त से न निकले, हे भगवान् शंकर ! आपको बार-बार नमस्कार हो।

अभिनवगुप्त कृत शिवस्तुतिः

ॐ व्याप्त-चराचर-भाव-विंशेषं, चिन्मयम्-एकम्-अनन्तम्-अनादिम्।
भैर-व-नाथम्-अनाथ-शरण्यम्- तन्मय-चित्ततया-हृदि वन्दे ।।1।।

अर्थः- मैं अभिनवगुप्त मन की एकाग्रता से उस शंकर की हृदय में वन्दना करता हूँ जो शंकर अखिल चराचर सृष्टि से ओत प्रोत है। जो ज्ञान रूप है, अनन्त है भैरवों का स्वामी है और अनाथों को शरण देने वाला है।

त्वन्मयम्-एतत्-अशेषम्-इदानीं, भाति मम त्वत्-अनुग्रह शक्त्या,

त्वं च महेश सदैव ममात्मा, स्वात्ममयं मम तेन समस्तम् ।।2।।

अर्थः- यह चराचर सृष्टि आप का ही रूप है, ऐसा मुझे आप की अनुग्रहशक्ति से प्रतीत होता है, परन्तु हे शंकर मेरी आत्मा ही आप हैं, अतः यह सारा जगत् मेरा ही रूप है, ऐसा भी मैं अनुभव करता हूँ।

स्वात्मनि-विश्वगते त्वयि नाथे, तेन न संसृति-भीतेः कथास्ति।

सत्-स्वपि दुर्धर-दुःख विमोह, त्रास-विधायिषु कर्म-गणेषु ।।3।।

अर्थः- हे नाथ! भयंकर दुःख मोह उत्पन्न करने वाले कर्मों के जाल में फंसे हुये, आप के भक्त इस भावना से कि विश्व आप का ही रूप है अतः वे संसार के क्षणिक दुःखों से डरते नहीं हैं, क्योंकि डर अथवा भय तब होता है ज़ब दूसरा हो, जब आप के बिना कोई दूसरा है ही नहीं तो डर कहाँ "भयं द्वितीयात्"।

अन्तक मां प्रति मा दृशम्-एनां, क्रोध-कराल-तमां विदधीहि।

शंकर-सेवन-चिन्तन-धीरो, भीषण-भैरव-शक्ति-मयोस्मि।।4।।

अर्थः- हे यमराज! क्रोध से कराल भयंकर दृष्टि से मेरी ओर न देख, जबकि मैं हर समय शंकर सेवन के चिन्तन में लगा रहता हूँ जिस सेवा चिन्तन से मैं भैरवशक्ति का पुंज बना हूँ अतः आप की यह कराल क्रोधभरी दृष्टि मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती है।

इत्थम्-उपोढ-भवन्मय-संवित्, दीधिति-दारित-भूरि-तमिस्रः।

मृत्यु-यमान्तक कर्म-पिशाचैः, नाथ ! नमोस्तु न जातु बिभेमि ।।5।।

अर्थः- हे शंकर सब कुछ आप का ही रूप है ऐसी संवित् के जागृत होने से मेरा अज्ञानरूपी अन्धकार नष्ट हो चुका है, अतः मैं यमराज के परिवार भूत पिशाच आदि से डरता नहीं हूँ, हे नाथ मेरा आप को बार-बार नमस्कार हो।

प्रोदित-सत्य-विबोध-मरीचि, प्रोक्षित-विश्व-पदार्थ-सतत्वः।
भाव-परामृत-निर्भरपूर्णे, त्वय्यहम्-आत्मनि निर्वृतिम्-एमि ।।6।।

अर्थः- हे शंकर! आप के सत्यज्ञानरूप किरणों से विश्व के पदार्थ तथा सभी तत्त्व सिंचित अथवा हरकत में है। ऐसे ही इस ज्ञान के प्रकट होने पर मैं श्रद्धा के अमृत से परिपूर्ण आप के ही स्वरूप भूत अपने ही आत्मा में परमानन्द का अनुभव करने लगता हूँ।

मानस-गोचरम्-एति-यदैव, क्लेश-तनु-ताप-विधात्री।
नाथ ! तदैव मम-त्वत्-अभेद, स्तोत्र-परामृत-वृष्टिर्-उदेति ।।7।।

अर्थः- शरीर के ताप को उत्पन्न करने वाली कष्ट की दशा को जब मैं मन से महसूस करने लगता हूँ, उसी समय मेरे अन्दर आप के अनुग्रह से प्राप्त अभेद वृष्टि का उदय होता है, जिस के प्रभाव से मैं किसी प्रकार का कष्ट अनुभव नहीं करता हूँ।

शंकर ! सत्यम्-इदं व्रत-दान, स्नान-तपो-भव-ताप-विनाशि।
तावक-शास्त्र-परामृत-चिन्ता, सिध्यति चेतसि-निर्वृति-धारा।।8।।

अर्थः- हे शंकर ! यद्यपि व्रत-दान-तप से संसार के दुःखों का नाश होता है, शैवशास्त्र के चिन्तनमात्र से ही मन में अमृत की धारायें प्रवाहित होने लगती हैं।

नृत्यति गायति हृष्यति गाढं, संवित्-इयं मम भैरवनाथ।
त्वां प्रियं आप्य सुदर्शनम्-एकं, दुर्लभम्-अन्यजनैः समयज्ञम्।।9।।

अर्थः- हे मेरे भैरवनाथ ! मेरी दृढ़ संवित् यज्ञादिकों से अप्राप्य आप के अलौकिक दर्शन प्राप्त करके कभी नाचती है, कभी गायन करती है, कभी हर्ष का अभिनय करती है।

वसु-रस-पौषे कृष्ण-दशम्यां, अभिनव-गुप्तः स्तवम्-इमम्-अकरोत्।
येन विभु-भव-मरु-सन्तापं, शमयति झटिति जनस्य दयालुः ।।10।।

अर्थः- भक्तों पर दयालु आध्यात्मिक बलवाले अभिनवगुप्त ने सम्वत् 68 पौष कृष्ण दशमी को यह शंकर स्तुति की है जिस के उच्चारण, श्रवण, मनन से क्षणमात्र में दयालु शंकर संसार रूपी मरुस्थल के दुःखों का नाश करता है।

शिव संकल्प (यजुर्वेद से)

यत्-जाग्रतो-दूरम्-उदेति दैवं, तदु सुप्तस्य तथैव्-ऐति।
दूरं-गमं ज्योतिषां ज्योतिर्-एकं, तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।।1।।

अर्थः- जो मन जागते हुये मनुष्य का दूर चला जाता है, और सोते हुये का निकट आ जाता है, जो परमात्मा के साक्षात्कार का एकमात्र साधन है, जो ज्ञानेन्द्रियों का प्रकाशक और प्रवर्तक है, मेरा वह मन शिव, (कल्याणकारी) संकल्प वाला हो।

येन कर्मा-ण्यपसो मनीषिणो, यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यत्-अपूर्व यक्षम्-अन्तः प्रजानां, तन्मे मनः शिव संकल्पम्-अस्तु ।।2।।

अर्थः- कर्मयोगी विद्वान् जिस मन के द्वारा हर कर्म को यज्ञ के ढाँचे में डालते हैं, जो इन्द्रियों का अध्यक्ष है, जो समस्त प्रजा के हृदय में निवास करता है, वह मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।

यत्-प्रज्ञानम्-उत चेतो धृतिश्च, यत्-ज्योतिर्-अन्तर्-अमृतं प्रजासु।
यस्मात्-न ऋते किंचन कर्म क्रियते, तन्मे मनः शिवसंकल्पम्-अस्तु ।।3।।

अर्थः- जो मन ज्ञान का कारण है जो धैर्यरूप है, जो समस्त प्रजा के हृदय में रह कर उन की इन्द्रियों को प्रकाशित करता है, जो मृत्यु होने पर भी अमर रहता है, जिस के बिना कोई भी कर्म किया नहीं जाता है वह मेरा मन शिवसंकल्प वाला हो।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्, परिगृहीतम्-अमृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता, तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।।4।।

अर्थः- जिस अमृतरूप मन के द्वारा भूत-भविष्य वर्तमान की सभी वस्तुयें जानी जाती हैं जिस के द्वारा सात होता वाला शरीर रूपी यज्ञ सम्पन्न होता है मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो (सात होताः- पांच ज्ञानेन्द्रिय मन और बुद्धि)।

यस्मिन्-ऋचः साम यजूँषि यस्मिन्, प्रतिष्ठिता-रथनाभौ-इवाराः।
यस्मिन्-चितं सर्वम्-ओतं प्रजानां, तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।।5।।

अर्थः- जिस मन में रथचक्र की नाभि में अरियों के समान वेद प्रतिष्ठित है, जिस में सब पदार्थों से सम्बन्ध रखने वाला सम्पूर्ण ज्ञान ओत प्रोत है, मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो।

सुषा-रथिर्-अश्वान्-इव, यन्मनुष्यान्, नेनीयते-अभीशुभिर्-वाजिनः इव।
हृत्प्रतिष्ठं यत्-अजिरं जविष्ठं, तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।।6।।

अर्थः- योग्य सारथि जैसे घोड़ों का संचालन करता है और लगाम के द्वारा घोड़ों का नियन्त्रण करता है, वैसे ही प्राणियों का संचालन तथा नियन्त्रण करने वाला हृदय में रहने वाला कभी बूढा-न होने वाला, अधिक तेज भागने वाला मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।

शिवाष्टकम्

शीतांशु-शुभ्र कलया कलितो-त्तमाङ्गं, ध्यान स्थितं धरणिभृत्-तनयार्चितं तम्।
काला-नलोप-महला हल-कृष्ण कण्ठं, श्री शंकरं कलिमलापहरं नमामि।।

अर्थः- सुन्दर चन्द्रमा की शुभ्रकला से आप का शिरो भाग शोभित है, पर्वतराज हिमालय की कन्या पार्वती जी स्वयं ही आप की पूजा अर्चा करती है, संसार को जलन से बचाने के लिये कालानल के समान महा भीषण हलाल पी जाने से आप का कण्ठ काला हो गया है, इस कलिकाल का मल दूर करने में आप अपना सानी नहीं रखते, ऐसे ध्यान में मग्न आप शंकर को मेरा प्रणाम्।

गायन्ति यस्य चरितानि महात्-भुतानि, पद्मोद्-भवोद्-भवमुखाः सततं मुनीन्द्राः।
ध्यायन्ति यं यमिनम्-इन्दु-कलावतं सं, सन्तः समाधि-निरतास्तम् अहं नमामि।।

अर्थः- आप के अत्यन्त अद्भुत चरितों का गान ऐसे-वैसे नहीं, नारदादि बड़े-बड़े महामुनि तक किया करते हैं, साधु शिरोमणि योगीश्वर भी समाधि लगा कर आप ही का ध्यान करते रहते हैं ऐसे आप शंकर को पुनरपि मेरा प्रणाम्।

त्रैलोक्यम्-एतत्-अखिलं ससुरासुरंच, भस्मीभवेत्-यदि न यो दययार्द्र देहः।
पीत्वाऽहरद्गरलम्-आशु भयं तदुत्थं, विश्वा-वनैक-निरताय-नमोस्तु-तस्मै।।

अर्थः- हे शंकर! आप बड़े ही दयालु हैं, आप की दया सीमा रहित है, जब समुद्र मन्थन से हलाहल निकलने पर उस की आग असह्य हो गई, तब उस कालकूट का पान स्वयं करके तीनों लोकों को जल जाने से बचा लिया, संसार की रक्षा का इतना ख्याल रखने वाले आप के चरणों में मैं अपना सिर रखता हूँ।

नो शक्यम्-उग्र तपसापि युगान्तरेण, प्राप्तुं यद्-अन्य सुर पुङ्गवतस्तदेव।
भक्त्या सकृत्प्रणम्-अनेन-सदा-ददाति, यो नौमि नम्रशिरसा च तमाशुतोषम्।।

अर्थः- युग-युगान्त-पर्यन्त तपस्या करने पर भी जो फल प्राप्ति भक्तों को अन्य सुर पुङ्गवों से भी नहीं हो सकती, वही आप को भक्ति भावपर्वूक प्रणाम मात्र करने से आप के सच्चे भक्तों को सुलभ हो जाती है, क्योंकि आप आशुतोष हैं (अर्थात् थोड़ी सेवा से प्रसन्न होने वाले) मैं आप के सामने अपना सिर झुकाता हूँ।

भूति प्रियोऽपि वितरत्यनिशं विभूतिं, भक्ताय यः फणिगणानपि धारयन् सन्।
हन्ति प्रचण्ड भव भीम भुजङ्ग भीतिं, तस्मै नमोस्तु सततं मम शंकराय।।

अर्थः- आप स्वयं ही विभूति-प्रिय हैं, वह प्यारी वस्तु विभूति अपने भक्तों को रोज ही लुटाया करते है, स्वयं आप महा भंयकर नागों के कण्ठे और मालायें आदि धारण करते है उधर आप ही जन्म-मरण रूपी भीम भुजङ्ग के भय से अपने सेवकों की रक्षा करते हैं हे मेरे शंकर ! आप को मेरा नमस्कार।

येषां भयेन विबुधा रजनी चराणां, नो तत्यजुर्हिम-महीध्र-गुहा गृहाणि।
हत्वा ददौ गिरिश तानपि शैव धाम, त्वत्तः परोऽस्ति परमेश्वर को दयालुः।।

अर्थः- हे शंकर! जरा उन राक्षसों का स्मरण कर जो इतने पराक्रमी हो गये थे कि वह देवों का तरह-तरह से उत्पीड़न करने लगे थे यहां तक कि देवता उन के भय से हिमालय की गुफाओं में छिपे रहते थे। ऐसे अत्याचारी और पापी राक्षसों को भी मार कर आप ने पुण्य लोक भेज दिया, क्या आप से कोई अधिक दयालु देवता कहीं है? आप यथार्थ में परमेश्वर हैं।

पाप प्रसाधनरता दितिजा अपीन्द्रं, सद्यो विजित्य सुरधाम-धराधिपत्यम्।
यस्य प्रसादलवलेश-वशादवाप्ताः, तस्मै ममास्तु विनतिः परमेश्वराय।।

अर्थः- लंकेश्वरादि राक्षस पुण्यात्मा नहीं थे वे महा उत्पातकारी और पापिष्ठ थे परन्तु आप का सच्चा सेवक होने के कारण महेन्द्र को जीतकर देव लोक के अधीश्वर बन बैठे, आप से बढकर मुझे कोई परम ऐश्वर्यशाली और कोई देवता दिख नहीं पड़ता, मेरी विनती स्वीकार कर।

अर्चा कृता न तव नाम हर स्मृतन्न, नो भक्तवत्सल कृतं तव किंचिदन्यत्।
वीक्ष्य स्वपादकमलोपनतं तथापि, माम् पाहि कारुणिक-मौलिमणे महेश।।

अर्थः- मैं पापी आप से किस मुंह से कुछ याचना करूं, मैंने कभी भूल कर भी आप की अर्चना नहीं की है, कभी भूल से भी आप का नाम नहीं लिया है, कभी भूल कर भी आप की कोई सेवा नहीं की है, फिर भी यह देख कर कि मैं आप के चरणों पर पड़ा हूँ और नाक रगड़ रहा हूँ आशा है आप मुझ पर भी कृपा करेंगे, क्योंकि आप आशुतोष होकर परम भक्त वत्सल भी हैं।

शंकर प्रार्थना

प्रणतोस्मि महादेव, प्रपन्नोस्मि सदाशिव, निवारय महामृत्युं, मृत्युंजय नमोस्तुते।
मृत्युंजय महादेव, पाहि मां शरणागतम्, जन्ममृत्यु-जरारोगैः, पीडितं भवबन्धनात्।।

कर्पूर-गौरं करुणावतारं, संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम्।
सदा रमन्तं हृदयारबिन्दं, भवं भवानी सहितं नमामि।।

हर शम्भो महादेव, विश्वेशामरवल्लभ। शिव शंकर सर्वात्मन्, नीलकण्ठ नमोस्तुते।
तव तत्त्वं न जानामि, कीदृशोसि महेश्वर, यादृशोसि महादेव, तादृशाय नमो नमः।।

आधीनाम्-अगदं दिव्यं, व्याधीनां मूलकृन्तनम्, उपद्रवाणां दलनं, महादेवम्-उपास्महे।

आत्मा त्वं गिरजा मतिः, परिजनाः प्राणाः शरीरं गृहं ।
पूजा ते विषयो-पभोगरचना निद्रा समाधि स्थितिः।

संचारोऽपि परिक्रमः पशुपते, स्तोत्राणि सर्वा गिरो।
यत्यत् कर्म करोमि देव भगवन् तत् तत् तवाराधनम्।।

लिंगाष्टकम्

ब्रह्मा मुरारिः सुरार्चित लिंगं, निर्मल-भासित-शोभित-लिंगम्।
जन्मज-दुःख-विनाशक-लिंगं, तत्प्रणमामि सदा शिव-लिंगम् ।।1।।
देव-मुनि-प्रवरा-र्चितलिंगं, कामदहं करुणाकर-लिंगम्।
रावण-दर्प-विनाशित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ।।2।।
सर्व-सुगन्धि सुलेपित-लिंगं, बुद्धिविवर्धन-कारण-लिंगम्।
सिद्ध-सुरासर-वंदित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।3।।
कनक-महामणि-भूषित-लिंगं, फणिपति-वेष्टित-शोभित-लिंगम्।
दक्ष-सुयज्ञ-विनाशक लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।4।।
कुंकम-चंदन-लेपितलिंगं, पंकज-हार-सुशोभित-लिंगम्।
संचित-पाप-विनाशन-लिंगं, तत्प्रणमामि-सदाशिव लिंगम् ।।5।।

देव-गणार्चित सेवित लिंगम्, भावैर्भक्तिभिरेव च लिंगम्।
दिन-कर-कोटि-प्रभा-कर लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ।।6।।
अष्ट-दलोपरि वेष्टित-लिंगं, सर्व-समुद्-भव-कारण-लिंगम्।
अष्ट-दरिद्र-विनाशित-लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ।।7।।
सुरगुरु-सुरवर-पूजित-लिंगम्, सुरवन-पुष्प-सदा-र्चित-लिंगम्।
परात्परं-परमात्मक-लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।8।।

शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं

मनो बुद्ध्य-हंकार-चित्तानि नाहं, न च श्रोत्र-जिह्वे न च घ्राण-नेत्रे।
न च व्योम-भूमि-र्न तेजो न वायुः, चिदानन्द-रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं।
नच प्राण-संज्ञो न वै पंचवायुः, न-वा सप्त-धतु-र्न वा पंचकोशः।
न वाक्-पाणिपादं न चोपस्थ-पायुः, चिदानन्द-रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।
नमे द्वेषरागौ न मे लोभ मोहौ, मदो नैव मे नैव मात्सर्य-भावः।

न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः, चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोहम्।
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं, न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता, चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।
न मृत्यु-र्न शंका न मे जातिभेदः, पिता नैव मे नैव माता च जन्म।
न बन्धु-र्न मित्रं गुरु-नैव शिष्यः चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।
अहं निर्विकल्पी निराकाररूपो, लघुत्वात्-च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।
न चा संगतं नैव मुक्ति-र्न मेयः, चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै 'न'काराय नमः शिवाय।1।

अर्थः जिस के गले में सांपों का हार है, जिस के तीन नेत्र है, भस्म ही जिस का अनुलेपन है, दिशायें जिस के वस्त्र हैं (अर्थात् जो नग्न है) उस शुद्ध 'न' कार स्वरूप शिव को नमस्कार हो।

मन्दाकिनी-सलिल-चन्दन-चर्चिताय, नन्दीश्वर-प्रमथनाथ-महेश्वराय।
मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय, तस्मै 'म'काराय नमः शिवाय।2।

अर्थः गंगा जल और चन्दन से जिस की पूजा हुई है, मन्दार पुष्प तथा नाना प्रकार के फूलों से जिस की पूजा हुई है उन नन्दी के अधिपति, शिव के गणों के स्वामी 'मकर' स्वरूप शिव को नमस्कार हो।

शिवाय-गौरी-वन्दनाब्ज-वृन्द, सूर्याय-दक्षाऽध्वर-नाशकाय।
श्रीनीकलण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै 'शि'काराय नमः शिवाय।3।

अर्थः पार्वती जी के मुख कमल को प्रसन्न करने के लिये जो सूर्य स्वरूप है जो दक्ष के यज्ञ का नाश करने वाले हैं जिन की ध्वजा में बैल का चिन्ह है उस 'शि'कार स्वरूप शिव को नमस्कार हो।

वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य, मुनीन्द्र-देवाऽर्चित-शेखराय।
चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय, तस्मै 'व'काराय नमः शिवाय।4।

अर्थः वसिष्ठ, अगस्त्य और गौतम आदि श्रेष्ठ मुनियों तथा इन्द्रादि देवताओं ने जिन की मस्तक की पूजा की है चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि जिन के नेत्र हैं उन 'व' कार स्वरूप शिव को नमस्कार है।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै 'य'काराय नमः शिवाय।5।

अर्थः जिन्होंने यक्षरूप धारण किया है, जो जटाधारी हैं जिन के हाथ में पिनाक हैं जो दिव्य सनातन पुरुष हैं उस 'य' कार स्वरूप शिव को नमस्कार है।

पंचाक्षरम्-इदिं पुण्यं यः पठेत्-शिव-सन्निधौ।
शिवलोकम्-अवाप्नोति-शिवेन-सह-मोदते।।

शिव षडक्षरस्तोत्रम्

ॐकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।1।
नमन्ति ऋषयो देवा, नमन्ति-अप्सरसां गणाः। नरा नमन्ति देवेश 'न'काराय नमो नमः।2।
महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम्। महापापहरं देवं 'म'काराय नमो नमः।3।
शिवं-शान्तं-जगन्नाथं, लोका-नुग्रह-कारकम्। शिवमेकपदं नित्यं 'शि'काराय नमो नमः।4।
वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्। वामे शक्तिधरं देवं 'व'काराय नमो नमः।5।
यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः। यो गुरुः सर्वदेवानां 'य'काराय नमो नमः।6।
षड्-अक्षरं-इदं-स्तोत्रं-यः-पठेत्-शिव-सन्निधौ। शिव-लोकं-अवाप्नोति, शिवेन-सह-मोदते।7।

श्री रुद्राष्टकम्

नमामि-ईशं-ईशान-निर्वाण-रूपं, विभुं-व्यापकं-ब्रह्म-वेद-स्वरूपम्।
अजं-निर्गुणं-निर्विकल्पं-निरीहं, चिदा-कारम्-आकाशवासं-भजेऽहम्।।

निराकारं-ओंकार-मूलं-तुरीयं, गिरा-ज्ञान-गोतीतं-ईशं-गिरीशम्।
करालं-महाकाल-कालं-कृपालं, गुणा-गार-संसार-पारं-नतोऽहम्।।
तुषाराद्रि-सङ्काश-गौरं-गभीरं, मनो-भूत-कोटि-प्रभाश्री-शरीरम्।
स्फुरन्-मौलि-कल्लोलिनी-चारु-गङ्गा, लसत्-भाल-बालेन्दु-कण्ठे-भुजङ्गा।।
चलत्-कुण्डलं-भुसुनेत्रं-विशालं-प्रसन्नाननं-नीलकण्ठं-दयालम्।
मृगाधीश-चर्माम्बर-मुण्डमालं, प्रियं-शङ्करं-सर्वनाथं-भजामि।।
प्रचण्डं-प्रकृष्टं-प्रगल्भं-परेशं, अखण्डं-अजं-भानु-कोटि-प्रकाशम्।
त्रयः-शूल-निर्मूलनं-शूल-पाणिं, भजेऽहं-भवानीपतिं-भाव-गम्यम्।।
कलातीत-कल्याण-कल्पान्त-कारी, सदा-सज्जना-नन्ददाता-पुरारिः।
चिदानन्द-सन्दोह-मोहाप-हारी, प्रसीद-प्रसीद-प्रभो-मन्मथारिः।।
न-यावत्-उमानाथ-पादार-विन्दं, भजन्तीह-लोके-परे-वा-नराणाम्।
न-तावत्-सुखं-शान्ति-सन्ताप-नाशं, प्रसीद-प्रभो-सर्व-भूताधिवासं।।
न जानामि-योगं-जपं-नैव-पूजां, नतोऽहं-सदा-सर्वदा-देव-तुभ्यम्।

जरा-जन्म दुखौघ तातप्यमानं, प्रभो-पाहि-शापात्-नमामीश-शम्भो।।
रुद्राष्टकं-इदं प्रोक्तं, विप्रेण हर तुष्टये।
ये पठन्ति नरा-भक्त्या, तेषां शम्भुः प्रसीददति।।

शिव स्तुतिः

असित गिरि सम स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे,
सुरतरुवर-शाखा-लेखिनी-पत्रम्-ऊर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालं,
तदपि तव गुणानाम् ईश पारं न याति।। ।।1।।
वन्दे देवम् उमापतिं सुरगुरुं, वन्दे जगत् कारणम्,
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं, वन्दे पशूनाम् पतिम्।
वन्दे सूर्य्यशशांक-वह्नि नयनम्-वन्दे मुकुन्द-प्रियम्।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।2।।

शान्तं पद्मासनस्थं शशधर-मुकुटं, च वक्त्रं त्रिनेत्रं,
शूलं वज्रं च खड्गपरशुमभयदं, दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।
नागं पाश च घण्टां डमरुक सहितं, सां कुशं वामभागे,
नानालंकार युक्तं स्फटिक-मणिनिभं, पार्वतीशं नमामि। ।।3।।
श्मशानेष्वा क्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराः,
चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटी परिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवम् अखिलम्,
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि। ।।4।।
पापोऽहं पाप कर्माहं पापात्मा पाप सम्भवः,
त्राहि मां पार्वती नाथ सर्व पाप हरो भव। ।।5।।

शिव-चामर-स्तुतिः

ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली, कृत-ताडन-परिपीडन-मरणागम-समये।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर से हर दुरितम्।।1।।

अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु-सञ्चय दलिते, पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण-चलिते।
शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।।2।।
भव भञ्जन सुर-रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्, दनुजान्तक मदनान्तक रतिजान्तक भगवन्।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्, शिवशङ्कर शिव शङ्कर हर में हर दुरितम्।।3।।
शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये, कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये।
द्विज-क्षत्रिय-वनिता शिशुदर कम्पित हृदये, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।।4।।
भवसम्भव विविधामय परिपी-डितवपुषं, दयितात्मज ममताभर-कलुषी-कृत-हृदयम्।
करु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।।5।।

आरती शंकर जी

जय शिव ओंकारा, भज जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धंगी धारा, ओ३म् हर हर महादेव।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजे, स्वामी पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे, ओ३म् हर हर महादेव।।

दो भुज चारु चतुर्भुज दश भुज अति सोहे, स्वामी दस भुज अति सोहे।
तीनों रूप निखरत, त्रिभुवन-जन मोहे, ओ३म् हर हर महादेव।।

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी, स्वामी मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी, ओ३म् हर हर महादेव।।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे, स्वामी बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे, ओ३म् हर हर महादेव।।

कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल धारी, स्वामी चक्र त्रिशूल धारी।
सुखकारी दुखहारी जग-पालन कारी, ओ3म् हर हर महादेव।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, स्वामी जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका, ओ३म् हर हर महादेव।।

त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे, स्वामी जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे, ओ३म् हर हर महादेव।।

शिवाय नमः ओं नमः शिवाय

आधार ज़गतुक कुनुय छु मन्त्र, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो, जटा मुकट छुय गंडिथ च्य़ दीवो।
चन्द्र-अर्द्ध शेखर, त्रिलोचनाय, शिवाय नमः ओं, नमः शिवाय।।
च्य़ नील कंठो जटन छय-गंगा, च मोक्षदायक गुसोज्य नंगा।
अलक्ष अगोचर छ्य़पन गुफाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
बिहिथ छय गौरी च्य़ सूत्य नालय, वलिथ छुय सर्पन हुंदुय दुशाले।
सहस्र सूर्यि तीज च्य मंज़ जटाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
अथस च्य़ डाबर चू बीन वायान, कपाल-माल त्रिशूल धारान।
भक्तयन अभय छुख दिवान यछ़ाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
रटिथ चू अंकुश खडगधारिथ, धनुर धनन मंज पिनाक चारिथ।
वुदनि बू डंड्वथ करय हा माये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।

भवाय दीवो शर्वाय दीवो, भस्माय दीवो सुरान च्य जीवो।
च्य जीव पूजान छिय भावनाय़े, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
संसार सुदरस, म्य तार तारुम, अमर ब़नावुम शिव मार्ग हावुम।
वोलुस कुकर्मव कुवासऩाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
अनाथ बन्धो दयायि सागर, संसार की दुःख म्य यिम छि, तिम च़ठ।
ज़गतस दया कर च ह्यथ ओमाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।

भवसर कुस तरि

आदि प्रभातन युस दय नाव स्वरि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
भावनाइ सान सुस तस पूजा करि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
सुलि प्रभातन श्रान ध्यान करि, गरि गरि हर हर परि लो लो।।
द्वख त संकट तस पान भगवान् हरि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
गृहस्थ आश्रम कुय युस व्रत दरि, लूक सीवाई प्यठ मरि लो लो।।

निष्काम कर्मन लोला युस बरि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
सन्तोष व्रच प्यठ मन युस थ्यर करि, हर सात सुय व्रत दरि लो लो।
सुख त शान्ती हुंद युस हलमा बरि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।
श्वास उश्वासस दय नाव युस स्वरि, दय सुन्द ध्याना दरि लो लो।
लय रोजि तथ मंज कारुबारा करि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
पऽछय सीवाय प्यठ पान अर्पण करि, बेलूस बऽग रावि घरि लो लो।
ड्यक मुचरिथ युस दान धर्मा करि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
हु त ब्ह मशरावि सारिनीय लोल भरि, लोलुक सोदा करि लो लो।
जीव जाचन सूत लो लुच माय बरि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
काम क्रूध लूभ मोह अहंकार यस खरि, सत-असत वार सर करि लो लो।
अपजिस दुय करि पजरस लोल बरि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
तरवुन करनोव आलव दिवान तरि, कंसि मा छु तरुन घर लो लो।
आलुस त्राविथ उद्यूग युस करि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
प्रथ शायि मंज़ जानुन कुस वास करि, सोरुय कस मंज! स्वरि लो लो।
बेबस जानिथ देह अद त्याग करि, सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।

तेरे पूजन को भगवान्

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान।
किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तुम्हारा पाया।।
हारे ऋषि-मुनि कर ध्यान, बना मन मन्दिर आलीशान।
तू ही जल में तू ही थल में, तू ही मन में तू ही वन में।
तेरा रूप अनूप महान, बना मन मन्दिर आलीशान।
तू हर गुल में, तु बुलबुल में, तू हर डाल के पातन में।
तू हर दिल में है मुर्तिमान, बना मन मन्दिर आलीशान।
तूने राजा रंक बनाये, तूने भिक्षुक राज बिठाये।।
तेरी लीला ऐसी महान, बना मन मन्दिर आलीशान।
झूठे जग की झूठी माया, मूर्ख इस में क्यों भरमाया।।
कर कुछ जीवन का कल्याण, बना मन मन्दिर आलीशान।।

शिवजी की आरती

शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं सर्व विश्व का जो परमात्मा है,
सभी प्राणियों की वही आत्मा है। वही आत्मा सच्चिदानन्द में हूँ,
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं जिसे शस्त्र कोटे न अग्नि जलावे
न पानी गलावे न मृत्यु मिटावे। वही आत्मा सच्चिदानन्द में हूँ
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं अजर और अमर जिस को वेदों ने गाया
यही ज्ञान अजुर्नन को हरि ने सुनाया।
अमर आत्मा है मरण शील काया, सभी प्राणियों के जो घट में समाया।
वही आत्मा सच्चिदानन्द में हूँ, शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं
है तारी से तारों में प्रकाश जिस का, है चन्द्र व सूर्य में है वास जिस का
वही आत्मा सच्चिदानन्द में हूँ, शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं।
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं, शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं।।

चन्द्रशेखराष्टकस्तोत्रम्

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।। 1 ।।

रत्नसानु-शरासनं रजताद्रि-शृङ्गनिकेतनं
सिञ्जिनीकृत-पन्नगेशवरम्-अच्युतानन-सायकम्।
क्षिप्र-दग्ध-पुरत्र्यं त्रिदिवालयैर-भिवन्दितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।। 2 ।।

प ञ्चपादप-पुष्पगन्ध-पदाम्बुजद्वय-शोभितं
भाललोचन-जातपावक-दग्धमन्मथ-विग्रहम्।
भस्मदिग्ध-कलेवरं भव-नाशनं भवम्-अव्ययं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।। 3 ।।

मत्तवारण-मुख्यचर्म-कृतोत्तरीय-मनोहरं
पङ्कजासन-पद्मलोचन-पूजिताङ्घ्रि-सरोरुहम्।
देवसिन्धु-तरङ्गसीकर-सिक्त-शुभ्रजटाधरं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।। 4 ।।

यक्ष-राजसखं भगाक्ष-हरं भुजङ्ग-विभूषणं
शैल-राजसुता-परिष्कृत-चारुवाम-कलेवरम्।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वध-धारिणं मृगधारिणं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ।। 5 ।।

कुण्डलीकृत-कुण्डलेश्वर-कुण्डल वृषवाहनं

नारदादि-मुनीश्वर-स्तुत-वैभवं-भुवनेश्वरम्।
अन्धकान्धक-माश्रिता-ऽमरपादपं-शमनान्तकं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥ 6 ॥
भेषजं भसरोगिणाम-खिलापदाम-पहारिणं
दक्षयज्ञ-विनाशनं त्रिगुणात्मकं-त्रि-विलोचनम्।
भुक्ति-मुक्ति-फलप्रदं सकलाघ-सङ्घनिर्बहं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥ 7 ॥
भक्त-वत्सलमु-र्चितं निधिम-क्षयं-हरिदम्बरं
सर्वभूत-पतिं-परात्परम-प्रमेयम-नुत्तमम्।
सोमवारिद-भूहुताशन-सोमपा-निलखाकृतिं

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥ 8 ॥

विश्वसृष्टि-विधायिनं पुनरेव पालन-तत्परं
संहरन्तमपि प्रपञ्चम-शेषलोक-निवासिनम्।
क्रीडयन्तम-हर्निशं गणनाथयूथ-समन्वितं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥ 9 ॥

मृत्युभीत-मृकण्डसूनु-कृतस्तवं-शिवसन्निधौ
यत्र कुत्र च यः पठेन्न हि तस्य मृत्युभयं भवेत्।
पूर्णमा-युर-रोगिताम-खिलार्थसम्पदमा-दरं
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥ 10 ॥

इति श्री चन्द्रशेखराष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

बिल्वाष्टकम्

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।

त्रिजन्मपाप-संहारमेकबिल्वं शिवार्पणम्।। 1 ।।

त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रः कोमलैः शुभैः।

शिवपूजां करिष्यामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।। 2 ।।

अखण्डबिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे।

शुद्धयन्ति सर्वपापेभ्यो ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।। 3 ।।

शालिग्रामशिलामेकां विप्राणां जातु अर्पयेत्।

सोमयज्ञ-महापुण्यमेकबिल्वं शिवार्पणम्।। 4 ।।

दन्तिकोटिसहस्राणि वाजपेयशतानि च।

कोटिकन्या–महादानमेकबिल्वं शिवार्पणम्।। 5 ।।

लक्ष्म्याः स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्।

बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।। 6 ।।

दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।

अघोरपापसंहारमेकबिल्वं शिवार्पणम्।। 7 ।।

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे।

अग्रतः शिवरूपाय ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।। 8 ।।

बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।

सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात्।। 9 ।।

इति बिल्वाष्टकं सम्पूर्णम्।।

शंकरा चंद्रशेखरा गंगाधरा सुमनोहरा,
पाहिमाम् अभयंकरा मृत्युंजया विश्वेश्वरा
शंकरा चंद्रशेखरा गंगाधरा सुमनोहरा,
पाहिमाम् अभयंकरा मृत्युंजया विश्वेश्वरा
नीलकंठ भालनेत्र भस्मभूषित सुन्दरा,
पाहिमाम् करुणाकरा परमेश्वरा सर्वेश्वरा
नीलकंठ भालनेत्र भस्मभूषित सुन्दरा,
पाहिमाम् करुणाकरा परमेश्वरा सर्वेश्वरा
शंकरा चंद्रशेखरा गंगाधरा सुमनोहरा,
पाहिमाम् करुणाकरा परमेश्वरा सर्वेश्वरा
शंकरा चंद्रशेखरा गंगाधरा सुमनोहरा,
पाहिमाम् करुणाकरा परमेश्वरा सर्वेश्वरा

शिवनामावल्यष्टकम्

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे
स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं
संसार दु:खगहनाज्जगदीश रक्ष।।१।।

हे चन्द्रचूड! (चन्द्रमाको सिरमें धरण करनेवाले), हे मदनान्तक! (कामदेवको भस्म कर देनेवाले), हे शूलपाणे!, हे स्थाणो! (सदा स्थिर रहनेवाले), हे गिरीश तथा गिरिजापते, हे महेश, हे शम्भो, हे भूतेश, जरा, मृत्यु आदिसे भयभीतकी रक्षा करनेवाले, हे जगदीश्वर शिव! संसारके गहन दु:खोंसे मेरी रक्षा कीजिये।।१।।

हे पार्वती हृदय वल्लभ चन्द्रमौले
भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप।
हे वामंदेव भव रुद्र पिनाकपाणे
संसारदु:ख गहनाज्जगदीश रक्ष।।२।।

हे माता पार्वती के हृदयेश्वर हे चन्द्रमौले!, हे भूताधिप! हे प्रमथ (रुण्ड-मुण्ड-तुण्ड) गणोंके स्वामिन्!, गिरिजाका पालन करने वाले, हे वामदेव, हे भव, हे रुद्र, हे पिनाकपाणे, हे जगदीश्वर शिव! संसारके गहन दु:खों से मेरी रक्षा कीजिये।।२।।

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र
लोकेश शेषवलयं प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां
संसारदु:खगहनाज्जदीश रक्ष।।३।।

हे नीलकण्ठ, हे वृषकेतु, हे पञ्चमुख, लोकेश, शेषका कंकन धारण करने वाले!, हे प्रमथगणोंके स्वामी, हे शर्व, हे धूर्जटे, हे पशुपते, हे गिरिजापते, हे जगदीश्वर शिव संसारके गहन दु:खोंसे मेरी रक्षा कीजिये।।३।।

हे विश्वनाथ शिव शङ्कर देवदेव
गङ्गाधर प्रमथनायक नन्दिकेश।
बाणेश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ
संसारदु:खगहनाज्जगदीश रक्ष।।४।।

हे विश्वनाथ, हे शिव, हे शङ्कर, हे देवाधिदेव, हे गङ्गाको धारण करनेवाले, हे प्रमथगणोंके स्वामी, हे नन्दीश्वर, हे बाणेश्वर, हे अन्धकासुर के विनाशक, हे हर, हे लोकनाथ, हे जगदीश्वर शिव! संसारके गहन दु:खों से मेरी रक्षा कीजिये।।४।।

वाराणसीपुरपते मणिकर्णिकेश
वीरेश दक्षमखकाल विभो गणेश।

सर्वज्ञ सर्वहृदयैकनिवास नाथ
संसारदु:खगहनाज्जगदीश रक्ष॥५॥

हे वाराणसी नगरीके स्वामिन्, हे मणिकर्णिकेश, हे वीरेश, हे दक्षयज्ञके विध्वंसक, हे विभो, हे गणेश, हे सर्वज्ञ, हे सर्वान्तरात्मन्, हे नाथ! हे जगदीश्वर शिव! संसारके गहन दु:खों से मेरी रक्षा कीजिये॥५॥

श्रीमन् महेश्वर कृपामय हे दयालो
हे व्योमकेश शितिकण्ठ गणाधिनाथ।
भस्माङ्गराग नृकपाल कलापमाल
संसारदु:खगहनाज्जगदीश रक्ष॥६॥

हे श्रीमान् महेश्वर, हे कृपामय, हे दयालो, हे व्योमकेश, (आकाश ही है केश जिनका), हे नीलकण्ठ, हे गणाधिनाथ, हे भस्मको अङ्गराग बनानेवाले, मनुष्यों के कपालसमूह की माला धारण करने वले, हे जगदीश्वर शिव! संसार के गहन दु:खों से मेरी रक्षा कीजिये॥६॥

कैलासशैलविनिवास वृषाकपे हे
मृत्युञ्जय त्रिनयन त्रिजगन्निवास।
नारायणप्रिय मदापह शक्तिनाथ
संसारदु:खगहनाज्जगदीश रक्ष॥७॥

हे कैलासशैल पर निवास करने वाले, हे वृषाकपे, हे मृत्युञ्जय, हे त्रिनयन, हे तीनों लोकों में निवास करने वाले, हे नारायणप्रिय, हे अहंकार को नष्ट करने वाले, हे शक्तिनाथ, हे जगदीश्वर शिव! संसारके गहन दु:खों से मेरी रक्षा कीजिये॥७॥

विश्वेश विश्वभवनाशक विश्वरूप
विश्वात्मक त्रिभुवनैकगुणाभिवेश।
हे विश्वबन्धु करुणामय दीनबन्धो
संसारदु:खगहनाज्जगदीश रक्ष॥८॥

हे विश्वेश, हे संसारके जन्म-मरणके चक्रको दूर करनेवाले, हे विश्वरूप, हे विश्वात्मन्, हे त्रिभुव के समस्त गुणोंसे परिपूर्ण, हे विश्वबधो, हे करुणामय, हे दीनबन्धो! हे जगदीश्वर शिव! संसार के गहन दु:खों सेमेरी रक्षा कीजिये॥८॥

गौरीविलास भवनाय महेश्वराय
पञ्चाननाय शरणागतरक्षकाय।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै
दारिद्र्यदु:खदहनाय नमः शिवाय॥९॥

भगवती पार्वती के विलासके आधार महेश्वर के लिये पञ्चाननके लिये, शरणगतोंके रक्षक के लिये, शर्व -शम्भुके लिये, सम्पूर्ण जगत्पतिके लिये एवं दारिद्र्य तथा दु:खकों भस्म करनेवाले भगवान् शिवके लिये मेरा नमस्कार है॥९॥

दया करो हे दयालु भगवन्

शरण में आये हैं हम तुम्हारे
दया करो हे दयालु भगवन्।
सुधारो बिगडी दशा हमारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
न हम में बल है न हम में भक्ति,
न हम में साधन, न हम में शक्ति।
तुम्हारे हो कर हैं हम दुःखारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
जो तुम हो स्वामी तो हम है सेवक,
तुम जोपिता हो तो हम है बालक।
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
भले जो हम हैं तो हैं तुम्हारे
बुरे जो हम हैं तो हैं तुम्हारे।
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी
दया करो हे दयालु भगवन्।

न होगी जब तक दया की दृष्टि
न होगी तब तक कृपा का वृष्टि।
न होगी तुम बिन यह न्याय कारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
प्रधान् कर दो महान् शक्ति
भरो हमारे में ज्ञान भक्ति।
तभी कहावें गे न्याय कारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
बस एक यही इक नाम की है,
पुकार राधे श्याम की है।
तुम्हारी तुम जानो निर्विकारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
सुधारो बिगड़ी दशा हमारी
दया करो हे दयालु भगवन्।
शरण में आये हैं हम तुम्हारे
दया करो हे दयालु भगवन्।

ॐ शिव हर शङ्कर गौरी शम्
वन्दे गंगा धरणी शम्
शिव रुद्रं पशुपति विश्वनाथं
कल हर काशी पुर नाथं
बज पाल लोचन परमानन्दा
नील कण्ठा तव शरणम्
शिव असुर निकन्दन
भव दुःख भज्जन, सेवक ते प्रतिपाला
ॐ आवागमन मिटाओ शङ्कर
भज शिव भारं भारः
ॐ शिव हर शम्भो सदा शिव शम्
हर हर सदा सदा शिव शम्

गुरु स्तुतिः

ॐ ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिं, द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलं अचलं सर्वधी साक्षिभूतं, भवातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।
स्मारं स्मारं जनिमृतिभयं जातनिर्वेद वृत्तिः, ध्यायं ध्यायं पशुपतिं उमाकान्तं अन्तर्निषण्णम्।
पायं पायं सपदि परमानन्द पीयूषधारा, भूयो भूयो निजगुरुपदां भोजं युग्मं नमामि।।
यस्य देवे पराभक्तिः यथा देवे तथा गुरौ, तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः।।
श्री गुरुं परमानन्दं वन्दाम्यानन्द विग्रहम्, यस्य सान्निध्यमात्रेण चिदानन्दायते परम्।।
ध्यान मूलं गुर्रोमूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्, ज्ञान मूलं गुर्रोवाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।।
गुरु ब्रह्मः गुरु विष्णो गुरु साक्षात् महेश्वरः, गुरु एव जगत् सर्वं तस्मै श्री गुरवे-नमः।
वन्देहं सच्चिदानन्दं भेदातीतं जगद् गुरुम्, नित्यं पूर्णं निराकारं निर्गुणं सर्व-संस्थितम्।
परात्परतरं ध्येयं नित्यम्-आनन्दकारणम्, हृदयाकाश-मध्यस्थं शुद्धस्फटिक-सन्निभम्।
नमामि सद् गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्, शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थ-सिद्धये।
अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तंयेन चराचरम्, तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।
अज्ञानतिमरान्धस्य ज्ञानञ्जन-शलाकया, चक्षुर्-उन्मीलितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः।

हरौ रुष्टे गुरु-स्त्राता गुरौ रुष्ठे न कश्चन, सर्वदेव-स्वरूपाय तस्मै श्री-गुरवे नमः।
चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम्, बिन्दु-नादकलातीतं तस्मै श्री-गुरवे नमः।
शिष्यानां मोक्षदानाय लीलया-देहधारिणे, सदेहेपि विदेहाय तस्मै श्री-गुरवे नमः
नमस्ते नाथ, भगवन् शिवाय गुरु रूपिणे, विद्यावतार संसिद्धयै स्वीकृतान एक विग्रहः।।
नवाय नवरूपाय परमार्थैकरूपिणे, सर्वज्ञान तमो भेद भानवे चिद्धनाय ते।।
स्वतन्त्राय दयाक्लृप्त विग्रहाय मरात्मने, परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्यहेतवे।।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम्, विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम्
पुरस्तात्-पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्याम्-उपर्यधः, सदामत्-चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम्।
गुरु ब्रह्मः गुरु विष्णो गुरु साक्षात् महेश्वरः, गुरुएव जगत् सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः

घर में सुख शांति के लिए इस मन्त्र का उच्चारण हर समय करते रहें।

ॐ नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च,
मयस्कारय च नमः शिवाय च, शिवतराय च।।

बच्चों में बाल काटने की आदत न डालें।
यह हमारी संस्कृति का अपमान है।

मस छुय वस

काँह, मांस, तरि-व, अपोर (श्री मास्टर जिन्द कौल)

तार-वुन, छुह, कॅरनव - हक, दित, छुह वंनन्, काँह मार्स, तॅरि-व अपोर
पत तर-वन्यव, - आलुस म करि-व, उद्यम तरि-व अपोर, काँह ...।
करनावि, तार छुनॅह, गरि-गरि बनन वुन्य क्यन-छॅह, वीला जान
न्यशतुर त्यथ साथ, मॅह राव़ु-रिव़ु, बुज़िव त तॅरि-व अपोर, काँह ...।
घर वेठ सुँभरान, छिव मार गॅमतं, छॅयनिथ् त थकित प्यमित,
घर रोज़ि यतिय -त, कथक्युत भरि-व छॅरिय तॅरि-व अपोर, काँह ...।
अन अन वननस्, - कन मॅह थविव, गुॅब रॉ-विव क्याज़िह पान,
गुबॅ बोर ह्यथ - वॅति प्यठ क्या कॅरि-वु, लुतिय तॅरि-वु अपोर, काँह ...।
चूर युस करि-वु, सुय पानॅस फरि-वु, कुर्सुक छुह अटल नियम,
स्वन, रुफ छॅ-रिथ,-गुॅड करि-मु, ग-रि-वु, सन्तोष त-रि-वु अपोर - काँह ...।
प्र-च्छ गॅ-र-यलि लगि, भर दिथु ख्यनसु, इस बात गॅ-छिवि चूर,
थर थर मा, हॅरद-थरि जन हरि-वु, औदार्य त-रि-वु, अपोर - काँह ...।

पॅज्य पान होव़, -रॅ-षि रस-त्यन ऋष्यन् पशन ति बॅग-रुख प्रेम,
अथ्य़ ऋष्य-धर्मस् प्यॅठ, तुहि ति धॅ-विव़, समदृष्टि तॅरि-व़ अपोर - कहाँ ...।
रॅ-ति भाव थ-विव़, रुतय वनिव, रतिय करि-व़-कार,
यिय यति करि-व़, तिय तति सुरि-व़, सॅत् कर्म त-रि-व़, अपोर-काँह ...।
अपारि बदलय छह विद्या परन्य, योगच़ छिह तति बोल चाल,
पॅरि-व-त-यति, श्री गीता परि-व़, योगय़ त-रि-व़, अपोर - काँह ...।

प्रभात आव पोशनूलो वन, सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन्

न्यँदर मो त्राव अथ वखतस़ सत्यायुग ब्यूठ मुत छुह तखतस्,
मँगुन इय छुय चॅह मंग वुन्यक्य्न्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन्।1।
त्रेतायुग द्वापर कलियुग-तिहुन्द स्वामी छुह सत्यायुग,
ॲमिस निश फल बन्यम् वुन्य-क्यन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।2।
मंग्यस् युस यिय दिवान् तस तिय अमिस सूति ऑसि शिवजी
गुडन्य़ बोज़न-तुता भक्त्यन, सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मऩ् ।3।

शुँगिथ युस रोज़िह अथ वखतस-दियस आराम ब्ययि मोह-मस,
तिमन कति छुय ज़न्मन छ्यन-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।4।
करि युस न्यँदरि वुन्यक्यन नाश-अछव् वुछि ऑत्म-सूर्युक गाश,
बन्यॅस अदह साध सम्बन्धन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।5।
ग्यवान् कस्तूर बागन मंज्-करान लीली वनन् छि संज़
परान श्रीराम रुघनन्दन्-सुन्दर-वॅनी प्रसन्न कर मन् ।6।
छुह बुल बुल बोलि मंज़ दिथ ताल-ग्यवान गोविन्द हे गोपाल,
दपान जीवन छुह वुज़नावन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।7।
समिथ लग्य परनि गोविन्द गू, कुकिल लजि वनन्य हे शम्भू
म्य ब्रोंठ कॅर बूलि पोशनूलन, सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।8।
पनन्य सुमरन फिरनि द्रामुत्-दुहस ओसुस न अथि आमुत
तवय् द्राव् सुलि रॅटनि वुन्य क्यन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।9।
छह वुन्य क्यन् देव लोकन मज़ करान पूज़ायि वननय मंज़
यियुय् नय् पॅछ दिहृ कन् वुन्यक्यन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।10।

वज़ान सेतार मुरली नय्-परान शेव शेव शम्भू जय
यिहय वनी छह वनान् देवगण-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।11।
मन्दछ मॅह यिय नय-च्य बूज़िथ यिय्-शरण गच्छ परम शिवस चॅय,
परन् प्यस अरविन्द चरनन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।12।
चॅह-आलुस त्राव-गॅछ़ हुशयार-बनॅख धर्मचि सभायि मुखतार,
करख रुत भूग मंज़ सुरगॅन्-सुन्दरवॅनी प्रसन्न कर मन् ।13।
फुलनि लॅजि वुन्य-संगरमालय-ज़गत प्रजलान छु कमि हालय,
सुन्दरमन्दर-छुह क्याह ज़ोतन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।14।
हतो ज़ीवो ईथिस आनस-गुमुत छुक न्यन्दरि अज्ञानस
यिह आलुस छुय इमन् जन्दन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।15।
उद्योगुक् जाम नॅलिय छुन्-सपुन चेर फेर होशस़ कुन,
उदॅय ह्योत् करुन् वोन्य सूरयन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।16।
मुच़र धर्म लॅरि कर्मुक बर-ज्ञान प्रकाश ग्वड सरकर।
प्रियमहु सॅति अदह च़ह कर-च्यनतन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न करमन् ।17।

पंचनाग रादॅह मंजह श्राण-सतचि म्यचि़ सूति नावुन-पान,
वंन्दुन-गछि़ कल गुर पादन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।18।
नवन नदियन उद्योगुक ज़ल-तिमन आगुर छुह मन यारबल,
सुज़ल बगरान तिमन नदियन-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।19।
न्यन्दर-ज़ीवस छुह बुड संहार-करान् छुस कार निश बेकार,
फरान छुस चूर, छुस मोहन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।20।
स्वप्नस् मंज़ बनान् रा़ज़ाह-छिह लक्ष्मी दाय इस्तादह
हुशयार यलि गुव बन्योव निर्धन-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।21।
इत्थॅय पॅठिन समय सुप्नाह-सुह रातुक जशनह अज़ बन्य माह,
अज़युक माह बनि पगाह सुबहन-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।22।
छः हत बंद रंग़ दुहस बदलान्-छह असि मूर्खमा क्यँह जानान,
अपुज करि करि बरान चन्दन-सुन्दरवॅनी प्रसन्न क मन् ।23।
शुँगिथ युस रोजि़ दुपहरस तान्य-वनान् छस अस स्यठा कर्मवान्
सु छुई चण्डाल बनान्-ब्रह्मुन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।24।

इह ब्रॉह्मन् ज़न्म सुलि सुरिज़्यॅह-मरॅन ब्रोंठय् ज़िंदय मरि ज़्येह
बनिय छ्यन् अदह अपराधन्-सुंदर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।25।
छुह ज़ीवस ज़न्म मंज़ व्यस्तार-दियस अदह-भव सर मंज़तार
कर सीव पादनय् सन्तन्-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।26।
मूर्ख युस आसि क्यँह ज़्याद हन-न्यन्दरि मंज़ प्यथि पुश ह्युव् ज़न्
सु कथ पठि वुथि प्रभात समयन-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।27।
करुन अभ्यास सुलि वुथनॅस-बे ह्यसी रोज़िह व्यवहारस्
अभ्यासी बन आनन्दगण-सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।28।
छि भक्ति रात्रोद्यन-म्य-गछ़ि रोज़न सतिच सुमरन्
तवय द्यव बनि जन्मन् छ्यन्। सुन्दर वॅनी प्रसन्न कर मन् ।29।
हतो-मन पोशनूलो-बोज़, रटितु वन हर गोशस् रोज़
सदा गोविन्द गोवर्धन-सुन्दरवॅनी प्रसन्न कर मन् ।30।

बच्चियों में बाल काटने की आदत न डाले। यह हमारी संस्कृति का अपमान है।

मस छुय वस

मांस खाना निषेध है (धर्म शास्त्र)

देव यज्ञे पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणि
तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीवघातनम्।

अर्थातः देव यज्ञ पर पितृश्राद्ध (ग्यारहवां, बारहवां दिन) पर तथा किसी मंगल कर्म (जन्म दिन आदि पर) जो मांस का प्रयोग अथवा किसी प्रकार की हिसां करता है उसे नरक मिलता है।

मधुमांसे प्राश्य-आलभ्य वा शरीरं पुर्नव्रतम्-आलभेथाः
(उपनिषद्ध)

अर्थः जो ब्रह्मण अथवा ब्रह्मचारी मांस खाये अथवा मांस का स्पर्श करे उस को नया यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिये।

क्व क्व मांस क्वास्ति वै भक्तिः क्वमद्ये
क्व शिवार्चनम्, मद्यमासानु रक्तानां दूरे तिष्ठति शंकरः।
(उपनिषद्ध)

अर्थः कहां मांस खाना, कहां भकित (पूजा पाठ करना) कहां शिवपूजा कहां मांस और शराब का सेवन। मद्य मांस खाने वालों से शंकर दूर भागता है।

भगवान् व्यास कहते हैः-

सुरां मत्स्यान् मधु-मांसम्-आसवं कृत्सरोदनम्
धूर्तिः प्रवर्तितं धर्मं नैतत् वेदेषु कल्पितम्।

अर्थः- शराब पीना, मछली खाना, मास सहित तेल वाला बता (तहर चरवन) खाना अथवा देवता को अर्पण करना, यदि कहीं ऐसा दर्ज है - तो जानना चाहिये यह धर्म ठगों ने चलाया है- वेदों में मांसखाना कहीं भी दर्ज नहीं है।

यदि चेत् खादको न स्यात् न तदा घातको भवेत्
घातकः खाद कार्याय तत् घातयतिवैनरः। (महाभारत)

अर्थः यदि मांस भक्षक न हो तो मारने वाला नहीं होगा, अतः जो मांस खाता है वह पशु हिंसा का प्रेरक है।

यत्र प्राणि-वधो धर्मः अधर्मः तत्र कीदृशः,
ब्रह्मणे यत्र मांसाशी चण्डालः तत्र कीदृशः।।

अर्थः जहां प्राणिहत्या धर्म माना जाता है अधर्म के विषय में वहां क्या कहा जाय। जहां ब्राह्मण ही मास खाता हो, वहां चण्डाल कैसा होगा।

ब्राह्मी-विद्या

ॐ ॐ ॐ त्रिगुणपुरुष क्षेत्रचर, मोहं भिन्धि, रजस्तमसी भिन्धि, प्राकृत-पाशजालं-सावरणं परिहर, सत्वं ग्रहाण-पुरुषोत्तमोसि, सोम-सूर्यानल, प्रवर, परमधामन् ब्रह्म विष्णुमहेश्वरस्वरूप,, सृष्टिस्थिति-संहारकारक, भ्रू-मध्य-निलय, तेजोसि-धामासि-अमृतात्मन् ॐ तत्सत् हँसः, शुचिषत्, वसुरन्त रिक्षसत्-होता अतिथि-दुरोणसत्, नृषत्-वरसत्-ऋतसत्-व्योमसत्, अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं, परंब्रह्म-स्वरूप, सर्वगत सर्वशक्ते, सर्वेश्वर, सर्वेन्द्रिय-ग्रन्थि भेदं कुरु, कुरु परमं-पदं परामर्शय परमार्ग ब्रह्म-द्वारं सर, कुमार्गं-जहि-षट्-कोशिकं शरीरं-त्यज, शुद्धोसि बुद्धोसि विमलोसि क्षमस्व स्वपदम्-आस्वादय स्वाहा।

ब्राह्मी विद्या

ॐ ॐ ॐ = तीन प्रकार के दुःखों का निवारण करने के लिए मंगलरूप में तीन बार आरम्भ में 'ॐ' का उच्चारण किया गया है, त्रिगुण पुरुष = तुम त्रिगुण पुरुष हो अर्थात् तीन गुणों में तेरा ही निवास है, क्षेत्र चर = शरीर रूपी क्षेत्र में फिरने से तुम ही क्षेत्रचर हो, मोहं = मोह रूपी ग्रन्थि को, भिन्धि= काटो, रजस्तमसी = रजो गुण, तमो गुण रूपी ग्रथियों को काटो, प्राकृत= बनावटी, पाशजालं = बन्धनों का जाल, सावरणं = आवरण सहित, परिहर = फैंक दो, सत्वं ग्रहाण = तत्व को जान, पुरुषोत्तमोसि = तुम स्वयं ही पुरुषोत्तम हो, सोम = चन्द्रमा, सूर्य = सूरज, अनल = अग्नि, प्रवर = तेजोमय

रूप, परमधामन् = उत्तम स्थान वाले, ब्रह्म, विष्णु, महेश्वर, स्वरूप = तुम ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूप हो, सृष्टि स्थिति = तुम ही सृष्टि को बनाने वाले हो, संहार कारक = नाश करने वाले हो, भ्रू-मध्य-निलय = भ्रुवों के मध्य में ध्यान टिकाने से तुम जाने जाते हो, तेजोसि = तुम तेज रूप हो, धामासि = तुम उत्तम धाम वाले हो, अमृतात्मन् = तुम अमृत रूप हो, ॐ तत्सत् = तुम सत् रूप हो, हंस = तुम स्वयं प्रकाश हो, शुचिषत् = तुम निर्मल स्थान पर रहने वाले हो, वसुरन्त-रिक्षसत् = तुम आकाश में रहने वाले वस नाम के देवता हो, होता = तुम ही अग्नि में आहुति डालने वाले हो, वेदिषत् = तुम ही यज्ञ की वेदी पर ठहरे हुये अग्नि हो, अतिथिर्दराणसत् = तुम ही गृहस्थों में अतिथि रूप देवता हो, नृषत् = तुम मनुषयों में रहने वाले हो, वरसत = तुम देवताओं में रहने वाले हो, ऋत ऋत् = तुम सत्य में रहने वाले हो, व्योम सत् = तुम आकाश में ओत प्रोत हो, अब्जः = तुम जल में उत्पन्न होने वाले रत्न शंक आदि हो, गोजा = तुम पर्वतों तथा पृथ्वी से प्रकट होने वाले अन्न औषधि रूप हो, अद्रिजा = तुम पर्वतों से प्रकट होने वाले नदी-नाले रूप हो, ऋतुजा = तुम सब से महान् और परम सत्य हो, परम-ब्रह्म-स्वरूप = तुम परम ब्रह्म स्वरूप हो, सर्वगत = तुम सब मे गए हो, सर्व शक्ते = तुम सर्व शक्तिमान् हो, सर्वेश्वर = तुम सबों के स्वामी हो, सर्वन्द्रिय = सब इन्द्रियों से, ग्रन्थि भेदं कुरु = आसक्ति छोड़ो, परमं-पदं = उस परमपद का, पर-मार्ग = उस उत्तम मार्ग का, परामर्शय = विचार कर, ब्रह्म-द्वारं सर = ब्रह्मद्वार की ओर चल अर्थात् अपने स्वरूप को जान, कुमार्ग जहि = अज्ञान के मार्ग को छोड़, षट-कौशिकं शरीरं = इस षट् कोशिक शरीर अर्थात् रोम, रक्त, मांस, मज्जा, हड्डियों और वीर्य से बने हुये शरीर को, त्यज = छोड़ो, शुद्धोसि = तुम शुद्ध रूप हो, बुद्धोसि = तुम बुद्धि रूप हो, विमलोसि = तुम निर्मल हो, स्वपदम्-आस्वादय स्वाहा = अपने स्वरूप का अनुभव कर इस ज्ञान को तू अच्छी प्रकार स्वीकार कर।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

विष्णु प्रार्थना

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं। विश्वाधारं गगनसद्रश्यं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मी कान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं। वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।1।
यस्य हस्ते गदा चक्रं गुरुडो यस्य वाहनं। शंखः करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु ।2।
यद्बल्ये यश्च कौमारे यत् यौवने कृतं मया, वयः परिणतौ यश्च यक्ष्च जन्मात्तरेषुच।
कर्मणा मनसा वाचा यापापं समुवर्जितं तन्नारायण गोविन्द क्षमस्व गुरुडध्वज।3।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखस्त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ।4।
तत्रैव गंगा यमुना चवेणी, गोदावरी सिंधु सरस्वती च,
सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र, यत्रेच्युतोदार कथा प्रसंगा।5।
नमामि नारायण पादपंकजं करोमि नारायण पूजनं सदा।
वदामि नारायण नाम निर्मलं, स्मरामि नारायण तत्वम् अव्ययम।6।
गो कोटिदानं ग्रहणेषु, काशी, प्रयागं गंगाऽयुतकल्पवासः।
यज्ञायतं मेरु सुवर्णदानं, गोविंदनाम्ना न कदापि तुल्यम्।।

ध्येयः सदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती नारायणः सरसिजासन-सन्निविष्ठः।
केयूरवान-कनक-कुण्डलवान्-किरीटी हारी हिरण्य-वपुर्धृत शङ्खचक्रः।8।
करार बिन्देन पदारबिन्दं मुखारबिन्दं विनिवेश्ययन्तं।
अश्वत्थपत्रस्य पुटेशन, बालं मुकन्दं मनसा स्मारामि।9।
गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे, गोविन्द गोविन्द रथांगपाणे।
गोविन्द गोविन्द मुकुंद कृष्ण, गोविन्द गोविन्द नमो नमस्ते।10।

विष्णु स्तुतिः

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे।
उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे।।
घोरं हर मम नरक रिपो, केशव कल्मषभारं।
माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं, कुरु भव-सागरपारम्।। घोरं हर मम॰ ।।1।।
जय जय देव जया-सुरसूदन, जय केशव जय विष्णो।
जय लक्ष्मीमुख-कमल-मधुव्रत, जय दशकन्धर जिष्णो। घोरं हर मम॰ ।।2।।
यद्यपि सकलम्-अहं कलयामि हरे, नहि किम्-अपि स सत्वम्।तत्-अपि न मुञ्चति

माम्-इदम्-अच्युत, पुत्रकलत्र-ममत्वं। घोरं हर मम० ।।3।।

पुनर्-अपि जननं पुनर्-अपि मरणं, पुनर्-अपि गर्भ-निवासम्।
सोढुम्-अलं-पुनर्-अस्मिन्-माधव, माम्-उद्धर निजदासम्। घोरं हर मम० ।।4।।

त्वं जननी जनकः प्रभुर्-अच्युत, त्वं सुहृत्-कुलमित्रम्।
त्वं शरणं शरणा-गतवत्सल, त्वं भव-जलधि-वहित्रं घोरं हर मम० ।।5।।

जनक-सुता-पति-चरण-परायण, शंकर-मुनिवर-गीतं।
धारय मनसि कृष्ण-पुरुषोतम, वारय संसृति-भीतिम्।। घोरं हर मम० ।।6।।

कृष्णं वन्देजगत्-गुरुम्

भगवत् गीता के आरम्भ में भगवान् कृष्ण ने यद्यपि कोई मंगल श्लोक कहा नहीं है परन्तु निम्नलिखित 9 श्लोक किसी कृष्ण भक्त ने बनाए हैं। किसी-किसी भगवद्गीता में यह 9 श्लोक छपे हुए मिलते हैं परन्तु कश्मीरी पण्डित परम्परा से प्रायः यह श्लोक गीता के आरम्भ में पढ़ते हैं इसी कारण हमने यह श्लोक अर्थ सहित इस पाठ प्रकरण में जोड़े हैं।

ॐ पार्थाय प्रतिबोधितां भगवता नारायणेन स्वयं,
व्यासेन ग्रथितां पुराण-मुनिना मध्ये महाभारतम्।

अद्वैतामृत-वर्षिणीं भगवतीम्-अष्टादशा-ध्यायिनीम्,

अम्बत्वाम्-अनुसन्दधामि भगवत्-गीते भव-द्वेषिणीम्।।1।।

अर्थः भगवान् कृष्ण से अर्जुन को समझाई गई, वेदव्यास से महाभारत में ग्रथित की गई, अद्वैत-अमृत की वर्षा करने वाली, अठारह अध्याय वाली, ऐसी ही माता भगवद्गीते, तुम्हारा मैं मन से ध्यान करता हूँ।

नमोस्तु ते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारविंदा-यतपत्र-नेत्र।

येन त्वया भारत-तैल-पूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः।।2।।

अर्थः हे विशाल बुद्धि वाले, हे प्रफुल्लित कमल नेत्र वाले वेदव्यास जी! आप ने महाभारत रूप तैल से पूर्ण ज्ञानमय दीपक जलाया, ऐसे आपको नमस्कार हो।

प्रपन्न-पारिजाताय तोत्र-वेत्रैक-पाणये।

ज्ञानमुद्राय कृष्णाय गीतामृत-दुहे नमः।।3।।

अर्थः शरणागत के कल्पवृक्ष, हाथ में चाबुक लिए हुए, ज्ञान मुद्रा युक्त (ज्ञानरूप) गीता अमृत के दुहने वाले भगवान् कृष्ण को नमस्कार हो।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।

पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।4।।

अर्थः सभी उपनिषद् मानिए गौ हैं, इस उपनिषद रूपी गौवों को दुहने वाला गोपाल नन्दन भगवान् कृष्ण हैं, अर्जुन बछड़ा है, जो स्वयं दूध गाय के स्तनों से पीकर अपना पेट भरता है और दूसरों के लिए भी निकलवाता है। जिन गौओं से दूध निकलवाता है वही गीता अमृत है, जिस अमृत को पीने वाले बुद्धिमान पुरुष हैं।

वसुदेव सुतं देवं कंसचाणूर-मर्दनम्।

देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगत्-गुरुम्।।5।।

अर्थः *वसुदेव के पुत्र, कंस और चाणूर को मारने वाले, देवकी को परमानन्द देने वाले जगत् गुरु भगवान् कृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।*

भीष्मद्रोणतटा जयत्रथ-जला गान्धर-नीलोत्पला,

शल्य-ग्राहवती कृपेण वहनी कर्णेन वेलाकुला।

अश्वत्थाम-विकर्ण-घोर-मकरा दुर्योधना-वर्तिनी,

सोत्तीर्णा खलुपाण्डवैः रणनदी कैवर्तके केशवः।।6।।

अर्थः *जिस युद्धरूपी नदी के भीष्म और द्रोण दोनों तट हैं, जिसमें जयत् रथ जल हैं, गान्धार नील कमल हैं, शल्य ग्रेह (ग्रसने वाला) जलचर है, कृप प्रवाह है., कर्ण लहरे हैं, अश्वत्थामा और विकर्ण घोरमकर हैं, दुर्योधन भंवर है, ऐसी युद्धरूपी नदी निश्चय करके पाण्डवों से मल्लाह भगवान् कृष्ण द्वारा उत्तीर्ण की गई है।*

पाराशर्यवचः सरोजं-अमलं, गीतार्थ-गन्धोत्कटं

नानाख्यानक-केशरं-हरिकथा, सम्बोधना बोधितम्।

लोके सज्जन-षट्पदैर्-अहर्-अहः पेपीयमानं मुदा,

भूयात्-भारत-पंकजं, कलिमल-प्रध्वंसिनः श्रेयसे।।7।।

अर्थः *पाराशर्य (वेदव्यास) के वचनरूपी सर में उत्पन्न हुए निर्मल गीता-अर्थ रूप उत्कट गन्धवाला, नाना प्रकार के प्रसंगरूप सुगन्धित फूलवाला, हरिकथा (ज्ञान की कथाओं) से जो प्रफुल्लित है, संसार में सत्यपुरुष भ्रमरों से आनन्दपूर्वक प्रतिदिन पिया जाने वाला, कलियुग के पापों का नाश करने वाला ऐसा यह महाभारत रूप कमल हमारा कल्याण करे।*

मूकं करोति वाचालं पंङ्गुं लङ्घयते गिरिं।

यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द-माधवम्।।8।।

अर्थः मैं उस परमानन्द लक्ष्मीपति को नमस्कार करता हूँ, जिनकी कृपा गूंगे को वाचाल और लंगडे को पर्वत उलंघन करने वाला बना देता है।

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-

र्वेदैः साँगपद-क्रमोप-निषदै-र्गायन्ति यं सामगाः।

ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो,

यस्यान्तं न विदुः सुरा-सुर-गणा देवाय तस्मै नमः।।

अर्थः जिनका ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र और मरुद्गण दिव्य स्तोत्रों द्वारा स्तुति करते हैं, सामवेद के गाने वाले अंग, पद, क्रम और उपनिषदों के सहित वेदों द्वारा जिनका गान करते हैं, योगीजन ध्यान में स्थित तद्गत हुए मनसे जिनका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण (कोई भी) जिनके अन्त को नहीं जानते, उन (परमपुरुष नारायण) देव के लिए मेरा नमस्कार हो।

अष्टादश श्लोकी गीता

निमित्तानि च पश्यामि-विपरीतानि केशव,

न च श्रेयो-नुपश्यामि हत्वा स्वजनम्-आहवे।।1।।

अर्थः अर्जुन भगवान् से कहता है, कि अब मुझे सब लक्षण उल्टे दिखाई देते हैं, ऐसे मुझे प्रतीत नहीं होता है कि अपने

सम्बन्धियों को युद्ध में मारकर कुछ कल्याण हो सकेगा।

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्य-सिद्ध्-योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।2।।

अर्थः फल की आशा छोड़ कर सिद्धि हो या न हो फिर भी अपने मन की वृत्ति समान रखनी चाहिये, इस प्रकार की चित्त की समवृत्ति को योग कहते हैं, इस योग से युक्त होकर मनुष्य अपने सब कर्म करे।

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्,
इद्रियार्थान्-विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।।3।।

अर्थः जो हठ से कर्मेन्द्रियों को रोकता है परन्तु अन्दर ही अन्दर मन से विषयों का चिन्तन करता है उस मूर्ख को मिथ्याचारी कहते हैं।

श्रद्धावान्-लभते ज्ञानं तत्-परः संयतेन्द्रियः,
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिम्-अचिरेणाधिगच्छति।।4।।

अर्थः ईश्वर गुरु और धर्म शास्त्रों में श्रद्धा रखने वाला मनुष्य ज्ञान को प्राप्त करता है और ज्ञान होने पर उसको शान्ति प्राप्त होती है।

यतेन्द्रिय मनो बुद्धि-र्मुनि-मोक्ष-परायणः,
विगतेच्छा-भय क्रोधो-यः सदा मुक्त एव सः।।5।।

अर्थः जो मनुष्य इन्द्रियो, मन और बुद्धि को वश में रखता है और केवल ब्रह्मशन्ति प्राप्त करने में लगा रहता है वह सदा मुक्त है।

युक्ताहार-विहारस्य युक्त-चेष्टस्य कर्मसु,

युक्त-स्वप्ना-व बोधस्य योगो भवति दुःखहा।।6।।

अर्थः यथायोग्य आहार विहार करने वाला कर्मों को यथा योग्य ढंग से करने वाला यथायोग्य निंद्रा करने और योग्य समय पर उठने वाले साधक का योग दुःख को दूर करने वाला होता है।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया,

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायाम्-एतां-तरन्ति-ते।।7।।

अर्थः परमात्मा की सत्वरज तमोगुणमयी माया को पार करना कठिन है जो मुझ ईश्वर को प्राप्त करते हैं वह इस माया से पार हो जाते हैं।

अग्निर्-ज्योतिर्-अहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्,

तत्रो प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।।8।।

अर्थः उत्तरायण काल के छः मास के शुक्ल पक्ष में दिन के प्रकाश में प्रदीप्त अग्नि के समय जो ब्रह्मज्ञानी इस शरीर को छोड़कर चले जाते हैं वे ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

अपि चेत्-सुदुराचारो भजते माम्-अनन्यभाक्,

साधुर्-एव स मन्तव्यः सम्यक्-व्यव-सितोहि-सः।

अर्थः बड़े से बड़ा दुराचारी यदि अनन्यभाव से मेरा भजन करेगा तो यह समझ लेना चाहिये कि वह साधु हो जायेगा।

यो माम्-अजम्-अनादिम्-च वेत्ति-लोक महेश्वरम्,

असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

अर्थः जो मुझे जन्म रहित, आदि रहित सब लोकों का स्वामी समझता है वह संसार में अज्ञान से छूटकर ज्ञानी बनकर सब पापों से मुक्त होता है।

मत्कर्म कृत्-मत्परमो मत्-भक्तः संघ-वर्जितः,

निर्वैरः, सर्व-भूतेषु यः स मामेति पाण्डव।।

अर्थः *हे अर्जुन! जो मेरे लिये कर्म करता है, जो मुझे परमश्रेष्ठ मानता है जो भोगों का संग छोड़ता है और सब प्राणियों के विषय में वैर रहित होता है मेरा वही भक्त मुझे प्राप्त करता है।*

श्रेयो हि ज्ञानम्-अभ्यासात्, ज्ञानात्-ध्यानं विशिष्यते,

ध्यानात्-कर्म-पलत्याग, स्त्यागात्-शान्तिर्-अनन्तरम्।।

अर्थः *अभ्यास योग से ज्ञान श्रेष्ठ है, ज्ञान योग से ध्यान योग की विशेषता अधिक है, ध्यान योग से कर्मफल का त्याग उत्तम है, कर्मफल का त्याग करने से शीघ्र ही शान्ति मिलती है।*

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्व-क्षेत्रेषु भारत,

क्षेत्र-क्षेत्र ज्ञयोर्ज्ञानं-तत्-यत्-ज्ञानं मतं मम।।

अर्थः *हे भारत! सब क्षेत्र में रहने वाले मुझे तू क्षेत्रज्ञ समझ जो क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का ज्ञान है वही मेरा ज्ञान है।*

मां च यो-व्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते,

स गुणान्-सम्-अतीत्य-तान्-ब्रह्म्-भूयाय कल्पते।।

अर्थः *जो एक निष्ठ भक्ति भाव से मेरी सेवा करता है वह इन गुणों को लांघ कर ब्रह्म के महत्त्व को प्राप्त करने योग्य बन जाता है।*

निर्मान-मोहा जितसंग-दोषा अध्यात्म-नित्या विनि-वृत्तकामाः,
द्वन्द्वै-विमुक्ता सुख दुःख संज्ञैर्गच्छन्त्य मूढाः पदम्-अव्ययं तत्।।

अर्थः जो अभिमान रहित, मोह रहित, अनासक्त आत्मनिष्ठ भोगवासना रहित, द्वन्द्वभाव से दूर और ज्ञानी है, वह उस अविनाशी परम पद को प्राप्त होते हैं।

यः शास्त्र-विधिम्-उत्सृज्य वर्तते काम-कारतः।
न स सिद्धिम्-अवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।

अर्थः जो शास्त्र विधि को त्याग कर मनमाना आचरण करता है उसे न सिद्धि मिलती है न सुख मिलता है और न श्रेष्ठ गति ही प्राप्त होती है।

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनम्-आत्म-विनिग्रहः,
भाव-संशुद्धिर्-इत्येतत्-तपो मानसम् उच्यते।।

अर्थः मन को प्रसन्न रखना, शान्ति का अवलम्बन करना, मौन धारण करना, संयम करना और आत्मशुद्धि करना मानसिक तप है।

सर्व-धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज,
अहं त्वा सर्व-पापेभ्यो मोक्ष-यिष्यामि मा-शुचः।।

अर्थः सब धर्मों को छोड़कर मुझ अकेले (ईश्वर) की शरण आये मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त करूँगा, तू शोक मत कर।

सप्तश्लोकी गीता

ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म, व्याहरन्-माम्-अनुस्मरन्,
य: प्रयाति त्यजन् देहं, स याति परमां गतिम्।

अर्थ: योग धारण में स्थित ओंकार रूपी एकाक्षर ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और मेरा (परमेश्वर) का चिन्तन करता हुआ जो साधक देह त्यागता है वह नि:सन्देह श्रेष्ठगति को प्राप्त होता है।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या। जगत्-प्रहृष्य-त्यनुरज्यते च।।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति। सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघा:।।1-2।।

अर्थ: हे हृषीकेश यह ठीक है आपका कीर्तन करने से जगत् प्रसन्न होता है और उसमें उसकी प्रीति होती है, राक्षस तुम से डर कर दिशाओं में भाग जाते हैं और सभी पुरुषों के समुदाय आपको प्रणाम करते हैं।

सर्वत: पाणिपादं तत्-सर्वतोक्षि-शिरोमुखम्,
सर्वत: श्रुतिमत्-लोके सर्वम्-आवृत्य-तिष्ठाति।।3।।

अर्थ: इस लोक में उसके सर्वत्र हाथ, पांव सब ओर आँख, सिर, मुख और सब ओर कान हैं वह सर्वत्र व्यापत कर रह रहा है।

कविं पुराणम्-अनुशासितारम्। अणोरणीयांसम्-अनु-स्मरेत्-य:।।
सर्वस्य धातारम्-अचिन्त्यरूपम्। आदित्यवर्णं तमस: परस्तात्।।4।।

अर्थः जो अन्तकाल में सर्वज्ञ पुरातन नियन्ता अणु से भी सूक्ष्म, सब के धारण कर्ता अचिन्त्य स्वरूप अन्धकार से परे रहने वाले सूर्य के समान तेजस्वी ईश्वर का स्मरण करता है- वह उसी दिव्य परमात्मा को प्राप्त होता है।

उर्ध्वमूलम्-अधः-शाखम्-अश्व-त्थं प्राहुर्-अव्ययम्।

छन्दांसि-यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।।5।।

अर्थः संसार का वृक्ष अनादि चारों ओर फैला है, इसके ज्ञान रूपी पत्ते सबको शीतल छाया देने वाले हैं, शाखायें ऊपर नीचे फैली है, इनमें तत्व-रज तुम गुणों का रस भरपूर भरा है, शब्द स्पर्श रूप रस गंध विषयों के सुखदायी कोमल अंकुर लगे हैं और इनकी कर्मो से सम्बन्ध जोड़ने वाली जड़े चारों ओर फैली हुई है।

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्-ज्ञानम्-अपोहनं च।

वेदैश्च सर्वैर्-अहमेव वेद्यो वेदान्त-कृत्-वेद विदेव-चाहम्।।6।।

अर्थः मैं ईश्वर सबके हृदयों में रहता हूँ, मुझसे ही सब को स्मरण, ज्ञान विस्मरण और अज्ञान होता है मैं ही सब वेदों के द्वारा जानने योग्य हूँ और मैं ही वेदान्त शास्त्र का निर्माण करने वाला और वेद का ज्ञाता हूँ।

मन्मना-भव-मत्-भक्तो मत्-याजी मां नमस्कुरु।

मामे-वैष्यसि युक्त्वैवम्-आत्मानं मत्-परायणः।। 7।।

अर्थः मुझ में मन लगा, मेरा भक्त बन, मेरे निमित्त भजन कर, मुझे नमस्कार कर, इस तरह मुझमें परायण होकर मेरे साथ आत्मा का योग करने से तू मुझे प्राप्त कर लेगा।

वन्दे महापुरुष ते चरणारबिन्दम्

ध्येयं सदा परिभवघ्नं-अभीष्टदोहं, तीर्थास्पदं शिव-विरिञ्चि-नुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल ! भवाब्धिपोतं, वन्दे-महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।1।।

अर्थः हे महापुरुष- हे प्रणतपाल भगवान् कृष्ण ! मैं आपके उस चरण कमल को प्रणाम करता हूँ, जो चरण कमल ध्यान करने योग्य है, जो दुःखों का नाश करने वाला है, जो इच्छित पदार्थों का देने वाला है, जिस में सभी तीर्थ टिके हुये हैं, शंकर और ब्रह्मा जिस को झुकते है, जो रक्षा करने वाला है, जो भक्तों के दुःख का नाश करने वाला है, जो भवसागर से पार करने के लिए जहाज है।

त्यक्त्वा सुदुस्त्यज-सुरेप्सित-राज्यलक्ष्मीं, धर्मिष्ठ-आर्य-वचसा यत्-अगात्-अरण्यम्।
मायामृगं दयित-येप्सितं-अनुधावत्, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।2।।

अर्थः धर्मात्मा राजा दशरथ के कहने से (ऐसी राज्य लक्ष्मी) ऐसा राजपाठ जिस का त्याग करना बहुत ही कठिन है, जिस को देवता चाहते हैं-ऐसे राज्य पाठ को छोड़कर (ठुकराकर) जो चरणार-बिन्द जंगल में गया, सीता से चाहे हुये, माया शरीरधारी मृग के पीछे जो चरण कमल दौड़ पड़ा, ऐसे ही प्रशंसनीय कार्य रामावतार में जिस चरण कमल ने किया था उसको मैं नमस्कार करता हूँ।

श्रीमत्-सरोरुह-यवाँकुश-चक्रचाप, मत्स्या-ङ्कितं नव-विल्लोहित-पल्लवाभम्।।
लक्ष्म्यालयं परममंगलं-आत्मरूपं, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।3।।

अर्थः मैं आप के उस चरण कमल को प्रणाम करता हूँ, जो शोभायुक्त है, जो चरणारबिन्द कमल, जव, अंकुश, चक्र, धनु, मछली

इन सामुद्रिक राज योग वाले चिन्हों से युक्त हैं जो लाल बालपत्र की जैसा शोभावाला है जो लक्ष्मी का घर है, जो परमात्मा का ही प्रत्यक्षरूप हैं।

वृन्दावनान्तरं-अगात्-अनुगोकुलानां, संचार्य सर्वपशुभिः स्वविवृद्ध-कामी।
संचिन्तयत्-अगगुरो-मृगपक्षिणां यत्, वन्दे महापुरुष ! ते चरणार बिन्दम्।।4।।

अर्थः जो भगवान् कृष्ण अपने कुल की वृद्धि का इच्छुक था, गोकुल के सभी पशुओं के साथ दौड़-धूप करके जो चरण कमल वृन्दावन में गया, जिस चरणारबिन्द ने सभी मृगपक्षी गोओं को गोवर्धन पर्वत के नीचे एकत्रित किया था, हे महापुरुष भगवान् आप के उसी चरणारबिन्द को मैं प्रणाम करता हूँ।

यत्-गोपिका-विरह-जाग्नि परीतदेहाः, तप्तस्तनेषु विजहुः परिरभ्य तापम्।
रासे तदीय कुच-कुँकम-पङ्कलिप्तं, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।5।।

अर्थः रामलीला में गोपिकाओं के स्तनों के केसरलेप से लिप्त जिस चरणारबिन्द को (आलिंगन) स्पर्श करके, विरह की अग्नि से घेरे हुये गोपिकाओं के जलन से पीड़ित स्तनों का ताप दूर हुआ था हे महापुरुष कृष्ण! मैं उस चरणारबिन्द को प्रणाम करता हूँ।

कालीय-मस्तक-विघटन-दक्षम्-अस्य, मोक्षेप्सुभि-र्विरहदीन-मुखाभिर्-आरात्।
तत्-पत्निभिः स्तुतम्-शेष-निकामरूपं, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।6।।

अर्थः पति के विरह से दुःखित, पति के मुक्ति की इच्छावाली, कालीनाग की स्त्रियों ने, कालीनाग के समीप बैठकर जिस चरणारबिन्द की अनन्य भक्ति से स्तुति की थी, जो चरणारबिन्द कालीनाग के मस्तक फोड़ने में (नष्ट करने में) निपुण था, हे महापुरुष, मैं आप के उस चरणारबिन्द को नमस्कार करता हूँ।

ज्ञानालयं श्रुतिविमृग्यं-अनादिम्-अर्च्यम्, ब्रह्मादिभि र्हृदि-विचन्त्यं-अगाध-बोधैः।
संसार-कूप-पतितो-त्तरणाव-लम्बम्, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।7।।

अर्थः जो ज्ञान का घर है, वेद जिस को ढूँढते हैं, जो आद्यन्त रहित है, जो पूजा के योग्य है, जो ज्ञान का भण्डार हैं। ब्रह्मादि देवता हृदय में जिस का चिन्तन करते हैं, संसाररूपी कुएँ में गिरे हुओं को पार करने में जो सहारा बना है- हे महापुरुष कृष्ण मैं आपके उस चरणारबिन्द को नमस्कार करता हूँ।

येनाङ्क-बालवपुषः स्तनपान-बुद्धेः, त्वत्-अँघ्रिणा-हृतमऽनो विपरीत चक्रम्।
विध्वस्त-भाण्डम्-अपतत् भुवि गोपमूर्ते, वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।7।।

अर्थः गोद में उठाने योग्य छोटे शरीर वाले, दूध पीने के इच्छुक श्री कृष्ण के पाँवों से लात मारा हुआ, तोड़े हुये दूध के बर्तनों से भरा हुआ उल्टा दिया हुआ छकडा नन्दगोप के आँगन में जिस चरणारबिन्द ने गिराया उस आपके चरण कमल को हे महापुरुष मैं नमस्कार करता हूँ।

इत्यष्टकं पठति यः परमस्य पुंसो, नारायणस्य निरयार्णव-तारणस्य।
सर्वाप्तिमाशु-हृदये कुरुते मनुष्यः, संप्राप्य-देहविलयं लभते च मोक्षम्।।8।।

अर्थः सृष्टि के बनाने तथा लय करने वाले, कष्टों से भरे सागर से पार करने वाले, भगवान् कृष्ण के यह आठ श्लोक जो मनुष्य हृदय में धारण करता है, भक्ति से पढ़ता है, वह मनुष्य सभी ऐश्वर्य प्राप्त करके, आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है।

प्रातः स्मरण मंगलस्तोत्रम्

उत्तिष्ठो-त्तिष्ठ गोविन्द, उत्तिष्ठ गरुड़-ध्वज, उत्तिष्ठ-कमलाकान्त, त्रौलोक्ये मंगलं कुरु ।।1।।
मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुड-ध्वजः, मंगलं पुण्डरीकाक्षः मंगलायतनं हरिः ।।2।।

मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्, यत् कृपा तम्-अहं वन्दे, परमानन्द-माधवम् ।।3।।
नमो ब्रह्मण्य-देवाय, ग्रोब्रह्मण-हिताय च, जगत्-हिताय कृष्णाय, गोविन्दाय नमोनमः ।।4।।
कृष्णाय वासुदेवाय, देवकी-नन्दनाय च, नन्द गोपकुमाराय, गोविन्दाय नमो नमः ।।5।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वम्-एव,
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।6।।

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं, जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे।।
अच्युतं केशवं सत्य-भा-माधवं, माधवं, श्रीधरं राधिकाऽराधितम्।
इन्दिरा मन्दिरं चेतसा सुन्दरं, देवकी नन्दनं नन्दनं सन्दधे।।
विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे, रुक्मिणी रागिणे जानकी जानये।
वल्लवी-वल्लभा-याऽर्चिता-यात्मने, कंस-विध्वंसिने-वंशिने-ते-नमः।।

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण, श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माध्वाधोक्षज, द्वारका नायक द्रौपदी रक्षक।।
राक्षस-क्षोभितः-सीतया-शोभितो, दण्डकारण्य-भू-पुण्यता-कारणः।
लक्ष्मणेनाऽन्वितो-वानरैः-सेवितो-गस्त्य-सम्पूजितो-राघवः-पातु-माम्।।
धेनुकारिष्टको-ऽनिष्टकृत्-द्वेषिणां, केशिहा-कंसहृत्-वंशिका-वादिकः।
पूतना कोपकः सूरजा खेलनो, बाल गोपालकः पातु मां सर्वदा।।
विद्युत-द्योतवान्-प्रस्फुरत्-वाससं, प्रावृडम्-भोदवत्-प्रोल्लसत्-विग्रहम्।
वन्यया मालया शोभितोरः स्थल, लोहितांघ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे।।
कुञ्चितैः-कुन्तलैः-भाजमा-नानं, रत्न-मौलिं-लसत्-कुण्डले-गण्डयोः।
हारकेयूरकं-कंकण-प्रोज्जवलं, किंकिणीं-अंजुलं-श्यामलं-तं-भजे।।
अच्युतस्याष्टकं-यः-पठेत्-इष्टदं, प्रेमतः-प्रत्यहं-पूरुषः-सस्पृहम्।
वृत्ततः सुन्दरं कर्तृ विश्वम्भरं तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्त्वरम्।।

भज गोविन्दं भज गोविन्दं

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनर् आयातः।
कालः क्रीडति गच्छति-आयु-तदपि न मुञ्चति-आशावायुः।।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ-करणे।
अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू रात्रौ चिबुक-समर्पित जानुः
करतल भिक्षा तरु तल वासः, तदपि न मुञ्चति-आशा-पाशः।।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।
यावत्-वित्तोपार्जन-सक्तः तावत् निज-परिवारो रक्तः।
पश्चात्-धावति-जर्जर-देहे वार्ता पृच्छति कोऽपि न गेहे।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।
जटिलो मुण्डी लुञ्चित-केशः, काषायाम्बर-बहु कृत वेषः।
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढ, उदर-निमितं-बहु कृत वेषः।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

भगवत्-गीता-किञ्चित्-अधीता, गङ्गा-जल-लव-कणिका पीता।
सकृदपि यस्य मुरारि-समर्चा, तस्य यमः किं कुरुते चर्चा।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

अङ्गं गलितं पलितं मुण्ड़ं, दशनविहिनं-जातं-तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं, तदपि न मुञ्चति-आशा-पिण्डम्।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

बालः-तावत्-क्रीडा-सक्तः, तरुणःतावत्-तरुणी-रक्तः।
वृद्धः-तावत्-चिन्ता-मग्नः, परमे-ब्रह्मणि-कोऽपि-न-लग्नः।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

पुनरपि-जननं-पुनरपि-मरणं, पुनरपि-जननी-जठरे-शयनम्।
इह संसारे-खलु-दुस्तारे, कृपयाऽ पारे-पाहि-मुरारे।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

पुनरपि-रजनी-पुनरपि-दिवसः, पुनरपि-पक्षः-पुनरपि-मासः।

पुनरपि-अयनं-पुनरपि-वर्षं, तदपि-न-मुञ्चति-आशा-मर्षम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

वयसि-गते-कः-कामविकारः, शुष्के-नीरे-कः-कासारः।
नष्टे-द्रव्ये-कः-परिवारो, ज्ञाते-तत्वे-कः-संसारः।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

नारीस्तन भर-नाभि निवेशं, मिथ्या-माया-मोहा-वेशम्।
एतत्-मांस-वसादि-विकारं, मनसि-विचारय-बारम्-बारम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

कः-त्वं-कोऽहं-कुत-आयातः, का-मे-जननी-को-मे-तातः।
इति-परि-भावय-सर्वम्-असारं, विश्वं-त्यक्त्वा-स्वप्न-विचारम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

गेयं-गीता-नाम-सहस्त्रं, ध्येयं-श्री-पति-रूपं-अजस्त्रम्।
नेयं-सज्जन-सङ्गे-चितं, देयं-दीन-जनाय-च-वित्तम्।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

यावत्-जीवो-निवसति-देहे, कुशलं-तावत्-पृच्छति-गेहे।
गत-वति-वायौ-देहापाये, भार्या-बिभ्यति-तस्मिन्-काये।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

सुखतः-क्रियते-रामा-भोगः, पश्चात्-हन्त-शरीरे-रोगः।
यद्यपि-लोके-मरणं-शरणं, तदपि-न-मुञ्चति-पापा-चरणम्
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

कुरुते-गङ्गा-सागर- गमनं, व्रत-परि-पालनम्-अथवा-दानम्।
ज्ञान-विहीनः-सर्व मतेन, मुक्तिः-न-भवति-जन्मशतेन
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

श्रीराम स्तुतिः

श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि, सुग्रीवमित्रं परमं पवित्रं, सीताकलत्रं नवमेघ-गात्रम्।
कारुण्य-पात्रं शतपत्र-नेत्रं, श्रीराम-चन्द्रं सततं नमामि।।1।।

अर्थः- सुग्रीव के मित्र, परमपावन, सीता के पति नवीन मेघ के समान शरीर वाले, करुणा के सिन्धु, कमल के समान नेत्रवाले श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

संसार-सारं निगम-प्रचारं-धर्मावतारं हृतभूमि-भारम्।
सदाविकारं सुखसिन्धु-सारं-श्रीराम-चन्द्रं सततंनमामि।।2।।

अर्थः- असार संसार का सारवस्तु, वेदों का प्रचार करने वाले, धर्म के अवतार, भू-भार हरण करने वाले, सदा विकार रहित, आनन्द सिन्धु के सारभूत, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

लक्ष्मो-विलासं जगतां निवासं-लंकाविनाशं भुवन-प्रकाशम्।
भू-देव-वासं शरत्-इन्दुहासं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।3।।

अर्थः- लक्ष्मी से विलास करने वाला, जगत् का निवास, लांकनाश करने वाला, भुवनों को प्रकाशित करने वाला, ब्राह्मणों को शरण देने वाला, शरत् चन्द्र हास्यवाला, श्रीरामचन्द्र का मैं निरन्तर नमन करता हूँ।

मन्दार-मालं-वचने रसालं-गुणैर्विशालं हत-सप्त-तालम्
क्रव्याद-कालं सुर-लोकपालं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।4।।

अर्थः- मन्दारपुष्प माला वाले, रसीले वचन बोलने वाले, गुणों में महान, सातताल वृक्ष भेदने वाले, राक्षसों के काल, देवलोक पालक, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

वेदान्त-गानं सकलैः समानं - हतारि-मानं-त्रिदश-प्रधानम्।
गजेन्द्र-यानं विगतावसानं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।5।।

अर्थः- वेदान्त द्वारा गेय, सबके साथ एक जैसा, शत्रुओं का नाम मर्दन करने वाला, देवताओं में गजेन्द्र सवारी करने वाले, अन्त-रहित-श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

श्यामाभि-रामं नयना-भिरामं, गुणाभिरामं, वचनाभिराममम्।

विश्व-प्रणामं कृतभक्तकामं, श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।6।।

अर्थः- श्याम सुन्दर, नेत्रों को आनन्द देने वाला, गुणों से मनोहर, मधुर वचन बोलने वाले विश्व वन्दनीय, भक्तजनों की कामनायें पूर्ण करने वाले, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दरना करता हूँ।

लीलाशरीरं रणरंगधीरं, विश्वैकसारं रघुवंश-हारम्।

गम्भीरनादं जितसर्व-वादं, श्रीरामचन्द्र सततं नमामि।।7।।

अर्थः- लीला के लिये शरीर धारण करने वाले रणस्थली में धीर, रघुवंश में श्रेष्ठ, गम्भीरवाणी बोलने वाले, समस्तवादों को जीतने वाले, श्रीरामचन्द्र को मैं प्रतिक्षण प्रणाम करता हूँ।

खले कृतान्तं स्वजने विनीतं-सामोपगीतं मनसाऽप्रीततम्।

रोगणगीतं वचनात्-अतीतं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।।8।।

अर्थः- दुष्टों के लिये मृत्युरूप, अपने भक्तों के लिये नम्रभाव वाले, सामवेद के द्वारा स्तुत, मन के अगोचर प्रेम से गान करने वाले योग्य, वचनों से अग्राहय, श्रीरामचन्द्र को मैं सर्वदा नमस्कार करता हूँ।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

बच्चियों में बाल काटने की आदत न डाले। यह हमारी संस्कृति का अपमान है।

मस छुय वस

श्री हनूमते नमः

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरू सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि - पुत्र पवन सुत नामा।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुण्डल कुंचित केसा ।।
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ।।
संकर सुवन केसरी नन्दन ।
तेज प्रताप महा जग बन्दन ।।
बिद्यावान गुनी अति चातुर ।
राज काज करिबे को आतुर ।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ।।

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचन्द्र के काज सँवारे ।।
लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये ।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ।।

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।
लंकेस्वर भए सब जग जाना ।।
जुग सहस्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ।।
दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।
राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रच्छक काहू को डर ना ।।
आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ।।

भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ।।
नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।
सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ।।
और मनोरथ जो कोइ लावै ।
सोइ अमित जीवन फल पावै ।।
चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ।।
साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ।।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ।।
तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ।।
अंत काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ।।
और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ।।
संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं ।।

जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महा सुख होई ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रबि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो।
देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो।
बालि की त्रास कपीस बसै गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब चाहिय कौन बिचार बिचारो।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो।
अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया-सुधि प्रान उबारो।
रावण त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ।।
आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो।
रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो ।

आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो।
बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ।
जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो।
काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो ।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो ।।

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर।।

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की,
दुष्टदलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरिवर काँपै,
रोग-दोष जाके निकट न झाँकै।
अंजनि पुत्र महा बलदाई,
संतन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठाये,
लंका जारि सिया सुधि लाये।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई,
जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे,
सीयारामजी के काज सँवारे।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे,
आनि सजीवन प्रान उबारे।
पैठि पताल तोरि जमकारे,
अहिरावन की भुजा उखारे।

बायें भुजा असुर दल मारे,
दहिने भुजा संतजन तारे।
सुर नर मुनि आरती उतारें,
जै जै जै हनुमान उचारें।
कंचन थार कपूर लौ छाई,
आरती करत अंजना माई।
जो हनुमान जी की आरति गावै।
बसि बैकुंठ परमपद पावै।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई,
तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।

श्री राम वन्दना

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्री रामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय मानसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।।
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं।
सीतासमारोपितवामभागम्।।
पाणौ महासायकचारुचापं।
नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।

श्री राम स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारु णं।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारुणं।।
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुंदरं।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुताबरं।।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं।
रघुनंद आनँदकंद कौशलचंद दशरथ-नंदनं।।
सिर मुकुट कंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं।

आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जिल-खरदूषणं।।
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनं।
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एति भाँति गौरि असीम सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली।।

श्री रामावतार

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरिषत महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी।।
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी।।
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता।।
करुना सुखसागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता।।
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै।
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै।।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा।।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा।।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

गौरी स्तुतिः

ॐ लीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां, लोकातीतै-र्योगिभिर्-अन्तर्-हृदि-मृग्याम्।
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुंजां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः *जो जगदम्बा बिना किसी परिश्रम के सृष्टि को बनाती है पालन करती है और नाश करती है, योग के अन्तिम अवस्था पर पहुंचे हुये योगी जिस शक्ति रूपी मां को हृदय से ढूंढते हैं, उदित होते हुये असंख्य सूर्यों जैसी प्रकाश वाली, कमल जैसे नेत्रों वाली माता गौरी (योगाग्नि से जलाये हुये शरीर के कारण गौर वर्ण वाली) की मैं स्तुति करता हूँ।*

आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां, पादाम्भोज-ध्यान-पराणां पुरुषाणाम्।
ईशीम्-ईशाङ् गार्ध हरां तां तनुमध्यां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः *जो भक्त जन उस शक्ति रूपी माता के चरण कमलों के ध्यान में लगे हुए हैं, उन के आशा के बन्धनों से पैदा हुए कष्टों को नाश करने वाली, शक्तिशाली, शंकर के आधे शरीर पर अधिकार वाली, सूक्ष्म कमर वाली, कमल जैसे नेत्रों वाली, माता गौरी की मैं स्तुति करता हूँ।*

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां, नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम्।
सत्य-ज्ञाना-नन्दमयीं तां तडित्-आभां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम् ईड्ये।।

अर्थः *प्रत्याहार, ध्यान तथा समाधि के साधना में लगे हुये भक्तों के चित्त में आनन्द उत्पन्न करने वाली, सत्य ज्ञान तथा आनन्द स्वरूप वाली, बिजली की जैसी प्रकाशवाली, कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।*

चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां, चन्द्रापीडा-लंकृत-लोला-लकभाराम्।
इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित पादाम्बुजयुग्मां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः भगवान् शंकर को आनन्दित करने वाले मुस्कराहट से युक्त मुख वाली, भगवान् शंकर के निमित सजाये हुये घूंघट वाले बालों की भार वाली, इन्द्र तथा नारायण जिसके चरणों की पूजा करते हैं उस कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

नाना कारैः शक्ति-कदम्बै-र्भुवनानि, व्याप्त स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका।
कल्याणीं तां कल्पलताम्-आनतिभाजां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः भिन्न-भिन्न शक्तियों से भूः भुवः स्वः लोकों में व्याप्त होकर जो मां अकेली स्वतंत्र रूप से खेलती रहती है, जो कल्याण रूप से शरण में आये हुए के लिए कल्पलता है अर्थात् हर कामना को पूर्ण करने वाली है ऐसी ही कमल जैसी नेत्रों वाली मां की मैं स्तुति करता हूँ।

मूलाधारात्-उत्थित-वन्तीं विधिरन्ध्रं, सौरं-चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम्।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्-अभिवन्द्यां, गौरीम् अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः सूर्य लोक और चन्द्रमा लोक से गुजर कर मूलाधर से उठी हुई ब्रह्म रन्ध्र तक पहुंची हुई प्रकाश रूप, स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण शरीर में व्याप्त, प्रणाम के योग्य, कमलों जैसी नेत्रों वाली माता गौरी की मैं स्तुति करता हूँ।

आदि-क्षान्ताम्-अक्षर मूर्त्या, विलसन्तीं, भूते भूते भूत-कदम्बं प्रसवित्रीम्।
शब्द-ब्रह्मा-नन्द-मयीं ताम्-अभिरामां, गौरीम्-अम्बाम्-अुम्ब-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः 'अ' से लेकर 'क्ष' तक अक्षर रूप में विलास करने वाली, युग-युग में प्राणियों को उत्पन्न करने वाली, शब्द ब्रह्मस्वरूप

आनन्दमई उस सुन्दर मां का, जिस के नेत्र कमल के समान हैं मैं स्तुति करता हूँ।

यस्याः कुक्षौ लीनम्-अखण्डं, जगत्-अण्डं, भूयो भूयः प्रादुर्-अभूत्-अक्षतमेव।
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ, विहरन्तीम्, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः जिस जगदम्बा की गोद में यह सब सृष्टि लय हो जाती है फिर बार-बार किसी खण्डन के बिना फिर से उत्पन्न होती है प्रकाश के केन्द्र ब्रह्मरन्ध्र में सदाशिव के साथ विहार करती हुई अथवा बर्फ से ढक्के हुए सफेद हिमालय पर्वत पर विहार करने वाली कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला, सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
ताम्-अध्यात्म-ज्ञानपदव्या-गमनीयां, गौरीम् अम्बां -अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः जिस शक्ति में यह सारी चराचर सृष्टि ऐसे पिरोई हुई है जैसे सूत्र में रत्न गुथे हुये होते हैं उसी शक्ति रूपी मां को जो आध्यात्मज्ञान से जानी जाती है। जिस के नेत्र कमलों के समान हैं उसी मां की मैं स्तुति करता हूँ।

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः साक्षी यस्याः सर्गविधौ सहंरणे च।
विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं, गौरीम् अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थः जिस महामाया के सृष्टि बनाते समय अथवा संहार करते समय सदा शिव जो नित्य, सत्य, सजातीय इत्यादि तीन भेदों से रहित हैं जो आप के बनाने के काम में केवल साक्षी रूप में रहते हैं, जगत की रक्षा करना जिन का एक खेल है उसी कमल जैसी नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

प्रातः काले भावविशुध्दिं विदधानो, भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।
वाचां सिध्दिं सम्पत्तिम्-उच्चैः शिवभक्तिं, तस्या-वश्यं पर्वत-पुत्री विदधाति।।

अर्थः *जो प्रातः काल शुद्ध हृदय से युक्त और संकल्प विकल्प रहित होकर भक्ति से नित्य इन दस गौरी माता के श्लोकों का उच्चारण करता है उस भक्त को सिद्धि, ऐश्वर्य, भगवान् शंकर की भक्ति पार्वती माता अवश्य देती है।*

देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः। ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः।
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः। नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः।
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै। ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः। नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्य-भिधीयते, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या। भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया- त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै, रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः, सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।।

दुर्गा सिद्ध मन्त्र स्तोत्र

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मातर् जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।

अर्थः- शरणागत की पीड़ा को दूर करने वाली देवी! हम पर प्रसन्न होओ। पूरे विश्व की जननी! प्रसन्न होवो। हे विश्वेश्वरि! विश्व की रक्षा करो। हे देवी! तुम चराचर जगत् की अधीश्वरी (स्वामी) हो।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः।।

अर्थः- हे देवी! तुम अनन्त बलयुक्त वैष्णवी शक्ति हो, इस विश्व की बीजरूपा परा माया हो, आप ने इस पूरे विश्व को मोहित कर रखा है, आप ही प्रसन्न होने पर इस पृथ्वी पर मोक्ष की प्राप्ति कराती हो।

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः, स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।

त्वयैकया पूरितम् अम्बयैतत्, का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।

अर्थः- हे देवी! समस्त विद्यायें आप के ही अलग-अलग रूप हैं संसार में जितनी भी स्त्रियां हैं सब आप की ही मूर्तियां है, हे जगत् अम्बा! एक मात्र आपने इस पूरे विश्व को व्याप्त कर रखा है आप की स्तुति क्या हो सकती है आप स्तवन करने योग्य पदार्थों से परे हो।

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं, विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्ध्या भवती भवन्ति, विश्वाश्रया ये त्वयि भक्ति नम्राः।।

अर्थः- हे विश्वेश्वरि! आप विश्व का पालन करती हो, आप विश्व रूपा हो, इस कारण आप समस्त विश्व को धारण करती हो आप भगवान् विश्वनाथ की भी वन्दनीया हो, जो लोग भक्तिपूर्वक आप के सामने सिर झुकाते हैं वे सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देने वाले होते हैं।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
द्रारिद्र्य-दुःख भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

अर्थः- मां दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय दूर करती है और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती है। दुःख दरिद्रता और भय हरने वाली देवी! आप के सिवा दूसरी कौन है जिस का चित सबका उपकार करने के लिये हमेशा दयार्द्र रहता है।

सर्वमङ्गल-मङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्रम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

अर्थः- सभी शुभकामनाओं को सिद्ध करने से सुन्दर अथवा कल्याणकारी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को देने वाली दुःखों से रक्षा करने वाली, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य रूपी तीन नेत्रों वाली, दक्ष प्रजापत के यज्ञ में योग अग्नि में भस्म बनी हुई अतः गौर वर्ण वाली, विष्णु की लक्ष्मी रूपा शक्ति वाली माता तुम्हें नमस्कार हो।

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।।

अर्थः- शरण में आये हुये दीनों एवं पीडितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सब की पीडा दूर करने वाली नारायणी देवी! आप को नमस्कार है।

सप्तश्लोकी दुर्गा

ज्ञानि-नाम्-अपि चेतांसि देवी भगवती हि सा। बलात्-आकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।।1।।

अर्थः- भगवती माहमाया देवी ज्ञानियों के भी चित को बलपूर्वक खींच कर मोह में डाल देती है।।1।।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेष-जन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि।

दारि-द्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वत्-अन्या सर्वोप-कार-करणाय दयार्द्र-चिता।।2।।

अर्थः माँ दुर्गे ! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती है, और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याण रूपी बुद्धि देती है, दुःख दरिद्रता हरने वाली देवी आप के बिना कौन है जिस का चित्त सब का उपकार करने के लिये सदा ही दयार्द्र रहता है।।2।।

सर्व-मंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।।3।।

अर्थः- हे माँ ! तुम सब प्रकार का मंगल करने वाली मंगलमयी हो, कल्याण करने वाली शिवा हो, सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागत-वत्सला, तीन नेत्रों वाली तथा सब की पीड़ा, दूर करने वाली, नारायणी देवी, तुम्हें नमस्कार है।

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे सर्वस्यार्ति-हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ।।4।।

अर्थः- शरण में आये हुये, दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में लगी रहने वाली, तथा सब की पीड़ा दूर करने वाली, नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है।

सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते, भयेभ्यस्त्राहि-नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते।।5।।

अर्थः- सर्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियां से सम्पन्न, दिव्यरूपा दुर्गे सब भयों से हमारी रक्षा करो, तुम्हें नमस्कार है।

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि तुष्टा रुष्टा-तु कामान् सकलान्-अभीष्टान्
त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणां त्वाम्-आश्रिता ह्या श्रयतां प्रयान्ति।।6।।

अर्थः- हे देवी! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट करने वाली, और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति आती ही नहीं है, तुम्हारी शरण में गये हुये मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते है।।6।।

सर्वा-बाधा-प्रशमनं त्रैलोक्य-स्याखिलेश्वरि एवम्-एव त्वया कार्यम्-अस्मत्-वैरि-विनाशनम्।।7।।

अर्थः- हे सर्वेश्वरि ! जिस प्रकार तुम ने मधुकैटभ का नाश किया तुम उसी प्रकार तीनों लोकों की सभी बाधाओं को शान्त करो और

गायत्री चालीसा

ॐ भूर्भवः स्वः ॐ युतजननी, गायत्री नितकलिमल दहनी।
अक्षर चौबीस परम पुनिता, इनमें बसे शास्त्र श्रुति गीता।
शाश्वत सतोगुणी सत् रूपा, सत्य सनातन सुधा अनूपा।
हंसारूढ सितम्बर धारी, स्वर्णकान्ति, शुचि गगन बिहारी।

पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला, शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला।
ध्यान धरत पुलकित हियहोई, सुख उपजल दुख दुरमति खोई।
कामधेनु तुम सुर तरु छाया, निराकर ही अद्भुत माया।
तुम्हरी शरण गहै जो कोई, तरै सकल संकट सो सोई।
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली, दिपै तुम्हारी ज्योति निराली।
तुम्हरी महिमा पार न पावै, जो शारद शत मुख गुन गावै।
चार वेद की मातु पुनीता, तुम ब्रह्माणी गौरी सीता।
महा मन्त्र जितने जग माहीं, कोऊ गायत्री सम नाहीं।
सुमरत हिय में ज्ञान प्रकासै, आलस्य पाप अविद्या नासै।
सृष्टि बीज जग जननि भवानी, कालरात्रि वरदा कल्याणी।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते, तुमसों पावें सुरता तेते।
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे, जननि हिं पुत्र प्राण ते प्यारे।
महिमा अपरम्पार तुम्हारी, जै जै जै त्रिपदा भय हारी।
पूरित सकल ज्ञान-विज्ञाना, तुम सम अधिक न जग में आना।
तुमहि जानि कछू रहे न शेषा, तुमहिं पाय कछू रहै न कलेषा।

जानत तुमहिं तुमहिं है जाई, पारस परसि कुधातु सुहाई

तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं, माता तुम सब ठौर समाई।

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे, सब गतिवान् तुम्हारे प्रेरे।

सकल सृष्टि की प्राण विधाता, पालक पोषक नाशक त्राता।

मातेश्वरी दया व्रतधारी, तुम सम तेर पालकी भारी।

जा कर कृपा तुम्हारी होई, ता पर कृपा करे सब कोई।

मन्द बुद्धि ते बुद्धि बल पावें, रोगी रोग रहित है जावें।

दारिद्र मिटै कटै सब पीरा, नासै दुख्ख हर भव भीरा।

गृह क्लेश चित चिन्ता भारी, नासै गायत्री भय हारी।

सन्तति हीन सुसन्तति पावें, सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें।

भूत पिशाच सबै भय खावें, यम के दूत निकट नहीं आवें।

जो सधवा सुमिरें चितलाई, अछत सुहाग सदा सुखदाई।

घर बर सुख प्रबल हैं कुमारी, विधवा रहें सत्य व्रत धारी।

जयति जयति जगदम्ब भवानी, तुम सम और दयालु न दानी।

जो सद्गुरु से दीक्षा पावैं, सो साधन को सफल बनावें।
सुमिरन करै सुरुचि बडभागी, लहैं मनोरथ गृही विरागी।
अष्ट सिधि नव निधि की दाता, सब समर्थ गायत्री माता।
ऋषि मुनि तपस्वी योगी, आरत अर्थी चिन्तित भोगी।
जो जो शरण तुम्हारी आवैं, सो सो निज वांछित फल पावैं।
बल विद्या शील सुभाऊ, धन वैभव यश तेज उछाहू।
सकल बढ़ें सुख नाना, जो यह पाठ करै धर ध्याना।
यह चालीसा भक्तियुत, पाठ करै जो कोय,
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय।हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो।

दुर्गास्तुति

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्य-पादारविन्दे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।

नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे, नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य, भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये, ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे, विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम्।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतुः, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला, समुत्खण्डिताखण्डिताशेषशत्रो।
त्वमेका गतिर्दव निस्तारबीजं, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
त्वमेवाघभावाधृतासत्यवादीर्न, जाताजितक्रोधनात् क्रोधनिष्ठा।
इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्णा च नाडी, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे, सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे।
विभूतिः शची कालरात्रिः सतिः त्वं, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।

सरस्वती वंदना

श्वेत-पद्मासना देवी श्वेत-पुष्पोप-शोभिता। श्वेताम्बर-धरा नित्या श्वेत-गन्धानु लेपना।।
श्वेताक्षी शुक्ल वस्त्रा च श्वेत-चन्दन-चर्चिता। वरदा सिन्धु-गन्धर्वैः ऋषिभिः स्तूयते सदा।।
स्तोत्रेणाऽनेन तां देवीं जगद्धात्रीं सरस्वतीम्। ये स्तुवन्ति त्रिकालेषु सर्वविद्या लभन्ति ते।।
या देवी स्तूयते नित्यं ब्रह्मेन्द्र-सुर-किन्नरैः। सा ममैवाऽस्तु जिह्वाग्रे पद्महस्ता सरस्वती।।

अपराध क्षमा स्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो, न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं, परं जाने मातस्त्वत्नुसरणं क्लेशहरणम्।।1।।
विधेर्-अज्ञानेन द्रविणे विरहेणा लसतया, विधेयाशक्यत्वात्-त चरणयो र्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।2।।
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।3।।

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।4।।
परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया, मया पञ्चाशीतेर् धिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता, निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्।।5।।
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा, निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं, जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ।।6।।
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो, जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं, भवानि त्वत्पाणि ग्रहण परिपाटी फलमिदम्।।7।।
न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभव वाञ्छापि च न मे, न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै, मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः।।8।।
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः, किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे, धत्से कृपाम् उचितम् अम्ब परं तवैव।।9।।
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं, करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः, क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति।।10।।

जगदम्ब विचित्रमत्र किं, परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि। अपराध परं परा व्रतं न हि माता समुपेक्षते सुतम्।।11।।
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि। एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु।।12।।

आरती लक्ष्मी जी

ओ3म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु दाता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तु ही जग माता, मैया तु ही जग माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता। मैया तु ही सुख-सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता, मैया तु ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
जिस घर में तुम रहती, सब सद्गुण आता, मैया सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता, मैया वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
शुभ-गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता, मैया क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता, मैया जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता, ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।

गंगा माँ

ओ3म् जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता, ओ3म् जय गंगे माता।
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता, मैया जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता, ओ3म् जय गंगे माता।
पुत्र सागर के तारे, सब जग को ज्ञाता, मैया सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता, ओ3म् जय गंगे माता।

एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता, मैया शरण जो तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता, ओ3म् जय गंगे माता।
आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता, मैया जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता, ओ3म् जय गंगे माता।

आरती

दुर्गति-नाशिनि दुर्गा जय-जय, काल-विनाशिनि काली जय-जय।
उमा-रमा-ब्रह्माणी जय-जय, राधा-सीता-रुक्मिणि जय-जय।।
साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव जय शंकर।
हर-हर शंकर दुःखहर सुख कर, अघ-तम-हर हर हर शंकर।।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे हरे।।
जय-जय दुर्गा, जय मा तारा, जय गणेश जय शुभ-आगारा।
जयति शिवाशिव जानकि राम, गौरी शंकर सीताराम।।
जय रघुनन्दन जय सियाराम, व्रज-गोपी-प्रिय राधे श्याम।
रघुपति राघव राजा राम, पतितपावन सीताराम।।

आरती

ओम् जय जयेष्ठा माता, जय जय ज्येष्ठा माता।
तू ही कष्ट निवारे, हे माँ सुख दाता।। ओम् जय ज्येष्ठा
श्रद्धा भक्ति बढ़ाकर, तुम दारिद्र हरो।
सकल काम प्रदायिनी, दुःख माँ दूर करो।। ओम् जय ज्येष्ठा
महा दैत्य संहारी, तू माँ दुर्गति हारी।
महामोह हटा दो, ज्येष्ठेश्वर प्यारी।। ओम् जय ज्येष्ठा
माता खप्पर धारी, मेरी विपदा सारी।
दूर करो हे माता, प्रिय भक्तन प्यारी।। ओम् जय ज्येष्ठा
अमृत कुंड विराजे, कमल हाथ में साजे।
करे हित सभी का, निर्धन या राजे।। ओम् जय ज्येष्ठा
झूठी माया सारी, हम को लगती प्यारी।
अविद्या दूर करो, हे पीताम्बर धारी।। ओम् जय ज्येष्ठा
भक्ति बढ़ाने वाली, कोई युक्ति करो।
भयहारिणी माता तुम, भव भय सदा हरो।। ओम् जय ज्येष्ठा
हम अति दीन दुःखी माँ, तेरी आस खड़े।
जाने न विद्या कोई, तेरी शरण पड़े।। ओम् जय ज्येष्ठा
ओम् जय ज्येष्ठा माता, जय जय ज्येष्ठा माता।
तू ही कष्ट निवारे, हे माँ सुख दाता।। ओम् जय ज्येष्ठा

नवग्रहपीडाहर स्तोत्रम्

सूर्य	ग्रहाणाम्-आदिर्-आदित्यो-लोकरक्षण-कारकः, विषमस्थान-सम्भूतां-पीडा-हरतु-मे रविः।
चन्द्र	रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः, विषम-स्थान सम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः।
भौम	भूमिपुत्रो महातेजो जगतां भयकृत् सदा, वृष्टिकृद्-वृष्टि-हर्ता च पीडां हरतु मे कुजः।
बुधा	उत्पातरूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः, सूर्यप्रिय करो विद्वान, पीडां हरतु मे बुधः।
बृहस्पति	देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः, अनेक शिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः।
शुक्र	दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः, प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः।
शनि	सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः, मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः।
राहु	महाशिरो महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः, अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी।
केतु	अनेक-रूप-वर्णश्च शतशोथ सहस्रशः, उत्पादरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः।

नोटः- आप नवग्रहों का पुष्पार्चन या नवग्रह पूजा करना चाहते हैं तो 'विजश्येवर पंचांग कार्यालय' से नवग्रह पूजा पुस्तक तथा कैसट आपको मिल सकता हैं।

इन्द्राक्षी

अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्रमन्त्रस्य, पुरंदर-ऋषिः, अनुष्टप्-छन्दः, इन्द्राक्षी देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्। सकलकामना-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

अथ-ध्यानम्

इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीत-वस्त्राधरां शुभाम् वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणे चाभय-प्रदाम्।
सहस्त्र नेत्रां सूर्याभां नानालंकार-भूषिताम्, प्रसन्न वदनां नित्यम्-अप्सरो-गणसेविताम्।
श्री-दुर्गां सौम्य-वदनां पाशांकुशधरां परां, त्रौलोक्य-मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम।
ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्रीं प्रीं स्वाहा।

इन्द्र-उवाच

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता, गौरी शाकंभरी देवी दुर्गा-नाम्नीति-विश्रुता।
कात्यायनी महादेवी चन्द्र-घण्टा-महातपः, गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी।
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला, अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्री-स्तपस्विनी।

मेघ-श्यामा सहस्त्राक्षी, विष्णुमाया जलोदरी, महोदरी मुक्त-केशी घोररूपा महाबला।
आनन्दा-भद्रजा नंदा रोगहंत्री शिवप्रिया, शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी।
इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र-शक्ति-परायणा, महिषा-सुर-संहर्त्री चामुण्डा गर्भदवेता।
वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी, श्रुतिः स्मृति-धृति-मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती।
आनंदा विजया पूर्णा मानस्तोकाऽ पराजिता, भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा।
शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्ध-शरीरिणी, एतै-नीम-पदै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता।
आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्यं सुख-संपत्तिकारकम्, क्षय-पस्मार कुष्ठादि-ताप - ज्वर - निवारणम्।

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
जो ध्यावे फल पावे दुःखविनशे मन का, स्वामी दुःखविनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

मात-पिता तुम मेरे शरण पड़ूँ में किसकी, स्वामी शरण पड़ूँ में किसकी।
तुम बिन और ना दूजा आस करूँ में जिसकी, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

तुम-पूरण-परमात्म तुम अन्तर्यामी, स्वामी तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

तुम-करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता, स्वामी तुम पालन कर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति, स्वामी तुम सबके प्राणपति।
किस विधि मिलों दयामय तुमको मैं कुमति, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

दीन बन्धु दुःख हर्ता रक्षक तुम मेरे, स्वामी रक्षक तुम मेरे।
अपने चरण लगावो द्वार पड़ा में तेरे, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा, स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

प्रातः स्मरणीय स्तोत्र

एक-श्लोकी-नवग्रहस्तोत्रम्

ब्रह्मा-मुरारिः-त्रिपुरान्त-कारी,
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च,
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु केतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

एक श्लोकी रामायण

आदौ राम-तपोवनादि-गमनं, हत्वा मृगं कांचनं
वैदेही-हरणं जटायु-मरणं सुग्रीव सम्भाषणम्।
बाली निर्दलनं समुद्र तरणं लंकापुरी-दाहनं
पश्चात् रावण कुम्भकर्ण-हननं चैतत्-हि-रामायणम्।

अर्थः पहले राम का वनवास, सुवर्णमृग का मारना, रावण द्वारा सीता का हरण, जटायु का मरण, सुग्रीव के साथ प्रेम का वार्तालाप, बाली का मारना, समुद्र का लंघन, लंकापुरी का जलाना, अन्त में रावण कुम्भकर्ण का हनन।

एकश्लोकी भागवत्

आदौ देवकि-देवगर्भ जननं गोपीगृहे-वर्धनम्
माया-पूतनि-जीविताप-हरणं गोवर्द्धनो-द्धारणम्
कंस-च्छेदन कौरवादि-हननं कुन्ती सुता-पालनम्।
एतत्-भागवतं पुराण कथितं श्रीकृष्ण-लीलामृतम्।

अर्थः- पहले देवकी के गर्भ से भगवान् का जन्म, गोकुल में बाल कृष्ण का पालन पोषण, पूतना का मारना, गोवर्द्धन का उद्धार, कंस का मारना, कौरवों की विजय - यही है संक्षिप्त में भागवत् की कथा।

सप्तर्षि - स्मरणम्

कश्यपो-अत्रिः-भरद्वाजः, विश्वामित्रोऽथ गौतमः
जमदग्नि-र्वसिष्ठश्च सप्त-ते ऋषयः स्मृताः।

सप्तचिर-जीवि स्तुतिः

अश्वत्थामा बलि व्यासः, हनुमान् च विभीषणः
कृपः परशुरामश्च, सप्त-ते चिरजीविनः

पंचदेवी स्तुतिः

उमा उषा च वैदेही, रमा गंगेति पंचकम्
प्रातर्-एव स्मरेत्-नित्यं घोर-संकट-नाशनम्।।

पंचकन्या स्तुतिः

अहल्या द्रौपदी तारा, कुन्ती मन्दोदरी तथा
पंचकन्या स्मरेत्-नित्यं महापातक-नाशनम्।

सप्तपुरी स्तुतिः

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची ह्यवन्तिकाः।
पुरी द्वारवती चैव सप्तता मोक्षदायिकाः।।

हकारादि-पञ्चदेव स्तुतिः

हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुध्म
पंचकं हं स्मरेत्-नित्यं घोर-संकटनाशनम्

प्रातर्वन्दनीय स्तुतिः

प्रातः काले पिता-माता, ज्येष्ठा-भ्राता तथैवच
आचार्याः स्थाविराः चैव, वन्दनीया दिने दिने।

अर्थः- पिता, माता, ज्येष्ठ भाई, आचार्य तथा सभी वृद्ध। इन को प्रातःकाल प्रणाम करना चाहिए।

मातृतीर्थम्

नास्ति मातृसमं तीर्थं पुत्राणां तारणाय च
हितायात्र परत्रार्थं यैस्तु माता प्रपूजिता।

अर्थः- माता के समान कोई तीर्थ नहीं है-जो पुत्र माता का आदर करता है उस के इहलोक तथा परलोक का सुधार होता है।

पितृ तीर्थम्

वेदैर्-अपि च किं पुत्र ! पिता येन प्रपूजितः
एष पुत्रस्य वै धर्म-स्तथा तीर्थं नरेष्विह।।

अर्थः- हे पुत्र जो पिता का आदर करता है, उस को वेद पढ़ने की आवश्यकता नहीं, पिता ही पुत्र का धर्म है, पिता ही पुत्र का तीर्थ हैं।

मृतसंजीवनी मंत्र

इस मन्त्र से शिलिंग पर दूध सहित जल चढ़ाने से रोगी को शीघ्र आराम मिलता है।

ॐ हौं जूं सः, ॐ भूभुर्वः स्वः, ॐ त्र्यम्बकं यजामहे, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं, ॐसुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्, ॐ भर्गो देवस्य धीमहि, ॐ उर्वारुकमिव बन्धनाद्, ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्, ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्, ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौ ॐ।

सूर्य उपासना

शास्त्रों में दर्ज है सूर्य की उपासना से आरोग्य की प्राप्ति होती है। अतः नहाने तथा मुख प्रक्षालन के पश्चात् सूर्य की ओर मुख करके प्रणाम करते हुये पढ़ें:-

ॐ मित्राय नमः। ॐ रवये नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ भानवे नमः। ॐ खगाय नमः। ॐ पूष्णे नमः। ॐ हिरण्यगर्भाय नमः। ॐ मरीचये-नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ सवित्रे नमः। ॐ अर्काय नमः। ॐ भास्कराय नमः। ॐ मित्र-रवि-सूर्य-भानु-खग-पुष्प-हिरण्यगर्भ-मरीच्यादित्य सवित्रार्क-भास्करेभ्यो नमः।

असाध्य रोग निवृत्ति मंत्र

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि-तृष्टा
रुष्टा तु कामन्-सकलान्-अभीष्टान्।
त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणाम्
त्वाम्-आश्रिता ह्यश्रियतां प्रयान्ति।।

दुर्गा सप्तशती का सारभूत मंत्र

जिस घर में इस मंत्र की गूंज होगी उस घर में लक्ष्मी, सतबुद्धि श्रद्धा, लज्जा, हर समय विद्यमान रहती है।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः,
श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताःस्म परिपालय देवि! विश्वम्।

नवग्रहों के छोटे तथा आसान मन्त्र

"सूर्य" ओ३म् रं रवये नमः।
"चन्द्र" ओ३म् सौं सोमाय नमः।

"भौम" ओ३म् भौं भौमाय नमः।
"बुध" ओ३म् बं बुधाय नमः।
"गुरु" ओ३म् गुं गुरवे नमः।
"शुक्र" ओ३म् शुं शुक्राय नमः।
"शनि" ओ३म् शं शनैश्चराय नमः।
"राहु" ओ३म् राम् राहवे नमः।
"केतु" ओ३म् कैं केतवे नमः।

बारह राशियों के मन्त्र

मेषः- ओ३म् ह्रीं श्रीं श्रीलक्ष्मीनारायाणाय नमः।
वृषः- ओ३म् गोपालाय उत्तरध्वजाय नमः।
मिथुनः- ओ३म् क्लीं कृष्णाय नमः।
कर्कः- ओ३म् ह्रीं हिरण्यगर्भाय अव्यक्तरूपिणे नमः।
सिंहः- ओ३म क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराय नमः।
कन्याः- ओ३म् पीं पीताम्बराय नमः।
तुलाः- ओ३म् तत्त्वनिरंजनाय तारक रामाय नमः।
वृश्चिकः- ओ३म नारायणाय सूरसिंहाय नमः।
धनुः- ओ३म् श्रीं देवकृष्णाय ऊर्ध्वजाय नमः।
मकरः- ओ३म् श्रीं-वत्सलाय नमः।
कुम्भः- ओ३म् श्रीं उपेन्द्राय अच्युताय नमः।
मीनः- ओ३म् क्लीं उद्धृताय उद्धारिणे नमः।

हर प्रकार के मंगल प्राप्ति का मन्त्र

सर्व मंगल मंगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके,
शरण्ये त्रयम्बके, गौरि नारायणि नमोस्तुते।

विपित्ति नाश का मंत्र

शरणागत दीनार्त-परित्राण परायणे,
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते।

सभी उलझनों से छुटकारा पाने का मंत्र

सर्वाबाधा-विर्निमुक्तो-धन धान्य-समन्विताः
मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति-न संशयः।

भय नाश का मन्त्र

सर्वस्वरुपे-सर्वेशे सर्वशक्ति-समन्विते
भयेभ्यः त्राहि नो देवि ! दुर्गे देवि नमोस्तुते।

आरोग्य तथा सौभाग्य मंत्र

देहि सौभाग्यम आरोग्यं देहि मे परमं सुखम्,
रूपं देहि जयं-देहि यशो देहि द्विषो जहि।

विद्या प्राप्ति का मन्त्र

कृष्ण कृष्ण महाकृष्ण सर्वज्ञ त्वं प्रसीद मे,
रमा-रमण विश्वेश, विद्याम्-आशु प्रयच्छ मे।।

हर प्रकार के उलझनों से मुक्त होने के लिए शीघ्र सिद्धि देने वाला शिव मंत्रः-

भगवान् शंकर के डमरु से प्राप्त 14 सूत्रों का एक ही श्वास में बोलने का अभ्यास करें-शरीर को स्वस्थ रखने के लिए इस मन्त्र का उच्चारण किया जाता है, बुखार मृगी आदि बेहोशी के रोग के समय इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये छींटे दिये जाने से रोग की निवृति होती हैः-

मन्त्रः- अ इ उण्। ऋ लृक्। ए ओङ। ऐ औच्। ह य व र ट्। लण्। ञ, म, ङ ण नम्। झ भ ङ् घ ड ध श। ज ब ग ड् - द श। ख फ छठ थ - च ट, तव्। क, प, य्। शष सर्। हल्।

संतान प्राप्ति का मंत्र

देवकी सुत गोविन्द ! वासुदेव जगत्पते
देहि से तनयं कृष्ण। त्वाम् - अहं शरणं गतः।

सामूहिक कल्याण मंत्र

देव्या यया ततमिदं जगदात्म शक्त्या,
निश्शेष देव गण शक्तिसमूह मूर्त्या।
तामम्बिकाम खिलदेव महर्षि पूज्यां,
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः।।

शुभ फल की प्राप्ति का मंत्र

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी।
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।

पाप नाश का मंत्र

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव।।

महामारी नाश का मंत्र

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।

दारिद्र्यदुःखादिनाश का मंत्र

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम शेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिम् अतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकार करणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।

रक्षा पाने का मंत्र

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।

प्रसन्नता प्राप्ति का मंत्र

प्रणातानां प्रसीद त्वं देवि विश्वोर्तिहारिणि।
त्रैलोक्य वासिनाम् ईड्ये लोकानां वरदा भव।।

पापनाश तथा भक्ति प्राप्ति का मंत्र

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

मोक्ष प्राप्ति का मंत्र

त्वं वैष्णवी शक्तिर् अनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहित देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।

अन्नपूर्णा स्तुतिः

ज्योहि अन्न की थाली आप के सामने आये। तो इस श्लोक का उच्चारण करना चाहिये।

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राण वल्लभे।
ज्ञान वैराग्य सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति।।

अर्थः- जो सदा पूर्ण शंकर की प्राण प्रिया पार्वती है वह अन्न पूर्णा है उससे मैं ज्ञान वैरागय और शुभ कामनाओं के सिद्धि के लिये अन्नरूपी भिक्षा मांगता हूँ।

पुरुष-सूक्तम्

पुरुषमेधाः पुरुषस्य नारायणस्यार्षम्।
ॐ सहस्रशीर्षा, पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
सभूमिं विश्वतो वृत्वा त्यतिष्ठत् दशाङ्गुलम्।।
पुरुष एवेदं सर्वं यत् भूतं चत् च भव्यम्।
उत्तामृत त्वस्ये शानो, यत् अन्नेनाति रोहति।।
एतावानस्य महिमातो ज्यायान-च, पुरुषः।
पादोस्य, विश्वा भूतानि त्रिपाद् अस्या मृतं दिबि।।
त्रिपात् ऊर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः।
ततो विश्वं व्याक्रामत् साशना नशने अभि।।
तस्मात् विराड् अजायत विराजो अधिपुरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत, पश्चात् भूमिम्-अथो पुरः।।
यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञम्-अतन्वत।
वसन्तो अस्यासीत्-आज्यं ग्रीष्म इध्मः शरत् हविः।।
तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन् पुरुषं जातम्-अग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।।
तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषत् आज्यम्।
पशून् तान् चक्रे वायव्यान् आरण्यान् ग्राम्यांश्चये।।
तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजु तस्मात् अजायत।।
तस्मात्-अश्वा-अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः।।
यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू का उरू पादा उच्यते।।
ब्रह्माणोस्य मुखं-आसीत्-बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यत् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।।
चन्द्रमः मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखात् इन्द्रश्चाग्निश्च प्राणात् वायुः अजायत।।
नाभ्या आसीत् अन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमि दिशः श्रोत्रात् तथा लोकान्-अकल्पयन्।।
सप्तास्या सन् परिधयः त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यत् यज्ञं तन्वाना आबध्नन् पुरुषं पशुम्।।
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन्
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्या सन्ति देवाः।।

सूर्याष्टकम्

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते।।
सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम्।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
बृंहितं तेजःपुञ्जं च वायुमाकाशमेव च।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
बन्धूकपुष्पसङ्काशं हारकुण्डलभूषितम्।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेजःप्रदीपनम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।

शांतिपाठ

भद्रंकर्णेभिः शृणुयाम देवाः, भर्द्रं पंश्येमाक्षिभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैः तष्टुवांसस्तनूभि व्र्यशेम देवहित यदायुः, स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः

स्वस्तिनः ताक्ष्यों अरिष्टनेमीः स्वस्ति नो बृहस्पतिः दधातु।।1।।

स्वस्तिप्रजाभ्यः परिपालयन्तां, न्यायेन मार्गेण महीं महीपाः।

गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं, लोकाः समस्तः सुखिनो भवन्तु।।2।।

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी। देशोयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः ।।3।।

दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिम् आप्नुयात्। शान्तिम् उच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्।।4।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।5।।

राजस्वस्ति प्रजास्वस्ति देशस्वस्ति तथैव च। यजमान गृहे स्वस्ति, स्वस्ति गोब्राह्मणेषु च ।।6।।

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियं रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।7।।

शन्नो मित्रः, शं वरुणः, शन्नो भवत्वर्यमा, शन्नो इन्द्रो बृहस्पतिः, शन्नो विष्णुरुरुक्रमः, नमो ब्रह्मणे, नमो व्रायवे, नमस्ते वायो, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि, त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि, ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि, तन्मामवतु, तद्वक्तारमवतु, अवतु मामवतु वक्तारं, शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।8।।

सह नौ अवतु, सह नौ भुनक्तु, सहवीर्य करवावहै,

तेजस्विनाम् अधीतमस्तु माद्विषावहै शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।9।।

गायत्री मन्त्र का महत्व

गायत्री की महिमा सभी वेदों तथा पुराणशास्त्रों में सविस्तार दर्ज है—अथर्व-वेद में स्वयं वेद्भगवान का कहना है-

"स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्, आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्"।

अर्थः— मेरे द्वारा स्तुति की गई द्विजों को पवित्र करने वाली वेदमाता गायत्री आयु प्राण सन्तति पशु कीर्ति धन ब्रह्मतेज देने वाली है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्-सवितुर् वरेण्यं, भर्गो-देवस्य धीमहि, धियो यो-नः प्रचोदयात्।

*अर्थः— मैं उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ जो शक्ति ॐ ब्रह्मरूप हैं, **भूर्भुवः स्वः** जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है, **तत्**-जिस को वेदों ने तत् नाम से पुकारा है **सविता**-जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती है, पालन करती है, नाश करती है, "**वरेण्यम्**" जो वरण करने के योग्य है, **भर्गः**- जो तेजो रूप है, **देवः** जो द्योतनशील है, अथवा ऐश्वर्य वाली है, ऐसी उस महान् शक्ति का **धीमहि**-चिन्तन करता हूँ, वह शक्ति '**धियः**' मेरी बुद्धि को, **प्रचोदयात्**- सत् कर्मों में प्रेरित करे।*

गायत्री मन्त्र का महत्व क्यों? *शब्द नित्य है (शब्द ब्रह्म) वर्तमान विज्ञान भी यही मानता है, आज जो **बातें** हम करते हैं, अथवा हमारे मन की लहरें आकाश में अथवा सृष्टि के अन्तराल में किसी न किसी रूप में **विद्यमान** रहती है, सृष्टि के आरम्भ से ही ऋषि मुनि साधक गायत्री मन्त्र के अनुष्ठान करते आये हैं, उन ऋषियों मुनियों साधकों की साधनायें भावनायें तपश्चर्यायें इस छोटे से गायत्री मन्त्र के पीछे तेजोपुंज के रूप में एकत्रित है, जो व्यक्ति इस गायत्री मन्त्र का उच्चारण अथवा जप करता है उस साधक की सफलता में वह तेजोपुंज*

अवश्य सहायक बनता है, साधक ज्यों ही इस मन्त्रराज का जप अथवा उच्चारण करने लगता है तो उसी क्षण मंत्र के प्रभाव का अनुभव करने लगता है, यही है इस गायत्री मन्त्र के महत्त्व का रहस्य।

गायत्री जप विधिः

शुद्ध आसन पर पद्मासन में पूर्व की ओर मुख कर के पानी का एक लौटा और एक थाली तर्पण के लिये रख कर नमस्कार करते हुए पढ़े (यदि नदी के तट पर करना हो तो थाली की आवश्यकता नहीं):-

प्रणवस्य ऋषि र्ब्रह्मा गायत्रं छन्द एवच, देवोग्नि-र्व्याहृतिषु च विनियोगः प्रकीर्तितः, प्रजापते-र्व्याहृतयः पूर्वस्य परमेष्ठिनः। व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च ब्राह्मम्-अक्षरम्- ओम्-इति। व्याहृतीनां समस्ताना दैवतं तु प्रजापतिः, व्यस्तानाम्-अयम्-अग्निश्च वायुः सूर्यश्च-देवताः। छन्दश्च व्यहृतीनाम्-एकाक्षराणाम्-उक्ताख्यम्-द्वयक्षराणाम्- अत्युक्-ताख्यम् विश्वामित्रा-ऋषि-श्छन्दो, गायत्रं सविता तथा, देवतो-पनये जप्ये गायत्र्यै योग उच्यते आवाहयामि गायत्रीं, सर्व-पाप-प्रणाशि-नीम्। न गायत्र्याः परं जप्यं, नव्याहृति-समं हुतम्, आगच्छ वरदे देवि, जप्ये मे सन्निधौ भव। गायन्तं त्रायसे यस्मात्-गायत्री त्वं ततःस्मृता, अग्नि- र्वायुश्च सूर्यश्च बृहस्पत्याप-एव-च, इन्द्रश्च-विश्वे-देवाश्च देवताः सम्-उदाहृताः। एवम्-आर्ष-छन्दो दैवतं विनियोगं चानुस्मृत्य। गायत्र्या शिखाम्-अवद्ध्य गायत्र्यैव समन्ततः, आत्मन-श्चापः वरिक्षिप्य, प्राणायामं कुर्यात्, ओजोसीति गायत्रीम्-आवह्य देवानाम्-आर्षम् (अपने आप को पानी छिड़कें अंजलि धारण करते हुये पढ़ेः- ओजोसी सहोसि बलम्-असि भ्राजोसि देवानां धाम

नामासि, विश्वम्-असि-विश्वायुः सर्वम्-असि-सर्वायुः, अभि-भूः-अंगन्यास-कीजिये दोनों हाथों की ऊँगलियों से स्पर्श करते हुये पढ़ें: "अ" नाभौ (नाभिको) "उ" हृदि (हृदय को) "म" शिरसि (सिरको)।। ॐ "भू"-अंगुष्ठाभ्यां नमः (दोनों अंगूठों को) भुवः तर्जनीभ्यां नमः (अंगूठे के साथ वाली ऊँगलियों को), "स्वः" मध्यमाभ्यां नमः (बीच वाली ऊँगलियों को) "महः" अनामिकाभ्यां नमः, (सब से छोटी की साथ वाली ऊँगलियों को "जनः" कनिष्ठकाभ्यां नमः (छोटी ऊँगलियों को "तपः सत्य" करतल पृष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथ के तलवों को आपस में स्पर्श करें। "भू" पादयोः (पावों को) "भुवः" जान्वोः (गुठनों को) "स्वः" गुह्ये (गुह्यस्थान को) "महः नाभौ" (नाभि को) "जनः" हृदि (हृदय को) "तपः" कण्ठे (गले को) "सत्यं" शिरसि (सिर को), ॐ "भूः" हृदयाय नमः "भुवः" शिरसि स्वाहा, "स्वः" शिखायै वौषट् (चोटी को) महः कवचाय हूँ, (वस्त्रों को) जनः नेत्राभ्यां वौषट् (नेत्रों को) "तपः" सत्यम्-अस्त्राय "फट्" चुटकी मारे।। "तत्-सवितुर्" अंगुष्ठाभ्यां नमः, "वरेण्यं" तर्जनीभ्यां नमः, "भर्गो-देवस्य मध्यमाभ्यां नमः", "धीमहि" अनामिकाभ्यां नमः, "धियो योनः" कनिष्ठकाभ्यां नमः, "प्रचोदयात्" करतल करपृष्ठाभ्यां नमः तत् "पादयोः सवितुर्" जान्वोः (गुठनों को) "वरेण्यं" कट्या कमर को, भर्गो नाभौ "देवस्य" हृदये "धीमहि" कण्ठे "धियोः" नासिकायां "यो" चक्षुषोः (नेत्रों को) "नः ललाटे" (माथे को) "प्रचोदयात्" शिरसि,। "तत् सवितुर्" हृदयाय नमः, "वरेण्यं" शिर-से स्वाहा, "भर्गो देवः" शिखायै वौषट् 'धीमहि' कवचाय हूँ (वस्त्रों को "धियो योनः "नेत्राभ्यां वौषट् "प्रचोदयात् अस्त्राय फट्" (चुटकी मारिये) "आपः" स्तनयोः (स्तनों को) "ज्योतिः" नेत्रयोः,

"रसो" मुखे "अमृतं" ललाटे "ब्रह्म-भूभूर्वः स्वरों (शिसि) प्राणायाम करके तर्पण कीजियेः-
"ॐ अस्य गायत्री शापविमोचन-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि गायत्री छन्दः वरुणो देवता ब्रह्मशाप-विमोचने विनियोगः।

शाप विमोचन

ओ३म्-यत्-ब्रह्मेति ब्रह्मविदो विदुः-त्वां पश्यन्ति धीराः।
सुमनसो-वा गायत्री त्वं ब्रह्मशापात्-विमुक्ता भव ।।1।।
ओ३म्-अर्क-ज्योतिर् अहं ब्रह्मा ब्रह्म ज्योतिर्-अहं शिवः।
शिव-ज्योतिर्ःअहं विष्णुः शिव-ज्योतिः शिवः परम् ।।2।।
गायत्री त्वं वशिष्ठ शापात्-विमुक्ता भव।
ॐ अहो देवि महादेवि दिव्ये सन्ध्ये सरस्वति।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनि नमोस्तुते।
गायत्री त्वं विश्वामित्रा-शपात्-विमुक्ता भव ।।3।।

गायत्री का ध्यान करते हुये पढ़ेः-

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवल, छायै-र्मूखैः-त्रीक्षणैः

युक्ताम्-इन्दु-निबद्ध-रत्न-मुकटां, तत्त्वात्म-वर्णात्मिकाम्
गायत्रीं वरदा-भया-ङ्कुश-करां शूलं कपालं गुणं
शंखं चक्रम्-अथार-बिन्दु-युगलं हस्तै-र्वहन्तीं भजे ।।1।।
आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्री छन्दसां-मात-र्ब्रह्म-योने नमोस्तुते ।।2।।

यह मन्त्र तीन बार पढ़ कर गायत्री मन्त्र का जप करें।

"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्-वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ

यदि माला से जप करना है तो जप समाप्त करके माला सिर पर रख कर प्राणायाम करके तर्पण करते हुये पढ़ेः-

देवा-गातु-श्रोत्रियाः देवा गातुविदो, गातुं वित्वा-गातु-मित मनसस्-पत-इमं देवयज्ञं स्वाहा, वाचे स्वाहा वातेघाः नमोः धर्मनिधनाय नमः सुकृत-साक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः।

जप करने का स्थानः घर के उस कमरे में जप करें जहां आप की एकाग्रता में किसी प्रकार का विध्न न पड़े, नदी के तट करना अधिक लाभदायक रहता है।

क्या महिलाओं को गायत्री साधना जप अनुष्ठान आदि करने का अधिकार हैं?

वेदों शास्त्रों पुराणों के स्वाध्याय से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष हो या स्त्री उपासना के अधिकारी हैं, प्राचीनकाल में गार्गी, मैत्रेयी देवयानी, लोपामुद्रा आदि महिलाओं ने गायत्री शक्ति की उपासना से ही आत्मा को समुन्नत बनाया था सावित्री ने एक वर्ष तक गायत्री मंत्रा की साधना की थी जिस साधना से ही वह अपने पति को

यमराज से लौटा सकी। स्त्री और पुरुष दोनों ही गायत्री माता की सन्तान है, स्त्री सधवा हो या विधवा अपने जीवन को सफल बनाने के लिये गायत्री मन्त्र का जप किया करें।

कन्याओं को भी यज्ञोपवीत संस्कार का अधिकार है (धर्मशास्त्र)

शास्त्रों में दरज है कि वैदिक संस्कृति में कन्याओं को यज्ञोपवीत ग्रहण करने का वैसी ही अधिकार है जैसा बालकों को, वैदिक काल में स्त्रियां वेद-शास्त्र पढ़ा करती थी। गोभिलीय गृह्य सूत्र में लिखा है:-

प्रावृतां यज्ञोपवीतिनीम अभ्युदानयन् जपेत् सोमोऽददत् गन्धर्वाय इति

अर्थातः- कन्या को कपड़ा पहने हुये, यज्ञोपवीत धारण किये हुये पति के निकट लाये तथा यह मन्त्र पढ़ें। इस मन्त्र से स्पष्ट है कि कन्या यज्ञोपवीत किये हुये हो। यह श्लोक भी इसकी पुष्टि करता है।

पुराकल्पे हि नारीणां मौञ्जीबन्धन मिष्यते। अध्यापनं च वेदानां सावित्री वाचनं तथा।।

अर्थातः- प्राचीन काल में स्त्रियों का मौञ्जीबन्धन-संस्कार होता था, वे वेदादि शास्त्रों का अध्ययन भी करती थी। हारीत संहिता तथा पराशर संहिता में कहा है।

"द्विविधा स्त्रियां ब्रह्मावादिन्यः, सद्योवध्वश्च। तत्र ब्रह्मवादिनीनाम् उपनयनम्, अग्निबन्धनम्, वेदाध्ययनम् स्व-गृहे भिक्षा इति, वधूनाम तु उपस्थिते विवाह कथंचित उपनयनं कृत्वा विवाहः कार्यः"।

अर्थात्:- दो प्रकार की स्त्रियां होती हैं एक 'ब्रह्मवादिनी' जिन का उपनयन होता है, जो अग्निहोत्र करती है, वेदाध्ययन करती है अपने परिवार में ही भिक्षावृति से रहती है और दूसरी वे जिन का उपनयन संस्कार करके विवाह होता है। इसकी पुष्टी 'निर्णय सिन्धुकार' ने भी अपने पुस्तक के पृष्ट 414 पर की है।

वेद मन्त्रों के अर्थों को स्पष्ट करने वालों को 'ऋषि' कहा जाता है "ऋषयो मन्त्र द्रष्टारः' कई वेद मन्त्रों के अर्थ खोलने वाली 'ऋषिकायें' भी हुई है ऋग्वेद में इस प्रकार की लगभग 30 ऋषिकाओं के नाम आते हैं जैसे गार्गी, मैत्रेयी, मदालसा, अनुसूय्या, देवयानी, अहिल्या, कुन्ती, द्रोपदी इत्यादि गायत्री की उपासक रही है।

इसके अतिरिक्त मनु महाराज प्रत्येक धर्म कार्य में स्त्री-पुरुष का समान अधिकार मानते है। मनु ने घर में अग्निहोत्र आदि धर्मकार्यों के आयोजन की मुख्य जिम्मेदारी स्त्री को ही सौंपी है और यह आदेश दिया है कि पुरुष को प्रत्येक धर्म कार्य स्त्री को साथ लेकर करना चाहिये जैसे "शोचे धर्म अन्नपक्त्यां" अर्थात् घर की शुद्धि, धर्मकार्यों का आयोजन और भोजन बनाना आदि स्त्री को सौंपा है मनु ने संस्कारों को सभी के लिये समान रूप दिया है वहां पर स्त्री-पुरुष का कोई भेद नहीं है सभी संस्कार मन्त्रपूर्ववती करने चाहिये वह स्त्री का हो या पुरुष का संस्कार ब्रह्मण वर्ग के लिये जरूरी है चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष।

काश्मीरी पण्डित लौगाक्ष के 24 संस्कारों को ही मानते हैं हम लड़की के केवल 9 संस्कार करते है। और लड़के के 24 संस्कार। मनु स्मृति में लिखा है 'जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्चते' अर्थात् संस्कार करने पर ही हम अपने आप को ब्रह्मण कहला सकते हैं। शास्त्रों में लिखा है कि लड़की माता-पिता का क्रिया कर्म कर सकती है तथा लड़की अपने माता-पिता का दाह संस्कार भी कर सकती है परन्तु धर्म शास्त्र में यह भी लिखा है कि यज्ञोपवीत के बिना हम कोई भी धार्मिक कार्य अथवा क्रिया कर्म नहीं कर सकते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में कन्याओं का यज्ञोपवीत संस्कार होता था। यह बात भी है कि जब हम अपने लड़के का विवाह करते हैं तो लग्न के समय लड़के को छः धागों वाला यज्ञोपवीत पहनाते है और लड़के से कहता है कि पहले आप को तीन धागों वाला यज्ञोपवीत था अब छः धागों वाला यज्ञोपवीत है इसमें से तीन धागे आप को अपनी स्त्री के हैं अर्थात् आप को आज से अपनी स्त्री के धार्मिक कार्यों का चार्ज भी लेना है क्योंकि उसको गृहस्थ का पूरा कार्य है तथा बच्चों की देखभाल करनी है इस से स्पष्ट होता है कि लड़की को भी यज्ञोपवती धारण करने का अधिकार था परन्तु समय बीतने के साथ-साथ यह संस्कार केवल लड़कों तक ही सीमित रहा है जैसे कर्ण वेध का संस्कार पहले पहले दोनों

लड़कों तथा लड़कियों को करते थे परन्तु समय बीत जाने के साथ-साथ यह संस्कार केवल लड़कियों तक ही सीमित रहा। आप किसी वृद्ध माता जी से भी पूछें कि पहले पहल स्त्रियां भी लंगोट तथा आटीपन लगाती थी, आटीपन को मेखला कहते है जो कि यज्ञोपवती संस्कार पर ही कमर में बांधा जाता है इससे भी स्पष्ट होता है कि पहले पहल लड़कियों को भी यज्ञोपवीत संस्कार किया जाता था।

सम्पादक:

यज्ञोपवीत कब?

काश्मीरी पण्डित यज्ञोपवीत को विशेष महत्वपूर्ण स्थान देते आये हैं जबकि काश्मीरी पण्डितों का गायत्री मन्त्र सामूहिक गुरुमन्त्र है, यह संस्कार काश्मीरी पण्डितों की संस्कृति का अंग बन चुका है। धर्म शास्त्र की आज्ञा है यह संस्कार ब्राह्मण को 7वें वर्ष से 16 वर्ष तक करना चाहिये, प्राचीनकाल में यह संस्कार गुरुकुल में किया जाता था फिर तब से ब्रह्मचारी गुरुकुल में ही ठहरता था-चूँकि विद्यार्थी गुरुकुल में वेदों का पठन पाठन शास्त्र विद्या तथा शस्त्र विद्या यहां तक कि प्रत्येक प्रकार की विद्या को प्राप्त करता था तथा ब्रह्मचर्य का पालन 25 वर्ष तक करता था इसलिये उन विद्यार्थियों को ब्रह्मचारी कहते थे, जब ब्रह्मचारी गुरुकुल से विद्या सम्पूर्ण करके घर वापस आता था उसको समावर्तन कहते थे-गर्भ से लेकर यज्ञोपवती तक के 8 संस्कार बालक को घर में ही किये जाते थे। यज्ञोपवीत से लेकर 16 संस्कार काश्मीरी पण्डित ब्रह्मचारी को गुरुकुल में ही करते थे जो सभी संस्कार वेदों के पठन-पाठन से सम्बन्धित होते थे-"वेद" कहते हैं ज्ञान को, वह इंजीनरी हो या साइंस अथवा डाक्टरी आदि। समय बदलता है तो समय के साथ मनुष्य को भी बदलने पर विवश होना पड़ता है। अब हम यज्ञोपवीत संस्कार गुरुकुल के बदले घर में की करते हैं, केवल यज्ञोपवती ही नहीं बल्कि गर्भ से लेकर समावर्तन तक के सभी 24 संस्कार एक ही दिन में यज्ञोपवती के दिन ही करते हैं, मानिये अब यह संस्कार हम केवल अपनी प्राचीन संस्कृति को स्मारक रूप में जीवित रखने के लिये ही करते हैं।

आप के युग में गुरुकुलों का स्थान लिया है कॉलिजों और यूनिवर्सिटियों ने, वर्तमानकाल में जब तक एक विद्यार्थी वेदाभ्यास यानी ईंजीनरी, डाक्टरी व साईंस आदि कोई ट्रेनिंग कर रहा है वह विद्यार्थी तब तक ब्रह्मचारी ही कहलायेगा यदि दैवयोग से किसी कारण वश इस अवस्था तक विद्यार्थी का यज्ञोपवती न किया हो अवश्य कीजिये।

धर्मशास्त्र

धर्मिक रीति रिवाज संस्कृति के ही अंग माने जाते हैं, परन्तु जब वे रीति रिवाज धर्मशास्त्र के आधार पर हों। कहीं-कहीं धर्मशास्त्रों में मतभेद पाया जाता है, ऐसी दशा में देशाचार की भी प्रामाण्यता होती है-इन बातों को ध्यान में रखकर ही धर्मशास्त्र की चन्द बातें समय-समय पर काम आने वाली निम्नलिखित हैं।

सगोत्रः- जिन का आपस में एक ही गोत्र हो सगोत्री कहलाते हैं- सगोत्रियों का आपस में विवाह करना निषेध हैं, मातृपक्ष से चार पीढी तक पितृपक्ष से पांच पीढी तक विवाह नहीं कर सकते हैं।

दत्तकः- (मंगत लाना) अपने खानदान से दत्तक लाना धर्मशास्त्र के अनुसार उत्तम माना जाता है, दूसरे वंश का भी दत्तक लाया जा सकता है, साला (पत्नी का भाई) दत्तक लाना धर्मशास्त्र से निषेध है।

मुण्डनः- माता अथवा पिता के मरने पर मुण्डन करना पुत्र के लिये आवश्यक है, यदि बड़ा लड़का घर में न हो अथवा किसी कारण से क्रिया कर्म दाह संस्कार आदि न कर सके तो कोई भी पुत्र कर सकता है।

क्रिया कर्म का अधिकारी पुत्र, दाह संस्कार पर घर में न होने पर बाहरवें दिन तक जिस दिन भी घर पहुँचे उस दिन से ही व्रतधारी रह कर क्रिया कर्म कर सकता है, परन्तु क्रिया कर्म आरम्भ करने से पहले मुण्डन करना आवश्यक है।

अशौचः- दो प्रकार का होता है, जन्म का अशौच जिसे सूतक कहते हैं और दूसरा मरने का अशौच, जिस

को मृतक कहते हैं, अशौच दस दिन तक रहता है, बिना विवाह के कन्या का पिता के घर में मृत्यु हो तो तीन दिन का अशौच होता है विवाहित लड़की को 10 दिन के अन्दर जिस दिन भी माता-पिता के मृत्यु का सन्देश मिले तो उस दिन से लड़की को तीन दिन का अशौच होता है।

दो. अशौचः- एक साथ दो अशौच होने पर पहले अशौच के समाप्त होने पर ही दूसरे अशौच की भी शुद्धि होती है, उदाहरण के रूप में, किसी के पिता की मृत्यु होती है उस के दसवें दिन से पहले किसी दिन (पैतृव्य) चाचा की मृत्यु हो ऐसी दशा में जिस दिन पहला अशौच समाप्त होता है उसी दिन दूसरा अशौच भी समाप्त होता है, यदि जन्म के अशौच पर मरने का अशौच पड़े तो मरने का अशोच समाप्त होने पर ही शुद्धि होती है यदि दसवें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो दूसरा अशौच समाप्त होने पर ही शुद्धि होती है, ऐसी स्थिति में दूसरा अशौच समाप्त होने पर दो दिन के लिये अधिक अशौच रहता है, यदि 11वें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो अशौच समाप्त होने के बाद अधिक तीन दिन तक अशौच रहता है। सूतक का अशौच हो या मृतक का अंशौच 11वां दिन करना आवश्यक है, 12वां दिन अशौच समाप्त होने के पश्चात् भी किया जाता है, षड्मासिक पर भी किया जा सकता है।

छलुनः- दसवें दिन तक छलुन आवश्यक है, यदि लड़की दसवें दिन तक छलुन का कार्य न करे तो उस को ग्याहरवें, बाहरवें दिन के क्रियाकर्म में सम्मिलित होने का अधिकार नहीं है, छलुन के लिये शुभवार होनी चाहिये, यह बात याद रखिये हिन्दू संस्कृति के अनुसार एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक वार होती है जिस समय छलुन हो शुभवार होनी चाहिये, शुभवार है सोमवार, बुधवार, शुक्रवार और बृहस्पतिवार पंचक छलुन के लिये निषेध है।

अस्थि संचयः- अस्थियां मृत्यु के पश्चात् दस दिन के अन्दर ही गंगा में प्रवाहित करें यदि ऐसा न कर सके तो एक वर्ष के अन्दर किसी भी दिन प्रवाहित करें। यदि बच्चा मरा हुआ उत्पन्न हो अथवा उत्पन्न होते ही मरे उस बच्चे को लट्टठे में लपेट कर पृथ्वी को अर्पण करें, घर से गोद में उठाकर गड्ढा खोदने तथा पृथ्वी में अर्पण

करने के समय तक लगातार "ॐ नमः शिवाय" मन्त्र का बार-बार उच्चारण करें, दाँत निकलने तक जिस बच्चे का मृत्यु हो जाये उसका दाह संस्कार न करें अपितु उस को भी पृथ्वी अर्पण करें, दान्त निकलने के पश्चात् जो बच्चा मरे उस का दाह संस्कार करें, यज्ञोपवीत संस्कार के बिना कोई भी लड़का किसी भी आयु का हो उस की मृत्यु होने पर दाह संस्कार के पश्चात् दसवाँ दिन अवश्य करें, 11वां और बारहवां दिन न करें, उस बालक के निमित आने वाले किसी शुभवार पर बालकों को भी पूरी भोजनादि से तृप्त करें, उस मृतक बालक को जिन वस्तुओं पाठ्य पुस्तकों की ओर प्रवृति हो किसी निर्धन-विद्यार्थी को ऐसी वस्तुयें पुस्तकें वस्त्रादि दानरूप में दीजिये, या कोई आर्थिक सहायता कीजिये ताकि उसकी पढ़ाई आगे चल सके। **"श्रद्धया-देयम्-अश्रद्धया-देयम्"** देना ही शान्ति का मार्ग है।

श्राद्धः- श्राद्ध की जो तिथि हो, पंचांग में उस मास की वह तिथि देखें, यदि उस तिथि के साथ "दि" का चिन्ह हो तो श्राद्ध एक दिन पहले होता है, यदि "प्र" की निशानी हो तो श्राद्ध अपने ही दिन होगा, दिवा-प्रविष्ठ के आधार से पंचांग में, श्राद्ध और मध्याह्न" दर्ज है वहीं से देखिये। श्राद्ध के दिन अधिक भोजन न खायें, दिन को न सोये, ब्रह्मचर्य का पालन करें, दूसरे घर में खाना न खाइये, शराब अथवा किसी मादक द्रव्य का प्रयोग न कीजिये।

मासिक श्राद्ध (मासवार):- मासवार की जो तिथि हो उस तिथि का मध्याह्न देखना आवश्यक है मध्याह्न श्राद्ध किस दिन का कब होगा विजेयश्वर पंचांग में दर्ज है यदि श्राद्ध करने में आप असमर्थ हैं तो विधि अनुसार संकल्प करें। (श्राद्ध संकल्प विधि पंचांग में दर्ज है। तथा अपने गुरुदेव को भोजन दक्षिण आदि से तृप्त करें।

षठ् मासिक श्राद्धः- (षडमोस) मृतक के श्राद्ध की जो तिथि हो, मध्याह्न के आधार से उस तिथि का श्राद्ध कब होगा उस एक दिन पहले षठ्-मासिक श्राद्ध (षडमोस) करें और निश्चित मध्याह्न के दिन मासवार करें। जब किसी के षडमोस (षठ्-मासिक-श्राद्ध) में किसी प्रकार का विध्न पड़े तो षडमोस वार्षिक श्राद्ध (वहरवर) तक

किसी भी निश्चित मासवार तिथि पर किया जा सकता है।

वार्षिक श्राद्धः- (वहरव्र) देखते समय इस बात का ख्याल रखें यदि आप हर श्राद्ध में मध्याह्न देखते हैं तो वार्षिक श्राद्ध की तिथि में भी मध्याह्न देखिये यदि आप मध्याह्न देखते नहीं हैं तो निश्चित श्राद्ध की तिथि को 'दि' 'प्र' के आधार से देखिये, मध्याह्न के आधार से अथवा 'दि' 'प्र' के आधार से जिस दिन निश्चित तिथि का श्राद्ध आयेगा उस दिन से एक दिन पहले मासवार होगी। जब किसी के वार्षिक श्राद्धः- (वहरवर) में किसी प्रकार का विध्न आ पडे अर्थात् वह निश्चित तिथि पर वार्षिक श्राद्ध कर न सके तो वार्षिक श्राद्ध पितृपक्ष में निश्चित तिथि पर कर सकता है अथवा अगले वर्ष में जब वार्षिक श्राद्ध होगा तो उसी दिन वहरवर भी कर सकता है।

जब किसी अविवाहित लड़की की मृत्यु हो तो क्या करें?:- अविवाहित लड़की के मृत्यु पर तीन दिन का आशौच होता है उस की आत्मा को शान्ति दिलाने के लिये इन तीन दिनों तक आपके घर में भगवत्-गीता अथवा राम गीता की गूंज रहनी चाहिये, तीसरे दिन इस के निमित गरीब बच्चों में पुस्तकें अथवा किसी अनाथालय में दान के रूप में कुछ दे सकते हैं, उस का दसवां दिन इत्यादि नहीं होता है।

श्राद्ध करने न करने के सम्बन्ध में:- विवाह यज्ञोपवीत आदि संस्कार के पश्चात् छः मास तक श्राद्ध न करें, परन्तु इस बात को भूलिये मत, वह धर्माशास्त्र की आज्ञा माता-पिता के श्राद्ध पर लागू नहीं है, बल्कि माता-पिता का श्राद्ध अवश्य करना चाहिये, यदि किसी पितर का श्राद्ध करना हो परन्तु तिथि मास का ज्ञान न हो तो ऐसी स्थिति में मार्ग कृष्ण पक्ष अमावसी के दिन श्राद्ध करें, यदि श्राद्ध करने में आप असमर्थ हैं तो विध्यनुसार संकल्प करें, किसी योग्य पात्र को भोजन दक्षिणा आदि से तृप्त करें और स्वयं व्रतधारी रहिये, एक समय शुद्ध भोजन खाइये, श्राद्ध के दिन मांस का प्रयोग न करें, भगवान् [illegible] कहना है "देवयज्ञे पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणे, तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीवघातनम्" जो [illegible] भी पितृ श्राद्ध विवाहादि मंगल कर्म में जन्मोत्सव आदि में मांस का प्रयोग करता है, वह नर्क में जाता है।

ज्येष्ठ महीनाः- यदि कन्या और वर दोनों की ज्येष्ठ अर्थात् प्रथम गर्भ के हूँ तो उन का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिये परन्तु दोनों में से यदि केवल एक ही ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह कर सकते हैं, यदि ज्येष्ठ मास में विवाह करना जरूरी हो तो ज्येष्ठ महीना में जब तक सूर्य कृतिका नक्षत्र में रहेगा कृतिका नक्षत्र में सूर्य कब तक रहेगा? (विजयेश्वर पंचांग में देखिये) तब तक विवाह करने में कोई दोष नहीं है। यज्ञोपवीत संस्कार के लिये ज्येष्ठ महीना तथा ज्येष्ठ लड़का होना निषेध नहीं है।

पंचकः- धनिष्ठा नक्षत्र के उत्तरार्ध से रेवती नक्षत्र के अन्त तक पांच नक्षत्र (धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती) पंचक कहलाता है। पंचक में कौन-कौन काम करना निषेध है? दाह संस्कार, छलुन, दक्षिण की ओर जाना, मिट्टी, तेल, मिट्टी के बरतन, लकड़ी काटनी अथवा घर लानी, छत ल्यण्टर आदि डालना तथा विवाह संस्कार में मस मूचरून निषेध है, शेष सभी कामों के लिये पंचक शुभ माना जाता है।

देव गौणः- देवगौण के लिये कोई मुहूर्त, वार, तिथि इत्यादि देखने की कोई जरूरत नहीं हैं, विवाह तथा यज्ञोपवीत का देवगौण सात दिन पहले भी हो सकता है। देवगौण करके विवाह अथवा यज्ञोपवीत संस्कार के दिन तक यदि जन्म का अशौच पडे तो अशौच का दोष नहीं होता है, यदि यज्ञोपवती अथवा विवाह संस्कार का दिन निश्चित किया हो और जन्म अशौच पड़े तो यज्ञोपवीत अथवा विवाह संस्कार का दिन बदल लेना चाहिये यदि ऐसी न हो सके तो संस्कार के समय "कूष्माण्ड" की ऋचाओं से अग्नि में घी की आहुतियां डालने से शुद्धि होती है परन्तु मृतक के अशौच पर धर्मशास्त्र की यह आज्ञा लागू नहीं है अर्थात् मृतक अशौच पड़ने पर यज्ञोपवीत तथा विवाह संस्कार न करें।

त्र्यहः- जब किसी तिथि का क्षय होता है अर्थात् जब तिथि गुम होती है उस दिन हम पंचांग में त्र्यहः लिखते है जैसे विक्रमी 2060 में चैत्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी भौमवार 15 अप्रैल को हम ने त्र्यहः लिखा है उस दिन त्रयोदशी तिथि प्रातः 8 बजे 23 मिनट (त्रयोदशी 8-23) प्रातः तक ही है फिर चतुर्दशी तिथि आरम्भ हो कर

रात के 4 बजे 51 मिनट पर समाप्त होती है जैसे (चतु. प्र. 4-51) अर्थात् वह दूसरे दिन प्रातः सूर्य उदय से पहले ही समाप्त होती है उसी कारण इस प्रकार की तिथि को हम गुम होना मानते है यदि इस गुम तिथि (त्र्यहः) पर किसी का जन्म दिन होगा तो उसे अपना जन्म दिन (पहली तिथि) त्रयोदशी को ही मनाना चाहिये क्योंकि चतुर्दशी तिथि गुम है इसी प्रकार कभी-कभी शुक्ल पक्ष अष्टमी भी गुम होती है तो वह व्रत भी सप्तमी को ही रखना चाहिये इसी प्रकार यदि किसी का श्राद्ध इत्यादि हो वह भी पहली तिथि पर ही करना चाहिये।

त्रिस्पृकः- जिस दिन अधिक तिथि होती है हम उस दिन त्रिस्पृक् अथवा (दिन अधिक) पंचांग में लिखते हैं अर्थात् उस दिन एक ही तिथि दो दिन रहती है जैसे 2060 में वैशाख कृष्ण पक्ष नवमी 24 अप्रैल तथा 25 अप्रैल को है यदि इस प्रकार की तिथि पर आप का जन्म दिन अथवा कोई देवव्रत (अष्टमी इत्यादि) आये तो यह दूसरी तिथि पर (25 अप्रैल) पर मनाना चाहिये, यदि श्राद्ध अथवा कोई भी पितृ कार्य ऐसी तिथि पर आये तो वह पहली तिथि (24 अप्रैल) के दिन ही मनाना चाहिये।

नोटः यदि आप माता अथवा पिता का श्राद्ध करना चाहते है तथा आप को श्राद्ध कराने के लिये गुरुजी मिलता नहीं है तो आप 'विजयेश्वर पंचांग कार्यालय' द्वारा प्रकाशित श्राद्ध पुस्तक तथा कैस्ट से अपने माता-पिता का श्राद्ध कर सकते हैं।

श्राद्ध

श्राद्ध का क्या अर्थ हैं?

शास्त्रों में लिखा है:- **'श्रद्धया दीयते' इति श्राद्धः 'श्रद्धया क्रियते यस्मात् श्राद्धं तेन प्रकीर्तितम्'।**

अर्थात्: श्रद्धा से किया जाने वाला वह कार्य जो पितरों के निमित किया जाता है अथवा पितरों के निमित श्रद्धा से जो कुछ भी दिया जाता

है श्राद्ध कहलाता है शास्त्रों में मनुष्य के लिये तीन ऋण बताये गये हैं देव ऋण, ऋषि ऋण, पितृ ऋण। इनमें से मनुष्य श्राद्ध के द्वारा पितृ ऋण चुका सकता है, विष्णु पुराण में कहा गया है कि श्राद्ध से तृप्त होकर पितृ गण समस्त कामनाओं को पूर्ण करता है। हमारे सनातन धर्म में एक वर्ष मे एक सम्पूर्ण पक्ष पूज्य पितरों के निमित शास्त्रीय कर्मादि द्वारा अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिये नियत है। अपने माता-पिता जिन से हमें शरीर प्राप्त हुआ है हमारा पालण पोषण हुआ है यदि हम उन के नाम से विशेष सत्कार न करें उस से बढ कर कोई कृतघ्नता नहीं है, उन के नाम से दान करने पर उन की आत्मा तृप्त हो जाती हैं तथा शान्ति प्राप्त करती है पिण्ड दान से कष्ट मुक्ति होती है। चन्द्रमा मन का अधिष्ठाता है वह हमारे मन में संकल्प से की हुई क्रिया तथा मन द्वारा दिये हुये अन्न व जल को सूक्ष्म रूप से आकृष्ण करता है और पितरों तक पहुचाने में मदद करता है। आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में सभी मृतक पितरों के श्राद्ध किये जाते हैं उन दिनों चन्द्रमा अन्य मासों की अपेक्षा पृथ्वी के निकटतर हो जाता है इस कारण उस की आकर्षण शक्ति का प्रभाव पृथ्वी तथा उसमें अधिष्ठित प्राणियों पर विशेष रूप से पडता है तथा तृप्त जितने भी जीव या पितर पितृ लोक में होते हैं उन के निमित दिया हुआ पिण्ड दान उन पितरों को तृप्त करता है। इस बात में कोई शंका नहीं है कि मृतक पिण्डदान को नहीं पाता है विज्ञान ने यह सिद्ध किया है कि तपर्ण के जल या श्राद्ध के अन्न को मृतक सूक्ष्म शरीर को प्राप्त करके आकाश में सूक्ष्मत। से उस को खींच सकता है जैसे रेडियों में वह यन्त्र है जो इंग्लैण्ड, जर्मनी, रूस तथा दूर देशों के शब्दों को खींच सकता है इसी प्रकार मृतकों में पितृ लोक में जाने से उनके पास वह शक्ति सूक्ष्मता वश प्राप्त हो जाती है जो पिण्ड दान तर्पण इत्यादि प्राप्त कर सकती है।

श्राद्ध संकल्प विधिः

पितृ ऋण चुकाने के निमित्त श्राद्ध अवश्य करें, यदि आप श्राद्ध करने में असमर्थ है तो संकल्प करें, ऐसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है। श्राद्ध संकल्प के लिये पहले सामग्री एकत्रित करें, एक थाली में चावल, थोड़ा सा नमक, फल दक्षिणा आदि रखें, थोड़ा सा तिल, धूप, दीप, फूल, अर्घ, पवित्र तिलक, केसर या चन्दन का तिलक जिस पितर का श्राद्ध हो उस का फोटो, तिलक, फूल की मालादि से सजा कर सामने रखें, यदि फोटो न हो तो

भगवान् विष्णु का अथवा भगवान् कृष्ण का फोटो रखें। पद्मासन में शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुख करके बैठिये, संकल्प करने से पहले श्रीमद्भगवद्गीता का कम से कम एक अध्याय का पाठ करें, यदि ऐसा न हो सके, तो पंचांग के पाठ प्रकरण से अष्टादशश्लोकी गीता का पाठ अवश्य करें।

ॐ तत्-सत्-ब्रह्म, अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य (मास पक्ष वार का नाम लेकर) जैसे वैशाख-मासस्य कृष्णपक्षस्य, (अथवा) शुक्लपक्षस्य तृतीयस्यां तिथौ-भौम-वासरा-न्वितायां-विष्णु-प्रीत्यर्थम्-दीप-धूप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु-दीपो नमः धूपोनमः।

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर तिल सहित जल से तर्पण करते हुये पढ़ेः- नमः पितृभ्यः-प्रेतेभ्यः, नमो धर्माय विष्णवे नमो यमाय रुद्राय कान्तार पतये नमः।

ॐ तत् सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य (मास-पक्ष तिथि वार का नाम लेकर) पित्रो.... प्रपिताम-हाय। मात्रे पिता-मह्यै प्रपितामह्यै। माता महाय, प्रमाता-महाय, वृद्ध प्रमाता-महाय, प्रमातामह्यै वृद्ध-प्रमातामह्यै समस्तमाता-पितृभ्यो द्वादश-दैवतेभ्यः पितृभ्यः नित्यकर्म निमितं दीपः स्वधाः, धूपः, स्वधः, जिस पितर का श्राद्ध हो उसी का नाम गोत्रसहित लेकर संकल्प का पानी जो आपने हाथ में लिया होगा चावल आदि पर छिड़कते हुये पढ़े- ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य तावत्-तिथौ-अद्य मास-पक्ष-तिथि-वार का नाम लेकर पढेः- सांवत्सरिके श्राद्धे (यदि काम्बर पक्ष (पितृपक्ष) का श्राद्ध हो) कन्र्याकगत आपरि-पाके श्राद्धे परलोके वैकुण्ठ पदवीप्राप्त्यर्थं आत्मनः पुण्य वृद्धयर्थं इदं-अन्नं दक्षिणा सहितं-फल- मूलवस्त्रादि-सहितं संकल्पयामि संकल्पयामि संकल्पयामि (दायाँ यज्ञोपवीत) रखकर फिर से तर्पण करते हुये पढ़ेः-

नमो-ब्रह्मणे-नमो-अस्तु-अग्नये-नमः पृथिव्यै-नमः औषधीभ्यः नमो वाचस्पतये-नमो-विष्णवे-बृहते कणोमि। इति-एतासाम्-एव-देवतानां-सारिष्टिं-सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति य एवं विद्वान्-स्वाध्यायम्-अधीते ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

जन्म दिन पूजा

जन्म दिन पूजा आरम्भ करने से पहले **कमरे** में एक कम्बल अथवा कोई शुची तौलिया बिछाये फिर पूजा का सामग्री **लाये**: रत्नदीप, धूप, नारिवन उस को सातगांठ लगाये, थोडा सा दूध, दही, घी, केसर, शहद, चीनी, सर्वोपधि (आरी), **फूल**, जंगके लिये एक थाली में चावल, उस पर थोडा सा नमक तथा पैसे रखें, अर्घ्य के लिये थोडा सा धोया **हुआ चावल** यज्ञोपवीत, पवित्र, अथवा थोडा द्रमन घास या सोने की अंगूठी, एक थाली, एक कवली छोटी बाल्टी में **पानी उस** में थोडा सा दूध तथा दही डालें, पानी छोडने के लिये एक कवली। पूजा आरम्भ करने से पहेल यज्ञोपवीतधारी **यज्ञोपवीत** धारण करें। यज्ञोपवीत धारण करते समय कोई कन्या यजमान के कन्धे को तीन बार जंग की थाली **का स्पर्श** करें। यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र **यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् आयुष्यं अग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।** जिस ने यज्ञोपवीत धारण नहीं किया होगा अथवा लडकी हो पूजा **आरम्भ** करने से पहले उत्तर की ओर मुंह करके हाथ जोड कर यह श्लोक पढ़ें:

नमस्ते शारदे देवि काश्मीर पुरवासिनी त्वामहं प्रार्थये नित्यं, विद्या ज्ञानं च देहि मे।।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशि-वर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्याये सर्व-विघ्नोपशान्तये।

अभिप्रेतार्थ-सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि। सर्व-विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः।।1।।

हृदय और मुख को जल छिड़के हुए पढ़ें।

तीर्थे स्नेयं तीर्थ-मेव समानानां भवति। मा नः शंस्योर्-अररुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षा-णो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका उंगली में पवित्र धारण करके अपने आप को तिलक, अर्ध, फूल लगाते हुये पढें।

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्रानाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।।

रत्न दीप, धूप को तिलक, अर्घ, पुष्प अपर्ण करके सूर्य भगवान् को थाली में तिलक तथा अर्घ, पुष्प अर्पण करते हुये पढें:-

नमो धर्म-निधनाय नमः स्व तसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः।।

खोसू से थाली में रखे हुये नारीवण के ऊपर अर्घ सहित जल की धारा डालते हुये पढें:-

यत्रास्ति-माता न पिता न बन्धु-र्भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रि-स्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधरशक्त्यै धूपदीपस-ङ्कल्पात् सिद्धिर्-अस्तु धूपो नमः दीपो नमः।।

जल सहित खोसू में थोड़ा सा तिलक और तीन पुष्प डालते हुये पढें:-

सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः, संयावः प्रियास्तन्वः, सं प्रिया, हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु, सं प्रियः सं प्रियस्तन्वो मम।

इसी जल की धारा को नारीवण पर डालते हुये पढें:-

अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। मित्रा-वरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। बृहस्पतेः प्राणः सं ते प्राणं ददातु तेन जीव, जन्मोत्सव-देताभ्यो जीवादानं परिकल्पयामि नमः।

चावल सहित दो दर्भ सीधे हाथ में लेकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढें:-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो योनः प्रचोदयात् '3' जन्मोत्सव-देवतानां- अर्चाम्-अहं करिष्ये उों कुरुष्व।।

हाथ में पकडें हुये दो दर्भ निर्माल में डालकर फिर से दो दर्भ आसन के रूप में नारीवण के सामने डालते हुये पढें:- सप्त-जन्मोत्सव देवतानां आसनं नमः। चावल सहित दो दर्भ हाथ में पकड कर केवल चावल को कन्धे से फैकते हुये पढें:- सप्त-जन्मोत्सवदेताभ्यः युष्मान्-पूजयामि। उों-पूजय।। दो दर्भ इसी तरह पकड़ते हुये पढें:- सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। सभूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठत्-दशांगुलम् जन्मोत्सवदेवता आवाहयिष्यामि। उों-आवाहय।।

पहले पकड़े हुये दो दर्भ निर्माल में ढाल कर तीन बार फूल नारीवण पर डालते हुए पढें:-

भगवन् ! पुण्डरीकाक्ष ! भक्तानु-ग्रहकारक-अस्मत् दयानु-रोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो ।।3।।

दोनों कन्धो के ऊपर चावल फैंक कर प्राणायाम करके खोसू में जल डालते हुये पढें:-

पाद्यार्थम्-उदकं नमः। शन्नो देवीरभिष्टय-आपो भवन्तु पीतये। शंयोर्-अभिस्त्रवन्तु नः।

लाय, केसर, सर्वौषधि, दर्भ, जल, सब चीजें खोसू में डालकर नारीवण पर जल छोड़ते हुए पढें।

अश्व-त्थामने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्काण्डेयाय, परशुरामाय, सप्तचिरजीवेभ्यः पाद्यं नमः।।

पाद्य का बचा हुआ पानी निर्माल में डालकर फिर से खोसू में पानी डालते हुये पढें:-

शन्नो देवीर्-अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये। शंयोर्-अभिस्रवन्तु नः।

जल, केसर, दर्भ, घी, चावल, जौ, सर्वोषधि, दूध ये आठ चीजें खोसू में डालकर नारीवण पर डालते हुये पढ़ें:- अश्वत्थामन्, बले, व्यास, हनुमन्, कृपाचार्य, मार्काण्डेय, परशुराम, सप्त-चिर, जीव इदं वो ऽर्घ्यं नमः। शुद्ध जल डालते हुये पढें:- प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः आचमनीयं नमः। दूध वगैरह जल डालते हुये पढें:- तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततं तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णो-र्यत्परमं पदम्। प्रजापति जन्मोत्सवदेवताभ्यः स्नाने नमः। किसी कटोरी में फूलों का आसन बनाते हुये पढें:-

आसनाय नमः गरुडासनाय नमः पद्मा-सनाय नमः शतदल-पद्मा-सनाय नमः, सहस्रदल-पद्मासनाय नमः। किमासनं ते गरुढासनाय, किं भूषणं कौस्तुभ-भूषणाय, लक्ष्मीकलत्राय, किम्-अस्ति, देयं-वागीश किं ते वचनीयम्-अस्ति।।

नारीवण को आसन पर बिठाते हुये पढें:- उत्तिष्ठ भगवन् विष्णो उत्तिष्ठ कमलापते ! उत्तिष्ठ त्रिजगन्नाथ ! त्रैलोकी मंगलं कुरु।। नारीवण को सात तिलक लगाते हुये पढें:-

अश्वत्थाम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय मार्काण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिर-जीवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः। इन्हीं सात नामों का उच्चारण करते हुये नारीवण पर अर्घ और पुष्प चढ़ाते हुये पढें:-

अश्वत्थाम्ने, बलये व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मृार्काण्डेयाय, परशुरामाय, सप्तचिर

जीवेभ्य अर्घो नमः पुष्पं नमः।। धूप रत्नीदीप, कपूर उठाकर घुमायें। यह मंत्र पढें:-
तेजोसि शुक्रमसि ज्योतिर्सि धामासि, प्रियं देवानामंऽनादृष्टं देवयजनं देवाताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृहणामि, यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञिभ्यो, गृहणामि, जन्मोत्सवदेवताभ्यः धूपं रत्नदीपं कर्पूरं च परिकल्पयामि नमः।

नमस्कार करते हुये पढे:-
जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे। उद्धर माम्ऽसुरेश-विनाशन्, पति-तोऽहं संसारे। घोरं हर मम नरकरिपो, केशव कल्मषाभारम्। माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं कुरु भवसागरपारम्। भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय। सप्त-जन्मोत्सव-देवताभ्यः चामरं छत्रं परिकल्पयामि नमः।

फूल चढ़ाते हुये पढें:-
ध्येयं सदा परिभवघ्नम्अभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिव-विरिंच-नुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणार-बिन्दम्। नमस्कार करते हुये पढें:-
उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा च अष्टांग-नमस्कारं करोमि नमः।

कटोरी में थोड़ा दूध, शहद या क्षीर रख कर अर्पण करते हुये पढें:-
वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः मात्रामधुपर्क ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

दक्षिणा डालते हुये पढें:- जन्मोत्सव-देवाताभ्यः दक्षिणायै तिल-हिरण्य रजत निष्कर्ण ददानि।
फिर से दक्षिणा अर्पण करते हुये पढें:- एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।।
फूल चढाते हुये पढें:-
उों तद्विष्णोः परम पदं सदापश्यन्ति-सूरयः दिवीव चक्षुर्-आततम्। तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्। अब नैवेद्य तहर या क्षीर थाली में लाकर एक पात्र में अलग चटू और 7 म्यचियाँ रखें, नैवेद्य के साथ ही मिश्री भी रखें। नैवेद्य की थाली को दोनों हाथों से पकड़कर सारा प्रोप्युन पढें। (प्रोप्युन विजयेश्वर पंचांग में अलग से लिखा है)
आज्ञा मांगते हुये पढें:-
आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे। शरीर यात्रा सिद्धयर्थं भगवन् क्षन्तुम्-अर्हसि।।
पुष्प चढ़ाते हुये पढें:-
आपन्नोस्मि शरण्योस्मि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणा-गतम्।
पवित्र निकालकर, हाथ में नारीवण बांधकर, चटू कहीं बाहर रखकर, निर्माल नदी में डालकर नैवेद्य के साथ शकर दायें हथेली में रखकर मुंह में डालते हु पढें:-
र्माकाडण्डेय नमस्तुभ्यं सप्तकल्पान्त जीवन, आयुर्-आरोग्यं सिद्धर्यथं प्रसीद भगवन्मुने। मार्काण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्त-जीवन, चिरऽजीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरद्विज, कुरुष्व मुनिशार्दूल, तथा मां चिरजीविनम्।।

प्रेष्युन

एक थाली में नैवेद्य तथा दूसरी में चटू और पांच म्यचियां या टुकड़े रख कर गणेश जी का ध्यान करके शुद्ध पानी अपने आप पर छिडकते हुये पढें:-

तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव, समानानां भवति, मानः शंसो अररुषो धूर्तिः प्राणड्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते। अपने आप को तिलक लगाते हुये पढें:-

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच-भूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय, आत्मने नारायणाय-आधर-शक्त्यै-समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः, पुष्पं नमः। दीप को तिलक लगाते हुये तथा पुष्प चढाते हुये पढें:-

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वत-स्तिमि-रापहः प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।

धूप को तिलक लगाते हुये पढे:-

वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्-तमः आधरः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः।

सूर्य भगवान् का ध्यान करके थाली में तिलक पुष्प डालते हुये पढें:- नमो धर्म-निधानाय, नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष-देवाय भास्कराय नमो नमः।

कवली से थाल में जल डालते हुये पढें:- यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः, भ्रातापि नो यत्र सुहृत जनश्च, न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्म-दीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधर-शक्तये, दीप-धूप-संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु, दीपो नमः, धूपो नमः।

नैवेद्य को दोनों हाथों से पकड़ते हुये पढ़ें

अमृतेश-मुद्रया-अमृतीकृत्य अमृतम्-अस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो-र्बाहुभ्यां-पूष्णो हस्ताभ्याम्-आददे महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश-देवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वर-देवताभ्यः चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतु-पतये नारायणाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्नि-ष्वात्तादिभ्यः पितृ-गणदेवताभ्यः। भगवते वासुदेवाय संकर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय-पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय-सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नारायणाय भगवते भवाय देवाय-शर्वाय-देवाय-रुद्राय-देवाय पशुपतये देवाय उग्राय-देवाय भीमाय देवाय ईशनाय देवाय महा-देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय भगवते विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्षाय वल्लभा-सहिताय श्रीमहागणेशाय। भगवते क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय पार्वती नन्दनाय सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनाश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय तेजोरूपाय परमार्थ-साराय प्रभासहिताय आदित्याय। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका-भगवत्यै श्री शारदा-भगवत्यै श्री महाराज्ञीभगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै वैखरी भगवत्यै वितस्ता भगवत्यै

गंगाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभयंकरीदेव्यै भवान्ये क्षेमंकरीभगवत्यै सर्वशत्रुघातिण्यै इहराष्ट्राधिपतये आनन्देश्वर भैरवाय इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नैऋतये खड्ग-हस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुवेराय-गदा-हस्ताय ईशानाय, त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे पद्महस्ताये विष्णवे-चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः अग्न्या-दित्याभ्यां वरुण-चन्द्रमोभ्यां कुमार-भौमाभ्यां विष्णु-बुधाभ्यां इन्द्रा-बृहस्पतिभ्यां सरस्वती-शुक्राभ्यां, प्रजापति-शनैश्चराभ्यां गणपति-राहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्ता-गस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्यः पंच-चत्वारिंशत्-वास्तोष्पति-याग-देवताभ्यः ब्राह्म्यादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गा-क्षेत्रा-गणेश्वर-देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिका-देवताभ्यः सिनीवाली-देवताभ्यः यामी-देवताभ्यः रौद्री-देवताभ्यः वारुणी-देवताभ्यः बार्हस्पत्य-देवताभ्यः ॐ भू र्देवताभ्यः ॐ भुवो देवताभ्यः ॐ स्व र्देवताभ्यः ॐ भूर्भुवः स्व र्देवताभ्यः अखण्ड-ब्रह्माण्ड-यागदेवताभ्यः धूर्म्यः उपधूर्म्याः महागायत्र्यै सावित्र्यै-सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वदुकादिभ्यः, उत्पन्नम्-अमृतं दिव्यं प्राक्-क्षीरो-दधि-मन्थनात्-अन्नम्-अमृतरूपेण नैवेद्यं प्रति-गृह्यताम्।

ईष्ट देवता का ध्यान करते हुये पढेः उो तत्सत्-ब्रह्म-अद्य तावत् तिथौ अद्य अमुक-मासस्य अमुक-पक्षस्य अमुक-तिथौ आत्मनो वाङ्मनः कार्योपार्जित-पापनि वारणार्थम्, उों नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

"चुटू" को स्पर्श करते हुये पढेः- या काचित्-योगिनी-

रौद्रा-सौम्या घोरतरा परा। खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा। चुटू को अंगूठे से तिलक लगाकर अर्घफूल डालते हुये पढें:- आकाश मातृभ्योऽन्नं नमः, आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः। चुटू के सात (7) म्यचियां अथवा सात छोटे प्रसाद के भाग रखे हुये होते हैं- पहली म्यची को स्पर्श करते हुये पढें:- भगवते वासुदेवाय अन्नं क्षीरं मोदकादीन् समर्पयामि नमः। (2) दूसरी को स्पर्श करते हुये पढें:- भगवते भवाय देवाय अन्नं समर्पयामि नमः (3) तीसरी को स्पर्श करते हुये पढ़ें: भगवते विनायकाय अन्नंसमर्पयामि नमः चौथी को स्पर्श करते हुये पढ़ें:- (4) ह्रां ह्रीं सूर्याय अन्नं समर्पयामि नमः। पांचवी को स्पर्श करते हुए पढ़ें: (5) इष्टदेवी भगवत्यै अन्नं मोदकान्-मिष्ठानं-क्षीरं समर्पयामि नमः। अंतिम दो भागों या दो म्यचियों पर अर्घ पानी डालते हुये पढें- यस्मिन्-निवसति क्षेत्रो क्षेत्रपालाः सकिंकराः। तस्मै निवेदयाम्यद्य बलिं पानीय सुयंतम्, क्षां-क्षेत्राधिपतये अन्नं नमः रां राष्ट्राधिपतये अन्नं नमः- सर्वाभय-वरप्रदो मयि पुष्टि पुष्टिपति-दधातु। दोनों हाथ में फूल लेते हुये प्रणाम करते हुये पढ़ें:- आपन्नोस्मि शरण्योस्मि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवन्-त्वां-प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्। उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा चोरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।

तर्पणः- सीधा हाथ रखते हुये पढ़ें:- नमो ब्रह्मणे, नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषिधिभ्यः, नमो वाचे नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते, कृणोमि, इत्येतासाम्-एव-देवतानां-सा-रि-ष्टिं-सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति-य एवं विद्वान्-स्वाध्यायम्-अधीते।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

प्राणायाम

श्वास प्रश्वास की गति को रोकना प्राणायाम कहलाता हैं। प्राणायाम के तीन भाग हैः-
(1) पूरक, (2) कुम्भक तथा (3) रेचक।

पूरकः- पूरक का अर्थ है श्वास का आकर्षण। प्राणायाम द्वारा गायत्री मन्त्र से बोलते हुये शुद्ध वायु को बाहर से खींच कर फेफडों में फैकना 'पूरक' कहलाता है।

कुम्भकः- अन्दर लिये हुए वायु को कुछ क्षण के लिये रोका जाता है ताकि फेफडों की सम्पूर्ण ग्रन्थियों में यह वायु प्रवेश करे और फेफड़े बलवान हो जायें इस समय भी गायत्री मन्त्र का उच्चारण करना होता है।

रेचकः- रेचक का तात्पर्य है रुकी हुई वायु का निःसरण। रेचक विधि से फेफड़ों में रुकी हुई वायु को धीरे-धीरे गायत्री मन्त्र पढते हुये बाहर छोड़ते है। इस प्रकार अशुद्ध वायु बाहर आ जाती है और फेफड़ों को विश्राम मिलता है और व्यक्ति की मानसिक शक्ति बढती है और व्यक्ति से ओज व तेज प्रकट होता है, प्राणायाम करने से सभी प्रकार की चिन्ता, कष्ट इत्यादि मिट जाते हैं।

प्राणायाम मन्त्रः- ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

शास्त्रों में लिखा हैः-

यथा पर्वतधातूनां दोषान् हरति पावकः एवम् अन्तर्गतं पापं प्राणायामेन दुह्यते।।

अर्थः-पर्वत से निकले धातुओं का मल जैसे अग्नि से जल जाता है वैसे प्राणायाम् से आन्तरिक पाप जल जाते हैं।

प्राणायम करने की विधिः-

पूरकः अगूंठे से नाक के दाहिने छिद्र को दबा कर बायें छिद्र से श्वास को धीरे-धीरे खींचे, तथा गायत्री मन्त्र भी अन्दर से पढते जाये।

कुम्भकः- जब श्वास खींचना रुक जाये तब अनामिका तथा कनिष्ठिका अंगुलि से नाक के बाये छिद्र को भी दबा दे और गायत्री मन्त्र पढते जायें।

रेचकः- अंगूठे को हटा कर दाहिने छिद्र से श्वास को धीरे-धीरे छोडें और गायत्री मन्त्र पढते जाये।

आचमनः- हमारे प्रत्येक धार्मिक कार्य में तथा दैनिक जीवन में आचमन का बहुत महत्व है, हथेली को मोड़ कर, कनिष्ठिका (सबसे छोटी अंगुली) और अंगूठे को अलग कर ले शेष अंगुलियों को सटा कर आचमन करें आचमन तीन मन्त्रों से तीन बार की जाती है:-

1. ॐ केशवाय नमः, 2, ॐ नारायणाय नमः, 3, ॐ माधवाय नमः।

आचमन के विषय में शास्त्रों में लिखा है:-

यः क्रियां कुरुते मोहाद् अनाचम्यैव नास्तिकः। भवन्ति हि वृथा तस्य क्रिया सर्वा न संशयः।।

अर्थः- आचमन न करने पर हमारे सब कार्य व्यर्थ हो जाते हैं।

वैज्ञानिक आधार से आचमन कण्ठ शोधन करने के लिये किया जाता है तथा आचमन करने से कफ के निःस्रित हो जाने के कारण श्वास-प्रश्वास क्रिया में और मन्त्रादि के शुद्ध उच्चारण में मदद मिलता है, तीन बार आचमन करने की क्रिया धर्म ग्रन्थों द्वारा निर्दिष्ट है, इस से कामिक, मानसिक, तथा वाचिक त्रिविधि पापों की निवृत्ति होती है।

भोजन खाने से पूर्व आचमन का मन्त्रः-

अन्तः चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः त्वंयज्ञः, त्वं वष्टकारः, आपो ज्योति

रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।। अमृतोपस तरणमसि। अर्थात् : जलरूपी अमृत से ढक्कन खोलता हूँ। भोजन खाने के पश्चात् आजमन का मन्त्रः अन्तः चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः त्वंयज्ञः, त्वं वष्टकारः, आपो ज्योति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।। अमृतोपिधानमसि अर्थात्: इस जलरूपी ढक्कन को बन्द करता हूँ।

पवित्री = पव्यथर

हमारे प्रत्येक धार्मिक कार्य में 'पवित्री' धारण करने का बहुत महत्व है। यह कुशा से बनाई जाती है। कुशा को पवित्र माना जाता है इस विषय में शास्त्रों में लिखा है:-

कुशमूले स्थितो ब्रह्मा-कुशमध्ये जनार्दनः। कुशाग्रे शंकरो देवः त्रयो देवाः कुशे स्थिताः।।

अर्थात्:- कुशा में तीनो देवता ब्रह्मा, विष्णु और शंकर विद्यमान है।

पवित्री कुशा के दो तिनकों से बनाई जाती है पवित्री पहन कर आचम करने से 'कुशा' झूठी नहीं होती है। पवित्री दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में लगाई जाती है। पवित्री उंगली में लगाते समय 'ॐ भूर्भुवः स्वः' मन्त्र पढ़ना चाहिये।

सन्ध्योपासन, पूजन, जप, पितृ कर्म यज्ञादि पर पवित्रि धारण की जाती है लिखा भी है:-

स्नाने होमे जपे दाने, स्वध्याये, पितृकमर्णि करो सदर्भौ कुर्वीत तथा सन्ध्याभिवादने।

माता–पिता के चरणों में स्वर्ग है

जप

नृसिंहपुराण में लिखा है :-

वाचिकश्च उपांशुश्च मानसस्त्रिविधः स्मृतः।
त्रयाणां जप यज्ञानां श्रेयान् स्यात् उत्तरोत्तरम्॥

जप तीन प्रकार का होता है :- वाचिक, उपांशु और मानसिक

वाचिक जप :- धीरे धीरे बोल कर होता है।

उपांशु जप :- इस प्रकार किया जाता है जिससे दूसरा न सुन सकें।

मानसिक जप:- इस में जीभ और ओष्ठ नहीं हिलते हैं।

मन्त्र जपने की करमाला विधि:-

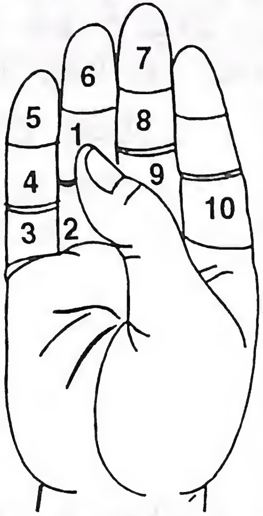

चित्र नं० A

अंगलियों के पर्वो (गांठो) पर भी जप किया जाता है उसे करमाला जप कहते है।

चित्र न० A के अनुसार 1 अंक से आरम्भ होकर 10 अंक तक अंगूठे के जप करने से एक करमाला होती है इसी प्रकार दस करमाला जप करके चित्र नम्बर B के अनुसार 1 अंक से आरम्भ करके 8 अंक तक जप करने से 108 संख्या की माला होती है।

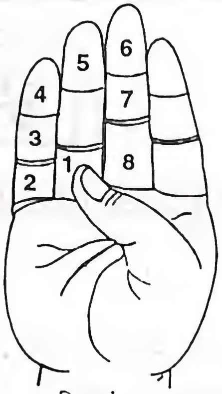

चित्र नं० B

करमाला जप के कुछ नियम :-

1. जप के समय अंगुलियों को अलग अलग न रखें।
2. जप करते समय पर्व को अंगूठे से न छुयें अंगूठा नीचे रखा करें।
3. जप करते समय हाथ को वस्त्र से ढक कर रखना चाहिये।
4. जप आरम्भ करने से पूर्व सुचा आसन बिछाना चाहिये।
5. जप पूर्व दिशा की ओर मुंह करके किया करें।
6. जप आरम्भ करने से पहले उसी मन्त्र का प्राणायाम करना चाहिये जिस मन्त्र का जप करना हो।
7. जप पद्मासन में बैठ कर करे ।

8. जप रात्रि के अन्तिम चौथे भाग में करें वही समय ब्राह्मी मुहूर्त कहलाता है।
9. जप सिद्धि के लिये शुद्ध भोजन का सेवन करना चाहिये।

जपमाला :- यदि आप जपमाला का प्रयोग करेंगे तो वह 108 मनकों की होनी चाहिये, एक मनका बड़ा होना चाहिये जिसे सुमेरू कहते हैं, मालाके मनकों के बीच मे गाँठ लगी होनी चाहिये।

माला जपने की विधि :- माला को मध्यमा अंगुली के मध्यपर्व पर अथवा अनामिका के मध्यपर्व पर रखें, अंगूठे के सिरे से एक एक माला के दाने को घुमाते जायें और मन्त्र बोलते जायें। तर्जनी को इस ढंग से रखें कि वह माला का स्पर्श न करें, माला फेरते समय 'सुमेरू' को ऊपर से नही लांघना चाहिये, उसी मनके से वापस घुमा कर फिर से जप करना चाहिये।

गायत्री जप का विधान :- यदि आप ने गायत्री मन्त्र का जप करना हो तो जप के पूर्व षडङ्गन्यास करें। अङ्गन्यास करने की विधिः-

1. दाहिने हाथ की पाँचों अंगुलियों से हृदय का स्पर्श करें और पढ़े 'ॐ हृदयाय नमः'।

2. मस्तक का स्पर्श करें:-
ॐ भुः शिरसे स्वाहा।

3. शिखा का अंगूठे से स्पर्श करें:-
ॐ भुवः शिखायै वषट्।

4. दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें कंधे का और बायें हाथ की अंगुलियों से दायें कन्धे का स्पर्श करें और पढ़ेः- ॐ स्वः कवचाय हुम्।

5. नेत्रों का स्पर्श करते हुये पढ़ेः-
'ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौष्ट'।

6. बायें हाथ की हथेली पर दायें हाथ को सिर से घुमाकर मध्यमा और तर्जनी से ताली बजायें और पढ़ेः-
'ॐ भूर्भवः स्वः अस्त्राय फट्'।

जपके पूर्वकी चौबीस मुद्राएँ

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा। द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पञ्चमुखं तथा।।
षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा। शकटं यमपाशं च ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम्।।
प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्सयः कूर्मो वराहकम्। सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा।।
एका मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः।।

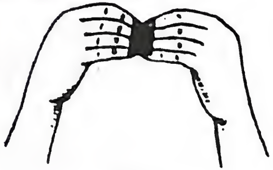

(1) सुमुखम्

(2) सम्पुटम्

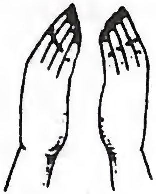

(3) विततम्

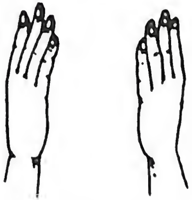

(4) विस्तृतम्

(5) द्विमुखम्

(6) त्रिमुखम्

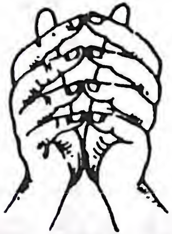

(7) चतुर्मुखम्

(8) पञ्चमुखम्

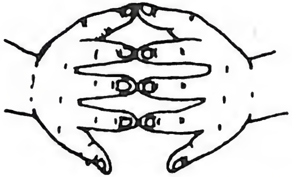

(9). षण्मुखम्

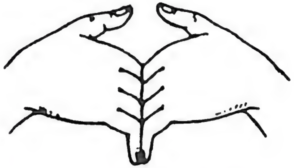

(10) अधोमुखम्

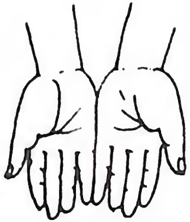

(11) व्यापकाञ्जलिम्

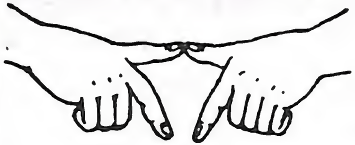
(12) शकटम्

(13) यमपाशम्

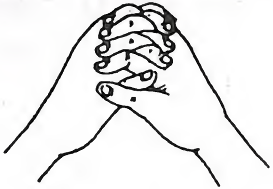
(14) ग्रथितम्

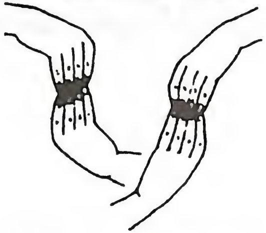
(15) उन्मुखोन्मुखम्

(16) प्रलम्बम्

(17) मुष्टिकम्

(18) मत्स्यः

(21) सिंहाक्रान्तम्

(22) महाक्रान्तम्

(23) मुद्गरम्

(19) कूर्मः

(20) वराहकम्

(24) पल्लवम्

हाथों में तीर्थ

अग्नि पुराण में लिखा है:-

पैत्र्यं मूले प्रदेशिन्याः कनिष्ठायाः प्रजापतेः।
ब्राह्म्यम् अङ्गुष्ठमूलस्थं तीर्थ दैवं कराग्रतः॥
सव्य पाणि तेल वह्नेतीर्थं सोमस्य वामतः।
ऋषीणां तु समग्रेषु अङ्गुली पर्व सन्धिषु॥

अर्थातः मनुष्य के दोनों हाथों में कुछ देवताओं के तीर्थस्थान हैं, चारों अंगुलियों के अग्रभाग में देवतीर्थ, इसी कारण देवताओं को तर्पण में जलाञ्जलि अंगुलियो से दी जाती है। तर्जनी अंगुली के मूलभाग में 'पितृ तीर्थ' इसी कारण पितरो को अंगूठे के बीच में से तर्पण में जलाञ्जलि दी जाती है, कनिष्ठा के मूल भाग में 'प्रजापति तीर्थ' इसी कारण ऋषियों को प्रजापति तीर्थ से तर्पण में जलाञ्जलि देने का विधान है, अंगूठे के मूल भाग में ब्रह्मतीर्थ है।

सन्ध्या उपासना विधि

सन्ध्या का वास्तविक अर्थ है दिन और रात्रि के मिलने का समय, सांयकाल।

शास्त्रों में सन्ध्या के विषय में लिखा है:-

संध्यामुपासते ये तु सततं संशितव्रताः।
विधूतपापास्ते यान्ति ब्रह्मलोकं सनातनम्॥

अर्थात्: जो नियम पूर्वक प्रतिदिन संध्या करते हैं वे पापरहित हो कर सनातन ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं।

संध्योपासना हमारी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है परन्तु समय के साथ साथ संध्योपासना का लोप होता जा रहा है इस को फिर से सुदृढ करने के निमित मैं संक्षिप्त रूप में शास्त्रानुसार संध्या उपासना विधि यहां पर लिख रहा हूँ ताकि हमारे नवयुवक इस को अपना कर अपने जीवन का उद्धार करें तथा अपनी संस्कृति के अंग भूत सन्ध्या उपासना विधि का प्रचार करें। हमारे पूर्वज दरिया के किनारे सन्ध्या करते थे परन्तु विस्थापन के कारण काश्मीरी पण्डित पूरे विश्व में भिखर गया और ऐसे स्थानो पर गये जहां पर दरिया, नदियां नही है इस कारण आप अपने बाथरूम में भी सन्ध्या कर सकते है (यह शास्त्र की आज्ञा है।)

जब आप स्नान के लिये बाथरूम में नहाने के लिये जायेंगे तो सबसे पहले बायाँ पाँव धोते हुये पढ़ें- ॐ **नमोस्त्व-नन्ताय**

सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्र-पादाक्षि-शिरोरु-बाहवे। सहस्त्र-नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्र-कोटी-युगधारिणे नमः। दायाँ पाँव धोते हुये पढ़े- ॐ नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने। नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तुते॥ अञ्जलि में जल उठा कर पढ़े-गंगा-प्रयाग-गय नैमिष-पुष्करादि तीर्थानि यानि भुवि सन्ति हरिप्रसादत्। आयान्तु तानि कर पद्म-पुटे मदीये, प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलङ्कम्। इसी जल से मुँह धोते हुये पढ़े- तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मानः। शंस्यो-अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ्मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते। यज्ञोपवीत दोनों हाथों के अँगूठों में रख कर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ते हुये धोयें- ॐ भूर्भुव- स्वः तत्-सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। यज्ञोपवीत को पहले दायें भुजा में डालते हुये पढ़े- यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते-र्यत्-सहजं परस्तात। आयुष्यम्-अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु-तेजः, प्राणायाम कीजिये, प्राणायाम करके नमस्कार करते हुये पढ़े- नमो-अग्नये-अप्सुषदे, नम इन्द्राय, नमो वरुणाय, नमो वारुण्यै, नमोऽपां पतये, नमोऽदभ्यः। स्नान करते हुये पढ़े- ॐ तत्-विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुर्-आततम् तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्-परमं पदम्॥
माथे पर सात बार पानी छिड़कते हुये पढ़े- ॐ भूः, ॐ भुवः ॐ स्वः, ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यम्। प्राणायाम तथा उपस्थान करते हुये पढ़े- ॐ हंसः शुचिषत्-वसुरन्त-रिक्षसत्-होता-वेदिषत्-अतिथि-र्दुरोण-सत्। नृषत्-वरसत्, ऋत-सत्-व्योमसत्-अब्जा गोजा ऋतजा, अद्रिजा ऋतम्। सूर्यदेवता को नमस्कार करते हुये पढ़े- नमो धर्मनिधानाय, नमः सुकृत साक्षिणे नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः। तर्पण करते हुये पढ़े- ॐ नमो देवभ्यः यज्ञोपवीत गले में रखते हुये पढ़े- स्वाहा ऋषिभ्यः, बायाँ यज्ञोपवीत रखकर तर्पण करते हुये पढ़े- स्वधा पितृभ्यः दायाँ यज्ञोपवित रखकर पढ़े- आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत्-तृप्यतु तृप्यतु-एवम्-अस्तु। गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे, गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे, गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण गोविन्द गोविन्द नमो नमोस्तु। स्नान करके सूर्य भगवान् के ओर नमस्कार करते हुये पढ़े- ॐ गायत्र्यै नमः, सावित्र्यै नमः, सरस्वत्यै नमः। ॐ प्रणवस्य ऋषि-ब्रह्मा, गायत्रं छन्द एव च। देवोग्नि-र्व्याहृतिषु च, विनियोगः प्रकीर्तितः, प्रजापते व्याहृतयः, पूर्वस्य परमेष्ठिनः, व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च, ब्राह्मम्-अक्षरम्-ओम्-इति। व्याहृतीनां समस्तानां, दैवतं तु प्रजापतिः। व्यस्तानाम्-अयम्-अग्निश्च, वायुः सूर्यश्च देवताः। छन्दश्च व्याहृतीनाम्-एकाक्षराणां- उक्ताख्यं, द्व्यक्षराणां- अत्युक्ताख्यम्। विश्वामित्र ऋषिश्छन्दो, गायत्रं सविता तथा

देवतो पनये जप्ये, गायत्र्या योग उच्यते। आवाहयामि गायत्रीं, सर्वपापप्रणाशिनीम्। न-गायत्र्याः परं जप्यं, न व्याहृति-समं हुतम्। आगच्छ वरदे देवि, जप्ये मे सन्निधो भव। गायन्तं त्रायसे यस्मात् गायत्री त्वं ततः स्मृता। अग्नि-र्वायुश्च सूर्यश्च बृहस्पत्या-प एव च। इन्द्रश्च विश्वे देवाश्च देवताः समुदाहृताः। एवम्-आर्षं छन्दो दैवतं, विनियोगं चानु-स्मृत्य। गायत्र्या शिखां-आबद्ध्य, गायत्र्यैव समन्ततः। आत्मनश्चापः परिक्षिप्य प्राणायामं कुर्यात्। अपने आप को पानी छिड़क कर अंजलि धारण करते हुये पढ़े- ॐ ओजोसि सहोसि बलं-असि भ्राजोसि देवानां धाम नामासि। विश्वं-असि विश्वायुः सर्वं-असि सर्वायुर्-अभिभूः तीन आचमन एक साथ करते हुये पढ़े :- ॐ सूर्यश्च मामन्युश्च- मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः। पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यत्-रात्र्या पाप-अकार्षं, मनसा वाचा हस्ताभ्यां, पद्भ्यां-उदरेण शिश्ना। रात्रिस्तत्-अवलुम्पतु, यत् किंचित् दुरितं मयीदम्-अहं- आपोऽमृत-योनौ सूर्य ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा, अब सारे शरीर पर पानी छिड़कते हुये पढ़े- ॐ आपो हिष्ठा मयोभुव-स्तान ऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रस-स्तस्य भाजयते हनः। उशतीर्-इव मातरः। तस्मा-अरंगमाम वो, यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः। ॐ शन्नो देवीर् अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये शंयोर अभिस्रवन्तु नः। तीन बार आचमन करते हुये पढ़े- ॐ अन्तः-चरसि-भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार-आपोज्यातिः रसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्। उपस्थान करते हुये पढ़ेः- शुक्रियं रुद्रस्य-य उदगात्-पुरस्तात्-महतो अर्णवात्-बिभ्राज-मानः सरिरस्य मध्ये। स माम्-ऋषभो रोहिताक्षः, सूर्यो विपश्चित्-मनसा पुनातु। यत्-ब्रह्मा-वादिष्म तन्मा मा हिंसीत्-सूर्याय बिभ्राजाय वै नमो नमः बायाँ यज्ञोपवीत रखकर सभी पितरों का तर्पण करके फिर से तर्पण करते हुये पढ़ेः-मातृपक्ष्या-स्तु ये केचित्-ये चान्ये पितृपक्षजाः। गुरु-क्ष्वरशुर बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः, ये प्रेतभावम्-आपन्ना ये चान्ये श्राद्धवर्जिता, जलदानेन ते सर्वे लभन्तां तृप्तिम्-उत्तमाम् दायाँ यज्ञोपवीत रखकर तर्पण करते हुये पढ़ेः- ॐ नमो देवेभ्यः गले में यज्ञोपवीत रख कर स्वाहा ऋषिभ्यः बायाँ यज्ञोपवीत रखकर स्वधापितृभ्यः दायाँ यज्ञोपवीत रखकर पढ़ेः- आब्रह्मस्तम्ब-पर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं। जगत्-तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु एवम् - अस्तु सूर्य देवता को नमस्कार करते हुये पढ़ेः-नमो धर्मनिधानाय नमः सुकृत-साक्षिणे नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्काराय नमो नमः, शान्तिः पुष्टि-स्तथा तुष्टिः सन्तु मे त्वत्-प्रसादतः, सर्वपाप-प्रशान्तिश्च तीर्थराज नमोस्तुते।

नोटः- यदि आप पूरी विधि अनुसार सन्ध्या करना चाहते हैं तो आप हमारे कार्यालय द्वारा छपाई हुई 'सन्ध्या' मंगा सकते है।

श्राद्ध

तर्पण - गोत्र

शास्त्रों में लिखा हैः-

नास्ति मातृसमं तीर्थ पुत्राणां तारणाय च।
हितायात्र परत्रार्थं यैस्तु माता प्रपूजिता।।

अर्थात्:-माता के समान कोई तीर्थ नहीं है जो पुत्र माता का आदर करता है उस का इहलोक तथा परलोक का सुधार होता है।

वेदैर्-अपि च किं पुत्र! पिता येन प्रपूजितः
एष पुत्रस्य वै धर्मस्तथा तीर्थं नरेषु-हि।।

अर्थात्:-जो पुत्र पिता का आदर करता है उस को वेद पढ़ने की ज़रूरत नहीं है पिता ही पुत्र का धर्म है, पिता ही पुत्र का तीर्थ है।

जो व्यक्ति माता-पिता की सेवा करता है उस पर माता-पिता की कृपा होती है तथा वह संसार के प्रत्येक क्षेत्र में सफल रहता है तथा जिस पर पितृप्रकोप होता है वह किसी भी क्षेत्र में प्रगति नहीं करता है शास्त्रों में लिखा है कि मानव जीवन पर पितरों का विशेष प्रभाव होता है जो अपने पितरों का श्राद्ध या तर्पण नहीं करता है उस का जीवन कई प्रकार के संकटों से युक्त रहता है, अपने पितरों का श्राद्ध तथा तर्पण अवश्य करना चाहिये, श्राद्ध या तर्पण करते समय हमें गोत्र की आवश्यकता पड़ती है इस कारण अपने गोत्र के विषय में अवश्य जानना चाहिये।

गोत्र क्या है?

यह बात सुप्रसिद्ध है कि हमारे पूर्वज ऋषि या मुनि थे हमारे वंश को चलाने वाला अथवा जन्म देने वाला जो ऋषि या मुनि हुआ है उसी ऋषि के नाम से वंश चल पड़ता है परन्तु काश्मीर में पठान शासन के पश्चात् हम काश्मीरी, गोत्र के महत्व को भूल गये, काश्मीरी गोत्रों के साथ बहुत निरर्थक शब्द जुड़ गये हैं जिस कारण उन को समझने में द्विविधा होती है कि हमारे वंश को चलाने वाला कौन ऋषि है जैसे '**दर-भारद्वाज़**' इस में दर निरर्थक शब्द है '**भारद्वाज**' व्याकरण से शुद्ध है। जहां पर गोत्र में कुछ डांवा-डोल दिखता हो अथवा अपने गोत्र के विषय में पूरी जानकारी ना हो तो अपने गोत्र को '**कश्यप**' माने अर्थात '**कश्यप ऋषि**' के सन्तान।

काश्मीरी पण्डितों के गोत्र और जाति

हमारे पास ई 1889 की छपी हुई एक पुस्तक मौजूद है, जिस में काश्मीरी पण्डितों के गोत्र और जाते दर्ज हैं, उसी पुस्तक के आधार पर आम जनता की जानकारी के लिये विजयेश्वर पञ्चांग में हम ने गोत्र तथा जात दर्ज किये है

सं0	गोत्र	जात
1	दत्तात्रेय	कौल, नगारी, जिन्सी, जलाली, वातल, सुल्तान, ओगरा, ऐमा, मोज़ा, दोनत, तोता, बसीह, किसू, मन्डल, संगारी, राफिज़, बालव, द्राबी, बामज़ाई
2	उपमान	रीवू।
3	धौम्य	राज़दान।
4	कण्ठ धौम्यां	राज़दान, वाँगनी, मुजू, शेर
5	स्वामिन मुद्गलि	ज़ाबेह, राज़दान, मुशरन, चन्ना, कण्ठ, खज़ांची, हस्त, वालव, मोंगा, देवानी, ज़टू, ज़ोतन, पोट, शोरा।
6	स्वामनि गौतम	गुरिटू, राज़दान, थपलू, नकैब, तहलाचार, काक, लाबरू, पारमन, ज़र्मी, पदौरा, लंगर, च्रंगू, खोसा, काकापोरी, बादाम, रैणा, काज़ी, चल्लू
7	स्वामनि गौतम लौगाक्ष	जोखू, राज़दान
8	स्वामनि भारद्वाज	तिक्कू, मुंशी, कहर, मिसकीन, घडियाली, बाज़ारी, खान
9	पालदेव वास गार्गेय	शिवपूरी, पण्डित, मल्ला, पूत, मीरखोर, कदलभुजू, कोकरू, हंगरू,

सं०	गोत्र	ज़ात
		बकाया, खशू, किचलू, मिसरी, खर, माम
10	पत सास कौशिक	गंजू, कुचरू, सोलू, ज़ट्रू, अम्बारदार, कुली, वैष्णवी, ब्राब्रू, मुसलमान, कपान, वांचू, मियां, जवानशेर, जाला, पंजू, मट्टू, फोतदार।
11	देवपत सामिन औपमन्यु कौशिक	शिवपुरी
12	देव औपमन्यु	खोसू, मेता, पण्डित
13	भव कापिष्ठल औपमन्यु	वानी, खान
14	सामिन वास औपमन्यु	डुलू
15	भूत औपमन्यु शलान क्यान	गीरू

सं०	गोत्र	ज़ात
16	स्वामिन वास औपमन्यु	भटट
17	स्वामिन औपमन्यु	गिगू
18	कश औपमन्यु	भटट
19	भूतवास औपमन्यु लौगाक्ष	पैशन, ज़ालपूरी, ठाकुर
20	राजभूत लौगाक्ष देवल	भान
21	रात्रि भार्गवा	ज़ित्शू
22	भूत लौगाक्ष धौम्या गौतम	हण्डू
23	देवसामिन गौतम कौशक मुद्गल्य भारद्वाज	पण्डित, कोकिल
24	स्वामिन मुद्गल्य पाराशर	गीरू
25	स्वामिन वास	तुफची

सं0	गोत्र	ज़ात
26	स्वामिन कौशिक	ठाकर, वातल
27	स्वामिन भार्गवा	बाली, बटव
28	स्वामिन कौशिक भारद्वाज	भटट, कोकरू
29	स्वामिन शाण्डल्य	पण्डित, वास
30	स्वामिन वास आत्रेय	दुस्सू, गासी, वाज़ा
31	स्वामिन गौतम आत्रेय शलान कौत्स	रैणा
32	स्वामिन गौतम आत्रेय	चोलू
33	स्वामिन कण्ठ कश्यप	लाब्रू
34	स्वामिन गार्गेय	मचामान
35	स्वामिन गण भौशक	पावेह
36	स्वामिन गौतम भारद्वाज	कमदा
37	स्वामिन वास लौगाक्ष	तव
38	दरभारद्वाज	दर, त्रिच्छल, मिसरी, जवानशेर, कन्धारी, थालचूर, ओठू, तुर्की, वागुज़ारी, बांगी
39	वशिष्ठ भारद्वाज	भटट, हखू, हण्डू
40	देव भारद्वाज	भटट, माड, कल्लू
41	शर्मण भारद्वाज	भटट
42	देव भारद्वाज कौशिक	देवा
43	शाण्डल्य भारद्वाज	भटट
44	नन्द कौशिक भारद्वाज	भटट
45	कौशिक भारद्वाज	भटट
46	शाण्डली	कार
47	चण्द शाण्डली	साधू
48	वर्षाण्डली	जोगी
49	वरवासक शाण्डली	सफाया
50	वरदेव शीलान कपी	मोटा
51	मित्र शाण्डली	सैद
52	देव शाण्डली	भतफूल
53	राज शाण्डली	वख
54	सम शाण्डली	भटट

सं0	गोत्र	ज़ात
55	स्वामिन ऋषि कनि गार्गेय	कौल, कमज़ात
56	शैलान कौत्स	तेलवान, कौल, मुक्कू
57	कौत्स आत्रेय	भटट
58	राजदत आत्रेय शलान कौत्स	भटट
59	शर्मण आत्रेय	गढू
60	भव आत्रेय	वारिकू
61	स्वामिन वार्षिकन	काठजू, काव, चौथाई
62	भव कापिष्टल	काव
63	रात्र विशवामित्र अगस्त	त्रकरू, मटटू
64	दर केशटल	लदव, भटट
65	कण्ठ कश्यप	वासव, राज़दान, भटट
66	मित्र कश्यप	भटट
67	दत्तशर्मण कण्ठ कश्यप	ब्राडू, रैणा
68	देव कश्यप मुद्गल्य कश्यप	ब्राडू
69	देव कश्यप मुद्गल्य गौतम	आखन
70	स्वामिन भार्गव भारद्वाज ओस अत्री	कल्लू
71	देव गर्गी	बहान
72	देव वसिष्ट	अकबलू
73	देव कौत्स आत्रेय	[illegible]
74	देव विश्वामित्र वार्षिगन	[illegible]
75	देव गौतम	भटट
76	देव कण्ठ कश्यप	कार
77	देव लौगाक्ष	पण्डित, सन्तापोरी
78	देव कौशक	भटट
79	अर्ध वार्षिण शाण्डल्य	चौधरी
80	कौशिक	भटट
81	पत्त सामिन कौशिक देव रात्र परवार	पण्डित, वाईल
82	वसिष्ट	भटट, रंगाटेंग

सं0	गोत्र	ज़ात
83	रात्र विश्वामित्र अगस्त	पण्डित
84	कार चन्द शाण्डल्य	चौधरी, कार
85	मित्रा कौशिक	पण्डित
86	शरमताकौत्स	भटट, सस
87	दतवास	कहार
88	वसिष्ट स्वामिन मुद्गल्य	भण्डारी
89	ईश्वर शाण्डल्य कौशिक	रावल, नखासी
90	दत दत शेलान कौत्स	भटट, सत्थू, कसबा, मलिक, कहकशू
91	रात्र वार्षिगण	कोतर
92	पाराशर	पचिह
93	आत्र भार्गव	हापा
94	भूत लौगाक्ष	पण्डित
95	राज वसिष्ट	शँगलू
96	दत्त वार्षिमण	सनर
97	ऋषि कौशिक	काशकारी

सं0	गोत्र	ज़ात
98	ऋषि कविगार्ग	ज़ारू
99	समवास गार्ग	भटट, सम
100	नन्द कौशिक	भटट
101	स्वामिन मुद्गल्य	मदन
102	स्वामिन हासवसी	खान, कटू
103	भव कापिष्ठल	राडू, कल्ला, सापन, लटू, कटू, वांटू, चूर, चूादर, गीरू, हकीम, वांगनू, शैव
104	भव कापिष्ठल औपमन्यु	कठारू
105	स्वामिन वास लौगाक्ष	छटू
106	दरभारद्वाज	ज़ंगम
107	देव भारद्वाज	तू
108	भूत औपमन्यु	खि, रैबरी, ब्रारू, सैदा, उप्पल
109	भूत औपमन्यु शलान क्यान	गंजू, कंजू

सं०	गोत्र	ज़ात
110	स्वामिन आत्रेय	शाल, हण्डू, जदवाली, सिक, चक
111	शाण्डल्य	शायिर
112	स्वामिनवास गार्गी	सम, नन्द, गदवा, दत्त हलमत
113	स्वामिन गोश वास औपमन्यु	चकू
114	शमर्ण कौत्स आत्रेय	रगू, नन्द, गदवा, दत्त
115	देव पाराशर	यच्छ
116	कण्ठ धौम्या	काव ब्रेठ
117	स्वामिन औपमन्यु	गिगू
118	दर वार्षिमण	सफाया, बखशी, कुचरु, शाली
119	दर कापिष्ठल औपमन्यु	मीच
120	मित्रा स्वामिन कौशिक आत्रेय	पाण्डित हण्डू
121	वासुदेव पालगार्ग्य	पटवारी
122	पत स्वामिन कौशिक	कन्ना, कितरू, दरवारी वल्ली गणहार
123	ऋषिकन्य गार्ग्य	गोजा
124	देवभारद्वाज	मावा, गडरू
125	वसिष्ठ विश्वामित्र	त्रकरु
126	पत स्वामिन कौशिक	गनहार
127	स्वामित गौतम	तैमिनी
128	स्वामिन वास औपमन्यु	वल्ली
129	ओपमन्यु कौशिक	सपरू
130	पालदव वास गार्ग्य	पण्डित (ठठ्ठू) भवनु
131	नन्द गौतम काश्यप	भट्ट
132	राज़ कौशिक	भट्ट
133	उपमन्यो लोगाक्षी	धोबी कारिहलू
134	गोश वाच्य उपमन्यु	पण्डिता
135	देवदत्त गौतम कौशिक भारद्वाज	पण्डित
136	शलाक्यान	पट्ठवारी
137	रत्न क्वच	रैणा
138	राज पराशर	राजदान
139	करशाण्डल्य	शिशु
140	देवकश्यप	चत्ता
141	रात्र विश्वामित्र वसिष्ठ	त्रकरू
142	दर शालक्य	दर
143	काल	मातू, बिन्दरू (मद्दू)
144	देवशांडल्य	जान, तिंगलू
145	स्वामिन वसिष्ठ	कोठेदार
146	दर कापिष्ठल मानव	भूतनाथ, ज्योतिषी
147	विष्णु आत्रेय	भान

शिवरात्रिपूजा

शिवरात्रि के लिये कलश नटू इत्यादि (वटुक) रखने का चित्र

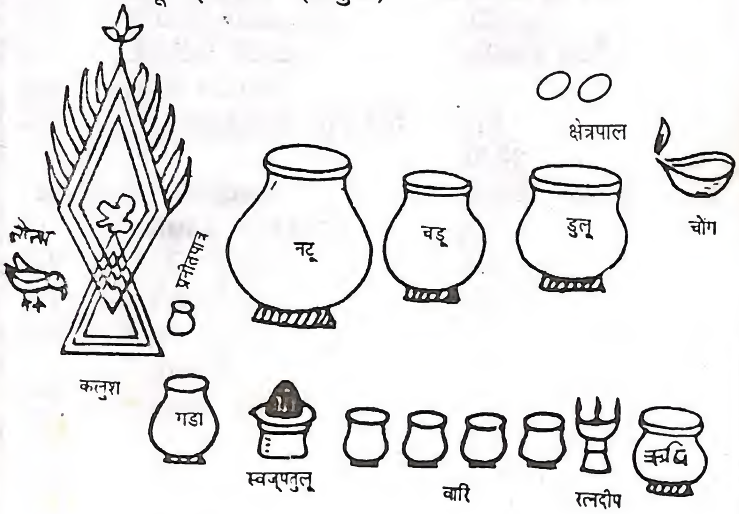

पूजा के लिये सामग्रीः- चूना दूध, दही, फूल, तिल, काण्ठगण, सिन्दूर, नारीवन (मौली), रत्नदीप, चोंग, आईना जंग के लिये चावल, पवित्र, (यदि पवित्र न मिले, तो उतने समय के लिये अनामिका ऊँगली में स्वर्ण की अँगूटी डाल कर रखें, अगर दर्भ न मिले तो दूर्वा यानि द्रमन घास प्रयोग में लायें), दर्भ, नाबद, कालामिर्च, लोंग, किशमिश। पूजा के स्थान पर बटुकनाथ के पास ही ब्रह्मकलश चूने से बनाये, ब्रह्मकलश का चित्र में देखें ब्रह्मकलश पर एक लोटा रखिये, उस में विष्टर, पानी, फूल डाल कर रखें-कलश के ईशानी कोन से क्रमशः सबवटुक नुटू डुलिजियाँ आदि दक्षिण की ओर आरियों पर पहले से ही सज्जा कर रखें, पूजास्थान को इस भावना से सजाये कि आज मैंने पार्वती सहित भगवान् शंकर को निमन्त्रित करना है, वटुकनाथ के दायें और अन्त में चोंग रखें, चोंग से जरा उत्तर की ओर दो कटोरियाँ (क्षेत्रपाल रखें) जैसा कि हमने नकशे में दिखाया है-अव यजमान को चाहिये

आसन पर पूर्व की ओर हाथ में फूल लेकर कलश पूजा आरम्भ करे थोड़े-थोड़े फूल कलश पर डालते जायें और पढ़ते रहें-

ॐ कारो-यस्य मूलं क्रम-पद-जठर च्छन्द-विस्तीर्ण-शाखा। ऋक्-पत्रं सामपुष्पं यजुर-उचितफलः स्यात्-अथर्वः प्रतिष्ठा।। यज्ञच्छाया-सुशीतो द्विजगण-मधुपैः गीयते यस्य नित्यं। शक्तिः सन्ध्या-त्रिकालं-दुरितभयहरः पातु नो वेद-वृक्षः।। मुक्ता-विद्रुम-हेमनील-धवल-च्छायै-र्मुखैस्त्रीक्षणै युक्तामिन्दुः निबद्ध-रत्न-मुकटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम्।। गायत्रीं वरदाभयां-कुशकरां शूलं कपालं गुणं। शंखं चक्रम्-अथार-बिन्द युगलं हस्तै-र्वहन्तीं भजे।। आयातु वरदा देवी त्रयक्षरा ब्रह्मवादिनी। गायत्री च्छन्दसां मातर्-ब्रह्म-योने-नमोस्तुते (तीन बार पढ़िये।)

भद्रं-पश्येम-प्रचरेम, भद्रं-भद्रं वदेम शृणुयाम भद्रम्। तन्नो मित्रो वरुणो माम-हन्ताम्-अदितिः सिन्धुः, पृथ्वी उत द्यौः। अभि नो देवीरवसा महः शर्मणा नृपत्नीः, अच्छिन्न-पत्राः सचन्ताम्। इहेन्द्राणीमु-पह्वये, वारुणानीं स्वस्तये, अग्नायीं सोमपीतये।। मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्, पिपृतां नो भरीमभिः।। तयोर्-इत्-घृतवत्-पयो, विप्रा रिहन्ति धीतिभिः, गन्धर्वस्य ध्रुवे पदे। स्योना पृथिवी भवानृ-क्षरा, निवेशनी, यच्छाऽनः शर्म सप्रथः।। अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णु- र्विचक्रमे पृथिव्या सप्त धामभिः। इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढमस्य पांसुरे।। त्रीणि पदा विचक्रमे त्रिष्णुर्गोपा अदाभ्यः, अतो धर्माणि धारयन्। विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पृशे, इन्द्रस्यः युज्यः सखा।

तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम्।। तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते-विष्णोर्यत् परमं पदम्।। ॐ गायत्र्यै नमः, ॐ भुर्भूवः स्वः-तत्-सवितु-र्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् (तीन बार) पढ़ें।

क्षेत्रपालों को अर्घ डालते हुये पढ़ें:- अश्वमेधो घोराणामार्षम्।। ॐ द्रष्ट्रे नमः, उपद्रष्ट्रे नमोऽनुद्रष्ट्रे नमः, ख्यात्रे नमः उपख्यात्रे नमो, नुक्शास्त्रे नमः, श्रृण्वते नमः, उपश्रृण्वते नमः, सते नमः, असते नमो, जाताय नमो, जनिष्यमानाय नमो, भूताय नमो, भविश्यते नमः, चक्षुषे नमः, श्रोत्राय नमो, मनसे नमो, वाचे नमो, ब्रह्मणे नमः, शान्ताय नमः, तपसे नमः।। भूतंभव्यं भविष्यत्-वषट्-स्वाहा नमः, ऋक्-साम-यजु-र्वषट् स्वाहा नमो, गायत्री त्रिष्टुप् जगती वषट् स्वाहा नमः। पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौर्वषट् स्वाहा नमः। अन्नं कृषिवृष्टिः वषट् स्वाहा नमः, पिता पुत्रः पौत्रो वषट् स्वाहा नमः। प्राणो व्यानोऽपानो वषट्स्वाहा नमो, भूर्भुवः स्वर्वषट् स्वाहा नमः। यो विश्व-चक्षुर्-उत-विश्वतो मुखो विश्वतो हस्त, उत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमते संपतत्रै-र्द्यावापृथिवी जनयन् देव एकः।। ॐ आब्रह्मन्-ब्राह्मणो ब्रह्म-वर्चस्वी जायताम्-अस्मिन्- राष्ट्रे, राजन्य इषव्यः शूरो महारथो जायतां, दोग्ध्री धेनु-र्वोढा- नड्वान्-आशुः सप्ति-र्जिष्णू- रथेश्ठः, पुरन्धि-र्योषा, सभेयो, युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवतीर्नं ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। कलश पर अर्घ चढ़ाते

हुये पढ़ेः- "इषे त्वोर्जे त्वेति ब्रह्मणः-" इषे त्वार्जे त्वां वायवः स्थो, पायवः स्थ देवो वः, सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे, आप्यायद्धव-मंध्न्या देवभागं, प्रजावतीरन-मीवा- अयक्ष्मा मावस्ते न ईशत माघशंसः, परिवो रुद्रस्य हेति-र्वृणक्तु, ध्रुवा-अस्मिन्-गोपतौ स्यात् ब्रह्वी-र्यजमानस्य पशुन्-पाहि-यजमानस्य पशुपा असि, देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे-श्विनोबाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां-आदधे, गोषदसि प्रत्युष्टं रक्षः, प्रत्युष्टरातिः प्रेयमागा-द्धिषणा बर्हिरुछ मनुना कृता, स्वधया वितष्टा उर्वन्तरिक्षं वीहीन्द्रस्य परिषू-तमसि माधो, मोपरि, परस्त ऋद्धया, स मा च्छेत्ता, ते मा रिषत् देवबर्हिः शतवल्शं विरोह सहस्रवल्शं विवयं रुहेम, आदित्या, रास्नासीन्द्राण्या सन्नहन्नं पूषा ते ग्रन्थिं ग्रथ्नातु, स ते मा स्थात्-इन्द्रस्य त्वा बाहुभ्यां-उद्यच्छे बृहस्पतेस्त्वा मूर्ध्ना हरामि देवं गममसि, तदा हरन्ति कवयः, पुरस्तात्-देवेभ्यो जुष्टं-इह बहिर्-आसदे, वसोः पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि सहस्रधारं-अय क्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः। मधुमत् धृतवत पिन्वमाना जीवा जीवन्तीर्- उपतः सदेम, मातरिश्वानो घर्मोसि द्यौर्-असि पृथिव्यसि विश्वधाया परेण, धाम्ना हनुतासि माह्वाः, सा विश्वायुः सा विश्वव्यचाः सा विश्वधाया हुतस्तोको हुतो, द्रप्सोग्नये बृहते नाकाय स्वाहा, द्यावा-पृथिवीभ्यां संपृच्यध्वं-ऋतावरी, ऊर्मिणा मधुमत्तमा मान्द्राधानस्य सातयः, इन्द्रस्य त्वा भागं, सोमेना-तनत्-म्यदस्तम्-असि विष्णवे-विष्णो हव्यं रक्षस्वापो जागृत। महितृणां मवोस्तु द्युम्नं मित्रस्यार्यम्णः, दुराधर्ष

वरुणस्य, नहि तेषाममाचन नाध्वसु वरणेषु ईशे रिपुर-अधशंसः, यस्मै पुत्रासो अदितेः प्रजीवसे मर्त्यीय ज्योति-यच्छन्त्यः जम्नम्-सोमानं स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते, कक्षीवन्तं य औषजो यो रैवाण्यो अमीवहा वसुवित्-पुष्टिवर्धनः सनः सिषक्तु यस्तुरः मानः शंसो अररुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अब प्रणीतपात्र में जो कलश के समाने दायें तरफ है, उस में तिल अक्षत पुष्प अर्घ और तीन मन्त्रों से तीन फूल डालते हुये पढ़ें:-

सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। (1) संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो। अस्तु वः (2) संय्यावः प्रियास्तन्वः सं प्रिया हृदयानि वः। आत्मा वो सं प्रियः संप्रियास्तन्वो मम। (3) प्रणीतपात्र के दुर्भ अथवा विष्टर से कलश और क्षेत्रपालों को छीटें देते हुये पढें: अग्नेर-आयुर-असि तस्य ते मनुष्या आयुष्कृतस्-तेन-अस्मै अमुष्मै आयु-र्धेहि। इन्द्रस्य प्राणः स ते प्राणं ददातु यस्य प्राणस्तस्मै ते स्वाहा। पितृणां प्राणस्ते ते प्राणन्ददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा। मरुतां प्राणास्ते ते प्राणन्ददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा। विश्वेषां देवनां प्राणास्तेते प्राणन्ददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा। प्राजापतेः प्राणः परमे-मेष्ठिनः प्राणस्तौ-ते प्राणं-दत्तां ययो-प्राणस्ताभ्यां वां स्वाहा। यदऽसर्पस्-तत्सर्पिर्-अभवो-यत्-नवमैः तत्-नवनीतम् अभवो-मन्-अद्रि-यथा-तत्-घृतम्-अभवो। घृतस्य धाराम्- अमृतस्य-पन्थामिन्द्रेण दत्तां प्रयन्त मरुद्भिः। तत्वा विष्णुरन्वपश्यत्-तत्त्वेडा-गव्यैर-अयत्। पात्रमानेन त्वा स्तोमेन गायत्र्या वर्तन्या पांशोवीर्येणोद्धराम्यसौ।

बृहता त्वा रथन्तरेण त्रिष्टुभा वर्तन्या शुक्रस्य वीर्येणोत्सृजाम्यसौ। अग्नेस्त्वा मात्रया जगत्या वर्तन्या देवस्त्वा सवितोन्नयतु जीवातवे जीवनस्याया असौ। देवा आयुष्मन्तस्ते-अमृतेना आयुष्मान्तस्तेषाम्-अयम्-आयुषा-आयुष्मान्-अस्त्वसौ। ब्रह्मायुष्मत्-तत्-ब्राह्मणैः- आयुष्मत्-तस्यायम्- आयुषा-आयुष्मान्-अस्त्वसौ। अग्निर्-आयुष्मान्-स वनस्पतिभिर्-आयुष्मान्-तस्यायम्-आयुषा-युष्मान्-अस्त्वसौ। यज्ञ आयुष्मान्-स-दक्षिणाभिः आयुष्मान- तस्यायम्-आयुषा-आयुषामन-अस्त्वसौ। ओषधयः आयुष्मतीः-ता-अद्भिर्-आयुष्मती-स्तासाम-अयम्-आयुषा-युष्मान्-अस्त्वसौ इमम्-अग्न-आयुषे वर्चसे कृधि तिग्ममो जो वरुण संशिशाधि। मातेवास्मा अदिते शर्मयच्छ विश्वेदेवा जरदष्टिर्यथासत्। अश्विनो प्राणस्तौते प्राणं दत्तां तेन जीव, मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं दत्तात् तेन जीव। अब पूजा स्थान के सभी दिशाओं को अर्घ तिल अर्पण करते हुए तथा सभी सामग्री को छींटे देते हुये पढ़ेः- ये देवाः पुरः संदोग्निनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽवनतु तेभ्यः स्वाहा। ये देवा दक्षिणात् सदोयमनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोवन्तु तेभ्यः स्वाहा। ये देवाः पश्चात् सदो मरुत् नेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नो वन्तु तेभ्यः स्वाहा। ये देवा उत्तरात् सदो मित्रावरुण नेत्रा रक्षोहणस्तेनः पान्तु नोवन्तु तेभ्यः स्वाहा। अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़ेः-

अध्वर्योयं यज्ञो अस्तु देवा ओषधीभ्यः पशुभ्यो मे धनाय। विश्वस्मै भूताय ध्रवो अस्तु देवाः स पिन्वस्व घृतवत्-देवयज्ञ। अर्घफूल चढ़ाते हुये

पढेंः- इहैवैधि मा पच्योष्ठाः पर्वता इवाविचाचलत्। इन्द्र इहेव ध्रुवः- तिष्ठेह यज्ञमुदारय। दो दर्भ के तिनके अपने आसन के रूप में डालते हुये पढेंः- इमम-इन्द्रो-अदीधरत्-ध्रुवं-ध्रुवेण हविषा हविः। तस्मै सोमे अधिब्रुत्-तस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः (कलश को आसन डालते हुये पढेंः-) ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथ्वी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं, जगत् ध्रुवो राजा विशामसि। भूमि को तिलक फूल और अक्षत लगाते हुये पढेः- मही द्यौः पृथ्वी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः, (आकश को) बडित्था पर्वतानां क्षेत्रं बिभर्षि पृथिवि प्रया भूमिं प्रवत्वति मह्वा जिनोषि महिनि - (कलश को)- निषुसीद गणपते गणेषु त्वामाहु-विर्प्रतमं कवीनाम्। न ऋते त्वत्क्रियते किंचनारे महामर्कं मधवन् चित्रमर्च। कुमारं माता सुवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे। अनीकमस्य नमिनज्जनासः पुराः पश्यन्ति निहित-मरतौ। अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद- प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीः जुषताम्। इयं शुष्मेभि-र्विसखा इवारुजत्-सानु-गिरीणान्त विश्वभिर-ऊर्मिभिः। पारावतघ्नीम्-अवसे सुवृक्तिभिः-सरस्वतीम् आविवासेम धीतिभिः। कांस्यस्मितां हिरण्य-प्राकाराम-आर्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् पद्मे स्थितां पद्मवर्णां ताम्-इहोपह्वये श्रियम्। विश्वकर्मा विश्वदेवो विश्व जित विश्वदर्शितः। ते त्वा घृतस्य धारया श्रैष्ठाय समसूषत। ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनाम्-ऋषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गृद्रणां स्वधितिः-वनानां सोमः पवित्रम् अत्येति रेभन्। प्रतत् वष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमःकुचरो गिरिष्ठाः।

यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्व-धिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा। यो रुद्रो अग्नौ, योऽप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु। योरुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः।। अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवम्-ऋत्विजम्-होतारं रत्नधातमम्।। इषे त्वोर्जे त्वा वायवः स्थो पायवः स्थ देवो वः सविता प्रार्पयत, श्रेष्ठतमाय कर्मणे।। अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये निहोता सत्सि बर्हिषि। शन्नो देवीर्-अभीष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरऽभि-स्रवन्तु नः। आहं पितृन् सुविदत्रां अवित्सि न पातञ्च विक्रमणंच विष्णोः बर्हिषदो ये स्वधया सतुस्य भाजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः।। वषट्ते विष्णवास आकृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम्। वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा

नः।। फाल्गुने शक्ति सहिताय चक्रिणे नः। क्रियासहिताय दामोदराय नमः। दुर्गायै नमः। त्र्यम्बकाय नमः। वरुणाय नमः। यज्ञपुरुषाय नमः। अग्निष्वान्तादिभ्यः पितृगणदेवाभ्यो नमः।। रात्रीं प्रपद्ये जननीं सर्वभूत निवेशिनीम। भद्रां भगवतीं कृष्णां विश्वस्य जगतो निशाम्। संवेशिनी संयमीं ग्रहनक्षत्रमालिनीम्। प्रापन्नोहं शिवां रात्रीं भद्रे पारमशीमहि नमः। कालरात्र्यै नमः। तालरात्र्यै नमः, राज्ञिरात्र्यै नमः, शिवरात्र्यै नमः। यो रद्रो अग्नौ य अप्सु य ओषधिषु यो वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वाभुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः।। क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जायमसि गामश्वं पोषयित्वा स नो मृडातीदृशे। द्वादश्यां देवीपुत्र हेरकनाथाय, त्रयोदश्यां देवीपुत्र वटुकनाथाय, त्रिपुरान्तकाय, भुतबलेभ्यः,

वेतालराजाय अग्निवेताल राजाय, अग्निजिह्वाय, बहुखातकेश्वराय, करालाय स्थान क्षेत्रपालाय कामाख्याय मंगलराजाय एकपादाय योगिनीबलेभ्यो, भीमरूपिणो विश्वक्सेनाय, तारकाख्याय, जयक्-सेनाय, हाटकेश्वराय, तेजाय, राजराजेश्वराय चण्डाय समस्तशिवरात्रीयागदेवताभ्यः विष्णु पञ्चायतन-देवताभ्यः अभयंकारीदेव्यै क्षेमंकरीभवान्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इहराष्ट्राधिपतये आनन्देश्वर भैरवाय तिलतण्डुलमात्रं दधिमधुमिश्रं ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

(कलश पर फल अर्घ चढ़ाते हुये पढ़ें):- (1) हिरण्यगर्भः समवर्तताग्ने भूतस्य जातः पतिर-एक आसीत् स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम (2) यः प्राणतो निमिषतश्च राजा पतिर्विश्वस्य जगतो बभूव। ईशेयो अस्य द्विपदश्च-तुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम। (3) य ओजदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम। (4) येन द्यौर्-उग्रा पृथिवी दृढा येन सुस्तम्भितं येन नाकम्। यो-अन्तरिक्षं विममेवरीयः कस्मै देवाय हविषा विधेम। (5) य इमे द्यावा पृथिवी तस्तभाने आधारय द्रोधसी रेजमाने। यस्मिन् नधि विततः सूर एति कस्मै देवाय हविषा विधेम। (6) यस्येमे विश्वे गिरयो महित्वा समुद्रं रसया सहाहुः। दिशो यस्य प्रदिशः पञ्चदेवी कस्मै देवाय-हविषा विधेम। (7) आपो ह-यन्महती विश्वम्-आयुः-गर्भं दधाना जनयन्तीर्-अग्निम्।। ततो देवानां निरवर्त-तासुर्-एकः कस्मै देवाय हविषा विधेम। (8) आ नः प्रजां जनयतु

प्रजापति-धार्ता दधातु सुमनस्यमानः। संवत्सर ऋतुभिश्चाक्लृपानो मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु। (9) अर्चन्तस्वा हवामहे अर्चन्तः समिधीमहि। अग्नेर-अर्चतः ऊतये अर्चत प्रार्चत प्रियमेधसो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णाम्-अर्चत-अर्चत।

।।इति कलश पूजा।।

शिव पूजा

भद्रपीठ या थाली में "सुत्रपुतलू" अथवा "पार्थिवेश्वर" रखकर नारी कचलू अथवा "खोसू" से पात्र में जलधारा डालते हुये पढें:

ॐ अस्य श्री आसन-शोधन-मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ-ऋषिः सुतलं छन्दछः कूर्मो देवता आसन-शोधने विनियोगः।

पृथ्वि माता को तिलक, फूल, चावल चढ़ाते हुये पढ़ें:-

प्रींपृथिव्यै आधार-शक्त्यै समालभनं गन्धोनमः, अर्घोनमः, पुष्पं नमः।

हाथ जोड़कर पढ़ें:- पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता, त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।

दर्भ के दो तिनके अनामिका अंगुलियों में रख कर गणेश जी का ध्यान रखते हुये पढ़ें:-

(1) शुक्लाम्बर-धरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भु-जम्, प्रसन्न-वदनं ध्याये सर्व विघ्नोप-शान्ये। अभि-प्रीतार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि, सर्व-विघ्न छिदे तस्मै गणाधि-पतये नमः।

(2) कर्पूर-गौरं करुणाव-तारं संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम्, सदा रमन्तं हृदयार-बिन्दे भवं भवनी-सहितं नमामि।

(3) .गुरु-र्ब्रह्मा गुरु-र्विष्णु, गुरुः साक्षत्-महेश्वरः,

गुरुर्-एव, जगत्-सर्वं तस्मै श्री गुर-वे नमः, गुर-वे नमः, परम-गुर-वे नमः, परमेष्ठ-गुर-वे नमः, परमाचाया नमः, आदि-सिद्धिभ्यो नमः।

दर्भ के दो तिनके पकड़कर अंगन्यास कीजियेः-

हृदय को दोनों हाथों से छूते हुये पढेंः- **ॐ यो रुद्रो अग्नौ हृदयाय नमः,** सिर को स्पर्शः- **यो अप्सु य औषधीषु शिरसे स्वाहा,** चोटी कोः- **यो वनस्पतिषु शिखाये वष्ट्** वस्त्रों को स्पर्श करते हुये पढ़ेंः- **यो रुद्रो विश्वाभुवना विवेश-कवचाय हुम्।** नेत्रों को स्पर्श करते हुयेः- **तस्मै रुद्राय नेत्राभ्यां वौषट्,** चुटकी मारते हुये पढेंः- **नमोअस्तु देवा अस्त्राय फट्।** चारों और तिल फेंकते हुये पढेंः- **अपसर्पन्तु ते भूतो ये भूता भुवि संस्थिताः, ये भूता विघ्नकर्त्तार-स्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।**

प्रणायाम करके हृदय और मुख को जल की छींटे देते हुये पढेंः- **तीर्थे-स्नेयं तीर्थम्-एव समानानां, भवति मानः, शंस्योर्-अरुरुषो धूर्तिःप्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।**

अनामिका अंगुली पर पवित्र ऊपर की ग्रन्थि (पर्व) पर धारण करते हुये पढ़ेंः-

वसोः पवित्रम्-असि श्यातधारं वसूनां पवित्रम्-असि सहस्रधारम, अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्ति।

यजमान को तिलक लगाते हुये पढ़ेंः-

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः शत्रूणां बुद्धि-नाशोस्तु मित्राणाम्-उदयस्तव आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्यम्- एतत्-त्रितयम्- अस्तु ते जीव-त्वं शरदः शतम्। अपनी मध्यमा अंगुली से अपने आपको तिलक लगाते हुये पढ़ेः-

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच-भूतात्मकाय विश्वात्मने

मन्त्र-नाथाय आत्मने नारायणाय-आधार-शक्त्यै समालभनं गन्धोनमः अर्घोनमः पुष्पंनमः।

चोंग (दीप) को तिलक अक्षत और पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:-

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमरा-पहः, प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।

धूप को तिलक अर्घ पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:-

वनस्पति-रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्ध वत्तमः आधारः सर्वदेवानां धूपोयं प्रति-गुह्यताम्।

सूर्य देवता को निर्माल्य के थाल में अर्घ, चावल, फूल चढ़ाते हुये पढें:- **नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमोनमः।**

दर्भ सहित कटौरी से शिवलिंग अथवा सुज्पुतलू पर जलधारा डालते हुये पढ़ें:-

यत्रास्ति-माता, न पिता न बन्धुर्-भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च, न ज्ञायते, यत्र दिनं न रात्रि-स्तत्रात्मदीपं शरण प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधार-शक्तये धूप-दीप संकल्पात्-सिद्धिर्-अस्त् धूपो, नः दीपो नमः। ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य तावत् तिथौ-अद्य, फाल्गुनमासस्य कृष्णपक्षस्य तिथौ-द्वादश्यां वासरा-नित्वायां महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश-देवताभ्यः ब्रह्म, विष्णु-महेश्वर- देवताभ्यः चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय मासपतये नारायणाय फाल्गुने शक्ति-सहिताय चक्रिणे क्रिया-सहिताय गोविन्दाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञ पुरुषाय अग्नि-ष्वातादिभ्यः पितृगण-देवताभ्यः भगवते भवाय देवाय, उग्राय देवाय, भीमाय देवाय,

ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय-महादेवाय, पार्वती सहिताय, परमेश्वराय, देवीपुत्राय-वटुकनाथाय कालरात्र्यै तालरात्र्यै राज्ञरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त-शिवरात्रि-देवताभ्यः धूपदीप संकल्पात्-सिद्धिर्-अस्तु धूपो नमः दीपो नमः।

बायां यज्ञोपवीत रखकर तिल सहित पानी से पितरों को जल देते हुये सञपुतलू पर जलधारा डालते हुये पढ़ें:-

समस्तमातापितृभ्यो द्वादश-दैवतेभ्यः पितृभ्यो धूपः स्वधा दीपः स्वधा, दायें भुजा में यज्ञोपवीत धारण करके विष्टर अथवा दर्भ के जल से पूर्ण खोसू या नारी कचलू में तिलक और पुष्प डालते हुये पढ़ें:-

सं वः सृजामि हृदयंससृष्टं मनो अस्तु-वः। संसृष्टः-तन्वः सन्तु वः। संसृष्टः प्रणोऽस्तु वः। सं या वः प्रिया-स्तन्वः सं प्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो-अस्तु सं प्रियः संप्रिया तन्वोमम।

इसी खोसू के जल से सञ्पुलू अथवा शिवलिंग या पार्थिवेश्वर और सारे वटुक नाथ को जल की छींटे दर्भ के तिनकों अथवा विष्टर से देते हुये पढ़ें:-

अश्विनोः प्राणः तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव, मित्रा-वरुणयोः प्राणः-तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं ददातु तेन जीव, समस्त-शिवरात्रि-देवताभ्यः जीवादानं परिकल्पयामि नमः।

अक्षत (चावल) सहित दर्भ के दो तिनके सीधे पकड़कर यह मन्त्र तीन बार पढ़ें:-

ॐ भूः पुरुषम्-आवाहयामि नमः। ॐ भुवः पुरुषम्-आवाहयामि नमः। ॐ स्वः पुरुषम्-आवाहयामि नमः। (3)

गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़ें:- "ॐ भू भुर्वः स्वः तत्-सवितुर्-वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो

यो नः प्रयोदयात्''।(3)

यह मन्त्र भी तीन बार पढ़ें:-

''ॐ तत्-पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदायत्। (3)

यह मन्त्र पढ़कर फिर से पढ़ें:-

ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य फाल्गुन मासस्य कृष्ण पक्षस्य तिथौ महापर्वणि द्वादश्यां परतः त्रयोदश्यां वारान्वितायां, भगवतः भवस्य देवस्य, शर्वस्य देवस्य, पशुपतेः देवस्य, उग्रस्य देवस्य, भीमस्य देवस्य, ईशानस्य देवस्य, महादेवस्य पार्वती सहितस्य, परमेश्वरस्य देवीपुत्र वटुक-नाथस्य, कालरात्र्याः तालरात्र्याः शिवरात्र्याः समस्त-शिवरात्रि-देवतानां अर्चाम् अहं-कारिष्ये, ॐ कुरुष्व।

हाथ में पहले से पकड़े हुये दर्भ के दो तिनके निर्माल्य में छोड़कर, तिल सर्षप और जव को भी कन्धों पर से फेंके, अब शंकर की मूर्ति के सामने दर्भ के दो-दो तिनके (दर्भ के अभाव में दो-दो फूल) आसन के रूप में डालते हुये पढ़ें:-

ॐ विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वरे-श्वर आसनं दिव्यम्-ईशान दास्येहं परमेश्वर, भगवत् भवस्य दवेस्य, ईशानस्य देवस्य महादेवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य इदम्-आसनं नमः।

चावल सहित दर्भ के दो तिनके अनामिका और मध्यमा अंगुली पर अंगूठे से दवा कर यदि घंटी आपके पास हो वायें हाथ से बजाते हुये पढ़ें:-

भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, पशुपतये देवाय-रुद्राय देवाय, भीमाय देवाय, ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय, महादेवाय पार्वती-सहिताय, परमेश्वराय देवीपुत्र-वटुक-नाथाय, कालरात्र्यै

समस्त-शिवरात्रि-देवताभ्याः युष्मान्-पूजयामि ॐ पूजय।

चावलों को कंधों पर से फेंक कर दर्भ के पहले से रखे हुये दो तिनको को हाथ में ही रख कर नये चावल के दानों के सहित पकड़ कर पढ़ें:-

भगवन्तं भवं देवं, शर्वं देवं, रुद्रं देवं, पशुपतिंदेवं, उग्रंदेवं, भीमं देवं, ईशानं देवं ईश्वरं देवं, महादेव पार्वतीसहित परमेश्वर देवीपुत्र-वटुक-नाथं कालरात्रि तालरात्रि शिवरात्रि समस्त शिवरात्रि-देवता आवाहयिष्यामि, ॐ आवाहय।।

भगवान् शंकर की मूर्ति पर फूल चढ़ाते हुय पढ़ें:-

लिंगेऽद्य भक्त-दयया क्षणमात्रम्-एकं स्थानं निधाय भव-मत्- विहितांपुरारे। सर्वेश विश्वमय! हृत्कमलादि-रूढ पूजा गृहाण भगवन् भव मेद्य तुष्टः! भूमेर-जलात्-च, पवनात्-अनलात्-हिमांशोर्-उष्णार्चिषो हृदयतो गगनात-समेत्य, लिंगद्य सन्मणिमये मत्-अनुग्रहार्थ भक्त्यैक-लभ्य! भगवन् कुरु सन्निधानम् भगवन् पार्वतीनाथ भक्तानुग्रह-कारक अस्मत्-दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो।।

दोनों हाथों में मुट्ठीभर फूल उठाकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़कर भगवान् शंकर पर फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:-

इत्या-हूय तु, गायत्रीं त्रिसम्-उच्चार्य तत्त्व-वित्, मनसा चिन्तितैर्-द्रव्यै-र्देवम्-आत्मनि पूजयेत्, तेजोरूपं ततः क्षिप्त्वा प्रतिमायां पुनर्यजेत्।

दोनों कन्धों से जव फेंक कर प्राणयाम करें और खोसू में जल डालते हुये पढ़ें:-

पाद्यार्थम्-उदकं नमः, शन्नो देवीर्-अभिष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंयोर-अभि-स्रवन्तु नः।

अब यही खोसू हाथ में लेकर पढ़ें:- **भगवन्तः पाद्यं**

पाद्यम्।

खोसू का जल भगवान् शंकर पर डालते हुये पढ़ें:-

महादेव महेशान महानन्द परात्-पर, गृहाण पाद्यं मत्-दत्तं पार्वती परमेश्वर।। भगवते भवाय देवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय देवीपुत्र-बटुक-नाथाय, कालरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त-शिवरात्रि-देवताभ्यः पाद्यं नमः।

इस पाद्य से बचा हुआ जल निर्माल्य पात्र में डालकर खोसू में जल डालते हुये पढ़ें:-

शन्नो देवीर्-अभीष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोर्-अभि-स्रवन्तुनः। दर्भ, दूध, घी, दही, चावल, पानी, केसर, शहद यह आठ वस्तु इकट्ठे अर्घ्य कहलाते हैं- यही जल की धारा शंकर भगवान् अथवा सञ्पुलू पर डालते हुये पढ़ें:-

भगवन्तो-अर्घ्यम् अर्घ्यम्। त्र्यम्बकेश सदाचार विपदां प्रतिघातक अर्ध्यं गृहण देवेश सम्पत्-सर्वार्थ-साधक। भगवन् भवदेव पार्वती-सहित-परेमेश्वर देवीपुत्र-वटुकनाथ, कालरात्रि तालरात्रि राज्ञरात्रि शिवरात्रि समस्त-शिवरात्रि-देवताः इदं वो-ऽर्ध्यं नमः। अब भगवान् शंकर को पञ्चदश स्नान कीजिये:- जल, दूध, दही, शहद, घी, गन्ना, सर्वोषधि, धान्य की फुल्लियाँ, फूल, फल, सोना, रत्न, सर्षप, इत्र इन सबको मिलाकर शिवलिंग पर जल की धारा डालते हुये पढ़ें:-

(1) असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्यां, तेषां सहस्र-योजनेव धन्वानि तन्मसि, (2) योस्मिन्-मह-त्यर्णवे- अन्तरिक्षे भवा-अधि। तेषां सहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि, (3) ये नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवं रुद्रा उपाश्रिताः, तेषां० (4) ये नीलग्रीवा शिति-कण्ठाः शर्वा-अधः क्षमा-चराः

तेषां० (5) ये वनेषु शिषिपिंजरा नीलग्रीवा विलोहिताः तेषां० (6) येऽन्त्रेषु विविर्धन्त पात्रेषु पिबतो जनान्। तेषां० (7) ये भूतानाम् अधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषां० (8) ये पथीनां पथि रक्षय ऐड मृदाय व्युधः। तेषां० (9) ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषणिः। तेषां० (10) ये एतावन्तो वा-भूयांसो वा दिशो रुद्रा वितिष्ठिरे तेषां सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि। ॐ यो रुद्रो-अग्नौ यो-अप्सु य-औषधीषु यो वनस्पतिशु यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो-अस्तु-देवाः। भगवते भवाय देवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय-पर-मेश्वराय पंचदश-स्नानं परिकल्पयामि नमः।

देवता तथा पितरों के लिये चावल, दही, तिल, शहद और घी सहित जलसे तर्पण करते हुये पढ़ें:-

ब्रह्मादयः-देवाः तृप्यन्ताम् (गले में यज्ञोपवीत रखकर पढ़े:- **सनकादयः ऋषयः तृप्यन्ताम्।**

यज्ञोपवीत दायाँ रख कर पढ़ें:-

स्वाहा ऋषिभ्यः-

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढें:

स्वधापितृम्यः, दायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें:-

आब्रह्मस्-तम्ब-पर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत्-तृप्यतु तृप्तयु तृप्यतु।

शंकर भगवान् अथवा सुजपुतलू पर फिर से स्नान के निमित जल धारा डालते हुये पढ़ें:-

त्र्यम्बंकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकम्-इव बन्धनात- मृत्योर-मुखीय मामृतात्। शिवरात्रि-देवताभ्यः मन्त्रगुडकं नमः।।

बायें हथेली के मध्य में थोड़ा सा चावलों सहित जल लेकर और उसी हाथ की तर्जनी और अंगूटं में थोड़ा

सा चावलों सहित जल लेकर उसी हाथ को देवताओं यानि बटुकराज के चारों और घुमाकर उस जल और चावलों को अपने बायें कन्धे पर से फेंकते हुये पढ़ें:-

रक्षोहणं वाजिनम्-आजिधर्मि मित्रं पृथिष्टम्-उपयामि शर्म। शिशनो अग्निः कृतुभिः समिद्धः सनो देवः सरिषः पातु नक्तम्। शिवरात्रि देवताभ्यः आरात्रिकां परिकल्पयामि नमः।

दायें अंगूठे तथा तर्जनी यानी अंगूठे की साथ वाली अंगुली से शिवमूर्ति का स्पर्श करके अपने नेत्रों से लगाते हुये पढ़ें:-

भवाय देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय नेत्र स्पर्शनं नमः।

अब जहां शंकर की मूर्ति को बिठाना हो वहां फूलों से आसन सजाते हुये पढ़ें:-

आसनाय नमः वृषभासनाय नमः शतदल-पद्मासनाय नमः सहस्रदल पद्मासनाय नमः।

अब सोने के वर्कों और फूलों की मालाओं मे शंकर भगवान् तथा वटुकनाथ को सजाकर महिम्नापार तथा देवी के पंचस्तवी आदि के श्लोक पढ़ते हुये फूल चढ़ाते जायें।

भगवान् शंकर पर वस्त्र के रूप में फूल चढ़ाते हुये यह श्लोक पढ़े:-

कालाग्निरुद्र सर्वज्ञ वरदा-ऽभयदायक वस्त्रं गृहाण देवेश दिव्य-वस्त्रोप-शोभितम्। समस्त शिवरात्रि-देवताभ्यः वस्त्रं परिकल्पयामि नमः।

यज्ञोपवीत के रूप में पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें:-

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतरे-यत् सहजं पुरस्तात्, आयुष्यम्-अग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु तेजः। समस्त शिवरात्रि-देवताभ्यः यज्ञोपवीतं परिकल्पयामि नमः।।

शंकर की मूर्ति वटुकनाथ और बाकी पात्रों को सिंदूर का तिलक तथा शंकर को चन्दन लगाते हुये पढ़ें:

त्रिपुरान्तक देवेश पार्वती-प्राण-वल्लभ! गृहाण गन्धं काश्मीर-चन्द्रचन्दन कल्पितम्। भगवते भवाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, उमासहिताय शिवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवीपुत्र-वटुकनाथाय कालारात्र्यै तालरात्र्यै शिवरात्र्यै समस्त- शिवरात्रि देवताभ्यः अर्घोनमः पुष्पं नमः। महादेव-मृढानीश जग्त-ईश निरंजन धूपं गृहाण देवेश साज्यं गुग्गुल-कल्पितम्। ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्यतावत्-तिथौ अद्य फाल्गुनमासस्य कृष्णपक्षस्य तिथौ .... समस्त शिवरात्रि-देवताभ्यः रत्नदीपं कर्पूरं परिकल्पयामि नमः। चामरम्-रजनीनाथ मरीचिप्रभम्-उत्तम्। हेमदण्डयुतं देव गृहाण गिरिजापते, ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्य-तावत् तिथौ अद्य-कृष्णपक्षस्य तिथौ ... . समस्तशिवरात्रि देवताभ्यः चामरं परिकल्पयामि नमः। फूलों का छत्र चढ़ाते हुये पढें:-

नवरत्नमयं दिव्यं मुक्ता-जाल-विभूषितम् गृहाण छत्रं भगवान्-शिव-भद्रासन-प्रद। समस्त शिवरात्रिदेवताभ्यः छत्रं परिकल्पयामि नमः।

आईना दिखाते हुये पढ़ें:-

एताभ्यः समस्त शिवरात्रि देवताभ्यः आदर्शं परिकल्पयामि नमः।

फिर से सभी वटुकनाथादि को फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:-

एताह्यं देवतानां-अर्ध्यदानादि-अर्चन-विधिः सर्वः परि पूर्णः अस्तु।

दूध, कन्द या नाभद वटुक में डालते हुये पढ़ें:-

क्षीराज्य-मधुसंमिश्रं शुभ्र दध्ना समन्वितम्।

षड्-रसैश्च समायुक्तं गृहाण-अन्नं निवेदये। समस्तशिवरात्रि-देवताभ्यः मात्रा-मधुपर्क चरुं नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

फूलों की अंजलि चढ़ाते हुये पढ़ें:-

हर विश्वा-खिलाधार निराधार निराश्रय पुष्पाँजलिम्-इमं शम्भो गृहाण वरदो भव। समस्त शिवरात्रि-देवताभ्यः पुष्पाँजलिम् समर्पयामि नमः।

मन से अर्ध परिक्रमा करते हुये पढ़ें:-

यानि कानि च पापानि ब्रह्म-हत्यादिकानि च। तानि सृर्वानि प्रणश्यन्ति शिवस्यार्ध-प्रदक्षिणात्।

भगवान् शंकर पर फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:-

नाग्रेन्द्र-हाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्ग-रागाय महेश्वराय, देवाधिदेवाय दिगम्बराय तस्मै नकारा नमः शिवाय। मातंग-चरमा-म्बर-भूषणाय समस्त-गीर्वाण गणार्चिताय त्रैलोक्यनाथाय पुरान्तकाय तस्मै मकाराय नमः शिवाय। वशिष्ठ-कुम्भोत्-भव-गौतमादि-मुनीद-वंद्याय गिरीश्वराय, श्री नीलकण्ठाय वृष-ध्वजाय तस्मै वकारायनमः शिवाय। यज्ञ-स्वरूपाय जटाधराय पिनाक-हस्ताय सनातनाय। नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै यकाराय नमः शिवाय। आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं, पूजा-ते विषयोप-भोग रचना, निद्रा समाधिस्थितिः। संचारः पदयोः प्रदक्षिण विधिः स्त्रोत्राणि सर्वा गिरः। यत्यत् कर्म करोमि तत् तत्-अखिलं शम्भो-स्तवाराधनम्।।

उभाभ्यां जानुभ्यां शिरसा-उरसा वचसा नमस्कारं करोमि नमः।

चावल आदि को संकल्प करते हुये पढ़ें:-

अन्नं नमः अन्नं नमः आज्यं अद्य दिने-अद्य यथा संकल्पात्-सिद्धिर्-अस्तु। अन्न-हीनं विधि-हीनं द्रव्य-हीनं मन्त्र हीनं यत्-गतं तत्सर्वम्-अछिद्रं सम्पूर्णम्-अस्तु, एवम्-अस्तु खोसू में दायें हाथ की अंगुलियां के ऊपर से जल डाल कर उसी जल से शंकर भगवान् तथा वटुकनाथ आदि को वही जल आचमन के रूप में देते हुये पढ़ें:-

शं नो देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर-अभिस्रवन्तु नः समस्त-शिवरात्रि-देवताभ्यः दक्षिणायै तिल हिरण्य-रजत निष्कर्णं ददानि।

फिर से कुछ सिक्के आदि अर्पण करते हुये पढ़ें:-

ऐता देवताः सदक्षिणा-न्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।

वटुकनाथ को फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:-

नाथं नाथं त्रिभुवन-नाथं भूति-सितं त्रिशूल-धरं। उपवीती-कृतं भोगिनम्-इन्दु-कलाशेखरं वन्दे।

सभी घर के सदस्य एकत्रित होकर सामूहिक रूप में 108 बार यह मन्त्र पढ़ें, आप को इस मन्त्र के उच्चारण करने से अवश्य शान्ति मिलेगी और आप की मनोकामना पूर्ण होगी। (मन्त्र)

ॐ नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च, मयस्कारय च, नमः शिवाय च शिवतराय च।।

विश्वदेव विधिः

वटुकनाथ के सामने ही अग्नि जलाकर, उस अग्नि के दक्षिण पश्चिम-कोण पर विष्टर (दर्भ), तिल और चावल पानी सहित एक कटौरी रखें इस पात्र को प्रणीतपात्र कहते है, उस प्रणीत पात्र में तीन बार फूल डालते हुये पढ़ें:-

संवः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः (1) संसृष्टाः तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो-अस्तु वः (2) संय्यावः प्रिया-स्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो-अस्तु संप्रियः संप्रिया-स्तन्वोमम (3)।

दर्भ के दो तिनके अग्नि में जलाकर दायें और फेंकते हुये पढ़ेंः-

निर्दग्धं रक्षो निर्दग्धा-रातिर्-अपाग्ने, अग्नि-मामादं जहि निष्क्रव्या-दं सीधा देवयजनं वह।

प्रणायाम करके अग्नि के दायें और रखते हुये प्रणीतपात्र में से नौ बार छिड़कते हुये पढ़ेंः-

ऋतंत्वा सत्येन परिसमू-ह्यामि (1) सत्यं त्वर्तेन परिसमूह्यामि (2) ऋत्त-सत्याभ्यां-त्वां परिसमूह्यामि (3) ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि (4) सत्यंत्वर्तेन पर्युक्षामि (5) ऋत-सत्याभ्यां त्वां पर्युक्षामि (6) ऋतं त्वा सत्येन परि-षिंचामि (7) सत्यं त्र्वेन परिषिञ्चामि (8) ऋतसत्याभ्यांत्वा पर्युक्षामि (9) अग्नि के चारों और दर्भ के चार काण्ड पूर्व दक्षिण उत्तर पश्चिम से छोड़ते हुये पढ़ेंः-

अग्नये शुकारूढाय स्वाहासहिताय पावकाय त्रिनेत्राय तेजोरूपाय शक्ति-सहिताय समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

घी सहित पकाये हुये अन्न या रोटी पर दर्भ के दो तिनके लगाते हुये पढ़ेंः-

वैश्वदेवस्य सिद्धस्य सर्वतोग्र्यस्य अन्नस्य जुहोति-पाकस्य घृतेन संलिप्य स्वस्ति-अस्तु घृतम्-अभिधार्य।

इसी अन्न रोटी चुचवुर से अग्नि में आहुतियाँ डालते हुये पढ़ेंः-

मित्राय स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा,

इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा, विश्वेभ्यो-देवेभ्यः स्वाहा, प्राजपतये स्वाहा, अनुमत्यै स्वाहा, ध्वान्वन्तरये स्वाहा, वास्तोष्पतये स्वाहा, वासुदेवाय स्वाहा, लक्ष्मी सहिताय नारायणाय स्वाहा।

किसी थाली आदि में सिलोना सहित चावल आदि रख कर सभी परिवार वाले उस थाली को हाथों से स्पर्श करते हुये इसी पंचांग के पृष्ट नं. 152 से निवेदयामि नमः तक प्रेप्युन पढ़ें:-

प्रेप्युन करके अग्नि के दायें और पूर्व की ओर सिरे वाले दर्भ बिछाये उसी बिछाई हुई दर्भ पर दक्षिण पश्चिम कोण से पक्ति में (लाईन) साँप आकार में रोटी के तीन-तीन टुकड़े देवताओं को बलि देवें आगे लिखे छतीस नामों से रोटी के टुकड़े या अन्न डालते हुये पढ़ें:-

तक्षाय नमः, उपतक्षाय नमः, अम्बा-नामासि-नमस्ते, दुला-नामासि नमस्ते, नितंत्री-नामासि नमस्ते, चुपनीका-नामासि नमस्ते, अभ्रयन्ती-नामासि नमस्ते, मेघयन्ती नामासि नमस्ते, वर्षयन्ती-नामासि-नमस्ते, नन्दिन्यै नमस्ते, सुभगे नमस्ते, सुमङ्लि-नमस्ते, भद्रं-करि नमस्ते, श्रियै हिरण्य-केश्यै नमः, वनस्पतिभ्यो नमः, धर्माय नमः, अधर्माय नमः वैश्रवणाय-राज्ञे नमः, भूतोभ्यो-नमः इन्द्राय नमः, इन्द्र-पुरुषेभ्यो नमः, ब्रह्मणे नमः, ब्रह्म-पुरुषेभ्यो नमः ऊर्ध्वं आकाशाय नमः, स्थण्डिले दिंवचरेभ्या-भूतेभ्यो नमः, नक्तं चरेभ्यो नमः (36) षट् त्रिंशत् तक्षादिभ्यो-अन्नं नमः, आचमनीयं नमः। बायाँ यज्ञोपवीत रखकर दर्भ बिछाते उस दर्भ पर तिल और जल से छींटे देते हुये पढ़ें:-

समस्त-माता-पितृभये-द्वादश-दैतेभ्यः पितृभ्यो भूपृष्ठे दर्भास्तरणे तिलोदकेन अवने-जनं स्वधा।

इसी बिछाई हुई दर्भ को अंगूठे से स्पर्श करते हुये पढ़ें:-

उशन्तस्तवा-हवामह उशन्तः समिधीमहि, उशन् आवह पितृन्- हविषे अत्तवे।

तिल, पानी, दूध, दीप, धूप, अन्न, घी और शहद यह आठ द्रव्य पितरों का अन्न होता है यह एक पात्र में रखें और पढ़ें:-

तिलास्तोयं तथा क्षीरं दीपधूपौ बलिस्तथा, मधु-सर्पिः समायुक्म्- अष्टांगम्-अन्न-सम्भवम्।

बायाँ घुटना पृथिवी पर रखकर पितरों का नाम उच्चारण करते हुये पात्र में रखा हुआ यह अन्न दर्भ पर रखते हुये यह मंत्र पढ़ें:-

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महा-योगिभ्य एवच। नमः स्वधाच स्वाहाच नित्यम्-एव-भवतु-इह।

ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य तावत्-तिथौ अद्य फाल्गुनमासय कृष्णपक्षस्य तिथौ द्वादश्यां .... वारान्वितायां।

पितरों का नाम लेते हुये अन्न दर्भ पर डालते जाये,

पितामह-एतत्-ते अन्नं ये च त्वानु, प्रपितामह एतत्-ते अन्नं ये च त्वानु, मात एतत-ते अन्नं याश्च-त्वानु।

इसी भाँति मृत स्त्रियों के नामलेते हुये अन्न रखते जायें और सभी मृत-पितरों को अन्न डालकर जिन के नाम याद न हों रोटी के टुकड़े अन्नादि हाथ में लेकर यह मन्त्र पढ़ें:-

मातृपक्ष्यास्तु ये के चित्-ये चान्ये पितृपक्षजाः गुरु-श्वशुर-बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः, ये प्रेतभावम्-आपन्ना ये चान्ये श्राद्ध-वर्जिता-अन्न-दानेन ते सर्वे लभन्ताम् तृप्तिम्-उत्तमाम्। समस्त-मातापितृभ्यो द्वादश-दैवतेभ्य पितृभ्योऽनं स्वधा।

अन्न का लेप साफ करें और तिलक फूल चढ़ाते हुये पढ़ें:-

समस्त-माता-पितृभ्यः समालभनं गन्धः स्वधा, समस्तमातापितृभ्यः अर्घ्यः स्वधा, धूपः स्वधा।

तर्पण करते हुये पढ़ें:-

समस्तमाता-पितृभ्यः तिल-मधु-मिश्रमुदक-पात्रम्-आचमनीयं जलं स्वधा।

तर्पण करते हुये पढ़ें:-

समस्तमाता-पितृभ्यः हिमपानं स्वधा क्षीरपानं स्वधा मधुपानं स्वधा तिलोदकं स्वधा उदक-तर्पणं हिमं हिमं रजतं रजतम्।।

दायाँ यज्ञोपवीत रखते हुये पढ़ें:-

वसन्ताय नमः, ग्रीष्माय नमः, वर्षाभ्यो नमः, शरदेनमः हेमन्ताय नमः शिशराय नमः, षड्-ऋतुभ्यो नमः।

अग्नि में अन्न की आहुति डालते हुये पढ़ें:-

अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा।

हाथ धोकर प्राणायाम करके अग्नि को तीन बार छिड़कते हुये पढ़ें:-

ऋतुंत्वा सत्येन विमुंचामि (1) सत्यं त्वर्तेन विमुंचामि (2) ऋत सत्याभ्यां त्वा विमुंचामि (3)

अग्नि के चारों तरफ छोड़ी हुई दर्भ उत्तर दिशा से उठाते हुये पढ़ें:-

यज्ञस्य सन्ततिर-असि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै नयामि।

फूल हाथ में लेते हुये अग्नि देवता से आशीर्वाद माँगते हुये पढ़ें:-

धर्मं देहि, धनं देहि, पुत्रपौत्रान्-च देहि मे, आयुर-आरोगयम्-ऐश्वर्यम् देहि मे हव्य-वाहन, तेजोसि तेजो मयि देहि।

अग्नि की ज्योति हाथ में अपनी और लेते हुये पढ़ें:-

इत्यात्मानं देहि भगवन् सन्निधत्स्व।

पृथ्वी पर थोड़ा सा अन्न फिर से डालते हुये पढ़ें:-

भगवन्-यक्ष्म एतत्-तेऽन्नं नमः, एतत्-ते-आचमनीयं नमः यज्ञोपवीत गले में रखते हुये पढ़ें:-

काण्ठोपवीती-हन्त-मनुष्यः सनकादिभ्य-ऋषिभ्यः अन्नं नमः आचमनीयं नमः।

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर "चट्टू" को हाथों से पकड़ कर तिलक पुष्प लगाते हुये पढ़ें:-

या काचित्-योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा, खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवतु मे सदा, आकाश-मातृभ्यो-अन्नंनमः, समाल- भनं गन्धोनमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

भगवान् शंकर का ध्यान मन में रख कर किसी पात्र में थोड़ा सा अन्न रखते हुये पढ़ें:-

शिवरात्रि-देवता-भ्यः अन्नं समर्पयामि नमः

अब जो दर्भ पर आपने अन्नकण रखे हैं उनके पास ही पृथ्वी पर और प्राणियों का अन्न डालते हुये पढ़ें:-

(गोग्रास) सौर-भेय्याः स्वर्ग-हिताः पवित्रा पुण्यराशयः, प्रति-गृह्णन्तु मे ग्रासं गावः त्रैलोक्य-मातरः। गोभ्योऽननं नमः, ऐन्द्र-वारुण-वाय-व्या-याम्या-नैऋति-काश्च-ये, वायसाः-प्रति-गृहणन्तु इमं पिण्डं मयोद्-धृतम्, काकेभ्यः अन्नं नमः, श्चानौ द्वौ शाव-शवलौ वैवस्वत-कुलोद-भवौ, ताभ्यां पिण्ड प्रदास्यामि स्याताम्-एतो-अहिंसकौ श्वभ्यः श्वानकेभ्यः अन्नं नमः।

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें:-

रौरवाधीन-सत्वानां-प्रेत-द्वार-निवासिनाम्-अर्थिनां याचमानानाम्-अक्षय्यम्-उपतिष्ठतु।

दायाँ यज्ञोपवीत रख कर पढ़ें:-

शुनां च पतितानां च श्वपचां पाप-रोगिणाम्।

वायसानां क्रिमीणां च शनकैर्-निक्षिपेत्-भुवि, देवा मनुष्याः पशवो वयांसि-सिद्धाः सयक्षोरग-दैत्यसंघाः, प्रेता पिशाचाः तरवः समस्ता ये चान्नम्-इच्छन्ति मया प्रदत्ताम्। पिपीलिका कीट-पतंग-काद्या बुभुक्षिताः कर्मणि बद्ध-वद्धाः, प्रयान्तु ते तृप्तिम्-इदं मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु। येषां न माता पिता न बन्धुर् नैवान्न-सिद्धिर्-न तथान्नम्-अस्ति तत्-तृप्तयेऽन्नं भुवि दत्तम्-एतत्-ते यान्तु तृप्तिं मुदिता भवन्तु, भूतानि सर्वाणि तथान्नम्-एतत्-अयं चरिष्णुर्-न ततो-न्यत्-अस्ति तस्मात्-अहं भूत-निकाय-भूतम्-अन्नं प्रयच्छामि भवाय तेषाम्। चतुर्दशो भूतगणो य एष तत्र स्थिता येऽखिल-भूत-संघाः, तृप्त्यर्थम्-अन्नं हि मया विसृष्टं, तेषाम्-इषं ते मुदिता भवन्तु, इत्युच्चार्य नरो दद्यात्-अन्नं श्रद्धा समन्वितः, भुवि भूतोप-काराय गृही सर्वाश्रयो यतः।

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर अंगूठे के तरफ से अन्न सलोना सहित डालते हुये पढ़ें:-

यमाम धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च, वैवस्वताय कालाय सर्वप्राणहराय च, औदुम्बराय नीलाय, ब्रध्नाय परमेष्ठिने, वृकोदराय भीमाय चित्रगुप्ताय वै नमः, पाशहस्त कृतान्ताय प्रेताधिपतये नमः श्रीयमराज-धर्मराज-चित्रगुप्त-तृप्तयेऽस्तु!

दायाँ यज्ञोपवीत रखकर "पवित्र" निकाल कर सभी डुलिजियों और सज्वारियों में ऋषिडुलिजियों में सतसोस दूध, अन्न सलोना डालते हुये पढ़ें:-

(नोटः- वैश्वदेव प्रायः हर एक पूजा में करना होता है, परन्तु यह अन्न आदि डालना केवल शिवरात्रि में ही होता है:)

ये विश्व-भाविन भूता ये च तेषु-अनुयायिनः,

आहरन्तु बलिं तुष्टाः प्रयच्छन्तु शिवं मम। योऽस्मिन्-निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपालः सकिंकरः, तस्मै निवेदया-म्यद्य बलिं पानीय-संयुतम्। क्षां-क्षेत्राधिपतये-बलिं नमः, रां राष्ट्राधिपतये बलिं नमः, सर्वे-अभय-वरप्रदा मह्येपुष्टिं पुष्टिपतयो ददातु।

बायाँ यज्ञोपवीत रखकर अन्नकणों पर फूल चढ़ाते हुये पढ़ेंः-

आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गमोक्षी सुखानि च, प्रयन्छन्तु तथा राज्यं नृणां प्रीताः पितामहाः (1) एष पिण्डो मया दत्तः तव हस्ते जनार्दन, गयायां पितृरूपेण स्वयम्-एवोप- गृह्यताम् (2) आत्मनश्चार्थ-लाभाय क्षेमाय विजयाय च, शत्रूणां, बुद्धि-नाशाय पितृन्-उद्धरणाय च (3) पंचक्रोशं गयाक्षेत्रं क्रोशम्-एकं गयाशिला, यत्र तत्र स्मरेत्-नित्यं पितृणां दत्तम्-अक्षयम्।

दायाँ यज्ञोपवीत रखकर देवताओं का विसर्जन (शिवरात्रि विषयक)-दर्भ के दो तिनके चावल सहित हाथ में रखकर तीन बार पढ़ेंः-

ॐ भूः पुरुषं विसर्जयामि नमः, ॐ भुवः पुरुषं विसर्जयामि नमः, ॐ स्वः पुरुषं विसर्जयामि नमः (3)

ॐ तत्-पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् (3) ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्य-तावत् तिथौ अद्य फाल्गुनमासस्य कृष्णपक्षस्य द्वादश्यां वारान्वितायां भवस्य देवस्य उग्रस्य देवस्य भीमस्य देवस्य कालरात्र्याः तालरात्र्याः शिवरात्र्याः समस्त शिवरात्रि-देवतानाम्-पूजनमऽच्छिद्रं सम्पूर्णम्-अस्तु एवम्-अस्तु।

चावल सहित जल से तर्पण करते हुये पढ़ेंः-

एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः उदक-तर्पणं

नमः। आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवेद्य-स्यास्य भक्षणे, शरीर-यत्रा सिद्ध्यर्थं भगवन् क्षन्तुम्-अर्हसि।

प्रार्थना के रूप में पढ़ें:-

आपन्नोसिम शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा, भगवन्-त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष-मां शरणा-गतम्। हर-शम्भो महादेव शरणागत-वत्सल नान्यः त्रातासि मे कश्चित् ऋते त्वत्-परमेश्वर, आशिरा-वन्तं निमग्नो-स्मि दुस्तरे भव कर्दमे प्रसीद कृपया शम्भो पादाग्रेण- उद्धरस्व माम्। यत्-कृतं यत् करिष्यामि तत् सर्वं न मया कृतम् त्वया कृतं तु फलभुक्-त्वम्-एव परमेश्वर। शब्द ब्रह्ममये स्वच्छे देवि त्रिपुर-सुन्दरि, यथा शक्तिं जपं पूजां गृहाण परमेश्वरि। दर्शनात्-पाप-शमनी, जपात्-मृत्यु-विनाशिनी, पूजिता दुःख-दौर्भाग्य-हरा त्रिपुर-सुन्दरी। आहवानं नैव जानामि नैवजानामि पूजनम्-पूजा-पाठं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर।

प्रणाम करते हुये पढ़ें:-

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा चोरसा च वचसा च मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।

तर्पण करते हुये पढ़ें:-

नमो ब्राह्मणे, नमो अस्तवग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषधीभ्यः, नमो वाचे, नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते कृणोमि इति एतासाम्-एव देवतानां सामीप्यं साष्टितां सायुज्यं सलोकतां-आप्नोति य एवम्-विद्वान् स्वाध्यायम्-अधीते। ॐ नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च, मयस्कारय च नमः शिवाय च, शिवतराय च।।

घर के सभी सदस्य मिलकर
विजयेश्वर पंचांग से आरती पढ़ें।

दाह संस्कार: जब किसी की मृत्यु होती है तो उस का दाह संस्कार सूर्य अस्त से पूर्व करना चाहिये मृतक का दाह संस्कार कोई भी कर सकता है जैसे पुत्र, पुत्री, पुत्री का लड़का या लड़की सगोत्री, पत्नी, पति, भाई, गुरुजी अथवा मृतक का परम मित्र।

अशौच का प्रभाव: अशौच हमारे नित्य कार्य पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं डालता है जैसे तिलक लगाना मन्दिर जाना, पितरों को तर्पण देना, नित्य नहाना, कपडे बदलना इत्यादि परन्तु अशौच में हम कोई नया कार्य आरम्भ नहीं कर सकते हैं।

यदि किसी शुभ कार्य, विवाह, यज्ञोपवीत इत्यादि के पूर्व या शुभकार्य के दिनों में ही किसी प्रकार का अशौच पेड चाहे वह मरने का अशौच हो या जनने का अशौच हो, से किसी प्रकार का दोष शुभकार्य पर नहीं होता है। धर्मशास्त्र में लिखा है:

बहु कालिक संकल्पो गृहीतश्च पुरा यदि
सूतके मृतके चैव व्रतं तन्नैव दुष्यति।।

दसवां दिन: जब किसी की मृत्यु होती है तो उस का दसवां ग्यारहवां तथा बारहवां दिन हम धार्मिक विधि से करते हैं परन्तु दसावां दिन हम घर से बाहर किसी नदी के किनारे पर करते हैं जो कि एक प्रकार की प्रथा हमारे समाज में है परन्तु जहां पर नदी ना हो तो वहां पर आप दसवां दिन घर पर भी कर सकते हैं इस में किसी प्रकार की पावन्दी शास्त्र के अनुसार नहीं है।

दीपदान (तीलद्युन):- किसी के मृत्यु पर हम उस के निमित दीपदान अर्थात् तील दयुन भी करते हैं हम दीपदान किसी भी मासवार अथवा षडमोस पर कर सकते हैं इस दिन मुहूर्त वार, नक्षत्र इत्यादि देखने की कोई ज़रूरत नहीं है। इन दिनों के बिना आप को मुहूर्त पर ही दीपदान करना होगा।

बिना यज्ञोपवीत लड़के का मृत्यु हो तो क्या करें: यज्ञोपवीत संस्कार के बिना कोई भी लड़का किसी भी आयुका हो उस की मृत्यु होने पर दाह संस्कार के पश्चात् दसवां दिन ज़रूर करना चाहिए, 11वां तथा बारहवां दिन न करें, उस वालक के निमित किसी शुभवार पर निर्धन वच्चों में पुस्तकें, कपड़े इत्यादि देनी चाहियें, या किसी गरीव की आर्थिक सहायता करनी चाहिए।

– धर्म शास्त्र

यज्ञ, यज्ञोपवीत तथा देवगौण के लिये सामग्री की सूची

सामग्री	एक स्वाहाकार के लिए	5 स्वाहाकार के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
चूना	200 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम
आटा चावल	×	1 किलो	2 किलो	×
नमक	×	2 पैक्यट	4 पैक्यट	×
जव	5 किलो	15 किलो	30 किलो	2 किलो
चावल	2 किलो	5 किलो	10 किलो	250 ग्राम
घी	1 किलो	5 किलो	7 किलो	1 किलो
शक्कर	250 ग्राम	3 किलो	7 किलो	1 किलो
खजूर	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम
नारियल	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम
नीलोफर (पम्बच)	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम
बादाम	250 ग्राम	1 किलो	2 किलो	250 ग्राम

पन्ज पूजा की सामग्रीः–

धूप, रत्नदीप, कर्पूर, सिन्दूर, नारीवन, दूध, दही, फूल, चावल, जव, दूर्वा (द्रमुन), कपास का काता हुआ धागा, जाफल, एक रूपये का सिक्का।

पंचगव्य की सामग्रीः–

गोमूत्र, गोभर, दूध, दही, घी।

सामग्री	एक स्वाहाकार के लिए	5 स्वाहाकार के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
नाबद	250 ग्राम	2 किलो	2 किलो	×
क0 गण	50 ग्राम	½ किलो	½ किलो	×
श्रीफल	3 अदद	12 अदद	20 अदद	×
कन्द	3 अदद	12 अदद	20 अदद	×
काला तिल	250 ग्राम	2 किलो	3 किलो	100 ग्राम
सर्वोशद्धि	3 आरी	12 आरी	12 आरी	2 अदद
ज़ाफल	2 अदद	2 अदद	2 अदद	2 अदद
नारीवन (मौली)	1 गोला	½ किलो	½ किलो	1 गोला
सिन्दूर	25 ग्राम	100 ग्राम	100 ग्राम	25 ग्राम
धूप	1 डब्बा	3 डब्बे	3 डब्बे	1 डब्बा
अगरबती	1 डब्बा	1 डब्बा	1 डब्बा	×
काफूर	1 पैक्यट	1 पैक्यट	2 डब्बे	1 पैक्यट
स0 इलाची	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	×

गृह प्रवेश की सामग्रीः-

गौमाता का फोटू, श्री मद्भगवत् गीता, महालक्षामी अथावा इष्टदेवी का फोटू, लाल झण्डियाँ.6, पानी से भरा हुआ घड़ा, दूध का घड़ा, दही घी, चावल, धान्य, सात अनाज (थोड़ी मात्रा में) फूल, रत्नदीप, सिन्दूर केसर, नारीवन, तिल, लाय,जव,किशमिश, शहद, मिट्ठाई, नमक, अखरोट।

सामग्री	एक स्वाहाकार के लिए	5 स्वाहाकार के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
गोबर	थोडा सा	1 किलो	1 किलो	×
फूल	2 किलो	5 किलो	7 किलो	2 किलो
मिट्टी का कलश	1	1 अदद	2 अदद	1 छोटा
बडा द्वीप	1 अदद	1 अदद	1 अदद	1 छोटा
टाकू	3 अदद	5 अदद	20 अदद	20 अदद
कलश के लिये वस्त्र	2½ मीटर	2½ मीटर	2½ मीटर	2½ मीटर
ब्राह्मण के लिये वस्त्र	//	//	//	×
तौलिया	1 अदद	2 अदद	2 अदद	2 अदद
अखरोट	100	संख्या के अनुसार	संख्या के अनुसार	100 अदद
वस्त्र देवगौण	×	×	×	✓
वस्त्र नेत्र पट	×	×	5 मीटर खदर	×
वस्त्र मेखलि महाराज	×	×	गीरि वस्त्र	×
समिधा (तुलमूरि)	×	×	1000 तुलमूरि 9 inch लम्बी	× ×

शंकु प्रतिष्ठा सामग्री

(कन दिनुकसामान) सात तीर्थों, नदियों का जल, सात धातु (सोना, चान्दी, ताम्बा, लोहा, पीतल, कांसी, जस्द) सात अनाज (गेंहू, मक्की, जव, माष, मूंग, चना, मट्र) सात औषधियां (सोठ, हल्दी, बुनफशा, गुलाब पत्र, ग्यवथीर, कल द्युठ, पुदीना) पांच मिटियां (पांच तीर्थस्थानों की मिट्टी) पांच प्रकार के फूल,

सामग्री	एक स्वाहाकार के लिए	5 स्वाहाकार के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
दालचीनी	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	×
रंग	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	×
काली मिर्च	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	×
ब्रय	1 रु0	2 रु0	2 रु0	1 रु0
सशर्प	1 रु0	2 रु0	2 रु0	1 रु0
लाल चन्दन	1 रु0	2 रु0	2 रु0	×
सफेद चन्दन	1 रु0	2 रु0	2 रु0	×
किशमिश	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	×
जिरिश	5 रु0	100 ग्राम	200 ग्राम	×
खोबानी	×	500 ग्राम	500 ग्राम	×
रुई	थोडी बहुत	थोडी बहुत	थोडी बहुत	थोडी बहुत
लकडी	20 किलो	1 क्वैटल	2 क्वैंटल	10 किलो
मिट्टी	छोटी गुत्थी	1 गुत्थी	2 गुत्थी	1 किलो

पांच प्रकार के फल, पांच खूटियां 16 अंगुल लम्बी, पांच चोरस पत्थर 5 अदद प्रतिमायें (वृषभ, घोडा, हाथी, मनुष्य) ताम्बे के पत्र पर बनी होनी चाहिये तथा चांदी का सांप होना चाहिये, 5 मिट्टी की वारियां, रत्नदीप के लिए 5 दीप, धूप कण्ठगण, तिल, सिन्दूर, नारीवन, लाय, दूध, दही, सर्षप सर्वौषधि, घी, फूल, चावल, नबाद, किशमिश।

सामग्री	एक स्वाहाकार के लिए	5 स्वाहाकार के लिए	यज्ञोपवीत के लिए	देवगौण के के लिए
तुलमूर	×	×	6 ft लम्बी	×
भिक्षा पात्र	×	×	1 थाली	×
घी पात्र	×	।	1 बौली	×
वारीदान	×	×	1 अदद	×
वुपल हाक	×	×	थोडा सा	×
टय्क ताल	×	×	250 ग्राम	250 ग्राम
			संख्या के अनुसार	संख्या के अनुसार
हवन सामग्री	1 डब्बा	3 डब्बे	3 डब्बे	।
रंग बफ पांच प्रकार का	×	250 ग्राम एवं	250 ग्राम एवं	×
चौकी	×	×		जितने का देवगौण हो

श्राद्ध कौन कर सकता है?

कल्पलता के अनुसार श्राद्ध के अधिकारीः पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र दौहित्र (पुत्री का पुत्र) पत्नी, भाई, भतीजा, पिता, माता, पुत्र वधू, बहिन।

विष्णु पुराण में लिखा हैः

त्रीणि श्राद्धे
पवित्राणिः दौहित्रः,
कुतपस्तिलाः

अर्थात्ः श्राद्ध में दोहित्र (लड़की का पुत्र) कुतप (दिनका आठवां मुहूर्त और कालातिल पवित्र माने गये हैं -धर्मशास्त्र

ऋतु पति

प्रेप्युन में ऋतुपति नारायण का नाम आता है वहां अपने अपने मास का ऋतुपति पढ़ना होता है इसी कारण यहां पर हर मास का ऋतुपति नारायण लिख रहा हूं।

वैशाखे:- शोभासहिताये, जनार्दनाय, विभूति सहिताये, मधुसूदनाये
ज्येष्ठे:- महिमा सहिताये, उपेन्द्राय, इच्छा सहिताये, त्रिविक्रमाये
आषाढे:- लक्ष्मी सहिताय, यज्ञ पुरुषाय, धरती सहिताय, वामनाय
श्रावणे:- कान्ति सहिताय, वासुदेवाय, रतिसहिताय, श्रीधराय
भाद्रपदे:- प्राप्रिसहिताय, हरये, माया सहिताय, हृषिकेषाय
आश्विने:- पराकाम्या सहिताय, योगीश्वराय, धी सहिताय, पद्मनाभाय
कार्तिके:- लिगमासहिताय, पुण्डरी काक्षाय, गरिमासहिताय, दामूदराय
मार्ग शीर्षे:- रुक्षमणि सहिताय, कृष्णाय, श्री सहिताय केशवाय,
पौषे:- प्रियासहिताय अनन्ताय, वाग्नीश्वरी सहिताय, नारायणाय
माघे:- प्रीतिसहिताय, अच्युताय, कान्ता सहिताय, माधवाय
फाल्गुने:- शक्ति सहिताय, चक्रिणे, क्रयासहिताय, गोविन्दाय
चैत्रे:- सिद्धि सहिताय, वैकुण्ठाय, मतिसहिताय, विष्णवे

तर्पण के लिये कुछ जानकारी

तपर्ण करते समय पहले महीना, पक्ष, तिथि और वार का नाम लें उस के पश्चात पित्रों का नाम लें जैसे:-

मास:- वैशाख मासस्य ज्येष्ठ मासस्य, आषाढ मासस्य, श्रावण मासस्य, भाद्रमासस्य, अश्विन मासस्य, कार्तिक मासस्य, मार्गमासस्य, पौष मासस्य, माघ मासस्य, फाल्गुन मासस्य, चैत्र मासस्य।

पक्ष:- शुक्लपक्षस्य, कृष्णपक्षस्य।

तिथि:- प्रतिपदि, द्वितीयस्यां, तृतीयस्यां, चर्तुथ्यां, पंचम्यां, षष्ठयां, सप्तम्यां, अष्टम्यां, नवम्यां, दशम्यां, एकादशयां, द्वादश्यां, त्रयोदश्यां, चतुर्दश्यां, पूर्णिमायां, अमावस्यां।

वार:-

रविवार : रविवासरानितायां, **सोमवार** : सोमवासरानितायां
मंगलवार : मंगलवासरानितायां, **बुधवार** : बुधवासरानितायां
गुरुवार : गुरुवासरानितायां, **शुक्रवार** : शुक्रवासरानितायां
शनिवार : शनिवासरानितायां।

पित्रों का नाम लेने की विधि :-

पिता :- पित्रे (पिता का नाम) पितामहे (दादा का नाम) प्रपितामहे (परदादा का नाम)

मात्रे :- मात्रे (माता का नाम) माता की सास (पितामहे) माता की सास की सास (प्रपितामहे)

नानाः- मातामाहे (परनाना) प्रमातामाह्ये (उसका पिता) वृद्ध प्रमातामाह्ये

नानीः- मातामह्यै (परनानी) प्रमातामह्यै (उस की सास) वृद्ध प्रमातामह्यै

तपर्ण करते समय यह खयाल रखें कि यदि मातापिता जीवित हैं तो उन का नाम न लीजिये, पित्रों के नाम के साथ गोत्र का नाम भी लेना होता है जैसे

तत्सत् ब्रह्म, अध्य तावत् तिथौ अद्य माघ मासस्य कृष्ण पक्षस्य, तिथौ अमावस्यां, मंगल वासरानितायां पित्रे विष्णुदराय, भारद्वाजाय, पितामहाये कृष्णदराय, भारद्वाजाये प्रपितामहाये राज्यदराय भारद्वाजाये, मात्रे लीला वती देवयै, भारद्वाज्यै पितामह्यै अमरावती देव्यै, भारद्वाज्यै पितामह्यै अरनदती देव्यै भारद्वाज्यैः।

यहां पर "भारद्वाज" गोत्र का नाम है।

यदि तिथि "दि" हो तो दोतिथियां पढ़ी जाती हैं यथा द्वितीयस्यां परता तृतीयस्यां।

देवगौण के दिन मुहूर्त देखने की ज़रूरत नहीं है

कुम्भ देने की विधि

सामग्रीः पानी का लोटा, विष्ठुर (न होने पर दर्भ का छोटा तिनका), थोड़ा सा काला तिल और ताम्बे का छोटा लोटा (कुम्भ गडव)

विधिः बायां यज्ञोपवीत रखकर शुद्ध आसन पर बैठकर एक थाली में ताम्बे के छोटे लोटे (कुम्भ गडव) को रखें। दायें हाथ पर विष्ठुर या दर्भ का तिनका और थोड़ा तिल डालें और बायें हाथ से पानी का लोटा उठायें और दायें हाथ पर पानी की धारा को इस प्रकार डालें ताकि दायें अंगूठे की तरफ पानी की धारा, तिल, दर्भ, सहित कुम्भ गडवे में गिरता रहे और आप इस मन्त्र का उच्चारण जल धारा डालते हुये करें:

कुम्भोऽवनिष्ठो जनिता शचीभिर्यस्मिन्नेग्र
योन्यां गर्भो-अन्तः प्लाशिर्व्यक्तः
शतधार उत्सो दुहेन कुम्भी स्वधा पितृभ्यः।

तत्सत्ब्रह्म (मास का नाम) मासस्य (पक्ष शुक्ल कृष्ण) पक्षस्य (तिथि का नाम) तिथौ (वार का नाम) वासरे (पिता या माता का नाम) पितोः परलोके क्षुत पिपासानिवारनार्थं सोद् कुम्भान्न दान सहिते नित्य कुम्भे एतते तिलोदकं एतत् ते उदक तर्पणं हिमं हिमं रजतं रजतं। दायां यज्ञोपवीत रखें और थाली में पानी डालते हुये पढ़ें।

नमो धर्म निधानाय नमः सुकृत साक्षिणे, नमः
प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः।

आमदन खर्च का चित्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	11	5	11	5	8	11	5	11	8	2	2	8
हानि	14	8	5	2	14	5	8	14	5	8	8	5

आमदनी और खर्च के अंकों के जोड़ से एक कम करके आठ पर भाग दीजिये, यदि

(1) एक बाकी बचेः- तो यह वर्ष सुख शान्ति के वातावरण में तथा आदर मान से व्यतीत होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक तर्की की सम्भावना है यदि आप नौकरी के तलाश में हैं तो प्रयत्न करने पर अवश्य सफलता होगी, यदि आप तिजारत करते हैं तो आप कारोबार को विशाल बनाने के निमित्त बेखटके धन लगायें, आप के कारोबर को विशाल बनाने के निमित्त यह वर्ष रिकार्ड होगा, कारोबार सम्बन्धित प्रत्येक काम में आप को लाभ रहेगा, विद्यार्थियों के लिये भी यह वर्ष अनुकूल है आप प्रयत्न कीजिये आशा से अधिक सफलता होगी।

(2) दो बाकी बचेः- जिन तर्की की आशाओं को लेकर आप बहुत समय से प्रतीक्षा कर रहे हैं प्रायः सभी आशायें पूर्ण होगी हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता निश्चित रूप से होगी, सफलता के साथ साथ आदरमान की दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा, आप परिश्रम कीजिये ग्रह आप के सहायक हैं। यदि आप व्योपारी हैं आपका व्योपार यदि खाद्य पदार्थों से सम्बन्धित है तो उत्तम लाभ की आशा रखें, यदि आप कपड़े सम्बन्धित काम करते हैं तो लाभ की आशा न रखें, किरयाना लोहा मशीनरी सम्बन्धित काम करने वाले व्योपारी लाभ में रहेंगे, यदि आप का काम फलों बागों से सम्बन्धित है तो दौड़-धूप अधिक परन्तु अन्त में जाकर आपने खसारा में ही रहना होगा। नौकरी पेशा

होने पर नौकरी सम्बन्धित कोई समस्या क्यों न हो जरा सी सावधानी से कदम उठाने पर हर समस्या का समाधान होगा, हर पहलू से उत्तम समय होने पर भी शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिये, शरीर को स्वस्थ रखने के लिये उपाय के रूप में किसी भी मादक द्रव्य का सेवन न करें रविवार को निश्चित रूप से वैष्णव रहें।

(3) तीन बाकी बचेः- तो यह वर्ष संघर्ष को होगा, कोई भी कार्य उलझनों व रुकावटों का सामना किये बिना सफल नहीं होगा, घरेलू परेशानियां भी आप को घेरी रखेंगी केवल परिवार में सन्तान पक्ष से शन्ति रहेगी घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा जिस में अधिक से अधिक धन राशि का व्यय होगा शरीर के विषय में सावधान रहिये चोट आदि लगने का भी अन्देशा है, किसी रिश्तेदार मित्र अथवा किसी विश्वासपात्र से धोखा लगने का योग है, उपाय के रूप में 'हनुमान चालिसा' अथवा 'बहुरूपगर्भ' का पाठ नियम से करें किसी भी दिन नागा न करें, यदि किसी दिन पाठ न कर सकोगे तो दूसरे दिन भी उस दिन का पाठ करें, यदि आप विद्यार्थी हैं आप को इस वर्ष सावधान रहना चाहिये रात दिन परश्रिम करने पर ही सफलता की आशा रखें, वह सफलता भी इच्छानुसार नहीं होगी, यदि आप इस वर्ष सफलता चाहते हैं तो नियम से घर के किसी वृद्ध सदस्य अथवा माता-पिता के चरणों को प्रातः प्रणाम करके नित्य उन से आर्शिवाद प्राप्त करें।

(4) यदि चार बाकी बचेः- तो यह वर्ष संघर्ष तथा दौड़-धूप में ही गुजरेगा हर एक कार्य में कोई न कोई उलझन खड़ी होगी, यदि आप नौकरी पेशा है तो मर्जी के उलट स्थान परिवर्तन होगा, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियां आप को घेरी रखेंगी, आमदनी इस वर्ष ज्यों की त्यों बनी रहेगी परन्तु खर्च के नये-नये रास्ते निकल आयेंगे यदि आप व्योपारी हैं, तो लेनदेन के विषय में सावधान रहें अचानक धोखा लगने का अन्देशा है, लेनदेन अथवा धन के सम्बन्ध में किसी गैर का विश्वास न कीजिये बाद में पछताना पडेगा, जायदाद सम्बन्धित कोई झगडा खड़ा होने का अन्देशा है, जायदाद सम्बन्धित किसी झगड़े का आरम्भ दिख पड़ते ही आपस में सुलह करने में दिलचस्पी रखें नहीं तो अन्त में हानि उठानी पड़ेगी। यदि आप विद्यार्थी हैं इस वर्ष पठनपाठन के विषय में सावधान रहें ज़रा सी ढील करने पर पास होने की आशा न रखें उपाय के रूप में नित्य प्रातःकाल उठ कर घर के किसी वृद्ध विशेषतया माता-पिता के

चरणों का स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करें निश्चय रखिये वह आशीर्वाद रामबाण का काम करेगा।

5 शेष बचेः- तो वर्ष भर मानसिक अशान्ति बनी रहेगी, कोई भी कार्य बिना रुकावट के सफल नहीं होगा, वर्षभर घरेलू परेशानियों से छुटकारा नहीं मिलेगा, धन की दशा भी डांवा डोल रहेगी, कभी धन आवश्यकता अनुसार मिलता रहेगा कभी तंगदस्ती से भी दुचार होना पडेगा, कभी अचानक लाभ की भी सम्भावना है। उस लाभ की आशा में अधिक विश्वास न रखें, उपाय के रूप में, घर में कोई महोत्सव या मकान आदि बनाने का प्रोग्राम बनाये ऐसे शुभकामों में लगे रहना आपके लिये शान्ति का कारण बनेगा, यदि यात्रा का प्रोग्राम बनें अवश्य बनायें घर की अपेक्षा आप यात्रा में सुखी रहेंगे, विद्यार्थी वर्ग को चेतावनी है कि आप पढ़ाई में आलस्य न करें परिश्रम करने पर आप अच्छी पोजिशन में सफल होंगे।

6. शेष बचनाः- आपके वर्ष भर की शान्ति की सूचना है, आपको किसी महापुरुष से संयाग होगा जो आप की मानसिक शान्ति का कारण बनेगा, कोई भी कार्य जो आप हाथ में लेंगे उस में अवश्य सफलता होगी, आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी, मान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा, सामाजिक तथा धार्मिक कामों से दिलचस्पी बनी रहेंगी, नौकरी पेशा वर्ग के लिये यद्यपि यह वर्ष दौड़-धूप तथा संघर्ष का ही होगा परन्तु मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, व्योपारी वर्ग भी लाभ में रहेगा, विद्यार्थियों के लिये, यह वर्ष सफलता का है, धन लाभ के साथ-साथ खर्च का योग भी बलवान है, प्रायः खर्च शुभकामों में ही होगा घर में विवाह आदि महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा।

7 शेष बचेंः- तो इस वर्ष आपका भाग्योदय होगा, आप केवल प्रोग्राम ही न बनायें अपितु हर प्रोग्राम को अमली रूप देने का प्रयत्न कीजिये, इस वर्ष ग्रह अनुकूल हैं आपके कठिन से कठिन काम को सफल बनाने में सहायक होंगे, यदि आप गृहस्थी हैं तो घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम अवश्य बनेगा, यदि आप मकान या जायदाद बनाने का विचार रखते हैं तो इस वर्ष इस शुभ अवसर को हाथ से न जाने दें यदि आप व्यापार करते हैं, या नौकरी अथवा विद्यार्थी हैं आप का हर काम जरा सा ध्यान देने से अवश्य सफल होगा, सम्भव है आपको यात्रा का प्रोग्राम बने इसमें भी सन्तोषजनक सफलता होगी, आपका स्वास्थ भी इस वर्ष ठीक रहेगा, धन लाभ के साथ-साथ खर्च का भी योग है।

8 शेष बचें:- अर्थात यदि कुछ न बचे तो वर्ष भर संघर्ष तथा दौड़ धूप का माहोल रहेगा है, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियां आप का पीछा छोडेंगी नहीं, यदि आप नौकरी करते हैं, तो दफ्तर में प्रायः मन अशान्त रहेगा सम्बन्धित अफसरों से अनबन रहेगी, नौकरी सम्बन्धित तरर्की की कोई आशा न रखें, हर एक कार्य ज्यों का त्यों लटकता रहेगा, यदि आप व्योपार करते हैं परश्रिम बहुत करना होगा परन्तु पल्ले कुछ नहीं पडेगा। यदि आप विद्यार्थी हैं परिश्रम करने पर भी सन्तोषजनक सफलता नहीं होगी, यद्यपि यह वर्ष हर पहलू से ढीला ही रहेगा ऐसा होने पर भी धार्मिक प्रवृत्ति, सामाजिक कामों से दिलचस्पी बनी रहेगी, उपाय के रूप में आप हर सोमवार को भगवान् शंकर पर जल चढाया करें।

जातक मिलाप–प्रकरण

बल देखने की विधिः- लग्न और चन्द्रमा से वर वधू की जन्माकुण्डली के पहले चौथे, 7वें, 8वें, 12वें घर में जितने पापग्रह होगें उतने बल मानिये, एक पाप ग्रह का एक बल माना जाता है। बृहस्पति और शुक्र एक घर में इकट्ठे हों तो उसका भी एक बल मानिये यदि लड़के के जन्म कुण्डली में शुक्र से चौथे, 8वें, घर में कोई पाप ग्रह हों तो उतने बल लड़के के और मान लीजिए, राक्षस जाति का भी एक बल मानिये।

नक्षत्रः- अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु तिष्या आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनूराधा ज्येष्ठा, मूल, पूर्वषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक् पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद्, रेवती।

षष्टाष्टकः- लड़के अथवा लड़की की राशि से आठवीं और छठी राशि षष्टाष्टक कहलाती है, जैसे मिथुन, मकर।

नवपंचकः- लड़के अथवा लड़की की राशि से नवीं और पाँचवी राशि नवपंचक कहलाती है। जैसे मेष और सिंह।

द्विर्द्वादशीः- लड़के अथवा लड़की की राशि से दूसरी या बारहवीं हो तो द्विर्द्वादशी कहलाती है। जैसे मेष और मीन।

जातक मिलाप सारिणी

वधु ↓	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि	भरण	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आद्र	पुर्न	पुर्न	ति	अश्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	हरते	चित्र
मेष	अश्वि	28	33	28	18	21	22	26	17	19	23	31	28	21	25	15	11	9	13
	भरण	34	28	29	19	22	14	18	26	27	31	23	25	20	18	26	21	20	4
	कृति	27	29	28	18	10	16	20	20	21	25	26	23	16	20	20	15	15	18
वृष	कृति	18	20	19	28	20	26	17	17	18	22	23	20	18	22	22	21	21	23
	रोहि	23	23	11	20	28	36	27	23	22	26	27	12	10	24	27	26	26	20
	मृग	23	14	18	35	28	29	24	22	26	26	19	21	19	15	24	23	26	13
मिथुन	मृग	27	18	22	19	27	20	28	33	31	19	12	14	23	19	28	31	34	21
	आर्द्र	19	27	21	18	24	26	34	28	25	12	20	13	23	29	21	24	24	27
	पुर्न	20	27	23	20	22	23	31	24	28	15	22	17	22	26	21	24	25	27
कर्क	पुर्न	22	29	25	22	24	25	18	10	14	28	35	29	16	20	15	18	19	21
	तिष्य	30	21	26	23	25	18	11	18	21	35	28	30	19	15	23	26	27	12
	अश्ले	26	24	22	19	11	19	12	12	15	28	29	28	15	15	18	21	21	26
सिंह	मघा	20	20	16	17	9	17	21	22	20	16	19	16	28	30	27	16	16	21
	पूफा	26	18	20	21	23	15	19	28	26	22	17	16	30	28	35	24	22	7
	उफा	16	26	20	21	26	24	28	20	21	17	25	19	27	35	28	17	16	13
कन्या	उफा	13	22	16	21	26	24	31	23	24	20	28	22	17	25	18	28	17	24
	हस्त	10	20	17	22	25	26	33	22	24	20	28	23	18	22	16	26	28	28
	चित्र	13	5	19	23	20	12	19	26	25	21	12	27	22	8	14	24	27	28

जातक मिलाप सारिणी

वधु ↓	वर →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्र	स्व	विश	विशा	अनु	ज्ये	मूल	पूष	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव
मेष	अश्वि	22	26	22	18	25	14	13	25	23	25	26	20	20	15	16	14	24	26
	भरण	13	29	21	17	17	19	20	18	26	27	26	10	10	20	24	22	17	26
	कृति	27	15	19	15	19	25	24	18	12	13	11	25	25	27	19	17	19	11
वृष	कृति	22	10	14	20	24	30	20	13	7	12	10	23	29	31	23	20	22	14
	रोहि	19	15	9	15	29	23	14	19	11	16	17	20	26	24	30	27	27	19
	मृग	12	25	18	24	21	24	15	10	17	21	25	13	19	27	29	26	18	27
मिथुन	मृग	14	27	20	14	11	14	23	18	25	20	23	11	13	21	23	25	17	26
	आर्द्र	20	27	20	13	17	3	16	28	28	23	23	17	19	12	17	19	26	26
	पुर्न	20	28	22	15	21	7	14	27	27	22	23	17	18	14	16	18	28	27
कर्क	पुर्न	20	28	22	20	26	11	8	21	21	26	27	21	12	8	10	16	26	25
	तिष्य	11	26	21	19	18	21	17	11	21	26	25	13	4	14	18	24	18	27
	अश्ले	25	12	17	15	20	26	22	16	8	13	13	26	17	19	11	17	21	13
सिंह	मघा	24	11	16	22	25	33	25	19	8	3	4	18	24	25	18	18	19	13
	पूफा	10	25	18	24	23	25	19	17	24	19	18	4	10	19	24	24	17	25
	उफा	16	25	16	22	31	17	9	25	25	20	20	11	17	11	15	15	26	25
कन्या	उफा	16	25	16	18	27	13	14	29	29	24	24	16	16	10	14	17	28	27
	हस्त	20	26	18	20	26	13	15	27	28	23	24	18	19	8	13	16	26	27
	चित्र	20	19	26	28	11	25	27	14	22	17	18	15	16	24	16	19	10	19

जातक मिलाप सारिणी

वधु ↓	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि	भरण	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आद्र	पुर्न	पुर्न	ति	अश्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	हस्ते	चित्र
तुला	चित्र	22	14	28	23	20	12	13	21	19	20	11	26	25	11	17	17	20	21
	स्वा	27	29	17	12	15	26	27	26	28	29	27	14	13	25	25	25	27	21
	विशा	22	22	20	15	10	18	19	20	21	22	21	18	17	19	17	17	18	27
वृश्चिक	विशा	16	16	14	19	14	22	12	12	13	19	18	15	21	23	21	17	18	27
	अनु	24	15	19	24	27	20	10	15	20	26	18	21	24	20	29	25	26	11
	ज्ये	12	18	24	29	22	22	12	2	5	10	20	26	31	23	16	12	12	24
धनु	मूल	12	20	24	19	13	13	21	15	12	8	17	23	25	19	9	13	13	26
	पूषा	26	18	18	12	18	10	18	27	27	23	13	17	19	17	25	28	27	13
	उषा	24	26	12	6	10	17	25	27	27	23	23	9	8	24	25	28	28	21
मकर	उषा	27	28	14	12	16	22	20	22	22	28	28	14	4	20	21	24	24	17
	श्रव	27	26	13	11	16	25	22	21	22	28	26	15	6	18	20	23	24	19
	धनि	20	11	26	23	20	12	9	16	16	22	13	28	19	5	12	16	17	15
कुम्भ	धनि	20	11	26	30	27	19	12	19	18	13	4	19	25	11	18	17	19	17
	शत	15	21	28	32	25	27	20	12	13	8	14	20	26	20	12	11	8	25
	पूभाद्र	18	25	20	24	31	31	24	17	18	13	20	13	19	25	16	15	15	17
मीन	पूभाद्र	14	21	16	19	26	26	25	18	19	18	25	18	17	23	14	16	16	18
	उभाद्र	24	16	18	21	26	18	17	25	28	27	19	21	18	16	25	27	26	9
	रेव	25	24	11	14	17	26	25	24	26	25	27	14	13	23	23	25	26	19

जातक मिलाप सारिणी

वधु ↓	वर →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्र	स्व	विश	विशा	अनु	ज्ये	मूल	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव
तुला	चित्र	28	27	34	23	6	20	27	14	22	25	26	23	18	26	18	12	3	12
	स्वा	28	28	20	9	21	16	23	27	19	22	23	26	21	20	25	19	19	12
	विशा	34	19	28	17	16	20	27	22	14	17	17	30	24	26	20	14	13	4
वृश्चिक	विशा	22	7	16	28	27	31	21	16	8	12	12	25	24	25	19	19	18	9
	अनु	6	21	16	28	28	31	15	13	21	25	26	12	11	21	24	24	18	27
	ज्ये	19	15	19	31	30	28	14	16	16	20	20	25	24	18	10	9	21	21
धनु	मूल	26	21	26	22	15	15	28	28	26	15	15	20	28	21	14	16	25	26
	पूषा	13	27	21	17	15	17	28	28	34	22	23	6	14	23	28	30	23	31
	उषा	21	19	13	9	23	17	26	34	28	16	14	15	23	23	29	31	31	23
मकर	उषा	24	22	16	13	27	21	16	23	17	28	26	26	17	17	23	30	30	22
	श्रव	26	22	17	14	27	22	17	23	14	25	28	28	18	18	21	28	29	22
	धनि	22	24	29	26	12	26	21	7	16	26	27	28	18	23	19	26	15	22
कुम्भ	धनि	18	20	24	25	11	25	29	15	24	18	18	19	28	33	28	18	7	14
	शत	26	19	26	26	21	19	22	24	24	18	18	24	33	28	19	8	17	16
	पूभाद्र	18	26	20	20	26	11	15	29	30	24	23	20	28	19	28	17	22	20
मीन	पूभाद्र	11	19	13	19	25	9	15	29	30	29	28	25	17	7	16	28	33	30
	उभाद्र	2	19	12	18	19	21	24	22	30	29	29	14	6	16	21	33	28	35
	रेव	12	11	4	10	27	22	26	29	21	20	21	22	14	16	18	29	34	28

राशि कूट चक्र

मित्र षष्टाष्टक	मेष+वृश्चिक	मिथुन+मकर	सिंह+मीन	तुला+वृष	धनु+कर्क	कुम्भ+कन्या
शत्रु षष्टाष्टक	वृष+धनु	कर्क+कुम्भ	कन्या+मेष	वृश्चिक+मिथुन	मकर+सिंह	मीन+तुला
मित्र नवपंचक	मेष+सिंह	मिथुन+तुला	सिंह+धनु	तुला+कुम्भ	धनु+मेष	कुम्भ+मिथुन
शत्रु नवपंचक	वृष+कन्या	कर्क+वृश्चिक	कन्या+मकर	वृश्चिक+मीन	मकर+वृष	मीन+कर्क
मित्र द्विर्द्वादशी	मेष+मीन	मिथुन+वृष	सिंह+कर्क	तुला+कन्या	धनु+वृश्चिक	कुम्भ+मकर
शत्रु द्विर्द्वादशी	वृष+मेष	कर्क+मिथुन	कन्या+सिंह	वृश्चिक+तुला	मकर+धनु	मीन+कुम्भ

देखने की विधिः- मेष राशि की वृश्चिक राशि के साथ मित्र षष्टाष्क है जो शुभ है इसी प्रकार वृष राशि का धनु राशि के साथ शत्रु षष्टाष्टक है जो मिलाप के लिए अशुभ है।

नोटः- मित्रषाष्टाष्टक, मित्रनवपंचक, मित्रद्विर्द्वादशी निषेध नहीं-अपितु शुभफलदायक है।

नाड़ी देखने का चित्र

आद्य नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उफा	हस्त	ज्येष्ठा	मूला	शत	पूभा
मध्य नाड़ी	भर	मृग	तिष्या	पूफा	चित्रा	अनू	पूषा	धनि	उभा
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोहि	आश्ले	मघा	स्वाति	विशा	उषा	श्रव	रेव

नाड़ी देखने की विधिः- जन्मपत्री मिलाने के लिए दोनों वधू-वर का नक्षत्र अवश्य मालूम होना चाहिए यदि दोनों का नक्षत्र आद्य नाडी की पंक्ति में हो तो आद्य नाड़ी दोष होता है, ऐसे ही यदि दोनों का नक्षत्र मध्यनाड़ी की पंक्ति

में हो तो मध्य नाड़ी दोष होता है, यदि दोनों वर-वधू का नक्षत्र अन्त्य नाड़ी की पंक्ति में हो तो अन्त्य नाड़ी दोष होता है। नाड़ी दोष विशेष हानिकारक माना जाता है।

जाती देखने का चित्र

देव जाति	अनू	मृग	श्रवण	पुनर्व.	रेवती	स्वाति	हस्त	तिष्या	अश्वि
मनुष्य जाति	पूषा	पूफा	पूभा.	उफा.	उषा	रोहि	भर	आद्रा	उभा
राक्षस जाति	मघा	आश्ले	धनि	कृति	ज्येष्ठा	मूला	शत	चित्रा	विशा

देखने की विधिः- अनूराधा नक्षत्र होने पर देवजाति, ऐसे ही पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र के लिए मनुष्य जाति, मघा नक्षत्र की राक्षस जातिः-

देव जाति + राक्षस जाति = मध्यम
राक्षस जाति + देव जाति = मध्यम
राक्षस जाति + मनुष्य जाति = अशुभ

मनुष्य जाति + देव जाति = शुभ
देव जाति + मनुष्य जाति = शुभ
मनुष्य जाति + राक्षस जाति = अशुभ

दोनों लड़के तथा लड़की की एक ही जाति का होना शुभफल होता है, विशेषतया यदि लड़की की जाति राक्षस हो और लड़के की मनुष्य जाति हो तो विशेष हानिकारक होती है।

वधू-वर मिलाप सारिणी देखने की विधिः-

जन्मपत्री मिलान के लिए वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गण, भकूट, नाड़ी यह आठ मानिये पर्चे होते हैं यदि वर्ण आपस में (वधू वर का) मिले तो एक गुण मानिये। 1 अंक मिलता है, जब वश्य का आपस में मिलान होगा, तो

के दो अंक यानी 2 गुण मिलते हैं ऐसी ही क्रमशः तारा के मिलान में 3 गुण योनि के मिलान में 4 गुण होते हैं अर्थात् 8 पर्वो में क्रमशः 1+2+3+4+5+6+7+8 कुल मिलाकर 36 गुण होते हैं, वधू वर के मिलान में 36 में से 18 गुण मिले तो विवाह शुभफलदायक होगा।

सारिणी देखने के लिये दोनों लड़के, लड़की की जन्मराशि का ज्ञान होना आवश्यक है, मानिये लड़के की राशि है मेष और लड़की की राशि है मिथुन। मेष राशि वाले का नक्षत्र होगा अश्विनी, भरणी अथवा कृतिका ओर मिथुन राशि वाले का नक्षत्र होगा मृगशिर, आर्द्रा पुनर्वसु, सारिणी में देखिये हर राशि के नीचे नक्षत्र लिखे हैं। उदाहरण के रूप में मानिये लड़के की राशि है मेष और नक्षत्र है भरणी, ऐसे ही लड़की की राशि है मिथुन मानिये नक्षत्र है **मृगशिर-सारिणी में देखियेः-** भरणी नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और मृगशिर की पड़ी पंक्ति जहां आपस में मिलती है वहां सारिणी में 18 दर्ज हैं, यानी वधू-वर के मिलान में 18 गुण हैं, इसलिये यह मिलान शुभ है। दूसरा उदाहरण देखिये, लड़के की राशि है सिंह और नक्षत्र है मघा, लड़की की राशि है कन्या और नक्षत्र है "हस्त" सारिणी में देखिये "मघा" नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और हस्त की पड़ी पंक्ति में केवल 16 गुण मिलते हैं अतः मिलाप शुभ नहीं होगा।

मंगल दोष विचार

1. शनि भौमोथवा कश्चित् पापोवा तादृशोभवेत्।
तेष्वेव भवनेषु भौम दोष विनाशकृत्।।

जिस जन्म कुण्डली में वह लड़की की हो या लड़के की 1, 4, 7, 8, 12वें घर में यदि मंगल हो उसी के जवाब में, जन्मचक्र से अथवा राशि चक्र से कोई क्रूरग्रह (यह आवश्यक नहीं मंगल ही हो) सूर्य, भौम, शनि, राहु इन्हीं घरों में यानी 1, 4, 7, 8, 12वाँ हों तो मंगल का दोष नहीं होता है।

2. "अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिकके कुजे,
द्यूने मृगे कर्किचाष्टे भौम दोषो न विद्यते।।"

लड़के अथवा लड़की की कुण्डली में, लग्न में मेष राशि का मंगल हो, वृश्चिक का मंगल चौथा हो,

मकर राशि में सातवाँ हो, कर्क का आठवां हो, धनु का बारहवाँ हो तो भौम का यानी मंगल का दोष नहीं होता है।

3. सप्तमस्थो यदा भौमो गुरुणा च निरीक्षितः
तदातु सर्वसौरण्यं स्यात् मंगलीदोष नाशकृत्।।
यदि सातवाँ मंगल हो, उस पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

4. भौम यदि वक्री, नीच, अस्त अथवा शत्रु के घर में हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

नाड़ी दोष अपवाद

1. लड़के अथवा लड़की का नक्षत्र यदि रेवती, रोहिणी, मृगशिर, तिष्या, कृतिका, उत्तराभाद्रपद्, श्रवणी, आर्द्रा तथा ज्येष्ठा हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।
2. यदि लड़के-लड़की में से एक की राशि कन्या और दूसरे की मिथुन, एक ही धनु, दूसरे की मीन, एक की तुला, दूसरे की राशि वृष हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।
3. वर तथा कन्या की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है अथवा वर तथा कन्या का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हों तो नाडी दोष नहीं होता है।
4. नाड़ी दोष होने पर यदि पाद भेद हो तो भी नाड़ी दोष नहीं होता है।
5. वर और वधू के राशि स्वामियों अथवा नवांश स्वामियों की यदि आपस में मित्रता हो-तो राक्षस जाति तथा षष्ठाष्टक आदि का दोष नहीं होता है।

यात्रा प्रकरण

यात्रा के लिए उत्तम नक्षत्रः- अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, तिष्या, मृगशिर, रेवती हस्त धनिष्ठा।

यात्रा के लिए निषेध नक्षत्रः- भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति, विशाखा।

यात्रा के लिये मध्यम नक्षत्रः- रोहिणी, उत्तराफा०, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभा०, पूर्वाफा, पूर्वाषा, ज्येष्ठा, मूला, शतभिषक्।

यात्रा के लिये अशुभ योगः- कालदण्डः धौम्यः, ध्वांक्षः, उन्मूलम्, मुस्लम्, मुद्रगरम्, काण्डः, क्षयः, शूलम्।

यात्रा के लिये अशुभ चन्द्रमाः- अपनी राशि से चौथा, आठवाँ, बारहवाँ।

यदि यात्रा को जाना आवश्यक हो तो:- बृहस्पतिवार, शुक्रवार, रविवार को रात्रि में यात्रा को जाने में कोई दोष न मानिये, ऐसी ही सोमवार, शनिवार और मंगलवार-इन तीन वारों का दोष दिन को न मानिये।

वार दोष निवारण के लिये:- रविवार को सुपारी खाकर यात्रा को जायें, सोमवार को दूध अथवा खीर, मंगलवार को आँवला अथवा कांजी, खट्टी पदार्थ, बुधवार को मीठा, बृहस्पतिवार को दही, शुक्रवार को कच्चा दूध, शनिवार को उड़द अथवा तहर।

घातचन्द्र–घातवार

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशि
1	5	9	2	6	10	3	7	4	8	11	12	चन्द्र
रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र	वार

मेष राशि वालों के लिए पहला घात चन्द्रमा है, ऐसे ही रविवार भी घातवार है, घातचन्द्रमा केवल यात्रा के लिये निषेध है।

यात्रा के लिए उत्तम योगिनी तथा चन्द्रमा

दिशा	वार	बायें योगिनी	पीछे योगिनी	सन्मुख चन्द्रमा	दायां चन्द्रमा
पूर्व	रवि, भौम, बुध, गुरु, शुक्र	द्वितीया दशमी,	षष्ठी चतुर्द,	मेष, सिंह, धनु,	मकर, कन्या, वृष,
पश्चिम	सोम, बुध, गुरु, शनि,	पंचमी, त्रायो,	प्रतिपदा, नवमी,	मिथुन, तुला, कुंभ	कर्क, वृश्चि, मीन
दक्षिण	सोम, भौम, बुध, शुक्र शनि	प्रतिपद् नवमी	द्वितीया, दशमी	मकर, कन्या, वृष,	मिथुन, तुला, कुम्भ
उत्तर	सोम, शुक्र, शनि, रवि	षष्ठी, चतुर्द	पंचमी, त्रयोदशी	कक, वृश्चिक, मीन	मेष, सिंह, धनु

देखने की विधिः

शत्रु मित्र चक्रम्

सूर्य का चन्द्रमा, भौम और गुरु मित्र है, शुक्र, शनि, राहु शत्रु है, बुध सूर्य का न शत्रु न मित्र हैं।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु
मित्र	चन्द्र भौम गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र गुरु	सूर्य शुक्र राहु	सूर्य चन्द्र भौम	बुध शनि राहु	बुध शुक्र राहु	बुध शुक्र शनि
शत्रु	शुक्र शनि राहु	राहु	बुध राहु	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य	सूर्य चन्द्र भौम	सूर्य चन्द्र भौम
सम	बुध	भौम शुक्र गुरु, शनि	शुक्र शनि	भौम गुरु शनि	शनि राहु	भौम गुरु	गुरु	गुरु

जन्म राशि की प्रधानता

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रह गोचरे। जन्म राशेः प्रधानत्वं नाम राशि न चिन्तयेत्।। विवाहादि समस्त मंगल कार्य, यात्रा ग्रह दशा इत्यादि में जन्म राशि की ही प्रधानता है नाम राशि की नहीं। इस कारण जन्म राशि को ही देखना चाहिये।

बारह राशियों का वर्ष फल तथा मासिक फल 2011-12 के लिए

मेष राशि का वर्षफल (Aries)

नक्षत्र	अश्विनी				भरणी				कृतिका
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	चु	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ

वर्ष के आरम्भ पर बाहरवें भाव में पांच ग्रहों सूर्य, चन्द्रमा, भौम, बुध तथा बृहस्पति की युति तथा ग्यारहवें भाव में शुक्र का होना शुभफल का सूचक है इस शुभ योग के प्रभाव से मेष राशि वालों के लिये यह वर्ष संर्घषमय होने के साथ साथ सफलता देने वाला वर्ष रहेगा। फलित ज्योतिष के अनुसार बारहवां सूर्य और मंगल शरीर सुख के लिये मध्यम माने जाते हैं परन्तु पांच ग्रहों की युति होने से शुभ फल देने वाले ही रहेंगे यदि आप के जन्म पत्री में मंगल की स्थिति अच्छी नहीं है तो आप को शरीर के विषय में सावधान रहने की आवश्यकता है ग्यारहवें भाव में शुक्र होने पर धन की वृद्धि, आदर व मान में वृद्धि, सभी कार्यों में सफलता, स्त्री सम्बन्धित सुखों में वृद्धि, मित्रों का पूर्ण सहयोग। गोचर चक्र के छठे भाव में शनि होने से धन, अन्न और सुख की वृद्धि शत्रुओं पर विजय, भूमि,

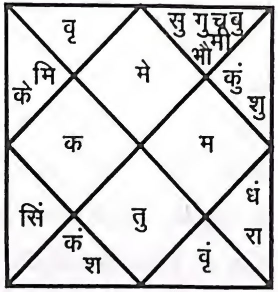

मकान आदि की प्राप्ति, शरीर स्वस्थ, गृहस्थ सुख का योग यदि आप को मकान इत्यादि की समस्या है तो वह समस्या इस वर्ष अवश्य हल होगी यदि आप को सन्तान पक्ष की ओर से किसी प्रकार की चिन्ता है तो उस चिन्ता का समाधान इस वर्ष अवश्य होगा। यदि आप विद्यार्थी हैं तो आप को कटिबद्ध होकर अध्ययन की ओर लगना पड़ेगा तभी आप सफलता की आशा रखें शरीर स्वस्थ रखने के लिये तथा प्रत्येक कार्य में सलता प्राप्त करने के लिये आप इस मन्त्र

का उच्चारण नित्य करें।

सर्वा बाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्या-खिलेश्वरि।
एवम्-एव त्वया कार्यं अस्मत् वैरि-विनाशनम्।।

मेष राशि का मासिक फल

अप्रैल: मास के आरम्भ पर बारहवें भाव में सूर्य, भौम तथा बृहस्पति का एक साथ होना शरीर सुख के सूचक नहीं हैं परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुये किसी प्रकार का भय नहीं है। आप की आर्थिक स्थिति में थोड़ा बहुत सुधार की सम्भावना। विद्यार्थी वर्ग के लिये संघर्ष का महीना।

मई: मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का अशुभ स्थिति में होना चिन्ता तथा संघर्ष का सूचक है विशेष तौर से यह आप के शरीर को प्रभावित कर सकते हैं यदि आप नौकरी करते हैं तो दफतर का माहोल आप के अनुकूल होते हुये भी परेशानी का योग।

जून: मास के आरम्भ पर ग्रहों में थोड़ा सा परिवर्तन होने के कारण आप की परेशानी में कुछ कमी आयेगी तथा शरीर सुख में सुधार का योग। यदि आप किसी सामाजिक संस्था से सम्बन्ध रखते हैं तो वहां पर आदर व मान का योग, कारोबारी होने पर आप की आमदनी में सुधार, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

जुलाई: छः ग्रहों का शुभ स्थिति में होना शुभ फल का सूचक है आप जो भी कार्य करते हैं उस में सफलता का योग यदि आप नौकरी करते हैं तो दफतर में आदर व मान का योग गृहस्थ सुख का योग, सन्तन पक्ष से कोई शुभ न्देश की सम्भावना विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

अगस्त: मास के आरम्भ पर ग्रहों में विशेष परिवर्तन न होने के कारण यह मास भी गत मास की तरह शान्त माहोल में गुज़रेगा परन्तु आप की आर्थिक स्थिति में कुछ उतार चढाव रहेगा जो आपके लिये चिन्ता का कारण बनेगा, नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा। विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम मास।

सितम्बर: ग्रहों की अस्त व्यस्त स्थिति के कारण यह मास संघर्ष पूर्ण ही रहेगा, शरीर अस्वस्थ रहने का योग गृहस्थ की ओर से मानसिक अशान्ति, नौकरी पेशा होने पर अपने अफसर लोगों के साथ अन बन परन्तु किसी प्रकार के भय

का कोई योग नहीं।

अक्टूबर: आठवें भाव का चन्द्रमा और राहु आपके अशान्ति का विशेष कारण बनेगा चौथा भौम आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है नौकरी पेशा होने पर शत्रु पक्ष आप पर हावी होने का प्रयत्न करेगी परन्तु ग्रहों की स्थिति को देखते हुये आप पर किसी प्रकार का बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा।

नवम्बर: पांच ग्रहों का शुभ होना तथा दो ग्रहों का वेध में होना। शुभफल को दर्शाता है जिस के प्रभाव से यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, आप की आर्थिक स्थिति में भी थोड़ा बहुत सुधार होने का योग, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

दिसम्बर: ग्रहों में विशेष परिवर्तन न होने के कारण यह मास शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, आप जो भी कार्य करते हैं सामान्य रूप से चलता रहेगा, गृहस्थ के किसी सदस्य के शरीर की चिन्ता का योग, कारोबारी होने पर आशा से अधिक लाभ का योग। विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

जनवरी: नये वर्ष का पहला मास मेष राशि वालों के लिये कोई विशेष तोहफा लेकर नहीं आया है जिस कारण यह महीना सामान्य रूप में ही गुज़रेगा, शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण किसी प्रकार की चिन्ता का कोई योग नहीं। विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

फरवरी: अशुभ ग्रहों का पलड़ा बारी होने के कारण अचानक परेशानी का योग, शरीर अस्वस्थ, अपने अफसर लोगों के साथ अनबन, स्त्री पक्ष की ओर से चिन्ता कारोबारी होने पर हानि का योग, या लोगों के पास पैसा फसने का योग, विद्यार्थियों के लिये अशान्ति का महीना।

मार्च: चार ग्रहों का शुभ होना शान्ति का ही सूचक है, ग्यारहवें भाव में सूर्य होने से आर्थिक स्थिति में सुधार परन्तु खर्च का योग भी प्रबल है। सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश का योग। नौकरी पेश होने पर अपने अफसर लोगों के साथ अच्छी प्रकार से बनती रहेगी।

वृष राशि का वर्षफल (Taurus)

नक्षत्र	कृतिका			रोहिणी				मृगशिरा	
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	ई	उ	ए	ओ	बा	बी	बू	बे	वो

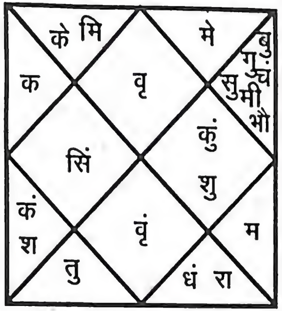

गोचर चक्र में ग्यारहवें भाव में पांच ग्रहों के होने से वृष राशि वालों के लिये यह वर्ष एक यादगार वर्ष रहेगा गोचर फलित के अनुसार हर प्रकार से लाभ व धन प्राप्ति, उत्तम भोजन, नवीन पद, आध्यात्मिक एवं मांगलिक कार्यों का योग, सात्विकता में वृद्धि, राज्य कृपा, पदोन्नति का योग पिता से लाभ, आरोग्य और धन धान्य की प्राप्ति, आय में आशातीत वृद्धि, भूमि आदि से लाभ, भाइयों तथा सगे सम्बन्धियों से लाभ, कार्यों में सफलता का योग, शारीरिक सुख यश और धन की प्राप्ति, मित्रों और पारिवारिक सदस्यों से अच्छा मेल मिलाप, सन्तान प्राप्ति की संभावना, मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि शत्रुओं की पराजय, विवाह अथवा पुत्र जन्म का योग, राज्याधिकारियों से सुख, शुभ कार्यों में रुचि इत्यादि गोचर चक्र के ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग की कसौटी पर परखने से विदित होता है यह वर्ष वृष राशि वालों के लिये हर प्रकार से लाभदायक तथा सफलतादायक रहेगा। आप नौकरी करते हैं या कारोबार आप को आशा से अधिक लाभ मिलेगा। दफतर में हर समय आदर व मान का योग, यदि आपकी पदोन्नति किसी कारण रुकी हुई है उस का समाधान इस वर्ष अवश्य होगा, यदि आप किसी सामाजिक अथवा सियासी संगठन से सम्बन्ध रखते हैं उस में किसी पद की प्राप्ति का योग। विद्यार्थी होने पर यदि आप उच्चविद्या के लिये कोई परोग्राम बना रहे हैं तो उस को अमली रूप दीजिये सफलता अवश्य होगी। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें।

शरणा-गत-दीनार्त-परि-त्राण-परायणे।
सर्वस्या-र्तिहरे-देवि-नारायणि-नमोऽस्तु ते।।

वृष राशि का मासिक फल

अप्रैल: मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का ग्यारहवें भाव में होना शुभफल का सूचक है आप जो भी कार्य करते हैं उस में सफलता के साथ लाभ। गृहस्थ सुख का उत्तम योग। घर पर किसी शुभ कार्य का आरम्भ होगाजो आपके लिये लाभदायक रहेगा, विद्यार्थियों के लिय सफलता देने वाला मास।

मई: मास के आरम्भ पर ग्रहों में विशेष परिवर्तन न होने के कारण यहमास भी गत मास की तरह शुभ माहोल में गुज़रेगा। आमदनी आशा से अकि रहेगी परन्तु खर्च के बड़े बड़े प्रोग्राम बनते रहेंगे, घर में किसी नवजात शिशु के आगमन का योग, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

जून: मास के आरम्भ पर ग्रहों में फेर बदल होने के कारण शरीर अस्वस्थ, बारहवां बृहस्पति तथा भौम आप के शरीर के प्रभवित करेंगे धन का फजूल खर्च अथवा हानि का योग दरबार की और से किसी प्रकार की चिन्ता का योग नहीं, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

जुलाई: पहले भाव का भौम आपके स्वभाव में क्रोध की मात्रा को बढ़ायेगा आप की आमदनी अच्छी रहेगी, दरबार का माहोल आपके अनुकूल रहेगा। कारोबारी होने पर कारोबार में वद्धि का योग, छोटी मोटी यात्रा का योग जो आपके लिये लाभदायक रहेगी।

अगस्त: ग्रहों की डांवाडोल स्थिति के कारण यह मास संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं उसमें अचानक रुकावट तथा परेशानी परन्तु आप की आमदनी पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ेगा। गृहस्थ की ओर से चिन्ता।

सितम्बर: अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने पर भी यह मास आप के लिये लाभदायक रहेगा खर्च के बड़े प्रोग्राम बनेंगे, दफतर का माहोल आपके अनुकूल रहेगा, किसी महापुरुष के साथ मिलने का अवसर मिलेगा, अविवाहित होने पर विवाह की बात चल सकती है।

अक्टूबर: शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति एक जैसी होने के कारण यह मास शुभ स्थिति में गुज़रेगा। नोकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो इस प्रकार के कागज़ों में कुछ हलचल होगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से सुख व शान्ति विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

नवम्बर: मास के आरम्भ पर चौथा भौम आपके शरीर को प्रभावित कर सकता है यदि जातक से किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो किसी प्रकार का भय नहीं है। सातवें भाव में तीन ग्रहों के कारण स्त्री पक्ष से मानसिक अशान्ति का योग, यदि आप को सन्तान पक्ष से किसी प्रकार की

चिन्ता है वह चिन्ता अवश्य दूर होगी।

दिसम्बर: शुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने से यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, आपकी आमदनी भी इच्छानुसार रहेगी परन्तु साथ ही खर्च के प्रोग्राम भी बनते रहेंगे, जिनकी प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे हैं, विद्या प्राप्ति के लिये अच्छा महीना।

जनवरी: मास के आरम्भ पर चौथे भाव का भौम तथा आठवें भाव का सूर्य शरीर सुख के शुभ सूचक नहीं है, भाग्यस्थान का शुक्र तथा गरहवें भाव का चन्द्रमा आपकी आमदनी को बड़ायेंगे। कारोबारी होने पर यदि आप अपने काम को बड़ाना चाहते हैं तो समय ज़ाया मत कीजिये।

फरवरी: ग्रहों की स्थिति एक जैसी रहने के कारण यह महीना भी शान्ति पूर्वक गुज़रेगा, हर कार्य में सफलता का योग, आप की आमदनी भी ठीक ही रहेगी, शरीर के विषय में सावधान रहने की ज़रूरत, दरबार का माहोल आप के अनुकूल रहेगा।

मार्च: मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ होना तथा एक ग्रह का वेध में होना शुभ फल का सूचक है इस योग के प्रभाव से आप को हरं कार्य में सफलता तथा लाभ। भाई, बन्धू, मित्रों से मेल मिलाप का योग तथा उनसे लाभ गृहस्थ पक्ष की ओर से शान्ति, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

मिथुन राशि का वर्ष फल (Gemini)

नक्षत्र	मृगशिरा		आर्द्रा				पुनर्वसु		
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	3
नामाक्षर	का	कि	कू	ध	ह	छ	के	को	हा

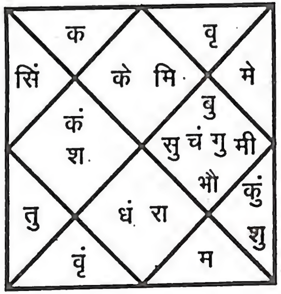

गोचर चक्र के दसवें भाव में सूर्य चन्द्रमा तथा बुध के होने से धन, स्वास्थ्य, मित्रादि का सुख, राज्याधिकारियों और प्रतिष्ठित लोगों से मित्रता, प्रत्येक कार्य में सफलता, पदोन्नति का योग, मान गौरव की प्राप्ति, सभी कार्य सिद्ध होंगे, स्वस्थ शरीर, राज्य की ओर से धन और सम्मान की प्राप्ति, उत्तम गृहस्थ सुख, व्यवसाय में वृद्धि, मानसिक सुख, शान्ति के

साथ-साथ उत्तम गृहसुख, जनहित कार्यों में वृद्धि आशा से अधिक लाभ, घर में कोई मांगलिक तथा धार्मिक उत्सव, भाग्य में वृद्धि, मित्रों से लाभ, भाइयों से सहायता तथा प्रेम इत्यादि: गोचर चक्र के ग्रहों पर विचार करने से प्रतीत होता है कि मिथुन राशि वालों के लिये यह वर्ष संघर्ष के साथ सफलता पूर्ण रहेगा, गोचर चक्र में बृहस्पति की स्थिति अच्छी न होने के कारण संघर्ष का योग, चौथे भाव में शनि देव बैठकर दसवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देख, रहा है फलित ज्योतिष के अनुसार शनि की दृष्टि को मनसूह माना जाता है इस कारण शनि आप के दरबार, कारोबार को प्रभावित कर सकता है परन्तु आप विश्वास रखें वह किसी प्रकार से हानि पहुंचाने में असफल रहेगा। भाग्यस्थान में शुक्र होने से प्रत्येक कार्य में सफलता का योग घर पर कोई शुभ कार्य करने का प्रोग्राम बनेगा जिस की आप बहुत दिनों से प्रतीक्षा कर रहे थे, गृहस्थ सुख का उत्तम योग, ज़मीन जाएदाद सम्बन्धित लाभ, विद्यास्थान का स्वामी शुक्र नवें भाव मं होने से पढ़ाई का उत्तम योग शनि को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें

करोतु सा नः शुभ हेतुः ईश्वरी।
शुभानि भद्राणि अभिहन्तु चापदः।।

मिथुन राशि का मासिक फल

अप्रैल: मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ होना शुभफल का सूचक है विशेष तौर से नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग, आपकी आर्थिक स्थिति में विशेष्ज्ञ सुधार होगा गृहस्थ की ओर से शान्ति का योग, शरीर सुख उत्तम, अविवाहित होने पर विवाह सम्बन्धित बात चलने का योग विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

मई: मास के आरम्भ में ही शुक्र का दसवें भाव में जाना शुभ फल का सूचक नहीं है इस के प्रभाव से शरीर अस्वस्थ, मानसिक चिन्ता, नौकरी तथा व्यवसाय में अडचन आने का योग, कार्यों में रुकावट परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुय किसी विशेष हानि का योग नहीं है।

जून: मास के आरम्भ में ही बृहस्पति, भौम तथा शुक्र ग्यारहवें भाव में आये हैं जो शुभ फल का संकेत है परन्तु साथ ही बारहवें भाव में सूर्य, चन्द्रमा तथा बुध एक साथ

हुये हैं जो अशुभ फल के सूचक हैं जो आपके शरीर को प्रभावित कर सकते हैं सब ग्रहों की स्थिति को देखते हुये यह मास शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा।

जुलाई: शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना हर प्रकारसे लाभदायक ही रहेगा क्योंकि ग्यारहवें भाव का बृहस्पति आपके लिये शुभ रहेगा, आपकी आमदनी भी अच्छी रहेगी परन्तु खर्च के प्रोग्राम भी बडते जायेंगे, गृहस्थ की ओर से लाभ, सन्तान सुख का योग, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम।

अगस्त: पहले भाव का भौम आपके शरीर को अस्वस्थ रख सकता है यदि जातक में भी भौम की स्थिति डांवां डोल है तो आपको शरीर के विषय में सावधान रहना होगा परन्तु गोचर चक्र में ग्यारहवें बृहस्पति के कारण किसी प्रकार की हानि का कोई योग नहीं है। विद्या प्राप्ति के लिये अच्छा महीना।

सितम्बर: इस मास के आरम्भ पर भौम देवता पहले भाव में ही बैठा है जो आपके शरीर को प्रभावित कर सकता है आप जो भी कार्य करते हैं। उस में हर प्रकार से लाभ तथा सफलता यदि आप को जाईदाद सम्बन्धित कुछ चिन्ता है उस का हल अवश्य होगा।

अक्टूबर: भौम अब आप के दूसरे भाव में आया है जो शरीर सुख का सूचक है शेष ग्रहों की स्थिति एक जैसी होने से यह मास भी गत मास की अपेक्षा अच्छे माहोल में गुज़रेगा, घर पर किसी प्रकार का प्रोग्राम बनेगा जिसमें सभी सगे सम्बन्धी सम्मिलित होंगे।

नवम्बर: मास के आरम्भ में आठवें भाव का चन्द्रमा आप को मान्सिक चंचलता रख सकता है, शत्रु पक्ष भी आप पर हावी होने की कोशिश करेगा। परन्तु वह असफल हो सकता है, गृहस्थ की ओर से लाभ, दरबार में आदर व मान का योग।

दिसम्बर: तीसरे भाव में भौम के आने से साहस में वृद्धि शत्रुओं पर विजय, राज्य की ओर से सहायता आमदनी में वृद्धि परन्तु खर्च के बडे बडे प्रोग्राम बनने का योग, घर पर कोई शुभ कार्य का योग तथा उस में हर प्रकार से सफलता, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

जनवरी: ग्रहों की स्थिति को देखते हुये यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं

उस में आशा से अधिक सफलता तथा लाभ, सन्तान पक्षसे कोई शुभ सन्देश, गृहस्थ की ओर से शान्ति, शरीर स्वस्थ, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

फरवरी: मिथुन राशि वालों को पूरे दस महीने बृहस्पति का अनुग्रह होने के कारण यह मास भी हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, आपकी आमदनी भी खर्च के अनुसार ठीक ही रहेगी, दरबार में हर समय आदर व मान का योग।

मार्च: पांच ग्रहों का शुभ होना तथा ग्यारहवें भाव में बृहस्पति तथा शुक्र के एक साथ होने से यह महीना हर प्रकार से सफलता तथा लाभ से परिपूर्ण रहेगा, आपकी आमदनी भी आशा से अधिक रहेगी किसी महापुरुष से मिलने एक अच्छा अवसर मिल सकता है।

कर्कट राशि का वर्ष फल (Cancer)

नक्षत्र	पुन	तिष्य				आश्लेषा			
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	ही	हू	हे	हो	हा	ही	हू	डे	डो

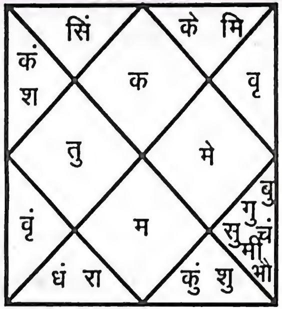

वर्ष के आरम्भ पर ग्रहों की डांवां डोल स्थिति को देखते हुये कर्कट राशि वालों का शुभारम्भ अस्त व्यस्त ही रहेगा गोचर फलित के अनुसार नवें भाव में सूर्य, चन्द्रमा, भौम तथा बुध का एक साथ होना शुभफल का सूचक नहीं है परन्तु नवें भाव में बृहस्पति का होना फलित ज्योतिष में हर प्रकार से शुभ माना जाता है इस के अतिरिक्त आठवां शुक्र तथा तीसरे भाव का शनि भी शुभ ही माना जाता है ग्रहों की इस स्थिति पर विचार करने से प्रतीत होता है कि कर्कट राशि वालों का वर्ष का आरम्भ कुछ संघर्ष पूर्ण रहेगा परन्तु सामूहिक रूप से यह वर्ष लाभदायक तथा शान्ति देने वाला ही रहेगा। भाग्यस्थान के बृहस्पति को फलित ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण स्थान मिला है जिस कारण धन और प्रतिष्ठा की वृद्धि, पुत्र सुख का योग, भाग्योदय राज्य में मान तथा पदोन्नति, हर कार्य में सफलता, भाइयों से सुख तथा लाभ, धार्मिक कार्यों में रुचि, यदि आप किसी सामाजिक अथवा सियासी गठबन्धन

से सम्बन्ध रखते हैं उसमें आदर व मान का योग, यदि आप किसी पथ प्रर्दशक की खोज में हैं समय आने पर वह स्वयम ही आप को मिलेगा, अपने सगे सम्बन्धियों से सम्बन्ध बड़ते रहेंगे जो आपके लिये लाभदायक रहेगा, यदि आपको गृहस्थ की ओर से अथवा सन्तान पक्ष से किसी प्रकार की चिन्ता है तो उस का समाधान इस वर्ष में अवश्य होगा, विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से संघर्ष का वर्ष क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का नित्य उच्चारण करें।

नंतेभ्य: सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयंदेहि यशो देहि द्विषो जहि।।

कर्कट राशि का मासिक फल

अप्रैल: मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने से यह मास संघर्ष में ही गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं उसमें अचानक कुछ अडचन आने की सम्भावना, परन्तु किसी प्रकार की हानि का कोई योग नहीं है सगे सम्बन्धियों से अच्छा मेल मिलाप, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

मई: ग्रहों में विशेष परिवर्तन न होने के कारण यह मास भी उत्थल पुत्थल माहोल में गुज़रेगा, उत्थल पुत्थल का मास होने पर भी हर प्रकार से लाभदायक रहेगा आप की आमदनी भी अच्छी रहेगी, शरीर स्वस्थ गृहस्थ की ओर से शान्ति, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

जून: मास के आरम्भ पर सूर्य, चन्द्रमा तथा बुध का दसवें भाव में आना शुभफल का संकेत है इस शुभयोग के प्रभाव से हर कार्य में सफलता तथा लाभ, दरबार में हर समय आदर व मान का योग, नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

जुलाई: बारवां सूर्य तथा चन्द्रमा आप के शरीर को अस्वस्थ रख सकता है तथा मानसिक अशान्ति का योग यदि जातक से किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो किसी प्रकार की हानि का कोई योग नहीं है परन्तु आपकी आर्थिक रिथति में किसी प्रकार की तबदीली नहीं आएगी।

अगस्त: मास के आरम्भ पर बारहवें भाव का भौम शरीर सुख का सूचक नहीं है प्राय: रक्त विकार का योग या सर दर्द या आंखों में तकलीफ हो सकती है परन्तु नवें भाव के बृहस्पति के कारण किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं

है। विद्यार्थियों के लिये दौड़धूप का महीनां

सितम्बर: शुभाशुभ ग्रहों का एक जैसा होना शान्ति तथा लाभ का सूचक है आप की आमदनी ज्यों की त्यों रहेगी परन्तु खर्च के प्रोग्राम बनते रहेंगे, बारहवां भौम आपको शरीर की चिन्ता रखेगा, यदि आप को जमीन जाइदाद का मसला है तो उस का समाधान होने का योग।

अक्टूबर: मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलडा भारी होना शुभ फल का संकेत है इस शुभ योग के प्रभाव से आप के सभी रुके हुये कार्य पूर्ण होंगे यदि आप को किसी प्रकार की कोई समस्या है उसका समाधान इस मास में होगा आपकी आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार होगा विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

नवम्बर: ग्रहों की स्थिति पर विचार करने से प्रतीत होता है कि यह मास सर्व साधारण रूप से ही व्यतीत होगा आप की आमदनी ज्यों की त्यों रहेगी, स्त्री के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, यदि आप नौकरी करते हैं तो अपने अफसर लोगां के साथ अनबन का योग, जो आपके लिये चिन्ता का कारण बनेगा।

दिसम्बर: गोचर फलित में दसवां बृहस्पति शुभ नहीं होता है परन्तु अनिष्ट कारक भी नहीं है आप का दसवें बृहस्पति होने से हर कार्य में संघर्ष का योग, परन्तु संघर्ष के साथ साथ सफलता का योग बनता है कम आमदनी पर भी सन्तुष्टि का योग, सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश सुनने का योग, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

जनवरी: अशुभ ग्रहों का पलाडा भारी होने के कारण यह महीना संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा आप की आमदनी पर थोड़ा बहुत प्रभाव पड़ सकता है जो आप के लिये चिन्ता का कारण बनेगा, गृहस्थ का माहोल भी आपके अनुकूल नहीं रहेगा शत्रु पक्ष आप पर हावी होने की कोशिश करेगा।

फरवरी: ग्रहों में कोई विशेष तबदीली न आने के कारण यह मास सर्व साधारण माहोल में ही गुज़रेगा नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आपके अनुकूल नहीं रहेगा जो आपके लिये चिन्ता का कारण बनेगा, यदि आप कारोबार करते हैं तो पैसा फंसनेका योग, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

मार्च: इस मास के गोचर चक्र के ग्रहों की स्थिति पर विचार

करने से मालूम होता है यह मास संघर्षमय ही रहेगा, बने बनाये कार्य बिगड़ सकते हैं यदि जातक में ग्रहों की स्थिति अच्छी होगी तथा किसी अच्छे ग्रह की दशा लच रही होगी तो किसी प्रकार की चिन्त का कोई योग नहीं है।

सिंह राशि का वर्षफल (Leo)

नक्षत्र	मघा				पूर्वा फाल्गुनी				उ फा0
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	दू	टे

वर्ष के आरम्भ पर आठवें भाव में चार ग्रहों सूर्य, चन्द्रमा, भौम तथा बृहस्पति का होना शुभफल का संकेत नहीं है गोचर फलित के अनुसार अपने बुरे कर्मों की फल प्राप्ति, शत्रुओं से झगडा, पाचन शक्ति में कमज़ोरी, राजभय, स्त्री को कष्ट, अधिक खर्च, अपमान का भय, खांसी आदि के रोग, झगडा विवाद और मानसिक क्लेश धन हानि, किसी महान कष्ट में ग्रसित हो जाने की संभावना रहती है परदेशगमन, पुरुषार्थ निष्फल, नेत्र रोग, भाइयों से अनबन, पाप में अधिक प्रवृति कई व्यसनों में फसने का योग इत्यादि गोचर फलित में लिखा है। गोचर चक्र के ग्रहों को बेधाष्टक वर्ग की कसोटी पर परखने से विदित होता है इस वर्ष के पहले दो मास शरीर सुख के लिये मध्यम है क्योंकि चार ग्रह एक साथ आपके आठवें भाव में गये हैं जो आप के शरीर को प्रभावित करेंगे यदि जातक में भी

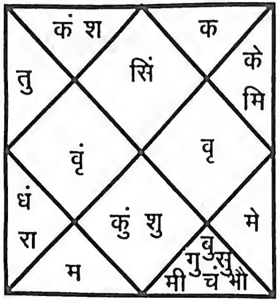

आप का मंगल कुछ खराब है तो आपको शरीर के विषय में सवधान रहना पडेगा। दो महीने के पश्चात् ग्रहों में परिवर्तन होने के कारण, बृहस्पति पूरे वर्ष के लिये आपके भाग्यस्थान में आता है जो शुभफल का सूचक है यह आपके भाग्योदय का वर्ष रहेगा आपकी आर्थिक स्थिति में भी विशेष सुधार होगा यदि आप वाहन, मकान इत्यादि विषय से चिन्तित हैं तो इस वर्ष में इस समस्या का समाधान अवश्य होगा गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का उत्तम योग। जून मास तक राहु पांचवे भाव में रहने से विद्याार्थियों के लिये संघर्ष। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये निम्न लिखित मन्त्र का उच्चारण अवश्य करें।

रोगान् अशेषान् अपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलान् अभीष्टान्।
त्वां आश्रितानां न विपत् नराणां
त्वां आश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।

सिंह राशि का मासिक फल

अप्रैल: अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने से यह महीना अशान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, अशुभ ग्रह आप के शरीर को प्रभावित कर सकते हैं प्राय: रक्त विकार इत्यादि का ायेग, सन्तान पक्ष से भी अशान्ति का योग, आप की आमदनी अच्छी ही रहेगी परन्तु खर्च का योग भी प्रबल।

मई: यह मास भी गत मास की तरह डांवा डोल माहोल में ही गुज़रेगा क्योंकि अशुभ ग्रहों की स्थिति में किसीप्रकार की तबदीली नहीं हुई है गृहस्थी होने पर घर के किसी सदस्य के शरीर की चिन्ता, नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा।

जून: मास के आरम्भ पर ग्रहों में विशेष परिवर्तन आंया है आपके भाग्यस्थान में बृहस्पति तथा शुक्र एक साथ बैठे हैं तथा तीन ग्रह दसवें भाव में गये हैं जो शुभ फल का इशारा है। यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा, आप की आमदनी भी सन्तोष जनक रहेगी।

जुलाई: ग्यारवें भाव का सूर्य, चन्द्रमा और शुक्र आपको हर प्रकार से लाभ में रखेगा आप जो भी कार्य करते हैं आपको आशा से अधिक लाभ, नौकरी पेशा होने पर रुकी हुई पदोन्नति का योग, घर पर कोई मांगलिक कार्य करने का प्रोग्राम बनेगा विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

अगस्त: ग्रहों की स्थिति को देखते हुये यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप की आमदनी में भी सुधार होगा, दरबार में आदर व मान का योग, कारोबारी होने पर आशा से अधिक लाभ, यदि आप अभी नौकरी की तलाश में हैं तो थोडा परिश्रम करनेसे यह मसला हल हो सकता है।

सितम्बर: पहले भाव का सूर्य शरीर सुख के लिये मध्यम माना जाता है परन्तु शेष ग्रहों के कारण इस का ज्यादा प्रभाव नहीं होगा, आप की आर्थिक स्थिती ज्यों की त्यों रहेगी परन्तु घर पर खर्च के बडे बडे प्रोग्रामों का प्लान बनता

रहेगा, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

अक्टूबर: मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने से अचानक चिन्ता का योग परन्तु नवां बृहस्पति होने से किसी प्रकार के अनिष्ट की कोई सम्भावना नहीं, बारवां भौम शरीर सुख का सूचक नहीं है आप की आमदनी पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं होगा।

नवम्बर: पहले भाव का भौम आपको शरीर से अस्वस्थ रख सकता है परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति से किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है। यदि आप को जमीन जाईदाद या वाहन इत्यादि का कोई मसला है वह इस मास में अवश्य हल होगा। विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

दिसम्बर: मास के आरम्भ पर तीन ग्रहों का शुभ होना तथा शेष ग्रहों का अशुभ स्थिति में होना चिन्ता का सूचक है परन्तु नवें भाव में बृहस्पति तथा साढसती समाप्त होने से यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा तथा हर प्रकार से लाभदायक रहेगा, बिगडे कार्य भी सुधर जायेंगे।

जनवरी: शुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह मास सुख और शान्ति में ही गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं वह अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, लग्न में भौम होने से स्वभाव में चिडचिडापन या क्रोध की मात्रा अधिक होगी, धार्मिक कार्यों की और रुचि बड़ेगी।

फरवरी: पांच ग्रहों का शुभ होना हर प्रकार से लाभदायक तथा शान्ति दायक, आय में वृद्धि का योग परन्तु आमदनी के साथ साथ खर्च का योग भी प्रबल है सन्तान सुख का उत्तम योग यदि आप अविवाहित हैं इस प्रकार की बात का समाधान हो सकता है।

मार्च: ग्रहों की स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास हर प्रकार से लाभदायक रहेगा प्रत्येक कार्य अच्छी प्रकार से होगा, घर पर सम्बन्धियों का आना जाना ज़ोरों पर रहेगा गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का उत्तम योग, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

कन्या राशि का वर्षफल (Virgo)

नक्षत्र	उ फाल्गुनी			हस्त				चित्रा	
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो

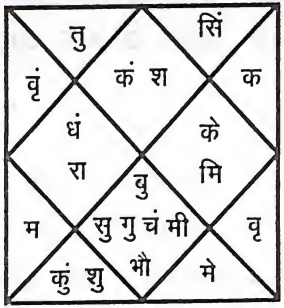

वर्षारम्भ में गोचर चक्र में सातवें भाव में पांच गृहों की युति शान्ति सूचक नहीं है परन्तु शनि देव पहले भाव में बैठ कर इन पांचों ग्रहों पर अपनी दृष्टि पात करता है जिस के कारण यह सभी ग्रह शिथिल पड़ गये हैं जिस के फलस्वरूप कन्या राशि वालों के लिये यह वर्ष संघर्षमय होने के सथ साथ लाभदायक भी रहेगा छठे भाव में शुक्र का होना शुभ नहीं है शत्रु पक्ष आप पर हावी होने की कोशिश करेगा यदि नौकरी करते है तो आपको अपने अफसर लोगों के साथ सावधानी से चलना होगा नहीं तो आप हानि में रहेंगे। यदि आपको विभागीय कोई पदोन्नति का प्रोग्राम है तो उस में अडचन आने का योग। यदि आपको ज़मीन जाईदाद इत्यादि का मसला है तो इस प्रकार के मसले आप हाथ में न ले तो आपके लिये ठीक रहेगा यदि जातक से किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो फिर क्रूर ग्रहों का बुरा प्रभाव आप पर नहीं होगा कन्या राशि वालों की साढसती भी चल रही है जो आपको दरबार तथा गृहस्थ पक्ष से चिन्तित रखेगा यदि आप अभी अविवाहित हैं तो इस वर्ष भी यह मसला लटकता रहेगा यदि आप नौकरी की तलाश में है तो थोड़ा सा परिश्रम करने से यह मसला अवश्य हल होगा। पांचवे भाव का स्वामी शनि होने से विद्यार्थियों में आलस्य की मात्रा बडेगी तथा पढाई की ओर प्रवृति कम रहेगी क्रूर ग्रहों के प्रभाव को कम करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें।

ज्वाला करालं अति उग्रम् अशेषा सुर सूदनम्
त्रिशूलं पातु नो भीते: भद्र कालि नमोस्तु ते।।

कन्या राशि का मासिक फल

अप्रैल: मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होना अशुभ फल का ही संकेत है जिस कारण अचानक परेशानी चलते हुये कार्यों में अडचन, दरबार की ओर से चिन्ता यदि आप किसी सामाजिक संगठन से सम्बन्ध रखते हैं तो उस में अपयश की प्राप्ति, विद्यार्थियों के लिये परेशानी।

मई: ग्रहों में विशेष परिवर्तन न होने के कारण यह मास भी दौड धूप तथा संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा आप नौकरी

करते हैं या कारोबार किसी भी कार्य में सन्तोष जनक सफलता का कोई योग नहीं है। विद्या प्राप्ति के लिये भी कठिन परिश्रम की आवश्यकता।

जून: मास के आरम्भ पर आठवें भाव का भौम तथा बृहस्पति शरीर सुख का सूचक नहीं है अत: आप शरीर के विषय में सावधान रहें यदि जातक में भौम खराब है तो चीर फाड का योग हो सकता है। गृहस्थ पक्ष की ओर से चिन्ता।

जुलाई: ग्रहों की स्थिति में कुछ सुधार होने से आप के दरबार में भी कुछ सुधार होगा अपने अफसर लोगों के साथ उठने बैठने का अवसर मिले जो आपके लिये लाभदायक रहेगा आपकी आमदनी में कुछ सुधार का योग, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

अगस्त: बृहस्पति देव अभी आपके आठवें भाव में ठहरा है जो आपकी पाचन शक्ति को प्रभावित कर सकता है ग्यारहवां सूर्य तथा शुक्र आप की आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार कर सकता है आपको आशा से अधिक लाभ होगा, खर्च के बड़े बड़े प्रोग्राम बनते रहेंगे।

सितम्बर: बारहवां सूर्य आठवां बृहस्पति आप के शरीर को अस्वस्थ रख सकता हैं विशेष तौर से आपकी पाचन शक्ति तथा सर अथवा आंखें प्रभावित हो सकती हैं। यदि आपको जातक में शनि की स्थिति ठीक है तो आप पर साढसती को प्रभाव कम पड़ेगा।

अक्टूबर: मास के आरम्भ पर ग्रहों में थोड़ा बहत सुधार होने से यह महीना शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, ग्यारहवें भाव की स्थिति दृढ होने से आपकी आमदनी में विशेष सुधार होगा परन्तु घर पर कोई मांगलिक कार्य का प्रोग्राम बनेगा जिसमं धन की बड़ी मात्रा खर्च हो सकती है।

नवम्बर: बारहवें भाव का भौम तथा आठवां बृहस्पति शरीर सुख के सूचक नहीं है प्राय: रक्त विकार अथवा चोट का भय कारोबारी होने पर हानि का योग अथवा लोगों के पास पैसा फस जाने का योग। यदि जातक में किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो आप पर ज़्यादा कुप्रभाव नहीं होगा।

दिसम्बर: मास के आरम्भ पर ग्रहों में थोडा सा परिवर्तन आने से आप जो भी कार्य करते हैं उसमें सफलता का योग परन्तु भौम देवता आपके बारवें भाव में बैठ कर आपको शरीर से चिन्तित रख सकता है ग्रहों में थोडी तबदीली से

आपकी आमदनी में सुधार होगा, और आपका कार्यक्रम अच्छी प्रकार से चले गा।

जनवरी: शुभाशुभ ग्रहों का एक जैसा होना शुभ फल का ही संकेत है आप जो भी कार्य करते हैं उसमें अच्छी प्रकार से सफलता तथा लाभ, तीसरे भाव में राहु होने से स्थान परिवर्तन का योग जो आपके लिये लाभदायक रहेगा, गृहस्थ सुख का योग।

फरवरी: ग्रहों में विशेष परिवर्तन न होने के कारण यह मास भी गत मास की तरह शान्ति के माहोल मं ही गुज़रेगा आपकी आमदनी भी ज्यों की त्यों रहेगी परन्तु खर्च के प्लान बड़ते जायेंगे। जो आपके लिये चिन्ता का कारण बनेगा।

मार्च: आठवां शुक्र, दसवां चन्द्रमा तथा छठे भाव का सूर्य आपके लिये हर प्रकार से लाभदायक रहेगा नौकरी पेशा होने पर दरबार में आदर व मान का योग, आप की आमदनी में वृद्धि का योग, परन्तु बारहवां भौम आप को शरीर के विषय में चिन्तित रखेगा।

जन्मदिन तिथि के अनुसार मनाऐं

तुला राशि का वर्षफल (Libra)

नक्षत्र	चित्रा		स्वाति				विशाखा		
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	3
नामाक्षर	रा	री	रु	रे	रो	ता	ति	तू	ते

वर्ष के आरम्भ पर छः ग्रहों का शुभ होना हर प्रकार से शुभ फल का संकेत है गोचर फलित के अनुसार पांचवे भाव में शुक्र तथा छठे भाव में सूर्य, चन्द्रमा, भौम, बुध के होने से अन्न तथा धन की प्राप्ति तथा पुत्रादियों से प्रेम, यश की वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, विभागीय परीक्षाओं में सफलता, आमोद प्रमोद की ओर प्रवृति, कार्य सिद्धि और सुख की प्राप्ति, अन्न वस्त्रादि का लाभ, शत्रुओं पर विजय, रोगों का नाश, राज्याधिकारियों से लाभ, शरीर स्वस्थ, अपने घर पर सुख पूर्वक रहने का अवसर तथा घर पर कोई ऐसा प्रोग्राम बनेगा जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे हैं, यदि आप किसी जाईदाद के खरीद फरोखत के चक्कर में हैं तो उस समस्या का समाधान इस वर्ष अवश्य होगा तथा आप के लिये हर प्रकार से

लाभदायक रहेगा। यदि आपको सन्तान पक्ष से किसी प्रकार की चिन्ता है वह नौकरी की हो या विवाह की, थोड़ा सा परिश्रम करने से यह समस्या भी अवश्य सम्पन्न होगी, कारोबारी होने पर यदि आप अपने कारोबार को बडावा देना चाहते हैं तो सावधानी से ऐसा

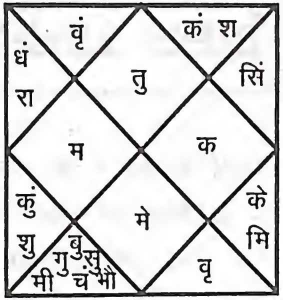

कदम उठायें। ऐसा न हो कि आपको लेने के देने पड़ें क्योंकि शनि देव आपके बारहवें भाव में बैठे हैं। विद्यास्थान में शुक्र होने से विद्या प्राप्ति का उत्तम योग यदि आप उच्च विद्या प्राप्ति के लिये कोई प्रोग्राम बना रहे हैं तो उसको अमली रूप दीजिये। ग्रह आपके अनूकूल हैं। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें।

देहि सौभाग्यं आरोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषोजहि।।

तुला राशि का मासिक फल

अप्रैल: मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने से यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आपकी आमदनी भी सन्तोष जनक रहेगी शरीर स्वस्थ रहने का योग, आपकी साढसती भी चल रही है जो अपना प्रभाव अवश्य डालेगी। विद्या प्राप्ति के लिये अच्छा समय।

मई: ग्रहों में विशेष परिवर्तन न होने के कारण यह मास भी गत मास की तरह शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, शरीर स्वस्थ, आमदनी तथा खर्च का पलडा एक जैसा ही होगा, सन्तान पख से कोई शुभ सन्देश का योग, समाज में हर समय आदर व मान का योग।

जून: अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होना शुभफल का संकेत नहीं है आठवां सूर्य तथा चन्द्रमा आपके शरीर को प्रभावित कर सकते हैं सातवें भाव का भौम आपको गृहस्थ पक्ष से चिन्तित रख सकता है खर्च का योग भी प्रबल रहेगा, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

जुलाई: मास के आरम्भ पर आठवें भाव का मंगल होने के कारण शरीर अस्वस्थ, रक्त विकार अथवा चोट का भय यदि जातक में मंगल की स्थिति ठीक है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है दरवार का माहोल आपके अनूकूल

रहेगा। आमदनी भी ठीक ही रहेगी।

अगस्त: शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने से यह मास हर प्रकार से शान्तिमय ही रहेगा। आप जो भी कार्य करते हैं वह अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, आपकी आमदनी भी खर्च के अनुसार ही रहेगी, गृहस्थ पक्ष की ओर से चिन्ता का योग।

सितम्बर: ग्रहों की स्थिति पर विचार करने से मालूम होता है कि यह मास शान्तिमय होते हुये भी संघर्षमय ही रहेगा क्योंकि ग्रहों की स्थिति ही ऐसी है। यदि आप कारोबार करते हैं तो इसको बडावा देने का कोई प्रोग्राम मत बनाओ ऐसा न हो कि आप को हानि का मूंह दूखना पड़े।

अक्टूबर: शुभ ग्रहों का प्रभाव अधिक होने से यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, आप की आमदनी भी संतोष जनक रहेगी परन्तु खर्च के प्रोग्राम भी बनते रहेंगे, दरबार में आदर व मान का योग, छोटी यात्रा का योग।

नवम्बर: दूसरे भाव का बुध तथा ग्यारहवें भाव का भौम आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ करेगा कारोबारी होने पर फसा हुआ पैसा वापस आने का योग, यदि आप को ज़मीन जाईदाद का कोई मसला है तो उसकी ओर थोडा सा ध्यान देने से वह हल हो सकता है।

दिसम्बर: मास के आरम्भ पर ग्रहों में थोड़ा सा परिवर्तन आने से भाई, बन्धों सगे सम्बन्धियों से मेल मिलाप का योग तथा लाभ की प्राप्ति, आप की आर्थिक स्थिति सन्तोष जनक रहेगी, गृहस्थ पक्ष की ओर से मानसिक चिन्ता का योग, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

जनवरी: ग्रहों की स्थिति पर विचार करने से विदित होता है कि आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोष जनक रहेगी, नौकरीपेशा होने पर विभागीय पदोन्नति का योग कारोबारी होने पर कारोबार में वृद्धि, गृहस्थ सुख के साथ साथ सन्तान सुख का योग, विद्या प्राप्ति के लिये अच्छा महीना।

फरवरी: शनि देव पहले भाव में बैठ कर आप के सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है यह आपके गृहस्थ पक्ष से चिन्तित रखेगा, परिवार के किसी सदस्य के शरीर अस्वस्थ होने की चिन्ता का योग, आपकी आमदनी ठीक रहेगी, तथा खर्च का योग भी प्रवल।

मार्च: तुला राशि वालों की साढसती चल रही है साढसती का प्रभाव प्राय: अच्छा नहीं रहता है इस कारण यह मास

भी सर्वसाधारण रूप में ही व्यतीत होगा, परन्तु आपकी आमदनी ठीक रहेगी गृहस्थ पक्ष की ओर से चिन्ता का योग, दरबार की ओर से चिन्ता।

वृश्चिक राशि का वर्षफल (Scorpio)

नक्षत्र	वि0	अनुराधा				ज्येष्ठा			
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	चु	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ

वर्ष के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों का शुभ होना कोई शुभ संकेत नहीं है पांचवें भाव में पांच ग्रहों की युति भी शुभ फल की सूचक नहीं गोचर फलित के अनुसार शारीरिक तथा मानसिक शक्ति में कमी धन हानि, शरीर कष्ट, राज्याधिकारियों से वाद विवाद चोट और भय, कार्यों में असफलता मानसिक अशान्ति, सन्तान पक्ष से चिन्ता, पाप कर्मों की ओर अधिक प्रवृति, मान हानि का योग, इत्यादि गोचर फलित के आधार से। शुभाशुभ ग्रहों को वेधाष्टकवर्ग की कसोटी पर परखने से प्रतीत होता है कि वृश्चिक राशि वालों के लिये यह वर्ष संघर्ष

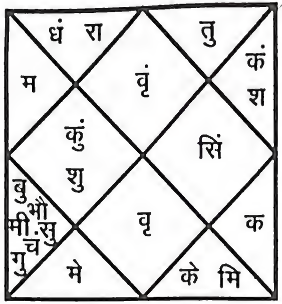

मय होते हुये भी हर प्रकार से सफलता तथा लाभ देने वाला वर्ष रहेगा, फलित ज्योतिष के आधार से बृहस्पति तथा शनि का शुभ होना हर प्रकार से शुभफल के सूचक है पांचवें भाव का बृहस्पति होने से सुख और आनन्द की प्राप्ति, हर कार्य में सफलता, पद की प्राप्ति कारोबार में उन्नति, किसी प्रकार का स्थिर लाभ, घर में मांगलिक उत्सव, पुत्र प्राप्ति का योग, कारोबारी होने पर लोहे, भूमि, मशीनरी पत्थर, सीमेन्ट आदि में लाभ पदोन्नति का योग, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो थोड़ा सा परिश्रम करने से आप की यह समस्या हल हो जायेगी, विद्यास्थान में बृहस्पति के साथ चार क्रूर ग्रहों का होना संघर्ष का ही सूचक है इस कारण कडे परिश्रम की आवश्यकता है क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का नित्य उच्चारण करें।

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्ति हारिणि।
त्रैलोक्य वासिनां ईड्ये लोकानां वरदा भव।।

वृश्चिक राशि का मासिक फल

अप्रैल: गोचर चक्र में बृहस्पति तथा शनि का शुभ होना हर प्रकार से लाभदायक है हर कार्य में सिद्धि, शरीर स्वस्थ, गृहस्थ की ओर से शान्ति, नौकरी पेशा होने पर दरबार में आदर व मान का योग तथा पदोन्नति का अवसर भी मिल सकता है। विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

मई: ग्रहों की स्थिति गत मास जैसी होने के कारण यह मास भी हर प्रकार से शान्तिमय माहोल में गुज़रेगा आपकी आमदनी तथा खर्च एक जैसा रहेगा, घर पर मेहमानों का आना जाना ज़ोरों पर रहेगा, गृहस्थ सुख तथा शरीर स्वस्थ।

जून: मास के आरम्भ पर ही ग्रहों में विशेष हेर फेर के कारण यह मास संघर्ष मय ही रहेगा, शारीरिक परेशानी का योग, सातवें भाव में तीन ग्रहों के कारण स्त्रीपक्ष की ओर से परेशानी यह मास अशान्ति का होते हुये भी आपकी आमदनी ठीक ही रहेगी।

जुलाई: अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह मास अशान्ति के माहोल में गुज़रेगा आठवां सूर्य चन्द्रमा आपके शरीर को अस्वस्थ रख सकता है। सातवां भौम स्त्री पक्ष से चिन्तित रख सकता है शनि देव आप के ग्यारहवें भाव में बैठकर आपकी आमदनी को सुदृढ़ रखेगा।

अगस्त: मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना हर प्रकार से शुभफल को दरशाते हैं आप जो भी कार्य करते हैं आपका कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा आप की आमदनी सन्तोष जनक रहेगी, शरीर अस्वस्थ रहेगा, चोट का भय, विद्या प्राप्ति के लिय परिश्रम की ज़रूरत।

सितम्बर: ग्रहों की स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास हर प्रकार से लाभदायक रहेगा, घर पर कोई मांगलिक कार्य करने का प्रोग्राम बन सकता है जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे थे, आठवां भौम आप को शरीर से चिन्तित रख सकता है।

अक्टूबर: शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आपकी आमदनी भी सन्तोष जनक रहेगी परन्तु, खर्च के बड़े बड़े प्लान बनते रहेंगे। शरीर स्वस्थ, गृहस्थ पक्ष से लाभ तथा शान्ति, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

नवम्बर: फलित ज्योतिष में शनि तथा बृहस्पति की स्थिति अच्छी होनी चाहिये परन्तु मास के आरम्भ पर केवल शनि देव अच्छी स्थिति में है तथा बृहस्पति अशुभ जिसके प्रभाव से सामाजिक स्थिति कुछ डावां डोल ही रहेगी परन्तु आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

दिसम्बर: मास के आरम्भ पर शनि देव ने अपना स्थान बदला है वह आपके बारहवें भाव में आया है जो फजूल खर्च का सूचक है अथवा कारोबारी होनेपर हानि का योग पहले भाव में राहु होने से अशान्ति का योग, शत्रु पक्ष आप पर हावी होने का प्रयत्न करेगा जो आपके लिये चिन्ता का कारण बनेगा।

जनवरी: ग्रहों में कोई विशेष परिवर्तन न होने के कारण यह मास भी गत मास के समान ही गुज़रेगा, बारहवां सूर्य आपके शरीर को प्रभावित कर सकता है। आपकी साढ़सती भी 15 नवम्बर से आरम्भ हुई, जो आपको आरम्भ में कुछ अशान्ति ही दे गी।

फरवरी: अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने के कारण यह मास सर्वसाधारण रूप में ही गुरेगा लग्न का राहु आपको हर समय चिन्तित रखेगा तथा दोड़धूप में ही आपको रखेगा, शत्रु पक्ष आप पर हावी होने का प्रयत्न करेगा जो आपके लिए परेशानी का कारण बनेगा। विद्यार्थियों के लिये सफलता देने वाला मास रहेगा।

मार्च: अशुभ ग्रहों ने गोचर चक्र को चारों ओर से जकड़ लिया है जिस कारण यह मास संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा शनि देव आप की आमदनी पर प्रभाव डालेगा आठवां चन्द्रमा होने से हर ओर से चिन्ता का योग, विद्यार्थियों क लिये सफलता का योग।

धनु राशि का वर्षफल (Sagittarius)

नक्षत्र	मूला				पूर्वाषाढा				उत्तरा0
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	ये	या	भा	भि	भु	फ	ढ	भ	भे

वर्ष के आरम्भ पर तीन ग्रह शुभ स्थिति में हैं तथा तीन ग्रह वेध में हैं वेध में गया हुआ ग्रह शुभ फल को देता है तो गोचर फलित के अनुसार चौथा बुध, तीसरा शुक्र तथा पहले

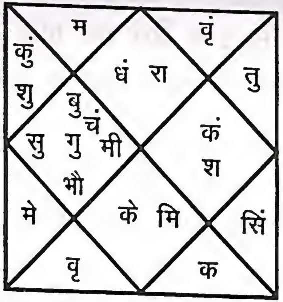

भाव का राहु होने से जमीन, जायदाद में वृद्धि, अच्छे विद्वानों तथा अच्छे पुरुषों तथा उच्च पदस्थ लोगों से मित्रता, घरेलू जीवन का सुख, मित्रों की वृद्धि, शत्रुओं की पराजय, धन की प्राप्ति, साहस में वृद्धि, मान सम्मान में वृद्धि, भाग्योदय राज्य की ओर से लाभ, बहिन भाइयों का सुख, धार्मिक प्रवृति में बढोतरी इत्यादि। फलित ज्योतिष के आधार से शुभग्रहों तथा वेध में गये हुये ग्रहों पर विचार करने से प्रतीत होता है कि धनु राशि वालों के लिये यह वर्ष हर प्रकार से लाभदायक ही रहेगा गोचर चक्र मं चौथे भाव में पांच ग्रहों की युति शुभफल को ही दरशाती है विशेष तौर से जायदाद सम्बन्धित यदि कोई समस्या है तो उस का समाधान अवश्य होगा और आपको लाभ में रखेगा यदि मकान, वाहन इत्यादि का कोई प्रोग्राम है इस वर्ष अवश्य इस का समाधान होगा, दसवें भाव में शनि का होना दरबार में हर समय आदर व मान का योग यदि आप नौकरी करते हैं तो पदोन्नति का योग। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो थोडा सा परिश्रम करने से नौकरी अवश्य मिलेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग लग्न का राहु तथा चौथा भौम आपको कभी कभी शरीर से अस्वस्थ रख सकते हैं परन्तु किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का वर्ष। शुभ ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का पाठ नित्य किया करें।

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चाप-ज्यानिः स्वनेन च।।

धनु राशि का मासिक फल

अप्रैल: शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास हर प्रकार से लाभदायक तथा शान्तिमय माहोल में ही गुज़रेगा, आप जो भी कार्य करते हैं वह अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, आपकी आमदनी भी ठीक ही रहेगी, शरीर स्वस्थ, गृहस्थ सुख का योग विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम।

मई: ग्रहों की स्थिति को देखते हुये प्रतीत होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा नौकरी पेशा

होने पर दरबार में आदर व मान का योग, कारोबारी होने पर हर प्रकार से लाभ जायदाद सम्बन्धित समसयाओं का समाधान होने का योग, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

जून: पांच ग्रहों का शुभ होना शुभफल का संकेत है तीन ग्रहों, सूर्य, बुध तथा चन्द्रमा का छठे भाव में होने से शत्रु पक्ष आप पर हावी नहीं हो सकता है जिस कारण आपको दरबार की ओर से लाभ तथा आदर व मान, आपकी आमदनी भी सन्तोष जनक रहेगी।

जुलाई: मास के आरम्भ पर तीन ग्रहों का सातवें भाव में होना शुभ नहीं है गृहस्थ पक्ष की ओर से चिनता, घर के किसी सदस्य के शरीर की चिन्ता, चलते कार्यों में रुकावट आने का योग परन्तु थोड़ा बहुत परिश्रम करने से सभी कार्यों में सफलता का योग।

अगस्त: शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने से यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा आपकी आमदनी ठीक रहेगी परन्तु खर्च के प्रोग्राम बनते रहेंगे जिस पर अच्छी खासी धन राशि खर्च होगी। विद्या प्राप्ति के लिये शुभ महीनां

सितम्बर: मास के आरम्भ पर बारहवें भाव का राहु होने से खर्च का अधिक योग, कारोबारी होने पर हानि की सम्भावना अथवा फजूल खर्च का योग, घर पर कोई मांगलिक कार्यक्रम का प्रोग्राम भी बन सकता है जिसकी प्रतीक्षा आप बहुत समय से करते थे।

अक्टूबर: मास के आरम्भ पर ग्रहों की अस्त व्यस्त स्थिति को देखते हुये यह मास संघर्षमय होते हुये भी हर प्रकार से लाभदायक ही रहेगा आठवें भाव का मंगल आपको शरीर के विषय में चिन्तित रख सकता है प्राय: रक्त विकार अथवा चोट का भय, विद्या प्राप्ति को उत्तम योग।

नवम्बर: बारहवें भाव का बुध, शुक्र तथा राहु आपके लिये अशान्ति लेकर ही आये हैं जिस कारण यह मास हर प्रकार से अशान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, यदि आप किसी सामाजिक संगठन से सम्बन्ध रखते हैं तो उस में अपमानित होने का योग।

दिसम्बर: मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना विशेष तौर से बृहस्पति का शुभस्थिति मेंहोना हर प्रकार से लाभदायक तथा शान्ति देने वाला महीना है आपकी आमदनी भी खर्च के अनुसार ही रहेगी, स्त्री पक्ष से शान्ति का योग, विद्यार्थियों

के लिये सफलता का महीना।

जनवरी: शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं नौकरी या व्यापार आप लाभ में ही रहेंगे दरबार में आदर व मान का योग, सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश का योग अथवा घर में नवजात शिशु के आने का योग।

फरवरी: बारहवें भाव का राहु आपको अशान्त वातावरण में रख सकता है धन का फजूल खर्च कारोबारी होने पर हानि का योग भी, गयारहवां शनि आप की आमदनी को सुदृढ़ रखेगा, यदि आप को सन्तान पक्ष से कोई चिन्ता है उस का समाधान अवश्य होगा।

मार्च: मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ होना शुभ फल को दर्शाता है इस शुभ योग के प्रभाव से आप के प्रत्येक कार्य में सफलता तथा लाभ गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से लाभ तथा शान्ति, घर पर कोई मांगलिक कार्य करने का प्रोग्राम बन सकता है।

मकर राशि का वर्षफल (Capricorn)

नक्षत्र	उत्तराषाढा			श्रावण				धनिष्ठा	
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी

गोचर चक्र में वर्ष के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना तथा एक ग्रह का वेध में होना शुभ फल का सूचक है गोचर फलित के अनुसार रोगों से मुक्ति, सज्जनों एवं उच्च राज्याधिकारियों से मेल मिलाप, पुत्रों तथा मित्रों से धन लाभ तथा सम्मान, आदर मान व प्रतिष्ठा की प्राप्ति, पदोन्नति का योग, शरीर स्वस्थ शत्रुओं पर विजय भाग्य में वृद्धि, साहस में वृद्धि, धातुओं से धन की प्राप्ति राज्य की ओर से सहायता, तर्क शक्ति में वृद्धि, धन की प्राप्ति, स्त्री सुख, सन्तान प्राप्ति का योग, विद्या में उन्नति, गायन वादन में रुचि शत्रुओं पर विजय इत्यादि गोचर चक्र के शुभाशुभ ग्रहों को वेधष्टक वर्ग की कसौटी पर परखने से विदित होता है कि यह वर्ष मकर राशि वालों के लिय हर प्रकार से लाभदायक

तथा हर क्षेत्र में सफलता देने वाला रहेगा यदि आप किसी सामाजिक अथवा सियासी संगठन से सम्बन्ध रखते हैं तो उस में हर प्रकार से आदर मान व प्रतिष्ठा का योग तथा लाभ की प्राप्ति यदि आप नौकरी करते हैं तो आप को दरबार में आदर व मान का

योग तथा पदोन्नति का अवसर जिस की आप बहुत दिन से प्रतीक्षा करते आये हैं। आपकी आमदनी भी सन्तोष जनक रहेगी, घर पर कोई मांगलिक कार्य का प्रोग्राम भी बन सकता है। विद्यार्थियों के लिये संघर्षमय वर्ष होते हुये भी सफलता देने वाला वर्ष रहेगा, क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें।

सर्वा बाधा विनि मुक्तो धन धान्य सुतान्वितः।
मनुष्यो मत् प्रसादेन भविष्यति न संशयः।

मकर राशि का मासिक फल

अप्रैल: शुभाशुभ ग्रहों के अनुसरा यह मास हर प्रकरा से लाभदायक तथा शान्ति मय रहेगा आपकी आमदनी भी सन्तोष जनक रहेगी, दरबार में आदर व मान का योग, भाई बन्धु तथा रिशतेदारों के साथसम्बन्ध सुदृढ़ रहेंगे, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख।

मई: शुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होनेसे यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, बारहवां राहु आपको मानसिक अशान्ति भी रख सकता है परन्तु किसी हानि का कोई योग नहीं है आप जो भी काम करते हैं वह अच्छी प्रकार से चलता रहेगा।

जून: मास के आरम्भ पर ग्रहों में थोड़ा सा बदलाव आने से यह महीना संघर्षमय होते हुये भी लाभदायक ही रहेगा यदि आप को ज़मीन जायदाद का कोई मसला है तो वह मसला इस मास में हल होगा अथवा हल होने के आसार दिखाई देंगे। विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

जुलाई: शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से प्रतीत होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा राहु दवे का ग्यारहवें भाव में आना आमदनी में वृद्धि का सूचक है यदि आप को सन्तान पक्ष से कोई परेशांनी है तो

उसका समाधान इस मास में अवश्य होगा।

अगस्त: छठे भाव का भौम, आठवां बुध, दसवां चन्द्रमा गोचर फलित के अनुसार हर प्रकार से शुभ फल तथा लाभ के सूचक है इस शुभ योग के प्रभाव से आपके रुके हुये सभी कार्य लाभ सहित सम्पूर्ण होंगे, दरबार में आदर व मान का योग, शरीर स्वस्थ, गृहस्थ सुख का योग, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

सितम्बर: आठवें भाव का सूर्य आपको शरीर से अस्वस्थ रख सकता है प्राय: सर दर्द अथवा आंखों में तकलीफ, यदि जातक में सूर्य अच्छी स्थिति में है तो किसी प्रकार का भय नहीं, शत्रु पक्ष आप पर हावी होने का प्रयत्न करेगा परन्तु हर प्रकार से असफल रहेगा, आपकी आमदनी ठीक रहेगी।

अक्टूबर: ग्यारहवें भाव का चन्द्रमा तथा राहु आपकी आर्थिक स्थिति में बदलाव ला सकता है जिस से आपके सभी मसले हल हो सकते हैं घर पर कोई मांगलिक कार्य का आयोजन भी हो सकता है या आयोजित करने का प्रोग्राम बन सकता है। शरीर स्वस्थ रहने का योग।

नवम्बर: मास के आरम्भ पर आठवां भौम आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकता है प्राय: रक्त विकार अथवा चोट का भय, यदि जातक में भौम की स्थिति अच्छी है तो किसी प्रकार का भय नहीं है नहीं तो आपको शरीर के विषय में सावधान रहने की ज़रूरत है। यदि आपको वाहन इत्यादि लाने का प्रोग्राम है तो उसको अमली रूप दीजिये।

दिसम्बर: आठवें भाव के मंगल में किसी प्रकार का बदलाव न होने के कारण शरीर अस्वस्थ रहने का योग परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को ध्यान में रखते हुये किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है। आपकी आमदनी अच्छी रहेगी परन्तु साथ ही खर्च के प्रोग्राम बनते रहेंगे।

जनवरी: शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने से यह मास हरप्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, आप की आमदनी तथा खर्च एक जैसा रहेगा, नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहोल आपके अनुकूल रहेगा, दरबार में हर समय आदर व मान का योग।

फरवरी: ग्रहों की अस्त व्यस्थ स्थिति के कारण यह मास संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा, चलते हुये कार्यों में अढ़चन आने की सम्भावना, परन्तु रुकावट आने पर भी अन्तत:

सफलता का योग, आठवें मंगल के कारण शरीर अस्वस्थ, गृहस्थ पक्ष की ओर से चिन्ता।

मार्च: ग्रहों में खास बदलाव न आने के कारण यह मास भी गत मास की तरह संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा, आपकी आमदनी ज्यों की त्यों रहेगी खर्च में वृद्धि का योग, यदि आप को सन्तान पक्ष से कोई ।चिन्ता है इस मास में उसका समाधान होना असम्भव ही है।

कुम्भ राशि का वर्षफल (Aquarius)

नक्षत्र	धनिष्ठा		शतभिषजि				पू0 भाद्रपदा		
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	3
नामाक्षर	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा

वर्षारम्भ पर तीन ग्रहों का शुभ होना तथा तीन ग्रहों का वेध में होना हर प्रकार से शुभ फल का सूचक है क्योंकि अशुभ ग्रह का वेध में होना भी शुभफल कारक ही होता है गोचर फलित के अनुसार पहला शुक्र होने से सुख और धन की प्राप्ति, शत्रु का नाश विवाह अथवा पुत्र जन्म का योग, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग, हर प्रकार के आमोद प्रमोद और वैभव-विलास की प्राप्ति, सत्य की ओर झुकाव, व्यापार में वृद्धि, जलीय पदार्थों, सुगन्धित द्रव्यों तथा फैन्सी गुडस से लाभ, दूसरा बुध तथा बृहस्पति के होने से आनन्द की प्राप्ति, धन आभूषणों की प्राप्ति भाषण शक्ति में वृद्धि और लाभ, सम्बन्धियों के साथदृढ़ सम्बन्ध, कुटुम्ब के सुख में वृद्धि शत्रुओं के विरुद्ध कार्य करने की आवश्यकता, हर तरह से आदर व मान का योग, परोपकार तथा दानादि की ओर प्रवृति बड़ेगी इत्यादि शुभाशुभ ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग की कसौटी पर परखने से मालूम होता है कि कुम्भ राशि वालों के लिये यह वर्ष हर प्रकार से लाभदायक तथा शान्ति मय ही रहेगा यदि आप कारोबार करना चाहते हैं तो आपको 'कासमिरिटकस' में आशा से अधिकलाभ मिलेगा यदि आप उच्चविद्या प्राप्ति के लिये कहीं जाना चाहते हैं तो उसको अमली रूप दीजिये ग्रह आप के अनुकूल हैं, नौकरी पेशा होने पर दरबार मं आदर

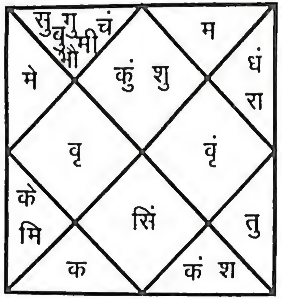

व मान का योग तथा विभागीय पदोन्नति का योग, क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य किया करें।

इन्द्रियाणां अधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्ति देव्यै नमो नमः।।

कुम्भ राशि का मासिक फल

अप्रैल: शुभाशुभ ग्रहां की स्थिति को देखते हुये यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, आपकी आमदनी सन्तोष जनक रहेगी, दरबार में आदर व मान का योग, कारोबारी होने पर कारोबार में वृद्धि का योग और लाभ, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख।

मई: मास के आरम्भ पर शुक्र का दूसरे भाव में जाना तथा सूर्य का तीसरे भाव में जाना हर प्रकार से लाभदेने का सूचक है आपकी आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार होने का योग, सगे सम्बन्धियों के साथ दृढ़ सम्बन्ध होंगे, शरीर स्वस्थ, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

जून: अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने पर भी यह महीना हर प्रकार से लाभदायक तथा शान्ति दायक रहेगा आप जो भी कार्य करते हैं आपका कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, गृहस्थ पक्ष से हर प्रकार से सुख और शान्ति का योग विद्या प्राप्ति के लिये अच्छा महीना।

जुलाई: मास के आरम्भ पर चौथे भाव का भौम आप के शरीर को थोड़ा बहुत प्रभावित कर सकता है यदि जातक से भौम की स्थिति अच्छी है तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है यदि आप को सन्तान पक्ष से किसी प्रकार की चिन्ता है तो उस का समाधान इस मास में हो सकता है।

अगस्त: इस मास की गृहस्थिति के कारण यहमास थोडा बहुत संघर्षमय ही रहेगा परन्तु संघर्षमय होते हुये भी हर प्रकार से लाभदायक तथा शान्ति दायक रहेगा। नौकरी पेशा होने पर अपने अफसर लोगों क साथ अन बन होने का योग जो आपके लिये चिन्ता का कारण बनेगा।

सितम्बर: ग्रहों में विशेष बदलाव न आने के कारण यह मास भी गतमास की तरह थोड़ा बहुत संघर्षमय ही रहेगा परन्तु किसी प्रकार की हानि का कोई योग नहीं, सातवें भाव का

सूर्य गृहस्थ पक्ष की ओर से आपको चिन्तित रख सकता है विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला मास।

अक्टूबर: शुभ ग्रहों का पलडा भारी होने के कारण यह मास हर प्रकार से लाभदयक ही रहेगा आप जो भी कार्य करते हैं आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, यदि आप अपने काम को बडाना चाहते हैं तो सोच समझ कर यह कदम उठायें घर पर कोई मांगलिक कार्य करने का प्रोग्राम बनेगा।

नवम्बर: सातवां भौम तथा बारहवां सूर्य आप को शरीर से अस्वस्थ रख सकते हैं प्राय: रक्तविकार अथवा सर दर्द का योग, दसवें भाव का बुध तथा राहु आपको दरबार मं हर प्राकर से लाभ देगा, दरबार में आदर व मान का योग, पदोन्नति का योग भी बनता है। विद्यार्थियों के लिये शुभ मास।

दिसम्बर: मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ होना हर प्रकार से शुभ फल को दर्शाता है। विशेष तौर से आप के सामाजिक जीवन में एक बदलाव जैसा आयेगा यदि आप किसी सामाजिक अथवा सियासी संगठन से सम्बन्ध रखते हैं तो आपको आशा से अधिक लाभ तथा मान व प्रतिष्ठा का योग।

जनवरी: शुभ ग्रहों पर विचार करने से विदित होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्ति तथा लाभ देने वाला रहेगा नौकरी पेशा होने पर दरबार में आदर व मान का योग, विभागीय पदोन्नति का योग, यदि आप कारोबार करते हैं तो आशा से अधिक लाभ, गृहस्थ सुख का योग, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

फरवरी: शुभाशुभ ग्रहों के अनुसार यह महीना कुछ डांवाडोल स्थिति में ही गुज़रेगा अकस्मात अशान्ति का योग, शरीर अस्वस्थ रहने का योग परन्तु किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं, यदि आप किसी नौकरी इत्यादि की तलाश में हैं तो ऐसे कार्यों की सफलता इस मास में असम्भव ही है।

मार्च: मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोष जनक रहेगी परन्तु खर्च के लम्बे लम्बे प्रोग्राम बनते रहेंगे जिस पर अच्छी खासी धन राशि खर्च होगी।

मीन राशि का वर्षफल (Pisces)

वर्ष के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों का शुभ होना तथा दो

नक्षत्र	पू0	उत्तराभाद्रपदा				रेवती			
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	टी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	च	ची

ग्रहों का वेध में होना विशेष लाभ सुख अथवा शान्ति का सूचक नहीं है मीन राशि वालों के लिये यह वर्ष संघर्ष का वर्ष ही रहेगा यदि जातक में किसी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो सिकी प्रकार की चिन्ता का योग नहीं है। गोचर फलित के अनुसर पहला चन्द्रमा होने से सुख और आनन्द की प्राप्ति, रोगों से मुक्ति, उत्तम भोजन, गृहस्थ सुख, धन प्राप्ति, बारहवां शुक्र होने से धन कीं वृद्धि, आदर व मान में वृद्धि सभी कार्यों में सफलता, मित्रों का पूर्ण सहयोग इत्यादि अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने के कारण मीन राशि वालों के लिये यह वर्ष संघर्ष मय होने पर भी अन्ततः लाभदायक ही रहेगा शनि देव आपके सातवें भाव में बैठ कर आपके भाग्यस्थान, लग्न तथा चौथे भाव को देख रहा है शनि को फलित ज्योतिष के अनुसार मनहूस माना जाता है इस कारण शनि देव आप को शान्ति का सांस लेने नहीं देगा यदि जातक में गृहों की स्थिति अचछी है तथा किसी अच्छे गृह की दशा चल रही है तो आप पर शनि देव का ज़्यादा प्रभाव नहीं होगा यदि किसी क्रूर गृह की दशा चल रही है तो यह वर्ष आपके लिये अग्नि परीक्षा का वर्ष होगा, क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें:

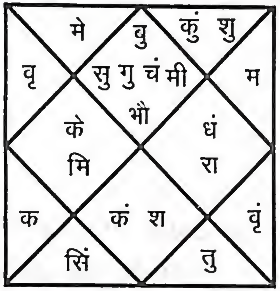

सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।।

मीन राशि का मासिक फल

अप्रैलः अशुभ ग्रहों का प्रभत्व होने से यह मास संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा परन्तु किसी विशेष हानि का कोई योग नहीं है। आप जो भी कार्य करते हैं उस में रुकावट आने का योग परन्तु किसी प्रकार के हानि का योग नहीं है।

मईः ग्रहों की स्थिति में किसी प्रकार का बदलाव न आने के कारण यह मास भी दौड़धूप के माहोल मं ही गुज़रेगा,

आप जो भी कार्य करते हैं उसमें किसी भी प्रकार की अडचन आ सकती है जो आपके लिये चिन्ता का कारण बन सकती है।

जून: मास के आरभ पर छः ग्रहों का अशुभ होना शुभफल का संकेत है इस योग के प्रभाव से यह महीना हर प्रकारसे लाभदयक तथा शान्ति देने वाला रहेगा, रुके हुये कार्य स्वयम ही सिद्ध हो जायेंगे, आर्थिक स्थिति में आशा से अधिक सुधार होगा, गृहस्थ सुख का योग।

जुलाई: ग्रहों की स्थिति को देखते हुये यह महीना भी अच्छी प्रकार से गुज़रेगा आप जो भी कार्य करते हैं आप को हर कार्य में सफलता तथा लाभ, गृहस्थ पक्ष से शान्ति का योग, छोटी मोटी यात्रा का योग जो आपके लिये लाभदयाक रहेगी।

अगस्त: चौथा भौम तथा आठवां चन्द्रमा आप को शरीर से चिन्तित रखेंगे यदि आप को जातक से भी भौम खराब है तो आपको शरीर के विषय में सावधान रहना होगा यदि ऐसा नहीं तो किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है। विद्यार्थियों के सफलता का महीना।

सितम्बर: सातवें भाव का शुक्र, शनि तथा बुध आप को गृहस्थ की ओर से चिन्तित रख सकता है यदि आप अविवाहित हैं तो इस महीने में विवाह की बात चलानी फजूल है आप की आर्थिक स्थिति में किसी प्रकार का बदलाव नहीं आयेगा परन्तु खर्च के बडे बडे प्लान बनते रहेंगे।

अक्टूबर: शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आपकी आमदनी भी ज्यों की त्यों रहेगी, पर खर्च की मात्रा में वृद्धि होगी परन्तु किसी से मांगने की नौबत नहीं आयेगी।

नवम्बर: मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति बहुत अच्छी होने के कारण यह महीना हर प्रकार से लाभदायक रहेगा, कारोबारी होने पर आशा से अधिक लाभ, घर पर कोई कार्यक्रम बन सकता है जिस की प्रतीक्षा आप बहुत दिनों ले कर रहे थे दरबार मं अकस्मात पदोन्नति का योग।

दिसम्बर: मीन राशिवालों को वर्ष भर बृहस्पति दूसरे भाव में बैठा है जिस के कारण वर्ष भर आर्थिक स्थिति सन्तोष जनक रहेगी तथा सभी कार्य अच्छी प्रकार से सम्पन्न होंगे। सन्तान पक्ष से कोई शुभ समाचार का योग। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

जनवरी: शुभ ग्रहों को देखे हुये यह महीना हर प्रकार से शान्तिदायक है, आप जो भी कार्य करते हैं उसमें आशा से अधिक सफलता यदि आपको किसी समाजिक संगठन के साथ सम्बन्ध है तो हर समय आदर व मान का योग।

फरवरी: ग्रहों की स्थिति पर विचार करने से मूलम होता है कि इस मास में हर प्रकार से शान्ति तथा लाभ का योग आपकी आर्थिक स्थिति खर्च के अनुसार ही रहेगी, खर्च का प्रोग्राम भी बडता रहेगा, गृहस्थ पक्ष से शान्ति।

मार्च: बारवां सूर्य आप को शरीर से चिन्तित रख सकता है प्राय: सर दर्द अथवा आंखों में दर्द रह सकता है यदि जातक में सूर्य की स्थिति अच्छी है तो किसी प्रकार के हानी की कोई सम्भावना नहीं हैं शेष आप का कार्य अच्छी प्रकार से चलता रहेगा।

साढ-सती

सिंह **कन्या** **तुला** **वृश्चिक**

सिंह: राशि वालों की साढसती 15 नवम्बर 2011 को समाप्त होगी, निकलते निकलते शनि देव आप की आर्थिक स्थिति तथा शरीर को प्रभावित कर सकता है यदि जातक में शनि की स्थिति अच्छी है तो निकलते निकलते आपके लिये शनि देव लाभदायक रहेगा।

कन्या: कन्या राशिवालों की साढसती 1 नवम्बर 2006 को आरम्भ हुई है तथा 2 नवम्बर 2014 को निकलेगी जब शनि देव वृश्चिकं राशि में आयेगा, शनि देव आपके तीसरे सातवें तथा दसवें भाव को देखता है फलित ज्योतिष के अनुसार शनि देव जिस को अपना दृष्टिपात करता है उसको हानि पहुंचा सकता है क्योंकि शनि की नज़र को मनहूस माना जाता है साढसती का प्रभाव प्राय: खराब ही होता है परन्तु यदि जातक में शनि की स्थिति अच्छी होगी तो साढसती सोने पर सुहाग का काम करती है। शनि देव आपको सगे सम्वन्धियों से दूर रख सकता है स्त्री पक्ष से चिन्तित रख सकता है तथा दरबार की ओर से अकस्मात् चिन्तित रख सकता है। शनि के क्रुर प्रभाव को कम करने के लिय हर शनिवार का तहर बना कर पक्षियां को डालें तथा इस मन्त्र का उच्चारण नित्य करें।

ॐ क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराय नम:।

तुला: तुला राशि वालों की साढसती 1 सितम्ब 2009 को आरम्भ हुई है तथा 26 नवम्बर 2017 को समाप्त होगी। शनि आपके बारहवें भाव में बैठ कर आप के दूसरे भाव छटे भाव तथा नवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा शनि देव की नज़र खराब होने से आपकी आर्थिक स्थिति तथा हाथ में लिये हुये प्रत्येक कार्य को प्रभावित कर सकती है जो आपकी अशान्ति का कारण बनेगा आपकी गृहस्थी भी कभी कभी प्रभावित हो सकती है। शनि देव को शान्त करने के लिये आप नित्य इस मन्त्र का उच्चारण करें।

ओ३म् शन्नो देवी: आभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शं यो: अभि: स्रवन्तु न:।

वृश्चिक: वृश्चिक राशि वलों की साढसती 15 नवम्बर 2011 को आरम्भ होगी। शनि देव आप के पहले भाव, पांचवे भाव तथा आठवें भाव को देख रहा है फलित ज्योतिष के अनुसार शनि देव जिस भाव में बैठता है उस भाव को वह वृद्धि करता है तथा जिस भाव को देखता है हानि पहुंचाता है शनि आप के ग्यारहवें भाव में बैठा है जो आप की आर्थिक स्थिति को सुदृढ करेगा अपको आशा से अधिक लाभ होगा परन्तु यह आपको शरीर तथा सन्तान पक्ष से चिन्तित रख सकता है शनि देव को शान्त करने के लिए नित्य इस मन्त्र का उच्चारण करें तथा शनिवार को बैष्णव रहें:

ओ३म् ह्रीं हिरण्यगर्भाय अव्यक्तरूपिणे नम:।।

ढय्या

मिथुन **कर्कट** **कुम्भ** **मीन**

मिथुन: मिथुन राशि वालों की ढय्या 15 नवम्बर 2011 को समाप्त होगी। शनि के प्रभाव से आपको जायदाद संम्बन्धित यदि कोई मसला है वह लटकता ही रहेगा शनि देव आप के दरबार को भी देख रहा है जो आपके लिये चिन्ता का कारण है, दरबार में अपने अफसर लोगों के साथ अनबन का योग।

कर्कट: कर्कट राशि वालों की ढय्या 16 नवम्बर 2011 को आरम्भ होगी यदि जातक में शनि की स्थिति अच्छी है तो ढय्या का समय आपके लिये स्वर्णिम समय होगा यदि ऐसा नहीं तो आप को शरीर के विषय में सावधान रहना होगा, तथा नौकरी

पेशा होने पर आप पर झूठा इलज़ाम भी लग सकता है।
कुम्भ: कुम्भ राशि वालों की ढय्या 15 नवम्बर 2011 को समाप्त होगी शनि देव आपकी आर्थिक स्थिति पर प्रभाव डाल सकता है यह आपको सन्तान पक्ष से भी चिन्तित रख सकता है, विद्यार्थी वर्ग के लिये भी यह समय संघर्ष का ही समय रहेगा।

मीन: मीन राशि वालों की ढय्या 16 नवम्बर 2011 को आरम्भ होगी, शनि का प्रभाव प्राय: खराव ही होता है शनि देव आपके दसवें, दूसरे तथा पांचवे भाव को देख रहा है शनि की नज़र मनहूस मानी जाती है इस काण दरबार की ओर से चिन्ता, सन्तान पक्ष से चिन्ता का योग।

यज्ञोपवीत तथा विवाह मुहूर्त
अप्रैल – मई 2012 के लिए

साथ रटुन

(यज्ञोपवीत तथा विवाह के लिये वस्त्र, मसाला, अग्निवत्र लिवुन, धरनावय मंजलागज्य, मस मुचरुन इत्यादि)

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 मार्च तृतीया रविवार
6-7 शां तक
28 मार्च पंचमी बुधवार
29 मार्च षष्ठी गुरुवार
1 अप्रैल नवमी रविवार
2 अप्रैल दशमी सोमवार
9-34 दिन तक
6 अप्रैल पूर्णिमा शुक्रवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

8 अप्रैल द्वितीया रविवार
9 अप्रैल तृतीया सोमवार
2-3 दिन तक
11 अप्रैल पंचमी बुधवार
12-23 दिन तक
15 अप्रैल दशमी रविवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल पंचमी गुरुवार
12-35 दिन तक
27 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
2-55 दिन से
29 अप्रैल अष्टमी रविवार
5-41 दिन तक

यज्ञोपवीत मुहूर्त 2012 के लिये

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 मार्च तृतीया रविवार
8-55 दिन से
10-49 दिन तक (वृ)

28 मार्च पंचमी बुधवार
12-52 दिन से
2 बजे दिन तक (क)

29 मार्च षष्ठी गुरुवार
12-48 दिन से
2 बजे दिन तक (क)

2 अप्रैल दशमी सोमवार
8-24 दिन से
9-34 दिन तक (वृ)

वैशाख कृष्ण पक्ष

8 अप्रैल द्वितीया रविवार
8 बजे दिन से
9-54 दिन तक (वृ)

11 अप्रैल पंचमी बुधवार
7-49 प्रातः से
9-42 दिन तक (वृ)

वैशाख शुक्ल पक्ष

26 अप्रैल पंचमी गुरुवार
6-49 प्रातः से
8-43 दिन तक (वृ)

विवाह मुहूर्त 2012 के लिये

वैशाख कृष्ण पक्ष

14 अप्रैल नवमी शनिवार
9-30दिन से
10-37 दिन तक (मि)

15 अप्रैल दशमी रविवार
11-41 दिन से
2-5 दिन तक (क)
11-11 रात से
1-34 रात तक (ध)

16 अप्रैल एकादशी सोमवार
11-37 दिन से
12-27 दिन तक (क)

18 अप्रैल द्वादशी बुधवार
11-19 रात से
1-22 रात तक (ध)

19 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
11-25 दिन से
1-49 दिन तक (क)
11-16 रात से
1-18 रात तक (ध)

20 अप्रैल चतुर्दशी शुक्रवार
11-22 दिन से
1-45 दिन तक (क)

वैशाख शुक्ल पक्ष

25 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
11-2 दिन से
1-26 नि तक (क)
11-52 रात से
12-54 रात तक (ध)

26 अप्रैल पंचमी गुरुवार
10-58 दिन से
12-35 दिन तक (क)

1 मई से गुरु अस्त

कश्मीर के महात्माओं के श्राद्ध अथवा यज्ञ

नोट : नीचे लिखे गए श्राद्धों में 'दि' 'प्र' के आधार से एक दिन की तिथि आगे पीछे भी हो सकती है स्वयं ठीक कीजिए।

श्री चण्डी ग्राम महात्मा	चैत्र शुक्ल पक्ष सप्तमी	10 अप्रैल
स्वा भाई टोठ जी	चैत्र शुक्ल पक्ष दशमी	13 अप्रैल
पं. मथुरादास (क्यलम)	चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी	14 अप्रैल
नन्दकीश्वर महाराज (पुरखू)	चैत्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	18 अप्रैल
स्वा बोनकाक	वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्थी	21 अप्रैल
मंगल राज भैरव	वैशाख कृष्ण पक्ष पंचमी	22 अप्रैल
ऋीष पीर श्राद्ध	वैशाख कृष्ण पक्ष षष्ठी	23 अप्रैल
परमदयाल पृथ्वी नाथ	वैशाख कृष्ण पक्ष अष्टमी	25 अप्रैल
स्वा महादेव काक भान	वैशाख कृष्ण पक्ष अष्टमी	25 अप्रैल
श्री सूरदास निर्वाण दिवस	वैशाख कृष्ण पक्ष दशमी	27 अप्रैल
स्वा महेश्वरनाथ मल्ला	वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	2 मई
श्री शकर साहिब	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रति	4 मई
स्वा शम्भु नाथ	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	6 मई
योगीराज धर्मदत्त जी	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	6 मई
स्वा मोती लाल जी	वैशाख शुक्ल पक्ष अष्टमी	11 मई
श्री सर्वानन्दजी गुसानी गुण्ड	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	13 मई
स्वा. दीनानाथ कारिहामा	वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	16 मई
श्री काक जी	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वितीया	19 मई
बादशाह कलन्द्र	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चतुर्थी	21 मई
स्वा शंकर जू राज़दान	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष नवमी	26 मई
स्वामी नाथ जी	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	30 मई
भगवान गोपी नाथ	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष द्वितीया	3 जून
श्री वामन जी	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीया	18 जून
स्वामी नन्दलाल जी	आषाढ कृष्ण पक्ष सप्तमी	22 जून
स्वमी किन टोठ (बडगाम)	आषाढ कृष्ण पक्ष सप्तमी	22 जून
श्री गोबिन्द कौल जलाली	आषाढ कृष्ण पक्ष सप्तमी	22 जून
श्री मोहन लाल ठुस्सु कोफूर	आषाढ कृष्ण पक्ष दशमी	26 जून
श्री चन्द्र काक बचरू	आषाढ शुक्ल पक्ष तृतीया	4 जुलाई
स्वा श्री विभीषण जी	आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी	6 जुलाई
श्री टी. एन. भान	आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी	6 जुलाई
स्वामी आनन्द जी विलगाम	आषाढ शुक्ल पक्ष सप्तमी	7 जुलाई
श्री कण्ठ काक वांचू	आषाढ शुक्ल पक्ष दशमी	10 जुलाई

स्वा० पुष्कर नाथ	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	12	जुलाई
स्वामी विद्याधर जी	आषाढ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	13	जुलाई
स्वामी लाल जी	श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया	18	जुलाई
श्री नन्द काक शर्मा (वेरीनाग)	श्रावण कृष्ण पक्ष एकादशी	26	जुलाई
ग्रट बब दिवस	श्रावण कृष्ण पक्ष द्वादशी	27	जुलाई
स्वामी कशकाक (मनिगाम)	श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	4	अगस्त
जानकीनाथ साहिब दर	श्रावण शुक्ल पक्ष नवमी	7	अगस्त
ज्यो० श्री कण्ठ शर्मा (बिज)	श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी	10	अगस्त
स्वामी गोविन्द कौल	श्रावण शुक्ल पक्ष चर्तुदशी	12	अगस्त
स्वामी गण काक	श्रावण शुक्ल पक्ष पुर्णिमा	13	अगस्त
पं० प्रेमनाथ शास्त्री	भाद्र कृष्ण पक्ष द्वितीया	15	अगस्त
स्वा. सर्वानन्द सहीपोरा	भाद्र कृष्ण पक्ष चतुदर्शी	28	अगस्त
स्वामी परमानन्द जी	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	1	सितम्बर
माता उमादेवी	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	5	सितम्बर
स्वामी निरंजनाथ कौल	भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी	8	सितम्बर
स्वामी काशीनाथ बब	भाद्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	9	सितम्बर
श्री मान भट्ट (फतेहपुरी)	भाद्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	10	सितम्बर
ब्रह्मचारी श्री कण्ठ कौल (जलाली) (फतेहकदल श्रीनगर)	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुदर्शी	11	सितम्बर
श्री शंकर साहब	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रति	13	सितम्बर
स्वामी लक्ष्मण जी	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	16	सितम्बर
स्वामी क्राल बब	आश्विन कृष्ण पक्ष चर्तुदशी	26	सितम्बर
स्वामी हरिकृष्ण	आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया	29	सितम्बर
स्वा द्वारिका नाथ पण्डित (हितकारी आश्रम नगरोटा)	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	5	अक्टूबर
श्री शिव जी भागाती	आश्विन शुक्ल पक्ष द्वादशी	8	अक्टूबर
श्री नन्दलाल साहिब लाले बाग	आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	9	अक्टूबर
श्री परमहंस कृष्णानन्द संतोष	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीया	14	अक्टूबर
श्री सिद्ध बब	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीया	14	अक्टूबर
ज्योतिषी आफताभ शर्मा	कार्तिक कृष्ण पक्ष तृतीया	15	अक्टूबर
स्वा गाश कौल जलाली	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	18	अक्टूबर
स्वा० विदलाल (गुशी)	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	18	अक्टूबर
श्री मधुसूदन राजदान	कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी	1	नवम्बर
श्री महादेव काक रत्नीपोरा	कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी	3	नवम्बर
स्वा रामानन्द जी महाराज	कार्तिक शुक्ल पक्ष दशमी	5	नवम्बर
स्वामी आत्माराम	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी	6	नवम्बर
स्वा. राम धिरि महाराज	मार्ग कृष्ण पक्ष चतुर्थी	15	नवम्बर
स्वामी काशी बाबा हुगामा	मार्ग कृष्ण पक्ष पंचमी	16	नवम्बर
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती	मार्ग कृष्ण पक्ष षष्ठी	17	नवम्बर
स्वामी सर्वानन्द जी	मार्ग कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	23	नवम्बर

स्वा स्वयमानन्दजी (मुट्ठी)	मार्ग कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	23 नवम्बर
स्वामी जीवन साहब	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	26 नवम्बर
स्वामी कृष्ण जू राजदान	मार्ग शुक्ल पक्ष अष्टमी	2 दिसम्बर
स्वा भट मुत अम्बाला	मार्ग शुकल पक्ष नवमी	3 दिसम्बर
स्वा विद्यांधर जी रत्नीपोरा	मार्ग शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	8 दिसम्बर
स्वा तारा चन्द जी	पौष कृष्ण पक्ष तृतीया	13 दिसम्बर
स्वा रामदास वैराज्ञी (वितस्ता)	पौष कृष्ण पक्ष पंचमी	15 दिसम्बर
श्री हेम राज (बब जी)		
ख्रिव/शुद्ध महादेव	पौष कृष्ण पक्ष षष्ठी	16 दिसम्बर
श्री रघुनाथ कुकिलू	पौष कृष्ण पक्ष नवमी	19 दिसम्बर
अभिनव गुप्त निर्वाण दिवस	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	20 दिसम्बर
स्वा केशव नाथ कौल	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	20 दिसम्बर
श्री अशोकानन्द	पौष कृष्ण पक्ष अमावसी	24 दिसम्बर
स्वामी शिव राम	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	25 दिसम्बर
श्री राघवानन्द जी	पौष शुक्ल पक्ष तृतीया	27 दिसम्बर
मथुरा देवी	पौष शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	8 जनवरी
श्री आफताभ जी (भास्कर)	माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	13 जनवरी
श्री काशी नाथ जी कौल	माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	13 जनवरी
स्वा जानकी नाथ पण्डिता(द्रुगमुला)	माघ कृष्ण पक्ष षष्ठी	14 जनवरी
स्वा सत्यानन्द जी महंत	माघ कृष्ण पक्ष अष्टमी	16 जनवरी
स्वामी राम जी ब्रह्म०	माघ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	22 जनवरी
स्वा० नन्द लाल जी	माघ शुकल पक्ष तृतीया	26 जनवरी
स्वा. प्रयाग जी (त्रहगाँव)	माघ शुक्ल पक्ष चतुर्थी	27 जनवरी
श्री दीनानाथ जी भान	माघ शुकल पक्ष द्वादशी	4 फरवरी
स्वामी वामन जी महाराज	माघ शुकल पक्ष त्रयोदशी	5 फरवरी
स्वा० जीवन साहब	फाल्गुन कृष्ण पक्ष द्वितीया	9 फरवरी
सन्त राम (सत्त बव) द्रुगमुल्ला	फाल्गुन कृष्ण पक्ष द्वितीया	9 फरवरी
शारिका जी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष तृतीया	10 फरवरी
स्वा राम कृष्णानन्द सरस्वती	फाल्गुन कृष्ण पक्ष सप्तमी	14 फरवरी
स्वा श्यामलाल ओगरा	फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी	15 फरवरी
स्वा पुष्कर नाथ कौल (पौष मोत)	फाल्गुन कृष्ण पक्ष नवमी	16 फरवरी
स्वा. जगन्नाथ शाला	फाल्गुन कृष्ण पक्ष द्वादशी	18 फरवरी
ब्रह्म महेश्वर नाथ दर	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	22 फरवरी
स्वामी महताब काक जी	फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया	23 फरवरी
स्वा० रामजुव सफाया (तवरदार)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष षष्ठी	28 फरवरी
श्री मानकाक जी गौतमनाग	फाल्गुन शुक्ल पक्ष दशमी	3 मार्च
स्वा. विदलाल मट्टू (चन्द्रपुरा)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष दशमी	3 मार्च
स्वा० हरकाक	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	14 मार्च
श्री किशकाक वडीपोरा	चेत्र कृष्ण पक्ष नवमी	16 मार्च
ब्रह्मचार्य अर्जुनदेव	चैत्र कृष्ण पक्ष दशमी	17 मार्च
श्री श्याम लाल वांचू (हाज़ीन)	चैत्र कृष्ण पक्ष चर्तुदशी	21 मार्च
श्री गाशकाक	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	22 मार्च

कश्मीर के महात्माओं की जयन्तियाँ

नोट : विजयेश्वर पंचांग में उन महानुभावों की जयन्यिाँ लिखी गई हैं जिन का निर्वाण हुआ है। - प्रबन्धक

श्री मोहन लाल ठुस्सु (कोफूर)	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	4 अप्रैल
स्वा केशवनाथ कौल	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	4 अप्रैल
स्वा नन्दलाल (बडगाम)	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	4 अप्रैल
श्री काशी नाथ जी कौल	चैत्र शुक्ल पक्ष पंचमी	8 अप्रैल
ज्यो श्री कण्ठ शर्मा (बिजबिहारा)	चैत्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	17 अप्रैल
स्वा बादशाह कलन्दर	चैत्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	18 अप्रैल
स्वा महादेव काक भान	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	24 अप्रैल
स्वा जानकी नाथ साहिब दर	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	24 अप्रैल
स्वा लक्ष्मण जी	वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी	29 अप्रैल
स्वा दीनानाथ भान	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	13 मई
स्वा किनटोठ (यक्षकूर बड़गांव)	वैशाख शुक्ल पक्ष द्वादशी	14 मई
स्वा गोविन्द कौल जलाली	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी	22 मई
श्री काशी नाथ (बाबा)	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अष्टमी	25 मई
स्वा. दीनानाथ कारिहामा	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष नवमी	26 मई
श्री परमहंस कृष्णनन्द संतोष	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वादशी	29 मई
श्री नन्दकीश्वर महाराज	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावसी	1 जून
श्री मान भट्ट (मान) फतेहपुरी	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	2 जून
श्री रघुनाथ कोकिलू	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पंचमी	6 जून
श्री राम कृष्णनन्द सरस्वती	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	9 जून
श्री 100 रामानन्द जी	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	9 जून
श्री हेमराज खिव/सुदमहादेव	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	9 जून
श्री सिद्ध बब	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष नवमी	10 जून
स्वा राम जी धूपवन आश्रम	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष दशमी	11 जून
रूप भवानी	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	15 जून
स्वा महादेव काका रत्नीपोरा	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	15 जून
स्वा राधे श्याम	आषाढ कृष्ण पक्ष प्रतिपदि	16 जून
स्वा भट्ट मोत अम्बाला	आषाढ कृष्ण पक्ष द्वितीय	17 जून
स्वा सत्यानन्द महंत	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीय	18 जून
स्वा श्यामलाल ओगरा	आषाढ कृष्ण पक्ष एकादशी	27 जून
स्वा. स्वयमानन्द जी मुट्ठी	आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी	6 जुलाई
भगवान गोपीनाथ जी	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	12 जुलाई
स्वा विद्याधर जी रत्नीपोरा	आषाढ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	13 जुलाई
ज्योतिषी आफताब शर्मा	श्रावण शुक्ल पक्ष षष्ठी	5 अगस्त
स्वा. आफताब जी (भास्कर)	श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी	10 अगस्त
स्वा द्वारिका नाथ पण्डित (हितकारी आश्रम नगरोटा)	श्रावण शुकल पक्ष पूर्णिमा	13 अगस्त
स्व काशी नाथ बब	भाद्र कृष्ण पक्ष अष्टमी	22 अगस्त
श्री कृष्णजू राज़दान	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	1 सितम्बर

लल्लेश्वरी	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	5 सितम्बर
स्वा गाश कौल जलाली	भाद्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	9 सितम्बर
ब्रह्मचारी श्रीकण्ठ कौल(जलाली)	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	11 सितम्बर
पं० प्रेमनाथ शास्त्री	आश्विन कृष्ण पक्ष सप्तमी	20 सितम्बर
स्वा आनन्द जी	आश्विन कृष्ण पक्ष द्वादशी	24 सितम्बर
स्व जगन्नाथ शाला	आश्विन कृष्ण पक्ष द्वादशी	24 सितम्बर
स्वा हरकाक	आश्विन् कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	25 सितम्बर
स्वा. त्रिलोकी नाथ मान (दयाल)	आश्विन शुक्ल पक्ष एकादशी	7 अक्टूबर
स्वा महादेव काक	कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी	16 अक्टूबर
परमदयाल पृथ्वी नाथ पण्डित	कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी	20 अक्टूबर
स्वा महादेव काक भान (तोफ)	कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी	21 अक्टूबर
स्वा पुष्कर नाथ कौल	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वादशी	24 अक्टूबर
स्वा जानकी नाथ पण्डिता (कुपवारा)	कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	25 अक्टूबर
श्री तारा चन्द जी	कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावसी	26 अक्टूबर
स्वा महताब काक	कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्थी	30 अक्टूबर
स्वा हरि कृष्ण जी	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी	6 नवम्बर
श्रीमती कमलांजी काचरू	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	7 नवम्बर
स्वा पुष्करनाथ जी	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	7 नवम्बर
चन्डीगाम महात्मा	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	10 नवम्बर
स्वा. आशुतोष राज़दान (महात्मा)	मार्ग कृष्ण पक्ष दशमी	20 नवम्बर
शारिका जी	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	26 नवम्बर
स्वा जीवन साहिब रैणावारी	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	26 नवम्बर
श्री श्याम लाल वांचू (हज़ीन)	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	26 नवम्बर
मस्त बब	मार्ग शुक्ल पक्ष अष्टमी	2 दिसम्बर
शारदा देवी	पौष कृष्ण पक्ष सप्तमी	17 दिसम्बर
श्री नन्दलाल साहिब लाले बाग	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	20 दिसम्बर
स्वा राम जी	पौष कृष्ण पक्ष द्वादशी	21 दिसम्बर
श्री मिरज़ काक जी	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	25 दिसम्बर
स्वा बोनकाक	पौष शुक्ल पक्ष दशमी	3 जनवरी
स्वा कशकाक (मनिगाम)	माघ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	24 जनवरी
ब्र मट्टेश्वर नाथ दर	माघ कृष्ण पक्ष प्रतिपदि	24 जनवरी
स्वा निर जन नाथ कौल	माघ शुक्ल पक्ष अष्टमी	31 जनवरी
श्री बिदलाल गुशी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	11 फरवरी
श्री महेश्वर नाथ मल्ला	फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	20 फरवरी
स्वा जगदानन्द जी ब्रह्मचारी	फाल्गुन शुक्ल पक्ष तृतीया	25 फरवरी
श्री शंकरनाथ राजदान वनपुह	फाल्गुन शुक्ल पक्ष पंचमी	27 फरवरी
स्वा रामजु सफाया (तबरदार)	फाल्गुन शुक्ल पक्ष षष्ठी	28 फरवरी
स्वा शम्भु नाथ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष सप्तमी	29 फरवरी
स्वा नन्दलाल जी ब्रह्म०	फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी	1 मार्च
स्वा गोविन्द कौल	फाल्गुन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	6 मार्च
श्री क्राल बब	फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	8 मार्च
स्वा विभीषण जी	चैत्र कृष्ण पक्ष तृतीया	10 मार्च
स्वा शिव जी भागाती	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	14 मार्च

महत्त्वपूर्ण यात्राएं

हारी पर्वत श्रीनगर देवी आंगन-पलोडा-डोक जम्मू	चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया	6 अप्रैल
उमा भगवती यात्रा	चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	11 अप्रैल
भ्रारि आगन		
चक्रीश्र यात्रा हारी पर्वत श्रीनगर पलोडा-डोक जम्मू शिवा भगवती यात्रा, अकिन गाम	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	12 अप्रैल
कमला यात्रा त्राल	वैशाख शुक्ल पक्ष पंचमी	8 मई
डुमटबल यात्रा	वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	13 मई
गणपतयार यात्रा	वैशाख शुक्ल पक्ष चर्तुदशी	16 मई
ज्येष्ठा देवी यात्रा	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी	22 मई
नन्दकीश्वर यात्रा	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावसी	1 जून
सीर जागीर,आकलपुर जम्मू		
क्षीरभवानी यात्रा तुलमुल, कश्मीर खनबरिन्य यात्रा देवसर मंज गाम यात्रा मंजगाम लकुटी पुरा यात्रा हरिश्वर यात्रा, खुनमुह	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	9 जून
श्रीमती हु)ामाता यात्रा	आषाढ शुक्ल पक्ष अष्टमी	8 जुलाई
हारी पर्वत श्रीनगर देवी आंगन, पलोडा डोक जम्मू	आषाढ शुक्ल पक्ष नवमी	9 जुलाई
लोक भवन यात्रा	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	12 जुलाई
ख्रिव यात्रा	आषाढ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	14 जुलाई
पाजथ यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	4 अगस्त
शोपियान यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष द्वादशी	10 अगस्त
श्री अमर नाथ यात्रा थजीवारा, विजबिहारा ध्यानेश्वर यात्रा बांढ़ीपोरा	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	13 अगस्त
नबदल यात्रा त्राल	भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्थी	18 अगस्त
मार्तण्ड तीर्थ यात्रा मटन	भाद्र शुक्ल पक्ष षष्ठी	3 सितम्बर

शारदा पीठ यात्रा		
उमानगरी यात्रा		
साधु गंगा शारदा बल	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	5 सितम्बर
गुशी यात्रा कश्मीर		
हर मुकुट गंगा यात्रा		
गौतम नाग यात्रा कश्मीर	भाद्र शुक्ल पक्ष एकादशी	8 सितम्बर
व्यथवतुर यात्रा कश्मीर	भाद्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	10 सितम्बर
पाप हरण नाग		
अनन्तनाग यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	11 सितम्बर
ऐशमुकाम यात्रा		
कारकूट नाग यात्रा		
विजयेश्वर यात्रा		
बिजबिहारा कश्मीर	आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस	27 सितम्बर
सोमयार यात्रा श्रीनगर		
भद्रकाली यात्रा	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	5 अक्टूबर
मार्तण्ड तीर्थ यात्रा	माघ शुक्ल पक्ष सप्तमी	30 जनवरी
चक्रीश्र्र यात्रा श्रीनगर	फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी	15 फरवरी
देवी आंगन पलोडा		
डोक जम्मू		
विचार नाग यात्रा	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	22 मार्च

पंचक आरम्भ		पंचक समाप्त	
30 मार्च	4-6 दिन	4 अप्रैल	5-14 दिन
26 अप्रैल	10-30 रात	1 मई	11-30 रात
24 मई	6-6 प्रातः	29 मई	6-33 प्रातः
20 जून	2-38 दिन	25 जून	2-22 दिन
17 जुलाई	11-11 रात	22 जुलाई	10-23 रात
14 अगस्त	6-51 प्रातः	19 अगस्त	5-58 प्रातः
10 सितम्बर	1-17 दिन	15 सितम्बर	12-46 दिन
7 अक्टूबर	7-00 शां	12 अक्टूबर	6-58 शां
3 नवम्बर	1-9 रात	8 नवम्बर	1-9 रात
1 दिसम्बर	8-51 दिन	6 दिसम्बर	7-57 प्रातः
28 दिसम्बर	6-6 शां	2 जनवरी	3-38 दिन
24 जनवरी	3-39 रात	29 जनवरी	11-52 रात
21 फरवरी	11-54 दिन	26 फरवरी	7-56 प्रातः
19 मार्च	6-18 शां	24 मार्च	3-11 दिन

हमारे पर्व और त्यौहार 2068 के लिये

थालस बुथ वुछुन	4 अप्रैल
नवरेह	4 अप्रैल
जंगत्रय	6 अप्रैल
दुर्गाष्टमी	11 अप्रैल
रामनवमी	12 अप्रैल
उमा जयन्ती	12 अप्रैल
शिवा भगवती	12 अप्रैल
शैलपुत्री जय०	12 अप्रैल
वैशाखी	14 अप्रैल
ऋषि पीरश्राद्ध	23 अप्रैल
बेताल षष्ठी	23 अप्रैल
परशुराम जयन्ती	5 मई
अक्षया तृतीया	5 मई
नारद एकादशी	13 मई
शारदा एकादशी	13 मई
गणेश चतुर्दशी	16 मई
ज्येष्ठादेवी यज्ञ	22 मई
ज्येष्ठाष्टमी	9 जून
निर्जला एकादशी	12 जून
रूप भवानी जयन्ती	15 जून
हार अष्टमी	8 जुलाई
हार नवमी	9 जुलाई
शारिका जयन्ती	9 जुलाई
देवशयनी एकादशी	11 जुलाई
हार द्वादशी	12 जुलाई
ज्वाला चतुर्दशी	14 जुलाई
गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा	15 जुलाई
वहरात	16 जुलाई
शीतला सप्तमी	22 जुलाई
कमला एकादशी	26 जुलाई
नाग पंचमी	4 अगस्त
श्रावण द्वादशी	10 अगस्त
रक्षा बन्धन	13 अगस्त
श्रावण पूर्णिमा	13 अगस्त
चन्दन षष्ठी	19 अगस्त
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	21 अगस्त
कुशामावसी	29 अगस्त
हरितालिका तृतीया	31 अगस्त
विनायक चतुर्थी	1 सितम्बर
वराह पंचमी	2 सितम्बर
शारदाष्टमी, गंगाष्टमी	5 सितम्बर
लल्लेश्वरी जयन्ती	5 सितम्बर
वितस्ता त्रयोदशी	10 सितम्बर
अनन्त चतुर्दशी	11 सितम्बर
पितृपक्षारम्भ	12 सितम्बर
कश्मीरी पण्डितों का बलिदान दिवस	14 सितम्बर
हरुद	17 सितम्बर
साहिब सप्तमी	19 सितम्बर
महालक्ष्मी अष्टमी	21 सितम्बर
पितृामावसी	27 सितम्बर

नवरात्रारम्भ	28 सितम्बर
दुर्गाष्टमी	4 अक्टूबर
महानवमी	5 अक्टूबर
सरस्वती विसर्जन	5 अक्टूबर
विजया दशमी	6 अक्टूबर
करवा चौथ	15 अक्टूबर
दीपावली	26 अक्टूबर
भाई दूज	28 अक्टूबर
गोपालाष्टमी	3 नवम्बर
महाकाल भैरवाष्टमी	19 नवम्बर
गीता जयन्ती	6 दिसम्बर
श्री दत्तात्रेय जयन्ती	10 दिसम्बर
मातृका पूजा	11 दिसम्बर
मुंजहर तहर	11 दिसम्बर
महाकाली जयन्ती	18 दिसम्बर
आनन्देश्र्‍र भैरव जयन्ती	20 दिसम्बर
क्ष्यचरि अमावसी	24 दिसम्बर
शिशर संक्रान्ति	15 जनवरी
साहिब सप्तमी	15 जनवरी
कश्मीरी पण्डितों का निर्वासण दिवस	19 जनवरी
शिव चतुर्दशी	21 जनवरी
गौरी तृतीया	26 जनवरी
त्रिपुरा चर्तुथी	27 जनवरी
बसन्त पंचमी	28 जनवरी
सूर्य सप्तमी	30 जनवरी
भीष्माष्टमी	31 जनवरी
भीमसेन एकादशी	3 फरवरी
यक्षा चतुर्दशी	6 फरवरी
माघ पूर्णिमा	7 फरवरी
काव पूर्णिमा	7 फरवरी
हुरि अकदोह	8 फरवरी
होराष्टमी	15 फरवरी
शिव रात्रि (हेरथ)	19 फरवरी
शिवचर्तुदशी	20 फरवरी
डून्यमावसी	21 फरवरी
तैलाष्टमी	1 मार्च
होली	8 मार्च
थाल भरुण	13 मार्च
सौन्थ	14 मार्च
चित्र चतुर्दशी	21 मार्च
थाल भरुण	22 मार्च
श्री भट्ट दिवस	22 मार्च
विचार नाग यात्रा (कश्मीर)	22 मार्च

पन्न दियुन

यदि पन्न देने में किसी प्रकार का विघ्न आयेगा तो आप आश्विन पूर्णिमा या कार्तिक पूर्णिमा को पन्न दे सकते हैं।

(धर्म शास्त्र)

बच्चों के साथ कशमीरी भाषा में बात करें।

महत्त्वपूर्ण यज्ञ तथा दिवस

यज्ञ शिव मन्दिर पुरखू फेज 2	चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया	6 अप्रैल
यज्ञ शारदा भवन, पौनी चक (यक्षकूट,बडगाम)	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	12 अप्रैल
स्वा कुमारजी क्राल बब आश्रम गड्डी	चैत्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	15 अप्रैल
स्व पुष्कर आश्रम नजबगढ	चैत्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	18 अप्रैल
यज्ञ बुलबुल लंकर	वैशाख कृष्ण पक्ष दशमी	27 अप्रैल
यज्ञ गणेश अस्थापन (फिडारपोरा सोपोर)	वैशाख शुक्ल पक्ष चतुदर्शी	16 मई
यज्ञ ज्येष्ठादेवी जीठयार कश्मीर	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी	22 मई
यज्ञ मंजगाम (कुलगाम)	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	9 जून
यज्ञ पोषबब आश्रम (गंग्याल)	आषाढ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	15 जुलाई
छड्डी स्नान मातण्ड तीर्थ (मटन) कश्मीर	आषाढ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	15 जुलाई
यज्ञ नागडंडी आश्रम अनन्तनाग	श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	4 अगस्त
यज्ञ द्वारिका हितकारी आश्रम वार्षि यज्ञ (कैलाशपति मन्दिर दुर्गानगर)	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	13 अगस्त
गणेश अस्थापन दिवस जीठयार, कश्मीर	भाद्र शुक्ल पक्ष चर्तुथी	1 सित
यज्ञ आदर्श नगर बनतालाब (जम्मू)	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	5 सित
शारदा भवन पौनी चक	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	5 सित
यज्ञ स्वा स्वयमानन्द आश्रम	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	5 सित
यज्ञ डोक वज़ीर नगरोटा	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	
यज्ञ गोकल धाम अम्बिका विहार अमृतेश्वर महादेव मन्दिर	आश्विन शुक्ल पक्ष नवमी	5 अक्टू
सरस्वती विहार बोहढ़ी	आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	9 अक्टू
स्वा पुष्कर आश्रम चिनोर	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	7 नव
यज्ञ स्वा मोहन बब आश्रम, मिश्रीवाला	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	10 नव
यज्ञ काश्मीर भवन त्रिकूटा नगर जम्मू	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	10 नव
चण्डीगाम (कुपवारा) उधमपोर	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	10 नव
श्री सिद्ध गणेश आश्रम रामकृष्ण विहार (उधयवाला)	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	10 नव
यज्ञ कुमार जी आश्रम मुट्ठी	मार्ग शुक्ल पक्ष एकादशी	6 दिस
यज्ञ कुमार जी आश्रम मुट्ठी	माघ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	7 फर

व्रतों की सूची 2068 के लिये

संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय)

वैशाख	21 अप्रैल	11-00
ज्येष्ट	20 मई	10-31
आषाढ	19 जून	10-21
श्रावण	18 जुलाई	9-23
भाद्र	17 अगस्त	8-51
आश्विन	16 सितम्बर	8-29
कार्तिक	15 अक्टूबर	7-49
मार्ग	14 नवम्बर	8-17
पौष	14 दिसम्बर	9-18
माघ	12 जनवरी	9-5
फाल्गुन	10 फरवरी	9-3
चैत्र	11 मार्च	10-13

कुमार षष्टी

चैत्र	9 अप्रैल	शनि
वैशाख	8 मई	रवि
ज्येष्ट	7 जून	मंगल
आषाढ	6 जुलाई	बुध
श्रावण	4 अगस्त	गुरु
भाद्र	2 सितम्बर	शुक्र
आश्विन	2 अक्टू	रवि
कार्तिक	31 अक्टू	सोम
मार्ग	30 नवम्बर	बुध
पौष	30 दिसम्बर	शुक्र
माघ	28 जनवरी	शनि
फाल्गुन	27 फरवरी	सोम

अष्टमी व्रत

चैत्र	11 अप्रैल	सोम
वैशाख	11 मई	बुध
ज्येष्ट.	9 जून	गुरु
आषाढ	8 जुलाई	शुक्र
श्रावण	6 अगस्त	शनि
भाद्र	5 सितम्बर	सोम
आश्विन	4 अक्टू	मंगल
कार्तिक	3 नवम्बर	गुरु
मार्ग	2 दिसम्बर	शुक्र
पौष	1 जनवरी	रवि
माघ	31 जनवरी	मंगल
फाल्गुन	1 मार्च	गुरु

पूर्णिमा व्रत

चैत्र	18 अप्रैल	सोम
वैशाख	17 मई	मंगल
ज्येष्ट	15 जून	बुध
आषाढ	15 जुलाई	शुक्र
श्रावण	13 अगस्त	शनि
भाद्र	12 सित	सोम
आश्विन	12 अक्टू	बुध
कार्तिक	10 नवम्बर	गुरु
मार्ग	10 दिसम्बर	शनि
पौष	9 जनवरी	सोम
माघ	7 फरवरी	मंगल
फाल्गुन	8 मार्च	गुरु

अमावसी व्रत		
वैशाख	3 मई	मंगल
ज्येष्ट	1 जून	बुध
आषाढ	1 जुलाई	शुक्र
श्रावण	30 जुलाई	शनि
भाद्र	29 अगस्त	सोम
आश्विन	27 सित	मंगल
कार्तिक	26 अक्टू	बुध
मार्ग	25 नवम्बर	शुक्र
पौष	24 दिसम्बर	शनि
माघ	23 जनवरी	सोम
फाल्गुन	21 फरवरी	मंगल
चैत्र	22 मार्च	गुरु

संक्रान्ति व्रत		
वैशा	14 अप्रैल	गुरु
ज्ये	15 मई	रवि
आषा	15 जून	बुध
श्राव	17 जुलाई	रवि
भाद्र	17 अगस्त	बुध
आश्विन	17 सित	शनि
कार्तिक	17 अक्टू	सोम
मगर	16 नवम्बर	बुध
पौष	16 दिसम्बर	शुक्र
माघ	15 जनवरी	रवि
फाल्गुन	13 फरवरी	सोम
चैत्र	14 मार्च	बुध

एकादशी व्रत		
चैत्र शुक्ल पक्ष	14 अप्रैल	गुरु
वैशाख कृष्ण पक्ष	28 अप्रैल	गुरु
वैशाख शुक्ल पक्ष	13 मई	शुक्र
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	28 मई	शनि
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	12 जून	रवि
आषाढ कृष्ण पक्ष	27 जून	सोम
आषाढ शुक्ल पक्ष	11 जुला	सोम
श्रावण कृष्ण पक्ष	26 जुला	मंगल
श्रावण शुक्ल पक्ष	9 अगस्त	मंगल
भाद्र कृष्ण पंक्ष	25 अगस्त	गुरु
भाद्र शुक्ल पक्ष	8 सित	गुरु
आश्विन कृष्ण पक्ष	23 सित	शुक्र
आश्विन शुक्ल पक्ष	7 अक्टू	शुक्र
कार्तिक कृष्ण पक्ष	23 अक्टू	रवि
कार्तिक शुक्ल पक्ष	6 नव	रवि
मार्ग कृष्ण पक्ष	21 नव	सोम
मार्ग शुक्ल पक्ष	6 दिस	मंगल
पौष कृष्ण पक्ष	21 दिस	बुध
पौष शुक्ल पक्ष	5 जन	गुरु
माघ कृष्ण पक्ष	19 जन	गुरु
माघ शुक्ल पक्ष	3 फर	शुक्र
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	17 फर	शुक्र
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	4 मार्च	रवि
चैत्र कृष्ण पक्ष	18 मार्च	रवि

गण्ड मूल नक्षत्रों का आरम्भ और समाप्ति काल

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूला, रेवती नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं गण्डमूल नक्षत्र पर उत्पन्न हुये बच्चों की शान्ति करानी चाहिये यदि जन्मकाल में शान्ति न करवाई गई तो बच्चा जिस नक्षत्र पर पैदा हुआ होगा उसी समय पर बच्चे की शान्ति करानी चाहिये जन्म होने के दिन से 27 दिनों के पश्चात् वही नक्षत्र आयेगा जिस नक्षत्र पर बच्चे ने जन्म लिया होगा

घर पर बच्चों के साथ कश्मीरी भाषा में बात करें

गण्डान्त आरम्भ			गण्डान्त समाप्त			गण्डान्त आरम्भ			गण्डान्त समाप्त		
4 अप्रैल	11-14	दिन	4 अप्रैल	11-52	रात	2 अक्टूबर	9-31	रात	3 अक्टूबर	9-03	दिन
13 अप्रैल	8-50	रात	14 अप्रैल	8-09	दिन	12 अक्टूबर	11-52	दिन	12 अक्टूबर	1-41	रात
21 अप्रैल	11-14	रात	22 अप्रैल	9-25	दिन	21 अक्टूबर	4-39	रात	22 अक्टूबर	3-46	दिन
1 मई	4-49	दिन	2 मई	6-05	प्रातः	30 अक्टूबर	6-19	प्रातः	30 अक्टूबर	5-31	शां
10 मई	3-44	रात	11 मई	3-00	दिन	8 नवम्बर	6-22	शां	9 नवम्बर	7-54	प्रातः
19 मई	9-38	दिन	19 मई	7-41	रात	18 नवम्बर	11-24	दिन	18 नवम्बर	11-21	रात
28 मई	11-53	रात	29 मई	1-15	दिन	26 नवम्बर	5-02	शां	26 नवम्बर	3-56	रात
7 जून	9-06	दिन	7 जून	8-34	रात	5 दिसम्बर	1-09	रात	6 दिसम्बर	2-43	दिन
15 जून	7-15	शां	16 जून	6-51	प्रातः	15 दिसम्बर	4-56	शां	16 दिसम्बर	5-01	प्रातः
25 जून	7-39	प्रातः	25 जून	9-6	शां	23 दिसम्बर	3-40	रात	24 दिसम्बर	2-50	दिन
4 जुलाई	2-56	दिन	4 जुलाई	2-22	रात	2 जनवरी	8-23	दिन	2 जनवरी	10-23	रात
12 जुलाई	3-09	रात	13 जुलाई	3-01	दिन	11 जनवरी	11-03	रात	12 जनवरी	10-38	दिन
22 जुलाई	3-39	दिन	23 जुलाई	5-8	प्रातः	20 जनवरी	12-13	दिन	20 जनवरी	11-36	रात
31 जुलाई	10-51	रात	1 अगस्त	9-49	दिन	29 जनवरी	5-08	शां	30 जनवरी	6-38	प्रातः
9 अगस्त	9-23	दिन	9 अगस्त	9-17	रात	8 फरवरी	7-8	प्रातः	8 फरवरी	6-37	शां
18 अगस्त	11-12	रात	19 अगस्त	12-44	दिन	16 फरवरी	5-07	शां	17 फरवरी	5-07	प्रातः
28 अगस्त	8-28	दिन	28 अगस्त	7-30	रात	25 फरवरी	1-08	रात	26 फरवरी	2-39	दिन
5 सितम्बर	1-00	दिन	5 सितम्बर	3-00	रात	6 मार्च	5-18	शां	6 मार्च	4-50	रात
15 सितम्बर	6-01	प्रातः	15 सितम्बर	7-32	शां	14 मार्च	11-32	रात	15 मार्च	11-15	दिन
24 सितम्बर	7-03	शां	25 सितम्बर	5-59	प्रातः						

27 वर्षों के पश्चात् एक महा पुण्य योग

पवन सन्ध्या

28 अगस्त 2011 रविवार को दिन के 1 बजे 57 मिन्ट पर 'पवन सन्ध्या' की यात्रा क़ा योग 27 वर्षों के पश्चात् बनता है। यह शुभयोग भाद्र अमावसी, रविवार तथा मघा नक्षत्र के संयोग से बनता है इस वर्ष 28 अगस्त रविवार को चतुर्दशी दिन के 11 बजे 38 मिन्ट तक है तथा आश्लेषा नक्षत्र 1 बजे 57 मिन्ट तक है तत्पश्चात् मघा नक्षत्र, रविवार तथा अमावसी के कारण यह शुभ योग बनता है इस महान् योग पर श्राद्ध, दान, धर्म इत्यादि करने से देवताओं तथा पितरों को एक साथ तृप्ति मिलती है। (यह स्थान वेरीनाग से कपरन जाते हुये रास्ते में स्थित है।)

आपका जन्मदिन कब?

गणित के आधार से पंचांग में कभी तिथि का क्षय होता है तथा कभी एक ही तिथि दो दिन होती है ऐसी तिथियों में यदि आप का जन्म दिन आयेगा तो कब अपना जन्म दिन मनायेंगे नीचे देखें।

जो तिथि क्षय (गुम) है	आपका जन्म दिन
वैशाख कृष्ण पक्ष प्रतिपदि	18 अप्रैल
वैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी	13 मई
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	14 जून
आषाढ शुकल पक्ष षष्ठी	6 जुलाई
श्रावण शुक्ल पक्ष सप्तमी	5 अगस्त
भाद्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदि	29 अगस्त
आश्विन कृष्ण पक्ष एकादशी	23 सितम्बर
आश्विन शुक्ल पक्ष तृतीया	29 सितम्बर
कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	25 अक्टूबर

मार्ग कृष्ण पक्ष नवमी	19 नवम्बर
मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	26 नवम्बर
पौष कृष्ण पक्ष द्वादशी	21 दिसम्बर
माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	13 जनवरी
फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी	16 फरवरी
चैत्र कृष्ण पक्ष तृतीया	10 मार्च

देखने की विधिः जैसे आपका जन्म दिन आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी को है इस वर्ष आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी का क्षय हुआ है अर्थात् आषाढ शुक्ल पक्ष पंचमी और षष्ठी एक साथ 6 जुलाई को ही है आषाढ शुक्ल पक्ष पंचमी तथा षष्ठी वालों का जन्म दिन 6 जुलाई को ही है। जिस का जन्म दिन क्षय हो उस को चाहिये कि अपनी शक्ति के अनुसार वह दान इत्यादि करे।

जो तिथि दो दिन है	**आपका जन्म दिन**
वैशाख कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	1 मई
आषाढ कृष्ण पक्ष अष्टमी	24 जून
भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्थी	18 अगस्त
आश्विन कृष्ण पक्ष सप्तमी	20 सितम्बर
आश्विन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	12 अक्टूबर
मार्ग कृष्ण पक्ष तृतीया	14 नवम्बर
मार्ग शुक्ल पक्ष दशमी	5 दिसम्बर
पौष शुक्ल पक्ष एकादशी	5 जनवरी
फाल्गुन शुकल पक्ष तृतीया	25 फरवरी

देखने की विधिः गणित के आधार पर कभी कभी एक ही तिथि दो द्दिन होती है यदि उस तिथि पर आपका जन्म दिन आयेगा तो इस प्रकार देखें। जैसे आपका जन्म दिन वैशाख कृष्ण पक्ष त्रयोदशी को है इस वर्ष त्रयोदशी दो दिन है अर्थात् 30 अप्रैल तथा 1 मई को। आपका जन्म दिन 1 मई को आयेगा। क्योंकि दो तिथि होने पर पितृकार्य पहली तिथि को तथा देव कार्य तथा जन्मदिन दूसरी तिथि को होता है।

विजय सप्तमी

(4 सितम्बर रविवार को)

इस वर्ष विजय सप्तमी का पावन त्यौहार भाद्र शुक्ल पक्ष सप्तमी रविवार तदनुसार 4 सितम्बर को दिन के 11 बजे 52 मिन्ट तक है इस महापर्व पर मार्तण्ड तीर्थ पर एक भव्य यात्रा होती है इस महान् पर्व पर पितरों का श्राद्ध करने से उनको हर प्रकार की तृप्ति मिलती है।

निषेध समय: 2011-12 के लिये

बृहस्पति अस्तः	25 मार्च से 24 अप्रैल तक
शुक्रास्तः	25 जुलाई से 2 अक्टूबर तक
स्यंध	
(सिंह राशि में सूर्य)	17 अगस्त से 17 सितम्बर तक
पितृ पक्षः	12 सितम्बर से 27 सितम्बर तक
पौष	16 दिसम्बर से 14 जनवरी 2012 तक
चैत्र कृष्ण पक्ष	9 मार्च 2012 से 22 मार्च तक

प्रस्थानः

प्रस्थान का अर्थ है यात्रा या यात्रा मुहूर्त पर यात्रा की दिशा में कहीं रखा गया यात्री का सामान, वस्त्रादि जो यात्री जाते समय अपने साथ ले सके।

यदि आप को अचानक कहीं जाने का प्रोग्राम बने तो मुहूर्त न होने पर आप शुभ मुहूर्त पर ही उस दिशा की ओर अपना कोई सामान वस्त्रादि किसी दूसरे स्थान पर निकाल के रख सकते हैं जो आप जाते समय अपने साथ ले सकें।

प्रस्थान का समय

पर्वू दिशा की ओर जाने पर 7 दिन तक प्रस्थान रह सकता है उतर दिशा की ओर जाने पर 2 दिन तक प्रस्थान रह सकता है पश्चिम दिशा की ओर जाने पर 3 दिन तक प्रस्थान रह सकता है दक्षिण दिशा की ओर जाने पर 5 दिन तक प्रस्थान रह सकता है।

मूल निवास चक्र

निवास	पाताल	स्वर्ग	पृथ्वी
जन्म मास	वैशाख, ज्येष्ठ, मगर, फाल्गुन	आषाढ़, भाद्र, असोज, माघ	श्रावण, कतक, पौष, चैत्र
लग्न	मिथुन, तुला, मीन	वृष, वृश्चिक, सिंह, कुम्भ	मेष, धनु, कर्कट, मकर
फल	**अशुभ**	**शुभ**	**अशुभ**

देखने की विधिः- मूल नक्षत्र पर पैदा हुये बच्चे का जन्म यदि वैशाख में हो तो मूल का निवास पाताल में, यदि आषाढ में हो तो मूल का निवास स्वर्ग में, यदि मूल पर पैदा हुये बच्चे का जन्म मिथुन लग्न पर हो तो मूल निवास पाताल में, यदि दोनों जन्म लग्न और जन्म मास से मूल का निवास पाताल में हो तो अधिक अशुभ फल, स्वर्ग में मूल का निवास होने से शुभ फल।

अभुक्त मूलः- मूल नक्षत्र आरम्भ होने से पहले 48 मिनट से अभुक्त मूल आरम्भ होती है, मूल नक्षत्र आरम्भ होने के बाद 48 मिनट गुजरने पर अभुक्त मूल समाप्त होती है। अभुक्त मूल 1 घण्टा 36 मिनट रहती है। मूल अथवा अभुक्त मूल पर पैदा हुये बच्चे की शान्ति करवानी जरूरी है यदि किसी कारणवश शान्ति करवानी सम्भव न हो, तो भी औषधियों से स्नान करना जरूरी है हो सके औषधियों का स्नान बच्चे तथा माता को 'सुन्दर' के दिन ही करें, यदि उस दिन न हो सके तो जिस दिन आप औषधियों से स्नान का प्रोग्राम बनायेंगे उस दिन मूल नक्षत्र का होना जरूरी है, इसी प्रकार आश्लेषा नक्षत्र का भी दोष होता है, आश्लेषा नक्षत्र की शान्ति अथवा औषधियों का स्नान भी उसी दिन करना चाहिये जिस दिन आश्लेषा नक्षत्र होगा।

औषधियों से मार्जन तथा नहाने की विधिः- घर के किसी कमरे में सफाई करके धूप दीप जलाकर कमरे के वातावरण को शुद्ध बनायें साफ की हुई जगह पर पूर्व दक्षिण कोने पर चावल के आटे से अष्टदल बनाकर उस पर एक लोटा रखें इस में सात तीर्थों, सात चश्मों अथवा सात नदियों का जल तथा निम्नलिखित औषधियां भी डालें:-

औषधियां:- त्रिफला, काली मिर्च, सौंठ, हल्दी, चन्दन, पंच गव्य, कापूर, केसर, बुनफश, कहजबान, गुलाब पत्र, तुलसीपत्र, यह सभी औषधियां थोड़ी-थोड़ी मात्रा में होनी चाहिये। छीटें देने के लिये ''द्रमन-घास'' होना चाहिये, छींटे देने के लिये ऐसे व्यक्ति को रखें जो निम्नलिखित मार्जन मन्त्र को शुद्ध उच्चारण कर सके, मूल पर पैदा हुआ बच्चा और माता, पिता को पूर्व की ओर मुह करके साफ की हुई जगह पर आसन पर एक साथ बैठना चाहिये बच्चा माता की गोद में होना चाहिये, मार्जन करने वाला निम्नलिखित मार्जन मन्त्र से 108 बार उच्चारण करते हुये छींटे देता रहे मार्जन अर्थात् छींटे देने के पश्चात् लोटे का शेष बचा हुआ जल उस जल में डालें जिस गरम पानी से माता और बच्चे को नहाना हो, नहा कर शुद्ध वस्त्र पहन कर सात अनाज चावल, गेहूँ, मक्की, मूंग, माश, चना, मटर इत्यादि प्रत्येक अजनास सवा, सवा किलो अथवा सवा, सवा पाव वजन रखें, यह अजनास दक्षिणा सहित संकल्प करके किसी दरिद्र नारायण को दीजिये, यह सब काम करके कटोरी में थोड़ा सा तेल डाल कर इस तेल में बच्चा, माता तथा पिता अपना मुंह देखकर उस पात्र में तीन टक्के डालें, उस को छाया पात्र कहते हैं यह छाया पात्र भी दान किये हुये अनाज के साथ ही दान रूप में दीजिये।

मार्जन मन्त्रः

ॐ त्र्यम्बकं-यजामहे-सुगन्धिं-पुष्टि-वर्धनम्।
उर्वा-रुकम्-इव बन्धनात्-मृत्यो-र्मुक्षीय-मामृतात्।।

पं० प्रेमनाथ शास्त्री का

बारहवां निर्वाण दिवस

(15 अगस्त 2011 को)

पं. प्रेमनाथ शास्त्री का बारहवां निर्वाण दिवस भाद्र कृष्ण पक्ष द्वितीया सोमवार तदनुसार 15 अगस्त 2011 को आयोजित किया जा रहा है समस्त जनता से प्रार्थना है कि कार्यक्रम के अनुसार इस समारोह में सम्मिलित हो कर हमें उत्साहित करें।

कार्यक्रम

यज्ञारम्भ	-	15 अगस्त 2011, 6 बजे प्रातः
पूर्णाहुति	-	15 अगस्त 2011, 1.30 बजे दिन
प्रसाद	-	15 अगस्त 2011, 2 बजे दिन

\- प्रबंधक

ज्यो. आप्ताभ शर्मा का

45वां निर्वाण दिवस

(15 अक्टूबर 2011 को)

ज्यो. आप्ताभ शर्मा का 45वां निर्वाण दिवस कार्तिक कृष्ण पक्ष तृतीया शनिवार तदनुसार 15 अक्टूबर को विजयेश्वर पंचांग कार्यालय अजीत कालोनी गोलगुजराल में आयोजित किया जा रहा है समस्त जनतासे प्रार्थना है कि कार्यक्रम के अनुसार इस यज्ञ में सम्मिलित होकर यज्ञ की शोभा बडायें।

कार्यक्रम

यज्ञारम्भ	-	15 अक्टूबर 2011, 6 बजे प्रातः
पूर्णाहुति	-	15 अक्टूबर 2011, 1.30 बजे दिन
प्रसाद	-	15 अक्टूबर 2011, 1.45 बजे दिन

\- प्रबंधक

महा चण्डी यज्ञ

स्वामी स्वयमानन्द आश्रम मुट्ठी जम्मू में

(4 सितम्बर से 6 सितम्बर तक)

जगत् कल्याण के लिये महाचण्डी यज्ञ भाद्र शुक्ल पक्ष सप्तमी रविवार से भाद्र शुक्ल पक्ष नवमी मंगलवार तक स्वमी स्वयमानन्द आश्रम मुट्ठी में आयोजित किया जा रहा है समस्त जनता से प्रार्थना है कि कार्यक्रम के अनुसार इस महा यज्ञ में सपरिवार सम्मिलित होकर पुण्य के भगी बनें।

कार्यक्रम

पुर्ष्पाचन (दुर्गा सप्तशती)	-	4 सितम्बर 9 बजे प्रातः
कलशस्थापन	-	4 सितम्बर 9 बजे रात
यज्ञारम्भ	-	5 सितम्बर 9 बजे प्रातः
पूर्णाहुति	-	6 सितम्बर 1 बजे दिन
प्रसाद वितरण	-	6 सितम्बर 1-30 बजे दिन

मूल मन्त्र

नमामि त्वां महादेवीं महाभय विनाशिनीम्
महादुर्ग प्रशमनीं महाकारुण्य रूपिणीम्।।

अर्थः महाभय का नाश करने वाली, महासंकट को शान्त करने वाली और महान् करुणा की साक्षात मूर्ति आप महादेवी को मैं नमस्कार करता हूं

सिक्ख पर्व

(नानकशाही कलैण्डर के अनुसार)

श्री गुरु अंगद देव जी	18 अप्रैल
श्री गुरु तेग बहादुर जी	18 अप्रैल
श्री अर्जुन देव जी	2 मई
श्री गुरु अमरदा सजी	23 मई
श्री गुरु हर गोविन्द जी	5 जुलाई
श्री गुरु हर किशन जी	23 जुलाई
श्री गुरु रामदास जी	9 अक्टूबर
श्री गुरु नानक देव जी	10 नवम्बर
श्री गुरु गोविन्द सिंह जी	31 दिसम्बर, 11 जनवरी
श्री गुरु हरिराय जी	31 जनवरी

'अर्केन्द क्षेत्र जातानां भौम दोषो न विद्यते'
कर्क एवं सिंह लग्न में उत्पन्न जातक को भौम दोष (मंगली दोष) नहीं होता है।

(धर्म शास्त्र)

आश्लेषा नक्षत्र देखने का चित्र 2068 के लिए

पक्ष	तारीख	तिथि	आरम्भ	तिथि	पहला पाद	तिथि	दूसरा पाद	तिथि	तीसरा पाद	तिथि	चौथा पाद	तारीख
चैत्र शुक्ल	12 अप्रैल	नव	3.41 रात	दश	9.19 दिन	दश	2.57 दिन	दश	8.55 रात	दश	2.15 रात	13 अप्रै
वैशा शुक्ल	10 मई	सप्त	10.3 दिन	सप्त	3.51 दिन	सप्त	9.39 रात	सप्त	3.27 रात	अष्ट	9.14 दिन	11 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	6 जून	पंच	3.27 दिन	पंच	9.16 रात	पंच	3.05 रात	षष्ठ	8.54 दिन	षष्ठ	2.43 दिन	7 जून
आषा शुक्ल	3 जुला	द्विती	9.44 रात	द्विती	3.26 रात	तृती	9.08 दिन	तृती	2.50 दिन	तृती	8.34 रात	4 जुला
श्रावण शुक्ल	31 जुला	प्रति	5.57 प्रातः	प्रति	11.32 दिन	प्रति	5.07 दिन	प्रति	10.42 रात	प्रति	4.16 रात	31 जुला
भाद्र कृष्ण	27 अग	त्रयो	3.49 दिन	त्रयो	9.21 रात	त्रयो	2.53 रात	चर्तु	8.25 दिन	चर्तु	1.57 दिन	28 अग
आश्वि कृष्ण	23 सित	दश	1.59 रात	द्वाद	7.36 प्रातः	द्वाद	1.13 दिन	द्वाद	6.50 शां	द्वाद	12.28 रात	24 सित
कार्ति कृष्ण	21 अक्ट	नव	10.47 दिन	नव	4.35 दिन	नव	10.23 रात	नव	4.11 रात	दश	10.00 दिन	22 अक्टू
मार्ग कृष्ण	17 नव	षष्ठ	5.24 दिन	षष्ठ	11.22 रात	षष्ठ	5.20 प्रातः	सप्त	11.18 दिन	सप्त	5.18 दिन	18 नव
पौष कृष्ण	14 दिस	चतु	10.51 रात	चतु	4.51 रात	पंच	10.51 दिन	पंच	4.51 दिन	पंच	10.51 रात	15 दिस
माघ कृष्ण	10 जन	प्रति	5.15 रात	द्विती	11.08 दिन	द्विती	5.01 दिन	द्वित	10.54 रात	द्वित	4.47 रात	11 जन
माघ शुक्ल	7 फर	पूर्णि	1.47 दिन	पूर्णि	7.33 शां	पूर्णि	1.19 रात	प्रति	7.05 प्रातः	प्रति	12.51 दिन	8 फर
फाल शुक्ल	5 मार्च	द्वाद	11.48 रात	द्वाद	5.33 रात	त्रयो	11.18 दिन	जयो	5.03 दिन	त्रयो	10.50 रात	6 मार्च

मूला नक्षत्र देखने का चित्र 2068 के लिए

पक्ष	तारीख	तिथि	आरम्भ	तिथि	पहला पाद	तिथि	दूसरा पाद	तिथि	तीसरा पाद	तिथि	चौथा पाद	तारीख
वैशाख कृष्ण	21 अप्रैल	चर्तु	5.18 प्रातः	चर्तु	11.15 दिन	चर्तु	5.12 शां	चर्तु	11.9 रात	पंच	5.8 प्रातः	22 अप्रैल
ज्येष्ठ कृष्ण	19 मई	द्विती	3.22 दिन	द्विती	9.12 रात	द्विती	3.02 रात	तृती	8.52 दिन	तृती	2.42 दिन	20 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	15 जून	पूर्णि	1.4 रात	प्रति	6.54 प्रातः	प्रति	12.44 दिन	प्रति	6.34 शां	प्रति	12.23 रात	16 जून
आषा शुक्ल	13 जुलाई	त्रयो	9.8 दिन	त्रयो	3.3 दिन	त्रयो	8.58 रात	त्रयो	2.53 रात	चर्तु	8.49 दिन	14 जुला
श्राव शुक्ल	9 अग	एका	3.21 दिन	एका	9.23 रात	एका	3.25 रात	द्वाद	9.27 दिन	द्वाद	3.28 दिन	10 अग
भाद्र शुक्ल	5 सित	अष्ट	8.46 रात	अष्ट	2.49 रात	नव	8.52 दिन	नव	2.55 दिन	नव	8.58 रात	6 सित
आश्वि शुक्ल	2 अक्टू	षष्ठ	3.12 रात	सप्त	9.8 दिन	सप्त	3.04 दिन	सप्त	9.00 रात	सप्त	2.56 रात	3 अक्टू
कार्ति शुक्ल	30 अक्टू	चर्तु	11.56 दिन	चर्तु	5.41 दिन	चतु	11.26 रात	पंच	5.11 प्रातः	पंच	10.54 दिन	31 अक्टू
मार्ग शुक्ल	26 नव	प्रति	10.36 रात	प्रति	4.12 रात	तृती	9.48 दिन	तृती	3.24 दिन	तृती	9.00 रात	27 नव
पौष कृष्ण	24 दिस	अमा	9.17 दिन	अमा	2.53 दिन	अमा	8.29 रात	अमा	2.05 रात	प्रति	7.41 प्रातः	25 दिस
माघ कृष्ण	20 जन	द्वाद	5.55 शां	द्वाद	11.34 रात	द्वाद	5.23 प्रातः	त्रयो	11.07 दिन	त्रयो	4.50 दिन	21 जन
फाल कृष्ण	16 फर	नव	12.04 रात	नव	5.56 प्रातः	एका	11.48 दिन	एका	5.30 शां	एका	11.32 रात	17 फर
चैत्र कृष्ण	14 मार्च	सप्त	5.27 रात	अष्ट	11.18 दिन	अष्ट	5.9 दिन	अष्ट	11.00 रात	अष्ट	4.53 रात	15 मार्च

ग्रहण निर्णय 2068 के लिये

इस वर्ष पृथ्वी पर पांच ग्रहण होंगे परन्तु भारत में केवल 2 ग्रहण दिखाई देंगे। इस कारण हम केवल दिखाई देने वाले ग्रहणों का विवरण दे रहे हैं क्योंकि दिखाई देने वाले ग्रहणों का ही हम पर प्रभाव होता है।

खग्रास चन्द्र ग्रहण (15 जून 2011 बुधवार)

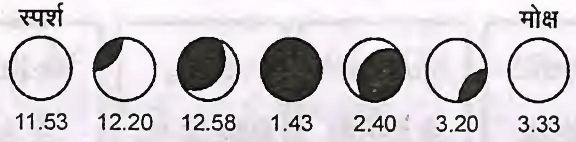

यह ग्रहण ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा बुधवार को रात के 11 बजे 53 मि. आरम्भ हो कर रात को 3 बजे 33 मिन्ट पर समाप्त होगा यह ग्रहण भारत के सभी नगरों प्रदेशों में दिखाई देगा, भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, यूरोप, आस्ट्रेलिया देशों में भी दिखाई देगा इस ग्रहण का सूतक 15 जून को दिन के 2 बजे 53 मिन्ट से आरम्भ होगा यह ग्रहण ज्येष्ठा तथा मूला नक्षत्र और वृश्चिक और धनु राशि वालों के लिये अशुभ ही रहेगा। ग्रहण आरम्भ होते ही या सूतक के समय से ही पाठपूजा, जप इत्यादि करना चाहिये तथा ग्रहण समाप्त होने पर नहा कर किसी दरिद्र नारायण को दान, दक्षिणा दे कर तृप्त करें।

खग्रास चन्द्र ग्रहणः (10 दिसम्बर 2011 शनिवार)

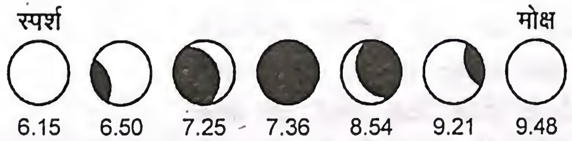

यह ग्रहण मार्ग शुक्ल पक्ष पूर्णिमा शनिवार 10 दिसम्बर को शां के 6 बज कर 15 मिन्ट से आरम्भ होकर रात के 9 बजे 48 मिन्ट पर समाप्त होगा। यह ग्रहण भारत के अतिरिक्त अफ्रीका, यूरोप आस्ट्रेलिया, उतरी अमरीका, कैनेडा इत्यादि शहरों में दिखाई देगा। ग्रहण का सूतक 10 दिसम्बर को प्रातः 9 बजकर 15 मिन्ट से आरम्भ होगा। यह ग्रहण रोहिणी तथा मृगशिरा नक्षत्र तथा वृष राशि वालों के लिये विशेष हानि कारक रहेगा इस लिए ग्रहण के समय चन्द्र ग्रह का जाप या पूजा अवश्य करनी चाहिये। ग्रहण समाप्त होने पर नहा कर, किसी भिक्षक को यथा शक्ति दान दक्षिणा देकर तृप्त करें।

ज्योतिष के दर्पण में 2011

वर्ष का राजा सूर्य (क पद्धती से) चन्द्रमा (भा पद्धती से)	वर्ष का मन्त्री बृहस्पति	धान्य का स्वामी शुक्र	अजनास का स्वामी शनि
मेघ का स्वामी बुध	रस का स्वामी चन्द्रमा	धातुओं के स्वामी शनि	फलों के स्वामी बुध
धन के स्वामी शनि	रक्षा मन्त्री बुध	वसन्त का वाहन हाथी	सम्वत्सर का नाम क्रोधी
आद्रा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश सप्तमी, बुधवार पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र पर 22 जून 4 बजे 5 रात		आषाढ़ नवमी 9 जुलाई शनिवार	

संवत्सर का नाम क्रोधी होने से

विषमस्य जगत्सर्वं व्याधि वृन्दसमाकुलम्।
अल्पा वृष्टिश्च विज्ञेया क्रोध क्रोधः प्रजायते।।

अर्थातः क्रोधी नाम संवत्सर में सम्पूर्ण जगत् संकट में मड सकता है रोग पीडा से युक्त, वर्षा की कमी तथा प्रजा में क्रोध की उत्पत्ति अधिक। क्रोधी नाम संवत्सर का स्वामी शनि होने से वर्ष भर अन्न महंगा रहेगा, देशों में आपस में विरोध, धन, जन का नाश, व्यापारी वर्ग में आर्थिक संकट।

वर्ष का राजा (कशमीरी पद्धती से) सूर्य होने से वर्षा की कमी, अन्न की उपज कम, फलों की उपज कम, गौवों में दूध की कमी, प्रजा रोग से पीडित तथा किसी महापुरुष अथवा नेता का निधन।

वर्ष का राजा (भारतीय पद्धती से) चन्द्रमा होने से चारों ओर मंगल, समयानुसार वर्षा, अन्न की उपज आशा से अधिक, प्रजा सुखी।

वर्ष का मन्त्री बृहस्पति होने से पृथवी नाना प्रकार के धान्य से युक्त, अनुकूल वर्षा,

शासकवर्ग प्रजापालन की ओर ततपर।

धान्य का स्वामी शुक्र होने से चारों ओर सुभिक्ष, स्वस्थ प्रजा, उपद्रवों का नाश धान्यादि वस्तुओं का धाम वृद्धि की ओर

अजनास का स्वामी शनि होने सेप्रजा तथा शासकवर्ग में टकराव की स्थिति, रोगों का भय, प्रजा शासक वर्ग से असन्तुष्ट।

मेघ का स्वामी बुध होने से वर्षा की अधिकता, रसदार फूलों की उपज आशा से अधिक, ब्राह्मण वर्ग यज्ञ तथा पूजा में व्यस्त, पृथिवी नाना प्रकार के सुखों से युक्त।

रस का स्वामी चन्द्रमा होने से समयानुकूल वर्षा रसयुक्त वस्तुओं, फलों, धनधान्य से युक्त पृथवी होवे।

धातुओं के स्वामी शनि होने से सीसा, लोहा तथा काले वस्तुओं के भाव में आशा से अधिक वृद्धि।

फलों के स्वामी बुध होने से फलों की उपजा अच्छी होगी, वर्षा भी अच्छी होगी, तृणपदार्थ फूल, कमलादि की उपज बहुत होगी, शासक वर्ग तथा प्रजा आनन्द से युक्त होगी।

धन का स्वामी शनि होने से धन की कमी शासकवर्ग के लिये चिन्ता का समय, धन की अस्थिर स्थिति के कारण प्रजा चिन्ता से व्याकुल, व्यापारी वर्ग परेशान।

रक्षा मन्त्री बुध होने से शासक वर्ग को भोग विलास की ओर प्रवृति, प्रजा में भी इसी प्रकार की उत्सुकता, प्रजा में र्निभयता की भावना बडेगी।

वसन्त का वाहन (कश्मीरी पद्धती से) हाथी होने से सुभिक्ष, प्रजा में सुख समयानुकूल वर्षा तथा चारों ओर प्रजा सन्तुष्ट

वसन्त का वाहन (भारतीय पद्धती से) घोड़ा होने से भूकम्प से जनधन की हानि, सीमाओं पर तनाव की स्थिति, वर्षा की कमी, अन्न का भाव महंगा।

आद्रा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश (22 जून 4 बजे 5 मिन्ट दिन सप्तमी बुधवार को पूर्वा भाद्रपदा नक्षत्र पर होने से प्रजा के लिये अशान्ति का सूचक है।

आषाढ नवमी शनिवार को होने से प्रजा की पीडा और घोर दुर्भिक्ष की सम्भावना।

संसार

वर्ष कुण्डली

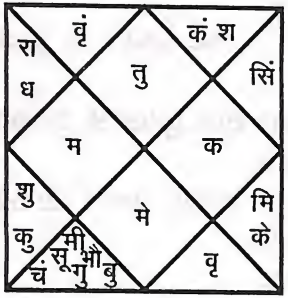

इस वर्ष के ग्रह परिषद के दस अधिकारों में से सात अधिकार शुभ ग्रहों ने तथा तीन अधिकार क्रूर ग्रहों ने सम्भाले हैं। वर्ष का राजा सूर्य, (कश्मीरी पद्धति से) तथा चन्द्रमा (भारतीय पद्धती से) तथा जगत् वर्ष कुण्डली में तुला राशि का लग्न तथा छठे भाव में पांच ग्रहों की युति तथा उस युति पर शनि देव की पूर्ण दृष्टि तथा बारहवें भाव का वक्री शनि होने के कारण यह वर्ष पूरे विश्व के लिये चुनौतियों से परिपूर्ण वर्ष होगा। ग्रहों की यह स्थिति पूरे विश्व के लिये भयंकर तथा अशान्ति की सूचक है। चारों ओर अशान्त वातावरण बना रहेगा, आकस्मिक दूर्घटनायें कहीं भूस्खलन, भूकम्प, तूफान आदि दैवी उपद्रव से धन, जन तथा अन्न की हानी कहीं पर शासक वर्ग की असफलता तथा कहीं पर छत्रभंग का योग। क्रोधी नामक संवतसर होने से पूरा विश्व क्रोध से परिपूर्ण रहेगा, प्राकृतिक आपदाओं से प्रजा त्रस्त रहेगी, शासक वर्ग की हर ओर से आव्यवस्था के कारण युद्धमय वातावर्ण देखने में आयेगा। यह वर्ष प्रत्येक देश के लिये उत्थल पुत्थल का ही वर्ष रहेगा। शक्ति शाली देश एक ओर एक दूसरे पर अपना प्रभाव जमाने के लिये नवीनतम विस्फोटक अस्त्र शस्त्रों के निर्माण में लगे रहेंगे दूसरी ओर शान्ति का राग अलापते हुये बडे बडे शान्ति सम्मेलनों का आयोजन करते रहेंगे वर्ष के आरम्भ पर शनि देव वक्री होकर वर्ष कुण्डली के बारहवें भाव में बैठा है यह अशुभ योग विशेष तौर से मुस्लिम प्रदेशों को ही प्रभावित रकेगा क्योंकि शनि देव ज्योतिष के अनुसर पश्चिमी दिशा का ही स्वामी है मुस्लिम देशों में दैवी उत्पातों तथा आपसी टकराव के कारण असंख्य जन धन का नाश होगा।

वर्ष के आरम्भ पर पंचग्रही योग के कारण सीमाओं पर विश्वयुद्ध जैसा माहोल देखने में आयेगा परन्तु अभी विश्वयुद्ध का कोई योग नहीं बनता है यदि कभी भी विश्वयुद्ध होगा तो भारत तटस्थ होगा।

भारत

62वां गणतन्त्र वर्ष

गणतन्त्र चक्र में लग्न तथा आठवें भाव का स्वामी दूसरे भाव में बैठा है तथा बारहवें भाव में बैठा हुआ शनि देव शुक्र को देख रहा है यह मन्हूस योग भारत के शासकवर्ग के लिये कोई शुभ समाचार लेकर नहीं आया है यह वर्ष शासक वर्ग के लिये अग्नि परीक्षा का वर्ष रहेगा सीमाओं पर हर समय खतरे की घण्टियां बजती रहेगी जो शासकवर्ग को शान्ति का सांस नहीं लेने देगी। खाद्यानों में तथा प्रयोग में आनी वाली वस्तुओं की मूल्य वृद्धि से प्रजा परेशान रहेगी, आकाशी उपद्रवों के कारण कहीं पर दुर्भिक्ष अथवा अनाज की कमी तथा कहीं पर सत्ता परिवर्तन का योग। कई प्रदेशों में साम्प्रदायिक उपद्रव, लूटमार, चोरी, बेरोज़गारी के कारण प्रजा में असन्तोष की भावना बडेगी। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी देश में आतंकवाद, अलगाववाद, तोड फोड, हड़ताल सरकार के लिये अशान्ति का कारण बनेगी देश में भ्रष्टाचार, रिशवत खोरी चोर बाजारी, मूल्यों में वृद्धि की रोकथाम करने में सरकार बेबस रहेगी जिस से जनता में अशान्ति, बनी रहेगी।

5000 वर्ष पूर्व ब्यास जी की यह भविष्यवाणी अब सत्य दिखाई दे रही है

''दस्युत्क्रष्टा जनपदा, वेद पाखण्ड-दूषिताः
राजानश्च प्रजाभक्षा शिश्नोदर पराः प्रजाः।।''

(भागवत् स्कन्ध 12 अध्य 3 श्लोक 32)

अर्थः- पाखण्डी लोग अपना अपना पाखण्ड चलाते रहेंगे, पूरे भारत में लुटेरों का शासन होगा, शासक वर्ग के लोग प्रजा का धन रूपी खून चूसते रहेंगे लूटमार, घोटाले तथा धोखाबाज़ी कर के रात दिन विषय भोग में मस्त रहेंगे। जैसा आजकल हो रहा है।

जम्मू कश्मीर

आकाशी ग्रह परिषद का विशेष प्रभाव जम्मू कश्मीर पर ही होता है। गणतन्त्र कुण्डली में तुला लग्न बैठा है

जम्मू कश्मीर की राशि भी तुला ही है तुला राशि पर साढसत्ती भी चल रही है यह अशुभ योग जम्मू कश्मीर के शासक वर्ग तथा प्रजा के लिये अशान्ति का सन्देश लेकर आया है कश्मीर में आतंकवाद का ताण्डव चलता रहेगा जो यहां के शासक वर्ग के लिये हर समय परेशानी का कारण बनेगा, परन्तु शासक वर्ग आतंकवाद को समाप्त करने में किसी प्रकार की ढील नहीं देगा। जनता में अनुशासन भंग की प्रवृति बनी रहेगी जिस के फलस्वरूप शासक वर्ग विरोधी दल को दबाये रखने में असफल रहेगी, प्रदेश में दंगे, फसाद तोडफोड हुल्लडबाजी तथा अग्नि दाह की दुर्घटनाओं से प्रदेश का वातावरण अशान्त रहेगा यह अशान्ति यहां के विकास कार्यों में भी रुकावट लायेगी। कभी कभी ऐसे राजनैतिक झटके आयेंगे जिस से वर्तमान सरकार डगमगाती नजर आयेगी परन्तु ऐसा होने पर भी परिवर्तन का विशेष योग नहीं है। विपक्ष हर समय शासकवर्ग को गिराने की कोशिश में रहेगा।

(शेष प्रभू ही जानते हैं।)

कुम्भो व निष्टुर्जनिता शचीभिः यस्मिन्
अग्रे योन्यां गर्भो अन्तः प्लाशिः व्यक्तः
शतधार उत्सो दोहेन कुम्भी स्वधां पितृभ्यः।

भावार्थः गर्भाशय में अल्प प्रमाण भी ठहरा हुआ बीज जन्मान्तर वीर रूपता पा कर ईश्वर की कृपा से जगत में बडे बडे दुष्कर भी कार्यों के करने के वास्ते जैसे समर्थ हो जाता है वैसे ही कुम्भ (गडवी) में दिया हुआ अल्प प्रमाण भी यह जल मन्त्रादि तथा श्रद्धातिशय की महिमा से परलोक पर अनन्तधाराओं वाला जल प्रवाह बन कर मेरे पितरों की सब कामनाओं को सम्पूर्ण करके उनकी परा तृप्ति के लिये सदा स्वधा रूप बने।

यात्रा के लिये शुभ शुकुन (जंग)

दो ब्राह्मण, फल, घोडा, अन्न, दही, गौमाता, धोया हुआ वस्त्र, गाने का सामान, नैवेद्य, जलती अग्नि, मछली मांस, हथियार, शीशा, पुत्र समेत स्त्री, बांन्धा हुआ पशु, फूल, लडकी मिट्टी, पानी से भरा घड़ा, कुत्ता, रत्न, जेवर, सफेद वृषभ, सफेद कपडा, शराब, मृतक विना रोने के, झण्डा, भेड, धोबी, बुलबुल, कोयला।

चैत्र शुक्ल पक्ष
वि 2068 ई॰ 2011

मीन में सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति। मिथुन में केतु। कन्या में शनि। धनु में राहु। कुम्भ में शुक्र

दिन	मान	चैत्र	अप्रै	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वसन्त ऋतु उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
.31	13	22	4	सोम	रेव	दि	5	14	प्रति	प्र	10	23	**थालस बुथ वुछुन** नवरेह, नवरात्रारम्भ, 5-14 दिन मेष में चन्द्र A	6/19	6/47
	18	23	5	मंगल	अश्वि	प्र	7	58	द्विती	प्र	12	34	अमृतम्।	18	48
	23	24	6	बुध	भरण	प्र	10	30	तृती	प्र	2	30	जंग त्रय, यज्ञ शिव मन्दिर, पुखू फेज़ 2 जम्मू, काण्डः।	17	49
	27	25	7	गुरु	कृति	प्र	12	43	चतु	प्र	4	7	5-5 प्रातः वृष में चन्द्र, अलापकः।	16	50
	33	26	8	शुक्र	रोहि	प्र	2	31	पंच	प्र	5	17	मैत्रम्।	15	51
	38	27	9	शनि	मृग	प्र	3	48	षष्ठी	प्र	5	54	3-14 दिन मिथुन में चन्द्र, कुमार षष्ठी, वज्रम्।	14	52
	45	28	10	रवि	आर्द्र	प्र	4	28	सप्त	प्र	5	52	ध्वांक्षः।	12	52
	48	29	11	सोम	पुर्न	प्र	4	26	अष्ट	प्र	5	7	10-30 रात कर्क में चन्द्र, **दुर्गाष्टमी**, धौम्यः।	11	53
	53	30	12	मंगल	तिष्य	प्र	3	41	नव	प्र	3	38	**रामनवमी**, नवदुर्गा विसर्जन, चक्रीश्वर यात्रा, श्रीनगर, B	10	54
32	0	31	13	बुध	आश्ले	प्र	2	15	दश	प्र	1	27	2-15 रात सिंह में चन्द्र, 8-50 रात से गण्डान्त, मासान्त, क्षयः।	8	54
	5	वैशा	14	गुरु	मघा	प्र	12	12	एका	प्र	10	40	8-9 प्रातः तक गण्डान्त, 12-59 दिन मेष में सूर्य, मुहूर्त 30 समुद्रीय, C	7	55
	10	2	15	शुक्र	पूफा	प्र	9	40	द्वाद	प्र	7	23	2-59 रात कन्या में चन्द्र, स्वा. कुमारजी जयन्ती, गड्डी उधमपुर, सिद्धः।	6	56
	15	3	16	शनि	उफा	दि	6	49	त्रयो	दि	3	46	10-50 दिन मीन में शुक्र, उन्मूलम्।	4	56
	20	4	17	रवि	हस्त	दि	3	50	चर्तु	दि	11	59	2-20 रात तुला में चन्द्र, मानसम्।	3	57
	25	5	18	सोम	चित्र	दि	12	53	पूर्णि	दि	8	13	त्र्यहः (प्रति प्र 4-39) हनुमान जयन्ती, मुद्गरम्।	2	58

वैशाखी 14 अप्रैल

A और पंचक समाप्त 11-14 दिन से 11-52 रात तक गंडान्त, मातंग। B पलोडा उमा जयन्ति जम्मू, प्रवर्धः। C वैशाखी, संक्रान्ति व्रत, कामदा गजः

मध्या : प्रति से त्रयो. तक अपने दिन, चर्तु, पूर्णि पहले दिन।

श्राद्ध. : प्रति से त्रयो तक अपने दिन, चर्तु पूर्णि का पहले दिन।

वैशाख कृष्ण पक्ष

वि 2068 ई॰ 2011

मेष में सूर्य, मिथुन में केतु, कन्या में शनि, धनु में राहु, मीन में मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र

दिन	मान	वैश	अप्रै	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वसन्त ऋतु उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
32	30	6	19	भौम	स्वा	दि	10	12	द्विती	प्र	1	28	2-27 रात वृश्चिक में चन्द्र, ध्वजः। *Myna's B.Day (Eng.)*	6/2	6/58
	35	7	20	बुध	विशा	दि	7	56	तृती	प्र	10	49	प्राजापत्यः। *Myna's B. day Indian*	0	59
	40	8	21	गुरु	अनू	दि	6	15	चतु	प्र	8	51	(ज्ये प्र 5-18) संकट चतुर्थी, (11 बजे रात) 11-14 रात से गण्डान्त, आनन्दः	0	7/0
	45	9	22	शुक्र	मूला	प्र	5	8	पंच	प्र	7	40	5-18 प्रातः धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, A	5/58	0
	50	10	23	शनि	पूषा	प्र	5	47	षष्ठी	प्र	7	19	**ऋषिपीर श्राद्ध,** वेताल षष्ठी, मातंगः।	57	1
	50	11	24	रवि	उषा	दिन रात			सप्त	प्र	7	46	12-4 दिन मकर में चन्द्र, अमृतम्।	55	2
	53	12	25	सोम	उषा	दि	7	12	अष्ट	प्र	8	57	मृत्युः।	54	2
	58	13	26	भौम	श्रव	दि	9	16	नव	प्र	10	43	10-30 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, अलापकः।	53	3
33	3	14	27	बुध	धनि	दि	11	49	दश	प्र	12	54	बुलबुल लंकर यज्ञ, मैत्रम्।	52	4
	7	15	28	गुरु	शत	दि	2	41	एका	प्र	3	19	वरूथिनी एकादशी, वज्रम्	51	5
	10	16	29	शुक्र	पूभा	दि	5	41	द्वाद	प्र	5	48	10-56 दिन मीन में चन्द्र, **श्री स्वा. लक्ष्मण जी जयन्ती,** निशात B	50	6
	15	17	30	शनि	उभा	प्र	8	39	त्रयो	दिन रात			दिन अधिक, धौम्यः	49	7
	20	18	मई	रवि	रेव	प्र	11	30	त्रयो	दि	8	11	11-30 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 4-49 दिन से गण्डान्त, प्रवर्धः।	48	8
	23	19	2	सोम	अश्वि	प्र	2	6	चर्तु	दि	10	23	6-10 प्रातः तक गंडान्त, क्षयः।	47	8
	27	20	3	भौम	भरण	प्र	4	26	अमा	दि	12	20	2-48 दिन मेष में भौम, गजः।	46	9

बृहस्पति उदय 24 अप्रैल

A 9-25 दिन तक गण्डान्त, श्री पंचमी स्थिरः B काश्मीर, देहली, जम्मू, क्षयः।

मध्या : प्रति का पहले दिन, द्वित से त्रयो तक अपने दिन, चतुर्द का पहले दिन, अमा का अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति का पहले दिन, द्वित से त्रयो तक अपने दिन, चतुर्द अमा पहले दिन।

वैशाख शुक्ल पक्ष
वि 2068 ई॰ 2011

मेष में सूर्य, मंगल। वृष में केतु। कन्या में शनि। धनु में राहु। मीन में बुध बृहस्पति शुक्र

दिन	मान	वैश	मई	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वसन्त ऋतु उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
33	33	21	4	बुध	कृति	दिन रात			प्रति	दि	1	58	10-58 दिन वृष में चन्द्र, सिद्धः।	5/45	7/9
	34	22	5	गुरु	कृति	दि	6	26	द्विती	दि	3	14	श्री परशुराम जयन्ती, अलापकः।	44	10
	40	23	6	शुक्र	रोहि	दि	8	5	तृती	दि	4	7	8-45 रात मिथुन में चन्द्र, मैत्रम्।	43	11
	45	24	7	शनि	मृग	दि	9	18	चतु	दि	4	33	वज्रम्।	43	11
	50	25	8	रवि	आद्र	दि	10	4	पंच	दि	4	30	4-18 रात कर्क में चन्द्र, 2-15 दिन मेष में बृहस्पति, कुमार षष्ठी, ध्वांक्ष।	42	12
	55	26	9	सोम	पुर्न	दि	10	19	षष्ठी	दि	3	55	धौम्यः।	41	13
	58	27	10	भौम	तिष्य	दि	10	3	सप्त	दि	2	48	3-44 रात से गण्डान्त, प्रवर्धः।	41	14
34	0	28	11	बुध	आश्ले	दि	9	14	अष्ट	दि	1	8	3-00 दिन तक गण्डान्त, 9-14 दिन सिंह में चन्द्र A	40	15
	5	29	12	गुरु	मघा	दि	7	55	नव	दि	10	58	गजः।	39	15
	10	30	13	शुक्र	पूफा	दि	6	8	दश	दि	8	21	त्र्यहः (एका प्र 5-23) (उफा प्र 3-59) 11-37 दिन कन्या में चन्द्र, B	39	16
	10	31	14	शनि	हस्त	प्र	1	36	द्वाद	प्र	2	11	मासान्त, मृत्युः।	38	17
	15	ज्ये	15	रवि	चित्र	प्र	11	7	त्रयो	प्र	10	54	12-22 दिन तुला में चन्द्र, 9-49 दिन वृष में सूर्य मुर्हूत C	37	18
	20	2	16	सोम	स्वा	प्र	8	42	चर्तु	प्र	7	39	श्री गणेश चतुर्दशी, गणपतयार यात्रा, छत्रम्।	36	18
	22	3	17	भौम	विशा	दि	6	30	पूर्णि	दि	4	38	1-1 दिन वृश्चिक में चन्द्र, श्रीवत्सः	36	19

अक्षया तृतीया 6 मई

A 8-44 दिन मेष में बुध, 5-24 प्रातः मेष में शुक्र क्षयः B नारद एकादशी, डुमटवल यात्रा सिद्धः C 30 पहाडी, ग्रीष्म ऋतु संक्रान्ति व्रत, काम्यः।

मध्या : प्रति से अष्ट तक अपने दिन, नव से एका तक पहले दिन, द्वाद से पूर्णि तक अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से एका तक पहले दिन, द्वाद से पूर्णि तक अपने दिन।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
वि 2068 ई० 2011

वृष में सूर्य, केतु। कन्या में शनि। धनु में राहु। मेष में भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र।

दिन	मान	ज्ये	मई	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	25	4	18	बुध	अनू	दि	4	40	प्रति	दि	1	58	नारद जयन्ती, सौम्यः	5/34	7/20
	30	5	19	गुरु	ज्ये	दि	3	22	द्विती	दि	11	49	3-22 दिन धनु में चन्द्र, और मूल आरम्भ 9-38 दिन से 7-14 रात A	34	20
	32	6	20	शुक्र	मूला	दि	2	42	तृती	दि	10	17	संकट चतुर्थी, (रात 10-31) स्थिरः।	33	21
	35	7	21	शनि	पूषा	दि	2	46	चतु	दि	9	28	8-54 रात मकर में चन्द्र, मातंगः।	32	22
	37	8	22	रवि	उषा	दि	3	34	पंच	दि	9	24	**श्री ज्येष्ठा देवी यज्ञ, जीठंयार श्रीनगर** काश्मीर, अमृतम्।	32	22
	40	9	23	सोम	श्रव	दि	5	6	षष्ठी	दि	10	6	सिद्धः।	31	23
	42	10	24	भौम	धनि	दि	7	14	सप्त	दि	11	28	6-6 प्रातः कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, उन्मूलम्।	31	24
	45	11	25	बुध	शत	प्र	9	51	अष्ट	दि	1	22	मानसम्।	30	24
	50	12	26	गुरु	पूभा	प्र	12	44	नव	दि	3	37	6 बजे शां मीन में चन्द्र, मुदगरम्।	30	25
	52	13	27	शुक्र	उभा	प्र	3	42	दश	दि	6	1	ध्वजः।	30	26
	55	14	28	शनि	रेव	दिन रात			एका	प्र	8	22	11-53 रात से गण्डान्त, अपरा एकादशी, प्राजापत्यः।	29	26
35	0	15	29	रवि	रेव	दि	6	33	द्वाद	प्र	10	29	1-15 दिन तक गंडान्त, 6-33 प्रातः मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, प्रवर्धः।	29	27
	0	16	30	सोम	अश्वि	दि	9	9	त्रयो	प्र	12	16	12-4 रात वृष में बुध, क्षयः।	28	27
	2	17	31	भौम	भरण	दि	11	22	चर्तु	प्र	1	38	5-51 शां वृष में चन्द्र, गजः।	28	28
	3	18	जून	बुध	कृति	दि	1	9	अमा	प्र	2	32	श्री नन्दकीश्वर यात्रा सीर जागीर आकलपुर जम्मू, सिद्धः।	28	29

ज्येष्ठा देवी यज्ञ 22 मई

A तक गंडान्त, **श्री काक जी यज्ञ, नगरोटा** जम्मू, कालदण्डः

मध्या : प्रति का अपने दिन, द्वित से सप्त तक पहले दिन, अष्ट से अमा तक अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से दश तक पहले दिन, एका से अमा तक अपने दिन।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
वि 2068 ई॰ 2011

वृष में सूर्य, बुध, केतु। कन्या में शनि। धनु में राहु। मेष में मंगल, बृहस्पति, शुक्र

दिन	मान	ज्ये	जून	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	7	19	2	गुरु	रोहि	दि	2	29	प्रति	प्र	2	57	2-59 रात मिथुन में चन्द्र, उन्मूलम्। Meenu's B. day Indian	5/28	7/29
	7	20	3	शुक्र	मृग	दि	3	22	द्विती	प्र	2	55	**भग, गोपीनाथ यज्ञ,** मानसम्।	27	30
	10	21	4	शनि	आर्द्र	दि	3	48	तृती	प्र	2	27	10-1 रात वृष में शुक्र, मुदगरम्।	27	30
	10	22	5	रवि	पुर्न	दि	3	49	चतु	प्र	1	34	9-51 दिन कर्क में चन्द्र, ध्वजः।	27	31
	15	23	6	सोम	तिष्य	दि	3	27	पंच	प्र	12	17	2-21 दिन वृश्चिक में राहु, प्राजापत्यः।	27	31
	17	24	7	भौम	आश्ले	दि	2	43	षष्ठी	प्र	10	40	9-6 दिन से 8-34 रात तक गंडान्त, 2-43 दिन सिंह में चन्द्र, A	27	32
	17	25	8	बुध	मघा	दि	1	39	सप्त	प्र	8	44	चरः।	27	32
	17	26	9	गुरु	पूफा	दि	12	19	अष्ट	दि	6	32	5-56 शा कन्या में चन्द्र, **ज्येष्ठाष्टमी** क्षीरभवानी यात्रा, B Meenu's B.day (Eng)	27	33
	17	27	10	शुक्र	उफा	दि	10	44	नव	दि	4	7	शूलम्	27	33
	20	28	11	शनि	हस्त	दि	9	00	दश	दि	1	33	8-6 रात तुला में चन्द्र, मृत्युः।	26	34
	23	29	12	रवि	चित्र	दि	7	11	एका	दि	10	55	(स्वा प्र 5-22) 12-55 रात वृष में भौम, निर्जला एकादशी, काम्यः।	26	34
	23	30	13	सोम	विशा	प्र	3	41	द्वाद	दि	8	19	10-5 रात वृश्चिक में चन्द्र, मैत्रम्।	26	34
	23	31	14	भौम	अनू	प्र	2	12	त्रयो	दि	5	51	त्र्यहः (चर्तु प्र 3-36) 6-56 प्रातः मिथुन में बुध, मासान्त, वज्रम्	26	35
	25	आष	15	बुध	ज्येष्ठ	प्र	1	4	पूर्णि	प्र	1	43	1-4 रात धनु में चन्द्र और मलू आरम्भ, 4-25 दिन मिथुन में सूर्य मुहूर्त C	26	35

ज्येष्ठाष्टमी 9 जून

A कुमार षष्ठी आनन्दः B टिकर यात्रा मंजगाम यात्रा काश्मीर, जानीपुर जम्मू मुसलम C 15 समुद्री संक्रान्ति व्रत, **रूपभवानी जयन्ति** 7-15 शां से गण्डांत, चन्द्रग्रहण, ध्वांक्षः

मध्या : प्रति से दश तक अपने दिन, एका से चर्तु पहले दिन पूर्णि का अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से अष्ट तक अपने दिन नव से चर्तु पहले दिन पूर्णि का अपने दिन।

आषाढ कृष्ण पक्ष
वि 2068 ई० 2011

मिथुन में सूर्य, बुध। कन्या में शनि। वृश्चिक में राहु। मेष में बृहस्पति। वृष में भौम, शुक्र, केतु।

दिन	मान	आष	जून	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीषम ऋतु उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	25	2	16	गुरु	मूला	प्र	12	23	प्रति	प्र	12	16	6-51 प्रातः तक गंडान्त, धौमयः।	5/26	7/35
	25	3	17	शुक्र	पूषा	प्र	12	15	द्विती	प्र	11	23	प्रवर्धः।	27	36
	27	4	18	शनि	उषा	प्र	12	43	तृती	प्र	11	6	6-18 प्रातः मकर में चन्द्र, क्षयः।	27	36
	25	5	19	रवि	श्रव	प्र	1	50	चतु	प्र	11	29	संकट चतुर्थी, (रात 10-21) मुसलम्।	27	36
	25	6	20	सोम	धनि	प्र	3	35	पंच	प्र	12	31	2-38 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, शूलम्।	27	37
	25	7	21	भौम	शत		दिन	रात	षष्ठी	प्र	2	7	दक्षिणायन आरम्भ, मृत्युः।	28	37
	25	8	22	बुध	शत	दि	5	52	सप्त	प्र	4	10	1-51 रात मीन में चन्द्र, 4-5 दिन आर्द्रा में सूर्य, मानसम्।	28	37
	27	9	23	गुरु	पूभा	दि	8	33	अष्ट		दिन	रात	दिन अधिक, मुदगरम्।	28	37
	27	10	24	शुक्र	उभा	दि	11	28	अष्ट	दि	6	28	ध्वजः।	29	37
	25	11	25	शनि	रेव	दि	2	22	नव	दि	8	48	7-39 प्रातः से 9-6 शां तक गंडान्त, 2-22 दिन मेष में चन्द्र और पंचक A	29	37
	25	12	26	रवि	अश्वि	दि	5	3	दश	दि	10	58	आनन्दः।	29	38
	22	13	27	सोम	भरण	दि	7	21	एका	दि	12	46	1-51 रात वृष में चन्द्र, चरः।	30	38
	22	14	28	भौम	कृति	प्र	9	8	द्वाद	दि	2	4	12-44 रात कर्क में बुध, मुसलम्।	30	38
	22	15	29	बुध	रोहि	प्र	10	21	त्रयो	दि	2	46	12-29 दिन मिथुन में शुक्र, शूलम्।	30	38
	22	16	30	गुरु	मृग	प्र	10	57	चर्तु	दि	2	52	10-43 दिन मिथुन में चन्द्र, मृत्युः।	31	38
	20	17	जुलाई	शुक्र	आर्द्र	प्र	11	1	अमा	दि	2	23	काम्यः।	31	38

दक्षिणायन 21 जून

A समाप्त, प्राजापत्यः।

मध्या : प्रति से अष्ट तक अपने दिन, नव से दश पहले दिन, एका से अमा तक अपने दिन

श्राद्ध : प्रति से अष्ट तक अने दिन, नव से अमा तक पहले दिन।

आषाढ शुक्ल पक्ष
वि 2068 ई॰ 2011

मिथुन में सूर्य, शुक्र। कर्क में बुध। कन्या में शनि। वृश्चिक में राहु। मेष में गुरु। वृष में भोम, केतु।

दिन	मान	आष	जुला	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	17	18	2	शनि	पुर्न	प्र	10	34	प्रति	दि	1	23	4-44 दिन कर्क में चन्द्र, छत्रम्।	5/31	7/38
	17	19	3	रवि	तिष्य	प्र	9	44	द्विती	दि	11	55	श्रीवत्सः।	32	38
	17	20	4	सोम	आश्ले	प्र	8	34	तृती	दि	10	7	8-34 रात सिंह में चन्द्र, 2-56 दिन से 2'22 रात तक गंडान्त, सौम्यः।	32	38
	15	21	5	भौम	मघा	दि	7	12	चतु	दि	8	3	कालदण्डः।	32	38
	15	22	6	बुध	पूफा	दि	5	42	पंच	दि	5	48	त्र्यहः (षष्ठी प्र 3-29) 11-19 रात कन्या में चन्द्र, कुमार षष्ठी, स्थिरः।	33	38
	12	23	7	गुरु	उफा	दि	4	9	सप्त	प्र	1	8	हार सप्तमी मातंगः। **गुरु पुर्णिमा 15 जुलाई**	33	38
	12	24	8	शुक्र	हस्त	दि	2	37	अष्ट	प्र	10	50	1-53 रात तुला में चन्द्र **हार अष्टमी** अमृतम्।	34	38
	7	25	9	शनि	चित्र	दि	1	10	नव	प्र	8	38	**हार नवमी** शारिका जयन्ती, जयादेवी जयन्ती हारी पर्वत A	34	37
	7	26	10	रवि	स्वा	दि	11	51	दश	दि	6	34	4-58 रात वृश्चिक में चन्द्र, अलापकः।	35	37
	5	27	11	सोम	विशा	दि	10	42	एका	दि	4	42	देवश्यनी एकादशी, **हरिस्वाप**, मैत्रम्।	36	37
	0	28	12	भौम	अनू	दि	9	47	द्वाद	दि	3	4	श्री भग. गोपी नाथ जयन्ती, लोक भवन यात्रा 3-9 रात से गण्डान्त, वज्रम्	36	37
	0	29	13	बुध	ज्येष्ठ	दि	9	8	त्रयो	दि	1	44	3-1 दिन तक गण्डान्त, 9-8 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, ध्वांक्षः।	37	36
34	57	30	14	गुरु	मूला	दि	8	49	चर्तु	दि	12	44	**ज्वाला चतुर्दशी** खिव यात्रा, धौम्यः।	37	36
	55	31	15	शुक्र	पूषा	दि	8	54	पूर्णि	दि	12	9	3 बजे दिन मकर में चन्द्र, **गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा**, B	38	36

A श्री नगर/पलोडा जम्मू यात्रा काण्डः। B श्री छडी स्नान मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, मासान्त, प्रवर्धः।

मध्या : प्रति का अपने दिन, द्वित से षष्ठी तक पहले दिन, सप्त से पूर्णि तक अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से षष्ठ तक पहले दिन, सप्त से दश तक अपने दिन, एका से पूर्णि पहले दिन।

श्रावण कृष्ण पक्ष
वि. 2068 ई॰ 2011

मिथुन में सूर्य, शुक्र। कर्क में बुध। कन्या में शनि। वृश्चिक में राहु। मेष में गुरु। वृष में भौम केतु।

दिन	मान	श्रा	जुला	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	52	1	**16**	शनि	उषा	दि	9	26	**प्रति**	दि	12	2	3-19 रात कर्क में सूर्य, मुहूर्त 45 पहाडी, वर्षा ऋतु, **वहरात** क्षयः।	5/38	7/36
	52	2	**17**	रवि	श्रव	दि	10	28	**द्विती**	दि	12	26	11-11 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, संक्रान्ति व्रत, मुसलम्।	39	35
	47	3	**18**	सोम	धनि	दि	12	2	**तृती**	दि	1	22	संकट चतुर्थी, (9-23 रात) शूलम्।	39	35
	45	4	**19**	भौम	शत	दि	2	6	**चतु**	दि	2	49	मृत्युः।	40	35
	42	5	**20**	बुध	पूभा	दि	4	37	**पंच**	दि	4	44	9-57 दिन मीन में चन्द्र, 11-49 दिन सिंह में बुध, काम्यः।	40	35
	38	6	**21**	गुरु	उभा	दि	7	26	**षष्ठी**	दि	6	58	छत्रम्।	41	34
	35	7	**22**	शुक्र	रेव	प्र	10	23	**सप्त**	प्र	9	21	3-39 दिन से 5-8 रात तक गंडान्त 10-23 रात मेष में चन्द्र A	42	34
	31	8	**23**	शनि	अश्वि	प्र	1	15	**अष्ट**	प्र	11	39	11-53 रात कर्क में शुक्र, सौम्यः	42	33
	28	9	**24**	रवि	भरण	प्र	3	48	**नव**	प्र	1	38	कालदण्डः।	43	32
	25	10	**25**	सोम	कृति	**दिन रात**			**दश**	प्र	3	7	10-22 दिन वृष में चन्द्र, 6-24 शां मिथुन में भौम शुक्रास्त (5-5 प्रातः) स्थिरः।	44	32
	21	11	**26**	भौम	कृति	दि	5	51	**एका**	प्र	3	56	कमला एकादशी, मुसलम्।	45	31
	18	12	**27**	बुध	रोहि	दि	7	15	**द्वाद**	प्र	4	2	7-41 शां मिथुन में चन्द्र, शूलम्।	45	30
	15	13	**28**	गुरु	मृग	दि	7	56	**त्रयो**	प्र	3	23	मृत्युः।	45	28
	11	14	**29**	शुक्र	आर्द्र	दि	7	54	**चर्तु**	प्र	2	4	1-26 रात कर्क में चन्द्र, काम्यः।	46	28
	8	15	**30**	शनि	पूर्न	दि	7	12	**अमा**	प्र	12	9	छत्रम्।	47	27

शुक्रास्त 25 जुलाई

A और पंचक समाप्त शीतला सप्तमी, श्रीवत्सः।

मध्या : प्रति से अमा तक अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से षष्ठी तक पहले दिन, सप्त से अमा अपने दिन।

श्रावण शुक्ल पक्ष
वि 2068 ई॰ 2011

कर्कट में सूर्य, शुक्र। सिंह में बुध। कन्या में शनि। वृश्चिक में राहु। मेष में बृहस्पति। वृष में केतु। मिथुन में भौम।

दिन	मान	श्रा	जुला	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	5	16	31	रवि	तिष्य	दि	5	57	प्रति	प्र	9	47	(आश्ले प्र 4-16) 10-51 रात से गण्डान्त, 4-16 रात सिंह में चन्द्र, श्रीवत्सः।	5/47	7/26
	1	17	अग	सोम	मघा	प्र	2	19	द्विती	दि	7	शां6	9-49 दिन तक गण्डान्त, ध्वांक्षः।	48	25
33	56	18	2	भौम	पूफा	प्र	12	15	तृती	दि	4	15	धौम्यः।	49	25
	52	19	3	बुध	उफा	प्र	10	11	चतु	दि	1	21	5-43 प्रातः कन्या में चन्द्र, प्रवर्धः।	49	24
	48	20	4	गुरु	हस्त	प्र	8	16	पंच	दि	10	34	कुमार षष्ठी नाग पंचमी, क्षयः। Anmol B.day Indian	50	23
	48	21	5	शुक्र	चित्र	दि	6	36	षष्ठी	दि	7	58	त्र्यहः (सप्त प्र 5-39) 7-24 प्रातः तुला में चन्द्र, A	51	22
	42	22	6	शनि	स्वाति	दि	5	14	अष्ट	प्र	3	41	सिद्धः।	51	21
	38	23	7	रवि	विशा	दि	4	14	नव	प्र	2	5	10-27 दिन वृश्चिक में चन्द्र, उन्मूलम्।	52	20
	33	24	8	सोम	अनू	दि	3	36	दश	प्र	12	51	मानसम्। Anmol's B-day (Eng.)	53	19
	30	25	9	भौम	ज्येष्ठा	दि	3	21	एका	प्र	12	1	9-23 दिन से 9-17 रात तक गंडान्त, 3-21 दिन धनु में चन्द्र B	53	18
	26	26	10	बुध	मूला	दि	3	28	द्वाद	प्र	11	32	**श्रावण द्वादशी**, शोपियान यात्रा, ध्वजः	54	17
	21	27	11	गुरु	पूषा	दि	3	57	त्रयो	प्र	11	27	10-8 रात मकर में चन्द्र, प्राजापत्यः।	55	16
	17	28	12	शुक्र	उषा	दि	4	49	चर्तु	प्र	11	45	आनन्दः	55	15
	13	29	13	शनि	श्रव	दि	6	4	पूर्णि	प्र	12	27	श्री अमरनाथ यात्रा, **थजीवार यात्रा** बिजबिहारा, **रक्षा बन्धन**, स्थिरः।	56	14

श्रावण द्वाद 10 अगस्त

श्री अमरनाथ यात्रा 13 अगस्त

A श्री आफताब राम जयन्ती, गंजः B और मूल आरम्भ मुदगरम्

मध्या : प्रति से चर्तु तक अपने दिन, पंच से सप्त तक पहले दिन, अष्ट से पूर्णि तक अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति, द्विती अपने दिन, तृती से सप्त तक पहले दिन, अष्ट से पूर्णि तक अपने दिन।

भाद्र कृष्ण पक्ष
वि 2068 ई॰ 2011

कर्कट में सूर्य, शुक्र। सिंह में बुध। कन्या में शनि। वृश्चिक में राहु। मेष में बृहस्पति। वृष में केतु। मिथुन में मंगल।

दिन	मान	श्रा	अग	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
33	8	30	14	रवि	धनि	प्र	7	43	प्रति	प्र	1	34	6-51 प्रातः कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, मातंगः	5/57	7/13
	5	31	15	सोम	शत	प्र	9	47	द्विती	प्र	3	6	अमृतम्	58	12
	1	32	16	भौम	पूभा	प्र	12	14	तृती	प्र	5	1	5-35 शां मीन में चन्द्र, 12-32 रात कर्क में बुध, मासान्त, काण्डः।	58	11
32	56	भाद्र	17	बुध	उभा	प्र	3	00	चतु	दिन रात			दिन अधिक, संकट चतुर्थी, (8-51) 11-47 दिन सिंह में सूर्य A	59	10
	48	2	18	गुरु	रेव	प्र	5	58	चतु	दि	7	16	11-12 रात से गंडान्त, मैत्रम्।	6/0	9
	45	3	19	शुक्र	अश्वि	दिन रात			पंच	दि	9	42	**चन्द्र षष्ठी**, (9-52) 12-44 दिन तक गण्डान्त, 5-58 प्रातः B	0	8
	41	4	20	शनि	अश्वि	दि	9	00	षष्ठी	दि	12	10	सौम्यः। Shivi B-day (Indian)	1	7
	36	5	21	रवि	भरण	दि	11	51	सप्त	दि	2	25	6-30 शां वृष में चन्द्र जन्माष्टमी (11-9) कालदण्डः।	2	6
	32	6	22	सोम	कृति	दि	2	18	अष्ट	दि	4	14	स्थिरः।	2	4
	28	7	23	भौम	रोहि	दि	4	10	नव	दि	5	26	4-49 रात मिथुन में चन्द्र, मातंगः।	3	3
	22	8	24	बुध	मृग	दि	5	17	दश	दि	5	52	अमृतम्।	4	2
	18	9	25	गुरु	आर्द्र	दि	5	35	एका	दि	5	27	काण्डः।	4	1
	13	10	26	शुक्र	पुर्न	दि	5	4	द्वाद	दि	4	13	11-16 दिन कर्क में चन्द्र, अलापकः।	5	0
	10	11	27	शनि	तिष्य	दि	3	49	त्रयो	दि	2	14	मैत्रम्। V. Birthday (Eng.)	6	6/58
	6	12	28	रवि	आश्ले	दि	1	57	चर्तु	दि	11	38	8-28 दिन से 7-30 शां तक गंडान्त 1-57 दिन सिंह में चन्द्र, वज्रम्।	6	57
31	58	13	29	सोम	मघा	दि	11	37	अमा	दि	8	33	त्र्यहः (प्रति प्र 5-11) कुशामावसी, **सोमामावसी** ध्वांक्षः।	7	56

जन्माष्टमी 21 अगस्त

A मुहूर्त 45 दरियाई, संक्रान्ति व्रत 7-45 प्रातः सिंह में शुक्र, अलापकः। B मेष में चन्द्रमा और पंचक समाप्त वज्रम्

मध्या : प्रति से चर्तु तक अपने दिन, पंच का पहले दिन, षष्ठी से त्रयो तक अपने दिन, चर्तुद तथा अमा पहले दिन।

श्राद्ध : प्रति से चर्तु तक अपने दिन, पंच से अमा तक पहले दिन।

भाद्र शुक्ल पक्ष
वि 2068 ई॰ 2011

सिंह में सूर्य, शुक्र। कन्या में शनि। वृश्चि में राहु। मेष में बृहस्पति। वृष में केतु। मिथुन में भौम। कर्कट में बुध।

दिन	मान	भाद्र	अग	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
31	55	14	30	भौम	पूफा	दि	9	2	द्विती	प्र	1	41	2-21 दिन कन्या में चन्द्र, धौम्यः। V. Birthday (Indian)	6/7	6/55
	51	15	31	बुध	उफा	दि	6	21	तृती	प्र	10	15	(हस्त प्र 3-45) हरितालिका तृतीया, प्रवर्धः।	8	53
	46	16	सप्त	गुरु	चित्र	प्र	1	25	चतु	प्र	7	2	2-33 दिन तुला में चन्द्र, विनायक चतुर्थी, चरः	9	52
	40	17	2	शुक्र	स्वाति	प्र	11	28	पंच	दि	4	9	वराह पंचमी, कुमार षष्ठी, मुसलम्।	9	51
	36	18	3	शनि	विशा	प्र	10	1	षष्ठी	दि	1	45	4-20 दिन वृश्चिक में चन्द्र, शूलम्। Shivi B. day (Eng.)	10	50
	31	19	4	रवि	अनू	प्र	9	6	सप्त	दि	11	52	11-52 दिन तक **विजया सप्तमी मार्तण्ड** तीर्थ यात्रा, 2-17 रात सिंह बुध, मृत्युः	11	48
	25	20	5	सोम	ज्येष्ठ	प्र	8	46	अष्ट	दि	10	34	1 बजे दिन से 3 बजे रात तक गण्डान्त, 8-46 रात धनु में चन्द्र A	11	47
	21	21	6	भौम	मूला	प्र	8	58	नव	दि	9	49	छत्रम्।	12	46
	16	22	7	बुध	पूषा	प्र	9	40	दश	दि	9	37	3-55 रात मकर में चन्द्र, श्री वत्सः।	13	44
	10	23	8	गुरु	उषा	प्र	10	50	एका	दि	9	53	नारद एकादशी, गौतमनाग यात्रा, सौम्यः।	13	43
	6	24	9	शुक्र	श्रव	प्र	12	23	द्वाद	दि	10	36	3-43 दिन कर्क में भौम, धौम्यः।	14	42
	2	25	10	शनि	धनि	प्र	2	17	त्रयो	दि	11	42	1-17 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, 12-40 दिन कन्या में शुक्र B	15	40
30	56	26	11	रवि	शत	प्र	4	30	चर्तु	दि	1	9	अनन्त चतुर्दशी, अनन्तनाग यात्रा, पाप हरण नाग यात्रा क्षयः	15	39
	51	27	12	सोम	पूभा	दिन रात			पूर्णि	दि	2	56	12-22 रात मीन में चन्द्र, **पितृपक्षारम्भ, पूर्णिमा** तथा अकदोह का **श्राद्ध** गज	16	38

विजया सप्तमी 4 सितम्बर

पितृपक्षारम्भ 12 सितम्बर

A और मूल आरम्भ **गंगाष्टमी, शरदाष्टमी, लल्लेश्वरी जयन्ती, यज्ञ स्वा. स्वयमानन्द** आश्रम मुट्ठी जम्मू। यज्ञ आदर्श नगर, बनलालाब जम्मू। काम्यः। B व्यथ त्रोह वितस्ता तीर्थ यात्रा वेरीनाग, प्रवर्धः।

मध्या : प्रति का पहले दिन, द्विती से षष्ठी तक अपने दिन, सप्त से त्रयो तक पहले दिन, चर्तुद, पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति का पहले दिन, द्विती से पंचमी अंपने दिन, षष्ठी से पूर्णि पहले दिन।

आश्विन कृष्ण पक्ष
वि 2068 ई० 2011

सिंह में सूर्य, बुध। कन्या में शुक्र, शनि। वृश्चिक में राहु। मेष में बृहस्पति। वृष में केतु। कर्कट में भौम।

दिन	मान	भाद्र	सप्त	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
30	47	28	13	भौम	पूभा	दि	7	1	प्रति	दि	5	00	काण्डः।	6/16	6/36
	41	29	14	बुध	उभा	दि	9	48	द्विती	प्र	7	19	द्वय का श्राद्ध अलापकः	17	35
	36	30	15	गुरु	रेव	दि	12	46	तृती	प्र	9	49	त्रय का श्राद्ध 6-1 प्रातः से 7-32 शां तक गंडान्त, 12-46 दिन मेष में A	18	33
	32	31	16	शुक्र	अश्वि	दि	3	50	चतु	प्र	12	22	चोरम का श्राद्ध संकट चतुर्थी, (8-29) मासान्त, वज्रम्।	19	32
	26	असो	17	शनि	भरण	प्र	6	51	पंच	प्र	2	49	पंचम का श्राद्ध 1-35 रात वृष में चन्द्र, 11-46 दिन कन्या में सूर्य मुहूर्त B	19	31
	21	2	18	रवि	कृति	प्र	9	38	षष्ठी	प्र	4	57	षयम का श्राद्ध धौम्यः।	20	29
	17	3	19	सोम	रोहि	प्र	11	59	सप्त	दिन रात			सतम का श्राद्ध साहिब सप्तमी, प्रवर्धः।	20	28
	11	4	20	भौम	मृग	प्र	1	42	सप्त	दि	6	34	अष्ट का श्राद्ध 12-56 दिन मिथुन में चन्द्र, पं. प्रेम नाथ शास्त्री जयन्ती, क्षयः।	21	27
	7	5	21	बुध	आर्द्र	प्र	2	38	अष्ट	दि	7	30	नवं का श्राद्ध महालक्ष्मी अष्टमी गजः।	22	26
	3	6	22	गुरु	पुर्न	प्र	2	44	नव	दि	7	37	दहं का श्राद्ध 8-48 रात कर्क में चन्द्र, 4-56 रात कन्या में बुध, सिद्धः।	22	24
29	56	7	23	शुक्र	तिष्य	प्र	1	59	दश	दि	6	51	काह का श्राद्ध त्र्यहः (एका प्र 5-15) उन्मूलम्। B.K.B. dey	23	23
	52	8	24	शनि	आश्ले	प्र	12	28	द्वाद	प्र	2	52	बाह का श्राद्ध 12-28 रात सिंह में चन्द्र, 7-3 शां से गण्डान्त, मानसम्।	23	21
	48	9	25	रवि	मघा	प्र	10	17	त्रयो	प्र	11	52	त्रौवाह का श्राद्ध 5-59 प्रातः तक गंडान्त, मुद्गरम्।	24	20
	41	10	26	सोम	पूफा	प्र	7	37	चर्तु	प्र	8	23	चोदाह का श्राद्ध 12-54 रात कन्या में चन्द्र, ध्वजः।	25	19
	37	11	27	भौम	उफा	दि	4	40	अमा	दि	4	38	अमावसी का श्राद्ध पित्रामावसी, विजयेश्वर यात्रा प्राजापत्यः।	25	17

A चन्द्र और पंचक समाप्त, मैत्रम्। B 15 किनारी शरद ऋतु, हरुद, संक्रान्ति व्रत, ध्वांक्षः।

मध्या : प्रति से सप्त तक अपने दिन, अष्ट से एका पहले दिन द्वाद से अमा तक अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति पहले दिन, द्विती से सप्त तक अपने दिन, अष्ट से एका तक पहले दिन, द्वाद से अमा तक अपने दिन।

आश्विन शुक्ल पक्ष
वि 2068 ई॰ 2011

कन्या में सूर्य, बुध, शुक्र, शनि। वृश्चिक में राहु। मेष में बृहस्पति। वृष में केतु। कर्कट में भौम।

दिन	मान	अंश	सप्त	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
29	31	12	28	बुध	हस्त	दि	1	37	प्रति	दि	12	47	12-7 रात तुला में चन्द्र, नवरात्रारम्भ, आनन्दः।	6/26	6/16
	26	13	29	गुरु	चित्र	दि	10	40	द्विती	दि	9	2	त्र्यहः (तृती. प्र 5-32) चरः।	27	15
	22	14	30	शुक्र	स्वाति	दि	8	1	चतु	प्र	2	29	(विशा प्र 5-48) 12-8 रात वृश्चिक में चन्द्र, मुसलम्	27	13
	18	15	अक्टू	शनि	अनु	प्र	4	10	पंच	प्र	11	59	अमृतम्।	28	12
	11	16	2	रवि	ज्येष्ठ	प्र	3	12	षष्ठी	प्र	10	10	9-31 रात से गंडान्त, 3-12 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, A	29	11
	7	17	3	सोम	मूला	प्र	2	56	सप्त	प्र	9	2	9-3 दिन तक गंडान्त, अलापकः।	29	9
	3	18	4	भौम	पूषा	प्र	3	21	अष्ट	प्र	8	37	4-1 दिन तुला में शुक्र, **दुर्गाष्टमी**, मैत्रम्। Anju's B.day	30	8
28	56	19	5	बुध	उषा	प्र	4	25	नव	प्र	8	52	9-34 दिन मकर में चन्द्र, **महानवमी** नवदुर्गा विसर्जन, भद्रकाली यात्रा, वज्रम्	31	7
	51	20	6	गुरु	श्रव	प्र	6	1	दश	प्र	9	43	**विजया दशमी,** ध्वजः।	32	6
	47	21	7	शुक्र	धनि	दिन रात			एका	प्र	11	4	7 बजे शाम कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, पापांकुशा एकादशी, प्रजापत्यः।	32	4
	41	22	8	शनि	धनि	दि	8	4	द्वाद	प्र	12	49	प्रवर्धः।	33	3
	36	23	9	रवि	शत	दि	10	28	त्रयो	प्र	2	52	11-32 रात तुला में बुध, क्षयः।	34	2
	32	24	10	सोम	पूभा	दि	1	8	चर्तु	प्र	5	9	6-27 प्रातः मीन में चन्द्रमा, गजः।	34	6/0
	28	25	11	भौम	उभा	दि	3	59	पूर्णि	दिन रात			दिन अधिक, सिद्धः।	35	5/59
	21	26	12	बुध	रेव	प्र	6	58	पूर्णि	दि	7	35	6-58 शां मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 11-52 दिन से B	36	58

शुक्रोदय 2 अक्टूबर

दुर्गाष्टमी 4 अक्टूबर

A कुमार षष्ठी, काण्डः B 1-41 रात तक गण्डान्त उन्मूलम्।

मध्या : प्रति का अपने दिन, द्विती, तृती पहले दिन, चर्तु से पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से तृती पहले दिन, चर्तु से पूर्णिमा तक अपने दिन।

कार्तिक कृष्ण पक्ष

वि 2068 ई॰ 2011

कन्या में सूर्य, शनि। तुला में बुध, शुक्र। वृश्चिक में राहु। मेष में बृहस्पति। वृष में केतु। कर्कट में भौम।

दिन	मान	असो	अक्टू	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
28	16	27	13	गुरु	अश्वि	प्र	9	59	प्रति	दि	10	7	मानसम्। Archanas B. day (Western)	6/37	5/57
	12	28	14	शुक्र	भरण	प्र	12	59	द्विती	दि	12	39	मुद्गरम्।	37	56
	8	29	15	शनि	कृति	प्र	3	49	तृती	दि	3	5	ज्यो. आफताभ शर्मा निर्वाण दिवस संकट चतुर्थी A	38	54
	3	30	16	रवि	रोहि	प्र	6	22	चतु	दि	5	17	मासान्त प्राजापत्यः। Anjus B. day (Eng.)	39	53
27	58	कार्ति	17	सोम	मृग	दिन रात			पंच	प्र	7	6	7-28 शां मिथुन में चन्द्र, 11-45 रात तुला में सूर्य, B	40	52
	52	2	18	भौम	मृग	दि	8	28	षष्ठी	प्र	8	23	क्षयः। Archanas B. day (Indian)	40	51
	48	3	19	बुध	आर्द्र	दि	9	58	सप्त	प्र	8	59	4-38 रात कर्क में चन्द्र, गजः।	41	50
	43	4	20	गुरु	पुर्न	दि	10	46	अष्ट	प्र	8	49	सिद्धः।	42	49
	38	5	21	शुक्र	तिष्य	दि	10	47	नव	प्र	7	50	4-39 रात से गंडान्त, उन्मूलम्।	43	47
	30	6	22	शनि	आश्ले	दि	10	00	दश	प्र	6	4	3-46 दिन तक गंडान्त, 10 बजे दिन सिंह में चन्द्र, मानसम्।	43	46
	26	7	23	रवि	मघा	दि	8	29	एका	दि	3	35	(पूफा प्र 6-21) रमा एकादशी, मुदगरम्।	44	45
	21	8	24	सोम	उफा	प्र	3	43	द्वाद	दि	12	31	11-44 दिन कन्या में चन्द्र, ध्वजः।	45	44
	16	9	25	भौम	हस्त	प्र	12	47	त्रयो	दि	9	1	त्र्यहः (चर्तु प्र 5-16) सौम्यः।	46	43
	11	10	26	बुध	चित्र	प्र	9	43	अमा	प्र	1	25	11-15 दिन तुला में चन्द्र, दीपावली, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, कालदण्डः।	47	42

दीपावली 26 अक्टूबर

A करवा चौथ (7-49) 7-42 प्रातः वृष में चन्द्र, ध्वजः। B मुहूर्त 30 किनारी संक्रान्ति व्रत, आनन्दः।

मध्या : प्रति का पहले दिन, द्विती से द्वाद अपने दिन, त्रयो, चतुर्द का पहले दिन, अमा का अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से चर्तु पहले दिन, पंच से एका तक अपने दिन, द्वादशी, त्रयो, चर्तुद पहले दिन, अमा का अपने दिन।

कार्तिक शुक्ल पक्ष
वि 2068 ई० 2011

तुला में सूर्य, बुध, शुक्र। वृश्चिक में राहु। मेष में बृहस्पति। वृष में केतु। कर्कट में भौम। कन्या में शनि।

दिन	मान	कार्ति	अक्टू	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
27	3	11	27	गुरु	स्वाति	प्र	6	43	प्रति	प्र	9	41	स्थिरः।	6/47	5/41
26	58	12	28	शुक्र	विशा	दि	3	59	द्विती	प्र	6	13	10-38 दिन वृश्चिक में चन्द्र, 7-3 शाम वृश्चिक में शुक्र, **भाई दूज**, मातंगः	48	40
	53	13	29	शनि	अनू	दि	1	40	तृती	दि	3	12	3-21 दिन वृश्चिक में बुध, अमृतम्।	49	39
	48	14	30	रवि	ज्येष्ठ	दि	11	56	चतु	दि	12	46	11-56 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 10-4 रात सिंह A	50	38
	43	15	31	सोम	मूला	दि	10	54	पंच	दि	11	3	कुमार षष्ठी, अलापकः।	51	37
	38	16	नव	भौम	पूषा	दि	10	36	षष्ठी	दि	10	5	4-39 दिन मकर में चन्द्र, मैत्रम्	52	36
	35	17	2	बुध	उषा	दि	11	5	सप्त	दि	9	55	वज्रम्	52	35
	31	18	3	गुरु	श्रव	दि	12	18	अष्ट	दि	10	30	1-9 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, गोपालाष्टमी, ध्वजः।	53	34
	31	19	4	शुक्र	धनि	दि	2	8	नव	दि	11	46	प्राजापत्यः।	54	34
	28	20	5	शनि	शत	दि	4	29	दश	दि	1	34	आनन्दः।	55	33
	23	21	6	रवि	पूभा	प्र	7	12	एका	दि	3	46	12-30 दिन मीन में चन्द्र, हरि बोधिनी एकादशी, शिवस्वाप, चरः	56	32
	18	22	7	सोम	उभा	प्र	10	8	द्वाद	प्र	6	12	मुसलम्।	57	31
	13	23	8	भौम	रेव	प्र	1	9	त्रयो	प्र	8	46	1-9 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 6-22 शां से गण्डान्त, शूलम्।	58	30
	11	24	9	बुध	अश्विव	प्र	4	8	चर्तु	प्र	11	19	7-54 प्रातः तक गंडान्त, मृत्युः।	59	30
	11	25	10	गुरु	भरण	दिन रात			पूर्णि	प्र	1	45	कार्तिक पूर्णिमा, काम्यः।	59	29

कार्तिक पूर्णिमा 10 नवम्बर

A में भौम, 6-19 प्रातः से 5-31 शां तक गण्डान्त काण्डः

मध्या : प्रति से चतु अपने दिन, पंच से नव तक पहले दिन, दश से पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से तृती तक अपने दिन, चतु से एका तक पहले दिन, द्वाद से पूर्णि अपने दिन।

मार्ग कृष्ण पक्ष
वि 2068 ई॰ 2011

तुला में सूर्य। वृश्चिक में बुध, शुक्र राहु। मेष में बृहस्पति। वृष में केतु। सिंह में भौम, कन्या में शनि।

दिन	मान	काति	नव	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
26	8	26	11	शुक्र	भरण	दि	7	00	प्रति	प्र	4	1	1-42 दिन वृष में चन्द्र, मुदगरम्।	7/0	5/28
	1	27	12	शनि	कृति	दि	9	41	द्विती	प्र	6	0	ध्वजः।	1	28
	0	28	13	रवि	रोहि	दि	12	5	तृती	दिन रात			दिन अधिक 1-10 रात मिथुन में चन्द्र, प्राजापत्यः।	2	27
25	56	29	14	सोम	मृग	दि	2	9	तृती	दि	7	38	संकट चतुर्थी, (8-17) आनन्दः।	3	26
	53	30	15	भौम	आर्द्र	दि	3	46	चतु	दि	8	51	10-15 दिन **तुला में शनि**, मासान्त, चरः।	4	26
	48	मगर	16	बुध	पुर्न	दि	4	52	पंच	दि	9	32	10-39 दिन कर्क में चन्द्र, 11-34 रात वृश्चिक में सूर्य मुहर्त A	5	25
	43	2	17	गुरु	तिष्य	दि	5	24	षष्ठी	दि	9	39	शूलम्।	6	25
	41	3	18	शुक्र	आश्ले	दि	5	18	सप्त	दि	9	8	11-24 दिन से 11-21 रात तक गंडान्त, 5-18 दिन सिंह में चन्द्र, मृत्युः।	7	24
	38	4	19	शनि	मघा	दि	4	34	अष्ट	दि	7	59	त्र्यहः (नव प्र 6-12) महाकाल भरैवाष्टमी, काम्यः।	8	24
	33	5	20	रवि	पूफा	दि	3	15	दश	प्र	3	51	8-50 रात कन्या में चन्द्र, छत्रम्।	8	23
	31	6	21	सोम	उफा	दि	1	24	एका	प्र	1	1	10-35 रात धनु में शुक्र, उत्पन्ना एकादशी, श्रीवत्सः।	9	23
	26	7	22	भौम	हस्त	दि	11	8	द्वाद	प्र	9	51	9-52 रात तुला में चन्द्र, सौम्यः।	10	22
	26	8	23	बुध	चित्र	दि	8	34	त्रयो	प्र	6	27	(स्वा प्र 5-52) कालदण्डः।	11	22
	23	9	24	गुरु	विशा	प्र	3	12	चर्तु	दि	3	00	9-51 रात वृश्चिक में चन्द्र, प्रवर्धः।	12	22
	18	10	25	शुक्र	अनू	प्र	12	43	अमा	दि	11	39	क्षयः।	13	21

A 45 पहाडी, संक्रान्ति व्रत, हेमन्त ऋतु, मुसलम्।

मध्या : प्रति से तृती अपने दिनं, चतु से नव पहले दिन, दश से चर्तु अपने दिन, अमा का पहले दिन।

श्राद्ध : प्रति से तृती अपने दिन, चतु से नव पहले दिन, दश से चर्तु का अपने दिन, अमा का पहले दिन।

मार्ग शुक्ल पक्ष
वि 2068 ई॰ 2011

वृश्चिक में सूर्य, बुध, राहु। धनु में शुक्र। मेष में बृहस्पति। वृष में केतु। सिंह में भौम। तुला में शनि

दिन	मान	मग	नव	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	16	11	26	शनि	ज्येष्ठ	प्र	10	36	प्रति	दि	8	33	त्र्यहः (द्वि प्र 5-52) 10-36 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, A	7/14	5/21
	13	12	27	रवि	मूल	प्र	9	00	तृती	प्र	3	45	सिद्धः।	15	21
	11	13	28	सोम	पूषा	प्र	8	1	चतु	प्र	2	19	1-53 रात मकर मं चन्द्रमा, उन्मूलम्।	16	21
	8	14	29	भौम	उषा	प्र	7	46	पंच	प्र	1	38	मानसम्।	16	21
	3	15	30	बुध	श्रव	प्र	8	18	षष्ठी	प्र	1	45	कुमार षष्ठी, छत्रम्।	17	20
	2	16	दिस	गुरु	धनि	प्र	9	35	सप्त	प्र	2	39	8-51 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, श्रीवत्सः।	18	20
	1	17	2	शुक्र	शत	प्र	11	32	अष्ट	प्र	4	14	सौम्यः।	19	20
24	58	18	3	शनि	पूभा	प्र	2	3	नव	प्र	6	21	7-23 शां मीन में चन्द्र, कालदण्डः।	20	20
	56	19	4	रवि	उभा	प्र	4	55	दश	दिन रात			दिन अधक, स्थिरः।	21	20
	53	20	5	सोम	रेव	दिन रात			दश	दि	8	49	1-9 रात से गण्डान्त, मातंगः।	21	20
	55	21	6	भौम	रेव	दि	7	57	एका	दि	11	27	7-57 प्रातः मेष में चन्द्रमा और पंचक समाप्त, मोक्षदा एकादशी, B	22	20
	51	22	7	बुध	अश्वि	दि	10	58	द्वाद	दि	2	1	मृत्युः।	23	20
	48	23	8	गुरु	भरण	दि	1	48	त्रयो	दि	4	24	8-28 रात वृष में चन्द्र, काम्यः।	24	20
	48	24	9	शुक्र	कृति	दि	4	20	चर्तु	प्र	6	27	छत्रम्।	25	20
	47	25	10	शनि	रोहि	प्र	6	30	पूर्णि	प्र	8	6	**चन्द्रग्रहण** दतात्रेय जयन्ती, श्रीवत्सः।	25	21

गीता जयन्ती
6 दिसम्बर

A 5-2 शां से 3-56 रात तक गण्डान्त, गजः। B गीता जयन्ती, 2-43 दिन तक गण्डान्त शूलम्।

मध्या : प्रति, द्विती का पहले दिन, तृती से दश अपने दिन, एका का पहले दिन, द्वाद से पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति, द्विती का पहले दिन, तृती से दश अपने दिन, एका से त्रयो पहले दिन, चर्तु, पूर्णि अपने दिन।

पौष कृष्ण पक्ष
वि 2068 ई० 2011

वृश्चिक में सूर्य, बुध, राहु। धनु में शुक्र। मेष में बृहस्पति। वृष में केतु। सिंह में भौम। तुला में शनि।

दिन	मान	मग	दिस	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
24	46	26	11	रवि	मृग	प्र	8	15	प्रति	प्र	9	18	7-26 प्रातः मिथुन में चन्द्रमा, मुंजहर तहर, सौम्यः।	7/26	5/21
	43	27	12	सोम	आर्द्र	प्र	9	33	द्विती	प्र	10	3	कालदण्डः।	27	21
	41	28	13	भौम	पुर्न	प्र	10	25	तृती	प्र	10	21	4-15 दिन कर्क में चन्द्रमा, स्थिरः।	28	21
	42	29	14	बुध	तिष्य	प्र	10	51	चतु	प्र	10	11	संकट चतुर्थी, (9-8) मातंगः।	28	22
	41	30	15	गुरु	आश्ले	प्र	10	51	पंच	प्र	9	35	4-56 शां से 5-1 रात तक गण्डान्त, 10-51 रात सिंह में चन्द्रमा, A	29	22
	40	पौष	16	शुक्र	मघा	प्र	10	26	षष्ठी	प्र	8	34	2-12 दिन धनु में सूर्य, मुहूर्त 30 समुद्रीय, संक्रान्ति व्रत, काण्डः।	30	22
	41	2	17	शनि	पूफा	प्र	9	38	सप्त	प्र	7	8	3-22 रात कन्या में चन्द्र, अलापकः।	30	23
	37	3	18	रवि	उफा	प्र	8	27	अष्ट	दि	5	20	महाकाली जयन्ती, मैत्रम्।	31	23
	40	4	19	सोम	हस्त	प्र	6	57	नव	दि	3	12	वज्रम्।	31	23
	38	5	20	भौम	चित्र	दि	5	11	दश	दि	12	47	6-6 प्रातः तुला में चन्द्र स्वा. नन्द बव साहिब जयंन्ती, आनन्देश्वर B	32	24
	37	6	21	बुध	स्वाति	दि	3	14	एका	दि	10	9	त्र्यहः (द्वा प्र 7-24) **स्वा. राम जी जयन्ती**, उत्तरायण धौम्यः।	32	24
	38	7	22	गुरु	विशा	दि	1	11	त्रयो	प्र	4	39	7-42 प्रातः वृश्चिक में चन्द्र, प्रवर्धः।	32	24
	37	8	23	शुक्र	अनू	दि	11	10	चर्तु	प्र	2	00	3-40 रात से गण्डान्त, क्षयः।	34	25
	38	9	24	शनि	ज्येष्ठ	दि	9	17	अमा	प्र	11	36	2-50 दिन तक गण्डान्त, 9-17 दिन धनु में चन्द्र और C	34	26

मुंजहर तहर 11 दिसम्बर

यक्षामावसी 24 दिसम्बर

A 3-48 रात मकर् में शुक्र, मासान्त, अमृतम्। B भैरव जयन्ति ध्वांक्षः C मूल आरम्भ यक्षामावसी गजः।

मध्या : प्रति से दश तक अपने दिन, एका, द्वाद पहले दिन, त्रयो, चर्तु, अमा का अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से अष्टमी तक अपने दिन, नव से द्वाद पहले दिन, त्रयो से अमा अपने दिन।

पौष शुक्ल पक्ष
वि 2068 ई॰ 2011-12

धनु में सूर्य। मकर में शुक्र। मेष में बृहस्पति। वृष में केतु। सिंह में भौम। तुला में शनि। वृश्चिक में बुध, राहु

दिन	मान	पौष	दिस	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
24	37	10	25	रवि	मूला	दि	7	41	प्रति	प्र	9	33	(पूषा प्र 6-29) **श्री मिरज़काक जयन्ती** नगरोटा, सिद्धः।	7/35	5/26
	38	11	26	सोम	उषा	प्र	5	51	द्विती	प्र	8	1	12-16 दिन मकर में चन्द्रमा, मृत्युः।	35	27
	40	12	27	भौम	श्रव	प्र	5	50	तृती	प्र	7	6	काम्यः।	36	27
	40	13	28	बुध	धनि	प्र	6	33	चतु	प्र	6	53	6-6 शां कुम्भ में चन्द्रमा और पंचक आरम्भ, मैत्रम्।	36	28
	41	14	29	गुरु	शत	दिन रात			पंच	प्र	7	25	वज्रम्।	36	29
	40	15	30	शुक्र	शत	दि	7	58	षष्ठी	प्र	8	41	3'29 रात मीन में चन्द्रमा, कुमार षष्ठी, सौम्यः। Samir B-Day Eng.	37	30
	42	16	31	शनि	पूभा	दि	10	4	सप्त	प्र	10	35	कालदण्डः।	37	31
	43	17	जन	रवि	उभा	दि	12	48	अष्ट	प्र	12	58	**2012 ईस्वी**, स्थिरः।	37	29
	46	18	2	सोम	रेव	दि	3	38	नव	प्र	3	35	8-23 दिन से 10-23 रात तक गण्डान्त, 3-38 दिन A	37	30
	45	19	3	भौम	अश्वि	प्र	6	41	दश	प्र	6	12	अमृतम्।	37	31
	47	20	4	बुध	भरण	प्र	9	37	एका	दिन रात			दिन अधिक, 4-18 रात वृष में चन्द्रमा, 7-12 प्रातः धनु में बुध। काण्डः।	37	32
	51	21	5	गुरु	कृति	प्र	12	13	एका	दि	8	35	पुत्रदा एकादशी, अलापकः।	38	32
	52	22	6	शुक्र	रोहि	प्र	2	20	द्वाद	दि	10	33	मैत्रम्।	38	33
	55	23	7	शनि	मृग	प्र	3	53	त्रयो	दि	11	57	3-11 दिन मिथुन में चन्द्रमा वज्रम्।	38	34
	57	24	8	रवि	आर्द्र	प्र	4	52	चर्तु	दि	12	46	ध्वांक्षः।	38	36
25	0	25	9	सोम	पुर्न	प्र	5	18	पूर्णि	दि	12	59	11-14 रात कर्कट में चन्द्रमा, 1-38 दिन कुम्भ में शुक्र, धौम्यः।	39	37

A मेष में चन्द्रमा और पंचक समाप्त, मातंगः।

मध्या : प्रति से एका तक अपने दिन, द्वाद, त्रयो का पहले दिन, चर्तु, पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से एका तक अपने दिन। द्वाद से पूर्णि तक पहले दिन।

माघ कृष्ण पक्ष
वि 2068 ई० 2012

धनु में सूर्य, बुध। कुम्भ में शुक्र। मेष में बृहस्पति। वृष में केतु। सिंह में भौम। तुला में शनि। वृश्चिक में राहु।

दिन	मान	पौष	जन	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	0	26	10	भौम	तिष्य	प्र	5	15	प्रति	दि	12	39	प्रवर्धः।	7/39	5/38
	3	27	11	बुध	आश्ले	प्र	4	47	द्विती	दि	11	51	4-47 रात सिंह में चन्द्रमा, 11-3 रात से गण्डान्त, क्षयः।	39	38
	7	28	12	गुरु	मघा	प्र	4	1	तृती	दि	10	40	संकट चतुर्थी (9-5) 10-38 दिन तक गण्डान्त, गजः।	38	39
	10	29	13	शुक्र	पूफा	प्र	3	1	चतु	दि	9	10	त्र्यहः (पंच प्र 7-27) मासान्त, सिद्धः।	38	39
	12	माघ	14	शनि	उफा	प्र	1	50	षष्ठी	प्र	5	36	8-44 दिन कन्या में चन्द्रमा, 12-56 रात मकर में सूर्य, A	38	40
	15	2	15	रवि	हस्त	प्र	12	34	सप्त	प्र	3	38	**साहिब सप्तमी, शिशर संक्रान्ति** व्रत, मानसम्।	38	42
	17	3	16	सोम	चित्र	प्र	11	14	अष्ट	प्र	1	36	11-54 दिन तुला में चन्द्रमा, काम्यः।	37	43
	21	4	17	भौम	स्वा	प्र	9	51	नव	प्र	11	33	ध्वजः।	37	43
	25	5	18	बुध	विशा	प्र	8	29	दश	प्र	9	30	2-50 दिन वृश्चिक में चन्द्रमा, प्राजापत्यः।	37	44
	27	6	19	गुरु	अनू	प्र	7	7	एका	प्र	7	29	षट्तिला एकादशी, आनन्दः।	36	45
	31	7	20	शुक्र	ज्येष्ठ	प्र	5	55	द्वाद	दि	5	34	5-55 शां धनु में चन्द्रमा और मूल आरम्भ, 12-13 दिन से 11-36 रात तक B	36	46
	32	8	21	शनि	मूल	दि	4	50	त्रयो	दि	3	49	**शिवचतुर्दशी, स्वा. रामजी निर्वाण दिवस,** मुसलम्।	36	47
	35	9	22	रवि	पूषा	दि	4	00	चर्तु	दि	2	19	9-51 रात मकर में चन्द्रमा, शूलम्।	35	48
	38	10	23	सोम	उषा	दि	3	31	अमा	दि	1	8	सोमामावसी मृत्युः।	35	49

शिवचतुर्दशी 21 जनवरी

A मुहूर्त 45 किनारी शिशर ऋतु, उन्मूलम्। B गण्डान्त, चरः।

मध्या : प्रति का अपने दिन, द्वि से पंच पहले दिन, षष्ठी से अमा तक अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से पंच पहले दिन, षष्ठी से द्वाद अपने दिन, त्रयो से अमा पहले दिन।

माघ शुक्ल पक्ष
वि 2068 ई॰ 2012

मकर में सूर्य। कुम्भ में शुक्र। मेष में बृहस्पति। वृष में केतु। सिंह में भौम। तुला में शनि। वृश्चिक में राहु। धनु में बुध।

दिन	मान	माघ	जन	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	42	11	**24**	भौम	श्रवण	दि	3	28	**प्रति**	दि	12	25	3-39 रात कुम्भ में चन्द्रमा और पंचक आरम्भ, 6-53 प्रातः मकर A	7/35	5/50
	48	12	**25**	बुध	धनि	दि	3	58	**द्विती**	दि	12	14	मैत्रम्।	35	51
	50	13	**26**	गुरु	शत	दि	5	4	**तृती**	दि	12	41	गौरी तृतीया वज्रम्	34	52
	53	14	**27**	शुक्र	पूभा	प्र	6	47	**चतु**	दि	1	47	12-18 दिन मीन में चन्द्र, त्रिपुरा चतुर्थी, ध्वांक्षः।	33	53
	57	15	**28**	शनि	उभा	प्र	9	6	**पंच**	दि	3	30	कुमार षष्ठी, वसन्त पंचमी, धौम्यः।	32	54
26	1	16	**29**	रवि	रेव	प्र	11	52	**षष्ठी**	दि	5	44	5-8 शां से गण्डान्त, 11-52 रात मेष में चन्द्रमा और पंचक समाप्त, प्रवर्धः	32	55
	6	17	**30**	सोम	अश्वि	प्र	2	55	**सप्त**	प्र	8	19	6-38 प्रातः तक गण्डान्त, **सूर्य सप्तमी,** मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, B	31	56
	10	18	**31**	भौम	भरण	प्र	5	58	**अष्ट**	प्र	10	58	भीष्माष्टमी, यज्ञ स्वा. लालाजी, भगवती नगर जम्मू, गजः।	31	57
	13	19	**फर**	बुध	कृति		दिन	रात	**नव**	प्र	1	27	12-43 दिन वृष में चन्द्र, सिद्धः।	30	57
	18	20	**2**	गुरु	कृति	दि	8	48	**दश**	प्र	3	30	अलापकः।	29	58
	22	21	**3**	शुक्र	रोहि	दि	11	9	**एका**	प्र	4	56	12-6 रात मिथुन में चन्द्र, 10-28 दिन मीन में शुक्र, भीमसेन एकादशी, मैत्रम्।	29	58
	26	22	**4**	शनि	मृग	दि	12	53	**द्वाद**	प्र	5	37	वज्रम्।	28	59
	31	23	**5**	रवि	आर्द्र	दि	1	53	**त्रयो**	प्र	5	33	ध्वांक्षः।	28	6/0
	33	24	**6**	सोम	पुर्न	दि	2	10	**चर्तु**	प्र	4	47	8-9 दिन कर्कट में चन्द्र, **यक्ष चतुर्दशी** धौम्यः।	27	2
	38	25	**7**	भौम	तिष्य	दि	1	47	**पूर्णि**	प्र	3	23	माघ पूर्णिमा, काव पूर्णिमा, प्रवर्धः।	26	3

गौरी तृतीया 26 जनवरी

काव पूर्णिमा 7 फरवरी

A में बुध अलापकः। B पलोडा, कश्मीर क्षयः।

मध्या : प्रति से पूर्णि तक अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से षष्ठी तक पहले दिन, सप्त से पूर्णि अपने दिन।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

वि 2068 ई॰ 2012

मकर में सूर्य, बुध। मीन में शुक्र। मेष में बृहस्पति। वृष में केतु। सिंह में भौम। तुला में शनि। वृश्चिक में राहु।

दिन	मान	माघ	फर	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
26	48	26	8	बुध	आश्ले	दि	12	51	प्रति	प्र	1	30	12-51 दिन सिंह में चन्द्रमा, 7-8 प्रातः से 6-37 शां तक A	7/25	6/4
	46	27	9	गुरु	मघा	दि	11	29	द्विती	प्र	11	17	गजः।	24	5
	51	28	10	शुक्र	पूफा	दि	9	52	तृती	प्र	8	52	3-26 दिन कन्या मे चन्द्रमा, संकट चतुर्थी (9-3) 12-9 रात कुम्भ मे बुध, सिद्धः।	23	6
	56	29	11	शनि	उफा	दि	8	6	चतु	प्र	6	23	(हस्त प्र 6-21) उन्मूलम्।	26	7
27	1	30	12	रवि	चित्रा	प्र	4	48	पंच	दि	3	57	5-30 शां तुला में चन्द्रमा, मासान्त, काम्यः।	22	7
	6	फा	13	सोम	स्वाति	प्र	3	11	षष्ठी	दि	1	38	1-56 दिन कुम्भ में सूर्य मुहूर्त 15 दरियाई, संक्रान्ति व्रत, छत्रम्।	21	8
	11	2	14	भौम	विशा	प्र	1	54	सप्त	दि	11	31	8-12 रात वृश्चिक में चन्द्रमा, श्रीवत्सः।	20	9
	16	3	15	बुध	अनू	प्र	12	52	अष्ट	दि	9	38	**होराष्टमी**, चक्रीश्वर यात्रा, श्री नगर-प्लोडा जम्मू, सौम्यः।	19	9
	21	4	16	गुरु	ज्येष्ठ	प्र	12	4	नव	दि	8	00	त्र्यहः (दश प्र 6-37) 12-4 रात धनु में चन्द्रमा और मूल आरम्भ, B	18	10
	23	5	17	शुक्र	मूला	प्र	11	32	एका	प्र	5	29	विजया एकादशी, स्थिरः।	17	11
	28	6	18	शनि	पूषा	प्र	11	15	द्वाद	प्र	4	37	मातंगः।	16	12
	33	7	19	रवि	उषा	प्र	11	15	त्रयो	प्र	4	4	5-13 प्रातः मकर में चन्द्रमा, **शिवरात्रि - हेरथ**, अमृतम्।	15	13
	38	8	20	सोम	श्रव	प्र	11	35	चर्तु	प्र	3	51	**शिवचतुर्दशी**, सिद्धः।	14	14
	43	9	21	भौम	धनि	प्र	12	19	अमा	प्र	4	4	11-54 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, डून्य-अमावसी, वटुक परमुजुन उन्मूलम्।	13	15

शिवरात्री 19 फरवरी

A गण्डान्त, हुरि **अकदोह** स्वा. जीवन साहब यज्ञ, लुदव, क्षयः। B 5-09 शां से 5-07 रात तक गण्डान्त, कालदण्डः

मध्या : प्रति से षष्ठी तक अपने दिन, सप्त से दश तक पहले दिन, एका से अमा तक अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से पंच तक अपने दिन, षष्ठी से दश तक पहले दिन, एका से अमा अपने दिन।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष
वि 2068 ई॰ 2012

कुम्भ में सूर्य, बुध। मीन में शुक्र। मेष में बृहस्पति। वृष में केतु। सिंह में भौम। तुला में शनि। वृश्चिक में राहु।

दिन	मान	फा	फर	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
27	48	10	22	बुध	शत	प्र	1	29	प्रति	प्र	4	44	मानसम्।	7/12	6/16
	51	11	23	गुरु	पूभा	प्र	3	9	द्विती	प्र	5	56	8-41 रात मीन में चन्द्रमा, मुदगरम्।	11	17
	56	12	24	शुक्र	उभा	प्र	5	19	तृती	दिन रात			दिन अधिक ध्वजः।	10	17
28	2	13	25	शनि	रेव	दिन रात			तृती	दि	7	39	1-8 रात से गण्डान्त, प्राजापत्यः।	9	18
	8	14	26	रवि	रेव	दि	7	56	चतु	दि	9	50	2-39 दिन तक गण्डान्त, 7-56 प्रातः मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त प्रवर्धः	7	19
	13	15	27	सोम	अश्वि	दि	10	54	पंच	दि	12	22	कुमार षष्ठी, 4-9 दिन मीन में बुध, क्षयः।	6	20
	18	16	28	भौम	भरण	दि	2	2	षष्ठी	दि	3	3	8-49 रात वृष में चन्द्रमा, गजः।	5	20
	21	17	29	बुध	कृति	दि	5	5	सप्त	दि	5	40	7-21 प्रातः मेष में शुक्र, सिद्धः।	4	21
	26	18	मार्च	गुरु	रोहि	प्र	7	49	अष्ट	प्र	7	54	8-59 दिन मिथुन में चन्द्रमा **तैलाष्टमी**, उन्मूलम्।	3	22
	32	19	2	शुक्र	मृग	प्र	9	59	नव	प्र	9	34	मानसम्।	2	23
	38	20	3	शनि	आर्द्र	प्र	11	24	दश	प्र	10	27	मुदगरम्।	1	24
	43	21	4	रवि	पुर्न	प्र	12	1	एका	प्र	10	29	5-56 शां कर्कट में चन्द्रमा, ध्वजः।	0	25
	46	22	5	सोम	तिष्य	प्र	11	48	द्वाद	प्र	9	41	प्राजपत्यः।	6/58	26
	52	23	6	भौम	आश्ले	प्र	10	50	त्रयो	प्र	8	6	5-18 शां से 4-50 रात तक गण्डान्त, 10-50 रात सिंह में चन्द्रमा, आनन्दः।	57	27
	58	24	7	बुध	मघा	प्र	9	15	चर्तु	दि	5	52	चरः।	55	28
	58	25	8	गुरु	पूफा	प्र	7	12	पूर्णि	दि	3	9	12-38 रात कन्या में चन्द्रमा, **होली**, मुसलम्।	54	29

होली
8 मार्च

मध्या : प्रति से तृती तक अपने दिन, चतु का पहले दिन, पंच से पूर्णि अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से तृती तक अपने दिन, चतु से सप्त तक पहले दिन, अष्ट से चर्तु तक अपने दिन, पूर्णि का पहले दिन।

चैत्र कृष्ण पक्ष

वि 2068 ई॰ 2012

कुम्भ में सूर्य। मीन में बुध। मेष में बृहस्पति, शुक्र। वृष में केतु। सिंह में भौम। तुला में शनि। वृश्चिक में राहु।

दिन	मान	फा	मार्च	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
28	58	26	9	शुक्र	उफा	दि	4	51	प्रति	दि	12	6	शूलम्।	6/53	6/30
29	3	27	10	शनि	हस्त	दि	2	25	द्विती	दि	8	55	त्र्यहः (तृती प्र 5-44) 1-12 रात तुला में चन्द्रमा, मृत्युः। Rakesh ji B.day (Eng.)	52	31
	9	28	11	रवि	चित्र	दि	12	1	चतु	प्र	2	43	संकट चतुर्थी, (10-13) काम्यः।	50	32
	12	29	12	सोम	स्वाति	दि	9	50	पंच	प्र	11	59	2-24 रात वृश्चिक में चन्द्रमा, छत्रम्।	49	32
	18	30	13	भौम	विशा	दि	7	58	षष्ठी	प्र	9	37	(अनू प्र 6-29) थालभरुण, मासान्त, श्रीवत्सः।	48	33
	23	चैत्र	14	बुध	ज्येष्ठ	प्र	5	27	सप्त	प्र	7	42	11-32 रात से गण्डान्त, 10-49 दिन मीन में सूर्य, मुहूर्त 15 समुद्रीय, सोन्थ A	47	33
	26	2	15	गुरु	मूला	प्र	4	53	अष्ट	दि	6	14	5-27 प्रातः धनु में चन्द्रमा और मूल आरम्भ, धौम्यः।	45	33
	32	3	16	शुक्र	पूषा	प्र	4	46	नव	दि	5	14	प्रवर्धः।	44	34
	38	4	17	शनि	उषा	प्र	5	4	दश	दि	4	41	10-48 दिन मकर में चन्द्रमा, क्षयः।	43	34
	43	5	18	रवि	श्रव	प्र	5	47	एका	दि	4	33	मुसलम्। Rakesh ji B.day (Indian)	42	35
	47	6	19	सोम	धनि	दिन रात			द्वाद	दि	4	50	6-18 शां कुम्भ में चन्द्रमा और पंचक आरम्भ, शूलम्	41	36
	53	7	20	भौम	धनि	दि	6	54	त्रयो	दि	5	32	उन्मूलम्।	40	36
	54	8	21	बुध	शत	दि	8	24	चर्तु	दि	6	37	3-46 रात मीन में चन्द्र, मानसम्।	39	37
	55	9	22	गुरु	पूभा	दि	10	17	अमा	प्र	8	6	थाल भरुण, चैत्रामावसी, विचार नाग यात्रा, श्री भट्टदिवस, मुद्गरम्।	38	38

थाल भरुण 13 मार्च

सोन्थ 14 मार्च

थाल भरुण 22 मार्च

A थालस बुथ वुछुन, वसन्त ऋतु, संक्रान्ति व्रत, ध्वांक्षः।

मध्या : प्रति का अपने दिन, द्वि/तृती का पहले दिन, चतु से अमा तक अपने दिन।

श्राद्ध : प्रति से तृती पहले दिन, चतु से अष्ट तक अपने दिन, नव से चतु का पहले दिन, अमा का अपने दिन।

मुहूर्त प्रक्रण

विक्र 2068 ईस्वी 2011-12 के लिये

साथ रटुन

(यज्ञोपवीत तथा विवाह के लिये वस्त्र, मसाला, अग्निवत्र लिवुन, धरनावय मंजलागज्य, मस मुचरुन इत्यादि)

वैशाख कृष्ण पक्ष

1 मई त्रयोदशी रविवार
11 बजे 30 रात से

वैशाख शुक्ल पक्ष

5 मई द्वितीया गुरुवार
6 मई तृतीया शुक्रवार
8 मई पंचमी रविवार
10-4 दिन से
9 मई षष्ठी सोमवार
16 मई चतुर्दशी सोमवार
7-39 रात से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदा बुधवार
19 मई द्वितीया गुरुवार
22 मई पंचमी रविवार
23 मई षष्ठी सोमवार
29 मई द्वादशी रविवार
30 मई त्रयोदशी सोमवार
9-9 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

3 जून द्वितीया शुक्रवार
3-22 दिन तक
6 जून पंचमी सोमवार
3-27 दिन तक
10 जून नवमी शुक्रवार
4-7 दिन से
12 जून एकादशी रविवार
13 जून द्वादशी सोमवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

26 जून दशमी रविवार
5-3 दिन तक
29 जून त्रयोदशी बुधवार
2-46 दिन तक

आषाढ शुक्ल पक्ष

3 जुलाई द्वितीया रविवार
7 जुलाई सप्तमी गुरुवार
4-9 दिन से
8 जुलाई अष्टमी शुक्रवार
10 जुलाई दशमी रविवार
11 जुलाई एकादशी सोमवार
13 जुलाई त्रयोदशी बुधवार
9-8 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

6 अक्टूबर दशमी गुरुवार
12 अक्टूबर पूर्णिमा बुधवार
6-58 शाम से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार

19 अक्टूबर सप्तमी बुधवार

9-58 दिन से

20 अक्टूबर अष्टमी गुरुवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

27 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार

28 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

2 नवम्बर सप्तमी बुधवार

3 नवम्बर अष्टमी गुरुवार

10-30 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

14 नवम्बर तृतीया सोमवार

7-38 प्रातः तक

17 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

5-24 दिन तक

21 नवम्बर एकादशी सोमवार

1-24 दिन से

23 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

30 नवम्बर षष्ठी बुधवार

7 दिसम्बर द्वादशी बुधवार

10-58 दिन तक

9 दिसम्बर चतुर्दशी शुक्रवार

6-27 शाम से

पौष कृष्ण पक्ष

11 दिसम्बर प्रतिपदा रविवार

12 दिसम्बर द्वितीया सोमवार

9-33 रात से

माघ कृष्ण पक्ष

16 जनवरी अष्टमी सोमवार

18 जनवरी दशमी बुधवार

19 जनवरी एकादशी गुरुवार

20 जनवरी द्वादशी शुक्रवार

23 जनवरी अमावसी सोमवार

3-31 दिन से

माघ शुक्ल पक्ष

30 जनवरी सप्तमी सोमवार

2 फरवरी दशमी गुरुवार

8-48 दिन से

3 फरवरी एकादशी शुक्रवार

5 फरवरी त्रयोदशी रविवार

1-53 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

16 फरवरी नवमी गुरुवार

फाल्गुल शुक्ल पक्ष

26 फरवरी चतुर्थी रविवार

9-50 दिन से

29 फरवरी सप्तमी बुधवार

5-5 दिन से

1 मार्च अष्टमी गुरुवार

4 मार्च एकादशी रविवार

5 मार्च द्वादशी सोमवार

यज्ञोपवीत मुहूर्त (मेखलि साथ)

वैशख शुक्ल पक्ष

5 मई द्वितीया गुरुवार

8-7 दिन से

10-23 दिन तक (मि)

6 मई तृतीया शुक्रवार
8-3 दिन से
10-19 दिन तक (मि)
9 मई षष्ठी सोमवार
10-19 दिन से
12-30 दिन तक (क)
13 मई दशमी शुक्रवार
7-36 प्रातः से
9-51 दिन तक (मि)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

19 मई द्वितीया गुरुवार
7-12 प्रातः से
9-27 दिन तक (मि)
22 मई पंचमी रविवार
7 बजे प्रातः से
9-16 दिन तक (मि)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

3 जून द्वितीया शुक्रवार
6-13 प्रातः से
8-28 दिन तक (मि)
12 जून एकादशी रविवार
5-38 प्रातः से
7-53 प्रातः तक (मि)

आषाढ कृष्ण पक्ष

20 जून पंचमी सोमवार
9-45 दिन से
12-7 दिन तक (सिं)

आषाढ शुक्ल पक्ष

7 जुलाई सप्तमी गुरुवार
8-38 दिन से
11 बजे दिन तक (सिं)
10 जुलाई दशमी रविवार
8-27 दिन से
10-48 दिन तक (सिं)
11 जुलाई एकादशी सोमवार
1-5 दिन से
3-28 दिन तक (तु)

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई तृतीया सोमवार
12-37 दिन से
1-22 दिन तक (तु)

आश्विन शुक्ल पक्ष

6 अक्टूबर दशमी गुरुवार
7-23 प्रातः से
9-46 दिन तक (तु)
7 अक्टूबर एकादशी शुक्रवार
7-19 प्रातः से
9-42 दिन तक (तु)
9 अक्टूबर त्रयोदशी रविवार
7-11 प्रातः से
9-34 दिन तक (तु)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
11-39 दिन से
1-42 दिन तक (ध)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

4 नवम्बर नवमी शुक्रवार
11-46 दिन से
12-15 दिन तक (ध)
7 नवम्बर द्वादशी सोमवार
10-1 दिन से

12-1 दिन तक (ध)

मार्ग कृष्ण पक्ष

14 नवम्बर तृतीया सोमवार
7-13 प्रातः से
7-38 प्रातः तक (वृँ)

मार्ग शुक्ल पक्ष

30 नवम्बर षष्ठी बुधवार
8-31 दिन से
10-33 दिन तक (ध)

1 दिसम्बर सप्तमी गुरुवार
8-27 दिन से
10-29 दिन तक (ध)

5 दिसम्बर दशमी सोमवार
8-11 दिन से
10-13 दिन तक (ध)

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी द्वितीया बुधवार
9-57 दिन से
11-16 दिन तक (मी)

26 जनवरी तृतीया गुरुवार
9-53 दिन से
11-12 दिन तक (मी)

30 जनवरी सप्तमी सोमवार
8-12 दिन से
9-37 दिन तक (कु)

2 फरवरी दशमी गुरुवार
8 बजे दिन से
9-25 दिन तक (कुं)

3 फरवरी एकादशी शुक्रवार
7-56 प्रातः से
9-21 दिन तक (कुं)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी तृतीया शुक्रवार
10-50 दिन से
12-43 दिन तक (वृ)

4 मार्च एकादशी रविवार
10-18 दिन से
12-11 दिन तक (वृ)

5 मार्च द्वादशी सोमवार
7-23 प्रातः से
8-43 दिन तक (मी)

विवाह मुहूर्त

वैशाख शुक्ल पक्ष

5 मई द्वितीया गुरुवार
10-23 दिन से
12-46 दिन तक (क)
12-15 रात से
1-54 रात तक (म)

6 मई तृतीया शुक्रवार
10-19 दिन से
12-42 दिन तक (क)
12-11 रात से
1-50 रात तक (म)

11 मई अष्टमी बुधवार
9-59 दिन से
12-23 दिन तक (क)
11-51 रात से
1-30 रात तक (म)

13 मई दशमी शुक्रवार
9-51 दिन से
12-15 दिन तक (क)
11-44 रात से
1-22 रात तक (म)

16 मई चतुर्दशी सोमवार
12-3 दिन से
2-25 दिन तक (सिं)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदि बुधवार
11-55 दिन से
2-17 दिन तक (सिं)
21 मई चतुर्थी शनिवार
12-51 रात से
2-16 रात तक (कुं)
22 मई पंचमी रविवार
11-39 दिन से
2-1 दिन तक (सिं)
12-47 रात से
2-12 रात तक (कुं)
23 मई षष्ठी सोमवार
11-35 दिन से
1-57 दिन तक (सिं)
12-43 रात से
2-8 रात तक (कुं)
28 मई एकादशी शनिवार
8-52 दिन से
11-16 दिन तक (क)
12-13 रात से
1-49 रात तक (कुं)
29 मई द्वादशी रविवार
8-48 प्रातः से
11-12 दिन तक (क)
12-19 रात से
1-45 रात तक (कुं)
30 मई त्रयोदशी सोमावर
8-44 दिन से
9-9 दिन तक (क)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

3 जून द्वितीया शुक्रवार
10-52 दिन से
1-14 दिन तक (सिं)
8 जून सप्तमी बुधवार
8-9 दिन से
10-32 दिन तक (क)
9 जून अष्टमी गुरुवार
11-36 रात से
1-1 रात तक (कुं)
10 जून नवमी शुक्रवार
10-25 दिन से
10-44 दिन तक (सिं)
11 जून दशमी शनिवार
10-21 दिन से
12-42 दिन तक (सिं)
11-32 रात से
12-57 रात तक (कुं)
12 जून एकादशी रविवार
10-17 दिन से
12-38 दिन तक (सिं)
11-24 रात से
12-50 रात तक (कुं)

आषाढ कृष्ण पक्ष

18 जून तृतीया शनिवार
1-45 रात से
3-17 रात तक (मे)
19 जून चतुर्थी रविवार
9-49 दिन से
12-11 दिन तक (सिं)
10-57 रात से
12-22 रात तक (कुं)
20 जून पंचमी सोमवार

9-45 दिन से
12-7 दिन तक (सिं)
1-38 रात से
3-9 रात तक (मे)
24 जून अष्टमी शुक्रवार
2-10 दिन से
4-35 दिन तक (तु)
10-37 रात से
12-2 रात तक (कुं)
25 जून नवमी शनिवार
9-26 दिन से
11-47 दिन तक (सिं)
10-33 रात से
11-51 रात तक (कुं)
26 जून दशमी रविवार
9-22 दिन से
11-43 दिन तक (सिं)

29 जून त्रयोदशी बुधवार
10-21 रात से
11-43 रात तक (कुं)
30 जून चतुर्दशी गुरुवार
9-6 दिन से
11-28 दिन तक (सिं)

आषाढ शुक्ल पक्ष

4 जुलाई तृतीया सोमवार
9-51 रात से
11-23 रात तक (कुं)
6 जुलाई पंचमी बुधवार
9-50 रात से
11-15 रात तक (कुं)
7 जुलाई सप्तमी गुरुवार
1-21 दिन से
3-44 दिन तक (तु)

8 जुलाई अष्टमी शुक्रवार
2-37 दिन से
3-40 दिन तक (तु)
9-42 रात से
11-7 रात तक (कुं)
9 जुलाई नवमी शनिवार
1-13 दिन से
3-36 दिन तक (तु)
9-38 रात से
11-3 रात तक (कुं)
10 जुलाई दशमी रविवार
8-27 दिन से
10-48 दिन तक (सिं)
11 जुलाई एकादशी सोमवार
1-5 दिन से
3-28 दिन तक (तु)
9-30 रात से

10-56 रात तक (कुं)

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई तृतीया सोमवार
7-55 प्रातः से
10-17 दिन तक (सिं)
21 जुलाई षष्ठी गुरुवार
11-36 रात से
1-7 रात तक (मे)
22 जुलाई सप्तमी शुक्रवार
12-22 दिन से
2-45 दिन तक (तु)
8-47 रात से
10-12 रात तक (कु)
23 जुलाई अष्टमी शनिवार
12-18 दिन से
2-41 दिन तक (तु)

8-43 रात से
10-8 रात तक (कुं)

आश्विन शुक्ल पक्ष

3 अक्टूबर सप्तमी सोमवार
7-34 प्रातः से
9-58 दिन तक (तु)
10-9 रात से
12-25 रात तक (मि)

5 अक्टूबर नवमी बुधवार
12-11 दिन से
2-13 दिन तक (ध)
10-1 रात से
12-17 रात तक (मि)

6 अक्टूबर दशमी गुरुवार
12-7 दिन से
2-9 दिन तक (ध)
9-57 रात से
12-13 रात तक (मि)

7 अक्टूबर एकादशी शुक्रवार
12-3 दिन से
2-5 दिन तक (ध)
9-53 रात से
12-9 रात तक (मि)

12 अक्टूबर पूर्णिमा बुधवार
11-43 दिन से
1-46 दिन तक (ध)
9-34 रात से
11-49 रात तक (मि)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
11-39 दिन से
1-42 दिन तक (ध)
6-5 शां से
7-37 शाम तक (मे)

22 अक्टूबर दशमी शनिवार
11-4 दिन से
1-6 दिन तक (ध)
8-55 रात से
11-10 रात तक (मि)

24 अक्टूबर द्वादशी सोमवार
10-56 दिन से
12-58 दिन तक (ध)
1-26 रात से
3-47 रात तक (सिं)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

28 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
1-10 रात से
3-32 रात तक (सिं)

29 अक्टूबर तृतीया शनिवार
10-36 दिन से
12-39 दिन तक (ध)

30 अक्टूबर चतुर्थी रविवार
2-14 दिन से
3-39 दिन तक (कु)
10-38 रात से
1-2 रात तक (क)

31 अक्टूबर पंचमी सोमवार
2-10 दिन से
3-35 दिन तक (कुं)
10-35 रात से
12-58 रात तक (क)

2 नवम्बर सप्तमी बुधवार
10-25 दिन से
11-5 दिन तक (ध)

3 नवम्बर अष्टमी गुरुवार

1-58 दिन से
3-23 दिन तक (कु)
10-23 रात से
12-46 रात तक (क)

4 नवम्बर नवमी शुक्रवार
10-13 दिन से
12-15 दिन तक (ध)

6 नवम्बर एकादशी रविवार
10-11 रात से
12-35 रात तक (क)

7 नवम्बर द्वादशी सोमवार
12-1 दिन से
1-42 दिन तक (म)
10-7 रात से
12-31 रात तक (क)

9 नवम्बर चर्तुदशी बुधवार
11-56 दिन से
1-34 दिन तक (म)
9-59 रात से
12-23 रात तक (क)

मार्ग कृष्ण पक्ष

12 नवम्बर द्वितीया शनिवार
11-44 दिन से
1-23 दिन तक (म)
9-47 रात से
12-11 रात तक (क)

14 नवम्बर तृतीया सोमवार
11-36 दिन से
1-15 दिन तक (म)

20 नवम्बर दशमी रविवार
9-16 रात से
11-40 रात तक (क)

21 नवम्बर एकादशी सोमवार
11-8 दिन से
12-47 दिन तक (म)
9-12 रात से
11-36 रात तक (क)

23 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
11 बजे दिन से
12-39 दिन तक (म)
9-4 रात से
11-28 रात तक (क)

मार्ग शुक्ल पक्ष

27 नवम्बर तृतीया रविवार
10-45 दिन से
12-24 दिन तक (म)
8-48 रात से
9-00 रात तक (क)

28 नवम्बर चतुर्थी सोमवार
8-44 रात से
11-8 रात तक (क)

30 नवम्बर षष्ठी बुधवार
1-37 दिन से
2-56 दिन तक (मी)
8-37 रात से
11-00 रात तक (क)

1 दिसम्बर सप्तमी गुरुवार
1-33 दिन से
2-53 दिन तक (मी)
8-33 रात से
9-35 रात तक (क)

3 दिसम्बर नवमी शनिवार
2-3 रात से
3-31 रात तक (कं)

5 दिसम्बर दशमी सोमवार
10-13 दिन से

11-52 दिन तक (म)
1-2 रात से
3-23 रात तक (कं)

9 दिसबर चर्तुदशी शुक्रवार
12-46 रात से
3-7 रात तक (कं)

पौष कृष्ण पक्ष

11 दिसम्बर प्रतिपदा रविवार
12-54 दिन से
2-13 दिन तक (मी)

माघ कृष्ण पक्ष

16 जनवरी अष्टमी सोमवार
10-17 रात से
12-38 रात तक (कं)

18 जनवरी दशमी बुधवार
10-9 रात से
12-30 रात तक (कं)

19 जनवरी एकादशी गुरुवार
10-20 दिन से
11-40 दिन तक (मी)

20 जनवरी द्वादशी शुक्रवार
10-1 रात से
12-22 रात तक (कं)

21 जनवरी त्रयोदशी शनिवार
10-12 दिन से
11-32 दिन तक (मी)

23 जनवरी अमावसी सोमवार
3-31 दिन से
5-4 दिन तक (मि)
9-49 रात से
12-10 रात तक (कं)

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी द्वितीया बुधवार
9-57 दिन से
11-16 दिन तक (मी)

27 जनवरी चतुर्थी शुक्रवार
9-34 रात से
11-54 रात तक (कं)

28 जनवरी पंचीम शनिवार
2-29 दिन से
4-44 दिन तक (मि)

29 जनवरी षष्ठी रविवार
4-31 रात से
6-33 रात तक (ध)

30 जनवरी सप्तमी सोमवार
2-21 दिन से
4-37 दिन तक (मि)
9-22 रात से
11-42 रात तक (कं)

2 फरवरी दशमी गुरुवार
2-9 दिन से
4-25 दिन तक (मि)
9-10 रात से
11-31 रात तक (कं)

3 फरवरी एकादशी शुक्रवार
2-4 दिन से
4-21 दिन तक (मि)
9-6 रात से
11-27 रात तक (कं)

4 फरवरी द्वादशी शनिवार
9-17 दिन से
10-37 दिन तक (मी)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

8 फरवरी प्रतिपदा बुधवार
1-46 दिन से
4-1 दिन तक (मि)
8-47 रात से
11-7 रात तक (कं)

9 फरवरी द्वितीया गुरुवार
8-58 दिन से
10-17 दिन तक (मी)

11 फरवरी चतुर्थी शनिवार
1-34 दिन से
3-49 दिन तक (मि)
8-35 रात से
10-55 रात तक (कं)

16 फरवरी नवमी गुरुवार
5-22 रात से
7-1 रात तक (म)

17 फरवरी एकादशी शुक्रवार
1-10 दिन से
3-26 दिन तक (मि)
8-11 रात से
10-22 रात तक (कं)

19 फरवरी त्रयोदशी रविवार
1-3 दिन से
3-18 दिन तक (मि)
8-3 रात से
10-24 रात तक (कं)

20 फरवरी चतुर्दशी सोमवार
12-59 दिन से
3-14 दिन तक (मि)
7-59 रात से
10-20 रात तक (कं)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

23 फरवरी द्वितीया गुरुवार
3-9 रात से
4-55 रात तक (धं)

24 फरवरी तृतीया शुक्रवार
12-43 दिन से
2-58 दिन तक (मि)
2-48 रात से
4-51 रात तक (ध)

25 फरवरी तृतीया शनिवार
12-39 दिन से
2-54 दिन तक (मि)
2-44 रात से
4-47 रात तक (ध)

29 फरवरी सप्तमी बुधवार
2-33 रात से
4-35 रात तक (ध)

1 मार्च अष्टमी गुरुवार
2-39 दिन से
5-2 दिन तक (क)
2-29 रात से
4-31 रात तक (ध)

2 मार्च नवमी शुक्रवार
2-35 दिन से
4-58 दिन तक (क)
2-25 रात से
4-27 रात तक (ध)

7 मार्च चतुर्दशी बुधवार
12 बजे दिन से
2-15 दिन तक (मि)
7 बजे रात से
9-21 रात तक (कं)

प्रवेश मुहूर्त (नविस मकानस या फलैटस अचनुक साथ)

वैशाख शुक्ल पक्ष

5 मई द्वितीया गुरुवार
12-46 दिन से
3-8 दिन तक (सिं)

6 मई तृतीया शुक्रवार
12-42 दिन से
3-4 दिन तक (सिं)

9 मई षष्ठी सोमवार
12-30 दिन से
2-52 दिन तक (सिं)

13 मई दशमी शुक्रवार
5-42 प्रातः से
7-36 प्रातः तक (वृ)
12-15 दिन से
2-36 दिन तक (सिं)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदा बुधवार
1-58 दिन से
2-17 दिन तक (सिं)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

3 जून द्वितीया शुक्रवार
10-52 दिन से
1-14 दिन तक (सिं)

6 जून पंचमी सोमवार
10-40 दिन से
1-12 दिन तक (सिं)

आषाढ कृष्ण पक्ष

20 जून पंचमी सोमवार
7-12 शां से
7-37 शां तक (ध)

आषाढ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई पंचमी बुधवार
6-9 शां से
7-38 शां तक (ध)

7 जुलाई सप्तमी गुरुवार
6-5 शां से
7-38 शां तक (ध)

11 जुलाई एकादशी सोमवार
5-49 शां से
7-37 शां तक (ध)

आश्विन शुक्ल पक्ष

7 अक्टूबर एकादशी शुक्रवार
5-9 शां से
6-29 शां तक (मी)

8 अक्टूबर द्वादशी शनिवार
5-5 शां से
6-25 शां तक (मी)

मार्ग कृष्ण पक्ष

12 नवम्बर द्वितीया शनिवार
2-48 दिन से
4-7 दिन तक (मी)

मार्ग शुक्ल पक्ष

1 दिसम्बर सप्तमी गुरुवार
8-27 दिन से
10-29 दिन तक (ध)
1-33 दिन से
2-53 दिन तक (मी)

5 दिसम्बर दशमी सोमवार
8-11 दिन से
10-13 दिन तक (धं)

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी द्वितीया बुधवार
9-57 दिन से
11-16 दिन तक (मी)
2-41 दिन से
4-56 दिन तक (मि)

26 जनवरी तृतीया गुरुवार
9-53 दिन से
11-12 दिन तक (मी)

28 जनवरी पंचमी शनिवार
9-47 दिन से
11-3 दिन तक (मी)

2 फरवरी दशमी गुरुवार
9-25 दिन से
10-45 दिन तक (मी)
2-9 दिन से
4-25 दिन तक (मि)

3 फरवरी एकादशी शुक्रवार
9-21 दिन से
10-41 दिन तक (मी)
2-4 दिन से
4-21 दिन तक (मि)

4 फरवरी द्वादशी शनिवार
9-17 दिन से
10-37 दिन तक (मी)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी तृतीया शुक्रवार
12-43 दिन से
2-58 दिन तक (मि)

5 मार्च द्वादशी सोमवार
7-23 प्रातः से
8-43 दिन तक (मी)
12-7 दिन से
2-23 दिन तक (मि)

शंकु प्रतिष्ठा
बुनियाद-मकान (कन-द्युन)

वैशाख शुक्ल पक्ष

5 मई द्वितीया गुरुवार
8-7 दिन से
10-23 दिन तक (मि)
12-46 दिन से
3-8 दिन तक (सिं)

6 मई तृतीया शुक्रवार
8-3 दिन से
10-19 दिन तक (मि)
12-42 दिन से
3-4 दिन तक (सिं)

9 मई षष्ठी सोमवार
12-30 दिन से
2-52 दिन तक (सिं)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदि बुधवार
1-58 दिन से
2-17 दिन तक (सिं)

23 मई षष्ठी सोमवार
6-56 प्रातः से
9-12 दिन तक (मि)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

6 जून पंचमी सोमवार
6-1 प्रातः से
8-17 दिन तक (मि)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

28 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
3-59 दिन से
5-6 दिन तक (मी)

2 नवम्बर सप्तमी बुधवार
3-27 दिन से
4-47 दिन तक (मी)

मार्ग कृष्ण पक्ष

12 नवम्बर द्वितीया शनिवार
2-48 दिन से
4-7 दिन तक (मी)

17 नवम्बर षष्ठी गुरुवार
2-28 दिन से
3-48 दिन तक (मी)

मार्ग शुक्ल पक्ष

30 नवम्बर षष्ठी बुधवार
8-31 दिन से
10-33 दिन तक (ध)
1-37 दिन से
2-56 दिन तक (मी)

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी द्वितीया बुधवार
9-57 दिन से
11-16 दिन तक (मी)
12-48 दिन से
2-41 दिन तक (वृ)

26 जनवरी तृतीया गुरुवार
9-53 दिन से
11-12 दिन तक (मी)

28 जनवरी पंचमी शनिवार
9-45 दिन से
11-4 दिन तक (मी)
12-36 दिन से
2-29 दिन तक (वृ)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी तृतीया शुक्रवार
1-38 दिन से
3-53 दिन तक (मि)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी तृतीया शुक्रवार
12-43 दिन से
2-58 दिन तक (मि)

चूढा कर्ण मुर्हूत
ज़र कासय साथ

5 मई द्वितीया गुरुवार
10-23 दिन से
12-46 दिन तक (क)

6 मई तृतीया शुक्रवार
10-19 दिन से
12-42 दिन तक (क)

13 मई दशमी शुक्रवार
9-51 दिन से
12-15 दिन तक (क)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदा बुधवार
1-58 दिन से
2-17 दिन तक (सिं)

19 मई द्वितीया गुरुवार
7-12 प्रातः से
9-27 दिन तक (मि)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

3 जून द्वितीया शुक्रवार

8-28 प्रातः से
10-52 दिन तक (क)

आषाढ कृष्ण पक्ष

20 जून पंचमी सोमवार
7-22 प्रातः से
9-45 दिन तक (क)

आषाढ शुक्ल पक्ष

7 जुलाई सप्तमी गुरुवार
8-38 दिन से
11 बजे दिन तक (सिं)

11 जुलाई एकादशी सोमवार
1-5 दिन से
3-28 दिन तक (तु)

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई तृतीया सोमवार

7-55 प्रातः से
10-17 दिन तक (सिं)

आश्विन शुक्ल पक्ष

6 अक्टूबर दशमी गुरुवार
7-23 प्रातः से
9-46 दिन तक (तु)

7 अक्टूबर एकादशी शुक्रवार
7-19 प्रातः से
9-42 दिन तक (तु)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
11-39 दिन से
1-42 दिन तक (ध)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

4 नवम्बर नवमी शुक्रवार
11-46 दिन से
12-15 दिन तक (ध)

14 नवम्बर तृतीया सोमवार
7-13 प्रातः से
7-38 प्रातः तक (वृं)

मार्ग शुक्ल पक्ष

1 दिसम्बर सप्तमी गुरुवार
8-27 दिन से
10-29 दिन तक (ध)

5 दिसम्बर दशमी सोमवार
8-11 दिन से
10-13 दिन तक (ध)

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी द्वितीया बुधवार
9-57 दिन से
11-16 दिन तक (मी)

26 जनवरी तृतीया गुरुवार
9-53 दिन से
11-12 दिन तक (मी)

30 जनवरी सप्तमी सोमवार
8-12 दिन से
9-37 दिन तक (कु)

2 फरवरी दशमी गुरुवार
9-25 दिन से
10-45 दिन तक (मी)

3 फरवरी एकादशी शुक्रवार
9-21 दिन से
10-41 दिन तक (मी)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी तृतीया शुक्रवार
9-18 दिन से
10-50 दिन तक (मे)

वाग्दान मुहूर्त (गण्डन साथ)

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल द्वादशी शुक्रवार
1 मई त्रयोदशी रविवार
8-11 दिन तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई प्रतिपदा बुधवार
5 मई द्वितीया गुरुवार
6 मई तृतीया शुक्रवार
4-7 दिन तक
12 मई नवमी गुरुवार
10-58 दिन तक
13 मई दशमी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदा बुधवार
4-40 दिन तक
19 मई द्वितीया गुरुवार
3-22 दिन से
20 मई तृतीया शुक्रवार
10-17 दिन तक
22 मई पंचमी रविवार
23 मई षष्ठी सोमवार
26 मई नवमी गुरुवार
3-37 दिन से
27 मई दशमी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

3 जून द्वितीया शुक्रवार
3-22 दिन तक
8 जून सप्तमी बुधवार
10 जून नवमी शुक्रवार
4-7 दिन से
12 जून एकादशी रविवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

17 जून द्वितीया शुक्रवार
20 जून पंचमी सोमवार
22 जून सप्तमी बुधवार
29 जून त्रयोदशी बुधवार
2-46 दिन तक

आषाढ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई पंचमी बुधवार
7 जुलाई सप्तमी गुरुवार
10 जुलाई दशमी रविवार
11-51 दिन तक
11 जुलाई एकादशी सोमवार
10-42 दिन से
13 जुलाई त्रयोदशी बुधवार
9-8 दिन से
14 जुलाई चतुर्दशी गुरुवार
12-44 दिन से

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई तृतीया सोमवार
12-2 दिन तक
20 जुलाई पंचमी बुधवार
21 जुलाई षष्ठी गुरुवार
22 जुलाई सप्तमी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

3 अक्टूबर सप्तमी सोमवार
6 अक्टूबर दशमी गुरुवार

7 अक्टूबर एकादशी शुक्रवार
9 अक्टूबर त्रयोदशी रविवार
10-28 दिन से
12 अक्टूबर पूर्णिमा बुधवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

23 अक्टूबर एकादशी रविवार
24 अक्टूबर द्वादशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

27 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
28 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
3-59 दिन से
30 अक्टूबर चतुर्थी रविवार
12-46 दिन से
31 अक्टूबर पंचमी सोमवार
2 नवम्बर सप्तमी बुधवार
9-55 दिन तक

4 नवम्बर नवमी शुक्रवार
11-46 दिन से
6 नवम्बर एकादशी रविवार
7 नवम्बर द्वादशी सोमवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

11 नवम्बर प्रतिपदा शुक्रवार
20 नवम्बर दशमी रविवार
21 नवम्बर एकादशी सोमवार
23 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

27 नवम्बर तृतीया रविवार
30 नवम्बर षष्ठी बुधवार
1 दिसम्बर सप्तमी गुरुवार
5 दिसम्बर दशमी सोमवार
8 दिसम्बर त्रयोदशी गुरुवार
1-48 दिन से

पौष कृष्ण पक्ष

11 दिसम्बर प्रतिपदा रविवार

माघ कृष्ण पक्ष

19 जनवरी एकादशी गुरुवार

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी द्वितीया बुधवार
27 जनवरी चतुर्थी शुक्रवार
1-47 दिन से
29 जनवरी षष्ठी रविवार
2 फरवरी दशमी गुरुवार
3 फरवरी एकादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

8 फरवरी प्रतिपदा बुधवार
12-51 दिन से
9 फरवरी द्वितीया गुरुवार
10 फरवरी तृतीया शुक्रवार
17 फरवरी एकादशी शुक्रवार
19 फरवरी चतुर्दशी रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

23 फरवरी द्वितीया गुरुवार
24 फरवरी तृतीया शुक्रवार
29 फरवरी सप्तमी बुधवार

जातकर्म मुहूर्त (काहनेथर)

वैशाख शुक्ल पक्ष

5 मई द्वितीया गुरुवार
6 मई तृतीया शुक्रवार
8 मई पंचमी रविवार
10-4 दिन से

9 मई षष्ठी सोमवार
13 मई दशमी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदा बुधवार
1-58 दिन से
22 मई पंचमी रविवार
9-24 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

3 जून द्वितीया शुक्रवार
3-22 दिन तक
6 जून पंचमी सोमवार
3-27 दिन तक
12 जून एकादशी रविवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

20 जून पंचमी सोमवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

3 जुलाई द्वितीया रविवार
7 जुलाई सप्तमी गुरुवार
10 जुलाई दशमी रविवार
11-51 दिन तक
11 जुलाई एकादशी सोमवार
10-42 दिन से

श्रावण कृष्ण पक्ष

20 जुलाई पंचमी बुधवार
4-37 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

6 अक्टूबर दशमी गुरुवार
7 अक्टूबर एकादशी शुक्रवार
9 अक्टूबर त्रयोदशी रविवार
10-28 दिन तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
10-7 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

28 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
3-59 दिन से
2 नवम्बर सप्तमी बुधवार
9-55 दिन तक
4 नवम्बर नवमी शुक्रवार
11-46 दिन से
7 नवम्बर द्वादशी सोमवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

14 नवम्बर तृतीया सोमवार
7-38 प्रातः तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

30 नवम्बर षष्ठी बुधवार
1 दिसम्वर सप्तमी गुरुवार
5 दिसम्बर दशमी सोमवार
7 दिसम्बर द्वादशी बुधवार
10-58 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी द्वितीया बुधवार
26 जनवरी तृतीया गुरुवार
12-41 दिन तक
29 जनवरी षष्ठी रविवार
30 जनवरी सप्तमी सोमवार
2 फरवरी दशमी गुरुवार
3 फरवरी एकादशी शुक्रवार
5 फरवरी त्रयोदशी रविवार
1-53 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी तृतीया शुक्रवार
9-52 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी तृतीया शुक्रवार
26 फरवरी चतुर्थी रविवार
9-50 दिन से
27 फरवरी पंचमी सोमवार
10-54 दिन तक
4 मार्च एकादशी रविवार
5 मार्च द्वादशी सोमवार

विद्यारम्भ मुहूर्त

(पढाई आरम्भ करने अथवा स्कूल में प्रवेश करने का मुहूर्त

वैशाख शुक्ल पक्ष

6 मई तृतीया शुक्रवार
4-7 दिन तक
8 मई पंचमी रविवार
12 मई नवमी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदा बुधवार
1-58 दिन से
19 मई द्वितीया गुरुवार
3-22 दिन से
20 मई तृतीया शुक्रवार
10-17 दिन तक
22 मई पंचमी रविवार
3-34 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

3 जून द्वितीया शुक्रवार
10 जून नवमी शुक्रवार
4-7 दिन से
12 जून एकादशी रविवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

17 जून द्वितीया शुक्रवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

3 जुलाई द्वितीया रविवार
6 जुलाई पंचमी बुधवार
10 जुलाई दशमी रविवार
11-51 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

6 अक्टूबर दशमी गुरुवार
7 अक्टूबर एकादशी शुक्रवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
10-7 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

28 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
3-59 दिन से
30 अक्टूबर चतुर्थी रविवार
12-46 दिन से
4 नवम्बर नवमी शुक्रवार
6 नवम्बर एकादशी रविवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

27 नवम्बर तृतीया रविवार
30 नवम्बर षष्ठी बुधवार
7 दिसम्बर द्वादशी बुधवार
10-58 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी द्वितीया बुधवार
26 जनवरी तृतीया गुरुवार
12-41 दिन तक
27 जनवरी चतुर्थी शुक्रवार
1-47 दिन से
3 फरवरी एकादशी शुक्रवार
11-9 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

9 फरवरी द्वितीया गुरुवार
11-29 दिन से
10 फरवरी तृतीया शुक्रवार
9-52 दिन तक

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

23 फरवरी द्वितीया गुरुवार
26 फरवरी चतुर्थी रविवार
1-50 दिन से
4 मार्च एकादशी रविवार

दधि मुहूर्त

लडकी को दूध देने का मुहूत (दुध साथ)

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई पंचमी रविवार
10-4 दिन से
10 मई सप्तमी भौमवार
10-13 दिन तक
17 मई पूर्णिमा भौमवार
6-30 शां से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

19 मई द्वितीया गुरुवार
3-22 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

2 जून प्रतिपदा गुरुवार
2-29 दिन से

आषाढ कृष्ण पक्ष

16 जून प्रतिपदा गुरुवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

3 जुलाई द्वितीया रविवार
7 जुलाई सप्तमी गुरुवार
4-9 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

6 अक्टूबर दशमी गुरुवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

30 अक्टूबर चतुर्थी रविवार
12-46 दिन से

मार्ग शुक्ल पक्ष

27 नवम्बर तृतीया रविवार

पौष कृष्ण पक्ष

11 दिसम्बर प्रतिपदा रविवार
13 दिसम्बर तृतीया भौमवार

माघ शुक्ल पक्ष

24 जनवरी प्रतिपदा भौमवार
3-28 दिन तक
5 फरवरी त्रयोदशी रविवार
1-53 दिन से
7 फरवरी पूर्णिमा भौमवार
1-47 दिन तक

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

4 मार्च एकादशी रविवार

दिवचक्षीर मुर्हूत

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदा बुधवार
4-40 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

10 जून नवमी शुक्रवार
4-7 दिन तक
12 जून एकादशी रविवार
13 जून द्वादशी सोमवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

20 जून पंचमी सोमवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

7 जुलाई सप्तमी गुरुवार
4-9 दिन तक
8 जुलाई अष्टमी शुक्रवार
10 जुलाई दशमी रविवार
11 जुलाई एकादशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई तृतीया सोमवार
12-2 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

4 अक्टूबर अष्टमी भौमवार
5 अक्टूबर नवमी बुधवार
7 अक्टूबर एकादशी शुक्रवार
12 अक्टूबर पूर्णिमा बुधवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

27 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
28 अक्टूवर द्वितीया शुक्रवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

1 दिसम्बर सप्तमी गुरुवार
5 दिसम्बर दशमी सोमवार
7 दिसम्बर द्वादशी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी द्वितीया बुधवार
3-58 दिन तक
29 जनवरी षष्ठी रविवार
30 जनवरी सप्तमी सोमवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

26 फरवरी चतुर्थी रविवार
9-50 दिन से
27 फरवरी पंचमी सोमवार
10-54 दिन तक

नया मक़ान, फलैट या भूमि खरीदने का मुहूर्त

वैशाख शुक्ल पक्ष

6 मई तृतीया शुक्रवार
4-7 दिन तक
12 मई नवमी गुरुवार
10-58 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदा बुधवार

1-58 दिन से

19 मई द्वितीया गुरुवार

3-22 दिन से

20 मई तृतीया शुक्रवार

10-17 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

3 जून द्वितीया शुक्रवार

3-22 दिन तक

आषाढ कृष्ण पक्ष

17 जून द्वितीया शुक्रवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई पंचमी बुधवार

5-42 दिन तक

14 जुलाई चर्तुदशी गुरुवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

20 जुलाई पंचमी बुधवार

4-37 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

28 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

27 जनवरी चतुर्थी शुक्रवार

1-47 दिन तक

3 फरवरी एकादशी शुक्रवार

11-9 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

9 फरवरी द्वितीया गुरुवार

10 फरवरी तृतीया शुक्रवार

9-52 दिन तक

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

23 फरवरी द्वितीया गुरुवार

7 मार्च चतुर्दशी बुधवार

5-52 दिन से

8 मार्च पूर्णिमा गुरुवार

3-9 दिन तक

नया दुकान खोलना या नया काम आरम्भ करने का मुहूर्त

वैशाख शुक्ल पक्ष

5 मई द्वितीया गुरुवार

6 मई तृतीया शुक्रवार

4-7 दिन तक

9 मई षष्ठी सोमवार

10-19 दिन से

13 मई दशमी शुक्रवार

8-21 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदि बुधवार

1-58 दिन से

19 मई द्वितीया गुरुवार

3-22 दिन से

20 मई तृतीया शुक्रवार

10-17 दिन तक

30 मई त्रयोदशी सोमवार

9-9 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

3 जून द्वितीया शुक्रवार

3-22 दिन तक
6 जून पंचमी सोमवार
3-27 दिन तक
10 जून नवमी शुक्रवार
4-7 दिन से

आषाढ कृष्ण पक्ष

29 जून त्रयोदशी बुधवार
2-46 दिन तक

आषाढ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई पंचमी बुधवार
5-42 दिन से
7 जुलाई सप्तमी गुरुवार
11 जुलाई एकादशी सोमवार
4-42 दिन से
13 जुलाई त्रयोदशी बुधवार
9-8 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

3 अक्टूबर सप्तमी सोमवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
10-7 दिन से
24 अक्टूबर द्वादशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

28 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
3-59 दिन से
31 अक्टूबर पंचमी सोमवार
2 नवम्बर सप्तमी बुधवार
9-55 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

14 नवम्बर तृतीया सोमवार
7-38 प्रातः तक
17 नवम्बर षष्ठी गुरुवार
5-24 दिन तक
23 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार
8-34 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

7 दिसम्बर द्वादशी बुधवार
10-58 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

30 जनवरी सप्तमी सोमवार
2 फरवरी दशमी गुरुवार
8-48 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवर तृतीया शुक्रवार
9-52 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी पंचमी सोमवार
10-54 दिन तक
5 मार्च द्वादशी सोमवार

शिशर मुंहूर्त
(शिशुर लागनुक साथ)

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर षष्ठी गुरुवार
5-24 दिन तक
20 नवम्बर दशमी रविवार
3-15 दिन से
23 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

1 दिसम्बर सप्तमी गुरुवार

7 दिसम्बर द्वादशी बुधवार

10-58 दिन तक

पौष कृष्ण पक्ष

18 दिसम्बर अष्टमी रविवार

5-20 दिन तक

21 दिसम्बर एकादशी बुधवार

22 दिसम्बर त्रयोदशी गुरुवार

पौष शुक्ल पक्ष

1 जनवरी अष्टमी रविवार

6 जनवरी द्वादशी शुक्रवार

पन्न मुहूर्त

(पन्न घ्नुक साथ)

भाद्र शुक्ल पक्ष

31 अगस्त तृतीया बुधवार

1 सितम्बर चतुर्थी गुरुवार

2 सितम्बर पंचमी शुक्रवार

4 सितम्बर सप्तमी रविवार

11 सितम्बर चतुर्दशी रविवार

(पन्न मुहूर्त में अस्त का विचार नहीं किया जाता है) धर्म शास्त्र

दीपदान मुहूर्त

(तील घ्नुक साथ)

आश्विन शुक्ल पक्ष

3 अक्टूबर सप्तमी सोमवार

12 अक्टूबर पूर्णिमा बुधवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

28 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

3-59 दिन से

31 अक्टूबर पंचमी सोमवार

10 नवम्बर पूर्णिमा गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

11 जनवरी द्वितीया बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

30 जनवरी सप्तमी सोमवार

3 फरवरी एकादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी तृतीया शुक्रवार

9-52 दिन तक

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी पंचमी सोमवार

10-54 दिन तक

29 फरवरी सप्तमी बुधवार

5-5 दिन तक

5 मार्च द्वादशी सोमवार

7 मार्च चतुर्दशी बुधवार

5-52 शां से

अन्न प्राशन मुहूर्त

वैशाख शुक्ल पक्ष

5 मई द्वितीया गुरुवार

6 मई तृतीया शुक्रवार

4-7 दिन तक

9 मई षष्ठी सोमवार

3-55 दिन से

13 मई दशमी शुक्रवार

8-21 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदा बुधवार

1-58 दिन से

23 मई षष्ठी सोमवार

10-6 दिन से

27 मई दशमी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

3 जून द्वितीया शुक्रवार

3-22 दिन तक

6 जून पंचमी सोमवार

3-27 दिन तक

10 जून नवमी शुक्रवार

4-7 दिन से

आषाढ कृष्ण पक्ष

20 जून पंचमी सोमवार

22 जून सप्तमी बुधवार

5-52 शां तक

आषाढ शुक्ल पक्ष

7 जुलाई सप्तमी गुरुवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई तृतीया सोमवार

1-22 दिन से

21 जुलाई षष्ठी गुरुवार

22 जुलाई सप्तमी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

6 अक्टूबर दशमी गुरुवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार

10-7 दिन तक

19 अक्टूबर सप्तमी बुधवार

9-58 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

28 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

3-59 दिन से

2 नवम्बर सप्तमी बुधवार

9-55 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

14 नवम्बर तृतीया सोमवार

7-38 प्रातः तक

17 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

9-39 दिन से

मार्ग शुक्ल पक्ष

1 दिसम्बर सप्तमी गुरुवार

5 दिसम्बर दशमी सोमवार

8-49 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी द्वितीया बुधवार

26 जनवरी तृतीया गुरुवार

30 जनवरी सप्तमी सोमवार

2 फरवरी दशमी गुरुवार

8-48 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी तृतीया शुक्रवार

9-52 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी तृतीया शुक्रवार

27 फरवरी पंचमी सोमवार

10-54 दिन तक

छत (सीमंट स्लैब) डालने का मुहूर्त

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई पंचमी रविवार
9 मई षष्ठी सोमवार
13 मई दशमी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

22 मई पंचमी रविवार
23 मई षष्ठी सोमवार
5-6 शां तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

3 जून द्वितीया शुक्रवार
3-22 दिन से
6 जून पंचमी सोमवार
3-27 दिन तक
9 जून अष्टमी गुरुवार
11-19 दिन से

आषाढ शुक्ल पक्ष

3 जुलाई द्वितीया रविवार
6 जुलाई पंचमी बुधवार
5-42 शां से
7 जुलाई सप्तमी गुरुवार
4-9 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

6 अक्टूबर दशमी गुरुवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

19 अक्टूबर सप्तमी बुधवार
20 अक्टूबर अष्टमी गुरुवार
24 अक्टूबर द्वादशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

2 नवम्बर सप्तमी बुधवार
3 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
10-30 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर षष्ठी गुरुवार
5-24 शां तक
20 नवम्बर दशमी रविवार
3-15 दिन से
21 नवम्बर एकादशी सोमवार
1-24 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

30 नवम्बर षष्ठी बुधवार

पौष कृष्ण पक्ष

12 दिसम्बर द्वितीया सोमवार

माघ शुक्ल पक्ष

5 फरवरी त्रयोदशी रविवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी तृतीया शुक्रवार
9-52 दिन से
19 फरवरी त्रयोदशी रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

4 मार्च एकादशी रविवार
5 मार्च द्वादशी सोमवार

वाहन खरीदने का मुहूर्त (स्कूटर, गाड़ी इत्यादि अननुक साथ)

वैशाख शुक्ल पक्ष

6 मई तृतीया शुक्रवार

4-7 दिन से

9 मई षष्ठी सोमवार

12 मई नवमी गुरुवार

10-58 दिन से

13 मई दशमी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदा बुधवार

1-58 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

3 जून द्वितीया शुक्रवार

3-22 दिन तक

6 जून पंचमी सोमवार

3-27 दिन तक

8 जून सप्तमी बुधवार

1-39 दिन से

10 जून नवमी शुक्रवार

4-7 दिन से

आषाढ कृष्ण पक्ष

17 जून द्वितीया शुक्रवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई पंचमी बुधवार

7 जुलाई सप्तमी गुरुवार

11 जुलाई एकादशी सोमवार

10-42 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार

10-7 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

28 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

3-59 दिन से

2 नवम्बर सप्तमी बुधवार

9-55 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

7 दिसम्बर द्वादशी बुधवार

10-58 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

30 जनवरी सप्तमी सोमवार

3 फरवरी एकादशी शुक्रवार

11-9 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

9 फरवरी द्वितीया गुरुवार

11-29 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी पंचमी सोमवार

10-54 दिन तक

5 मार्च द्वादशी सोमवार

8 मार्च पूर्णिमा गुरुवार

3-9 दिन तक

नया चुल्हा या गैस जलाने का मुहूर्त

वैशाख शुक्ल पक्ष

6 मई तृतीया शुक्रवार

4-7 दिन तक

9 मई षष्ठी सोमवार

12 मई नवमी गुरुवार

10-58 दिन से

13 मई दशमी शुक्रवार

6-8 प्रातः तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदा बुधवार
1-58 दिन से
19 मई द्वितीया गुरुवार
23 मई षष्ठी सोमवार
30 मई त्रयोदशी सोमवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

3 जून द्वितीया शुक्रवार
3-22 दिन तक
6 जून पंचमी सोमवार
3-27 दिन तक
8 जून सप्तमी बुधवार
1-39 दिन से
10 जून नवमी शुक्रवार
4-7 दिन से
13 जून द्वादशी सोमवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई पंचमी बुधवार
5-42 शां तक
7 जुलाई सप्तमी गुरुवार
4-9 दिन से
11 जुलाई एकादशी सोमवार
13 जुलाई त्रयोदशी बुधवार
9-8 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

6 अक्टूबर दशमी गुरु

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर प्रतिपदि गुरुवार
10-07 दिन से
19 अक्टूबर सप्तमी बुधवार
9.58 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

28 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
2 नवम्बर सप्तमी बुधवार
9-55 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

14 नवम्बर तृतीया सोमवार
7-38 प्रातः तक
17 नवम्बर षष्ठी गुरुवार
5-24 शां तक
21 नवम्बर एकादशी सोमवार
1-24 दिन से
23 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

30 नवम्बर षष्ठी बुधवार
7 दिसम्बर द्वादशी बुधवार
10-58 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

18 जनवरी दशमी बुधवार
19 जनवरी एकादशी गुरुवार
20 जनवरी द्वादशी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

30 जनवरी सप्तमी सोमवार
3 फरवरी एकादशी शुक्रवार
11-9 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

9 फरवरी द्वितीया गुरुवार
11-29 दिन से
10 फरवरी तृतीया शुक्रवार
9-52 दिन तक
16 फरवरी नवमी गुरुवार

8 बजे प्रातः से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी पंचमी सोमवार
10-54 दिन तक

5 मार्च द्वादशी सोमवार

कर्ण छेदन मुहूर्त
(कन चम्बनुक साथ)

वैशाख शुक्ल पक्ष

6 मई तृतीया शुक्रवार
8-5 दिन से

9 मई षष्ठी सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदा बुधवार
4-40 दिन से

23 मई षष्ठी सोमवार

30 मई त्रयोदशी सोमवार
9-9 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

2 जून प्रतिपदा गुरुवार
2-29 दिन से

3 जून द्वितीया शुक्रवार

6 जून पंचमी सोमवार
3-27 दिन तक

10 जून नवमी शुक्रवार
10-44 दिन से

आषाढ कृष्ण पक्ष

20 जून पंचमी सोमवार

30 जून चतुर्दशी गुरुवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

7 जुलाई सप्तमी गुरुवार
4-9 दिन से

8 जुलाई अष्टमी शुक्रवार

11 जुलाई एकादशी सोमवार
10-42 दिन से

श्रावण कृष्ण पक्ष

22 जुलाई सप्तमी रविवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

6 अक्टूबर दशमी गुरुवार

7 अक्टूबर एकादशी शुक्रवार

12 अक्टूबर पूर्णिमा बुधवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार

19 अक्टूबर सप्तमी बुधवार
8-28 दिन से

20 अक्टूबर अष्टमी गुरुवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

28 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
3-59 दिन से

2 नवम्बर सप्तमी बुधवार
11-5 दिन से

3 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
10-30 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

14 नवम्बर तृतीया सोमवार
7-38 प्रातः तक

17 नवम्बर षष्ठी गुरुवार
5-24 दिन तक

21 नवम्बर एकादशी सोमवार
1-24 दिन से

23 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

8-34 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

30 नवम्बर षष्ठी बुधवार
1 दिसम्बर सप्तमी गुरुवार
7 दिसम्बर द्वादशी बुधवार
10-58 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

16 जनवरी अष्टमी सोमवार
19 जनवरी एकादशी गुरुवार
23 जनवरी अमावसी सोमवार
3-31 दिन से

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी द्वितीया बुधवार
3-58 दिन तक
30 जनवरी सप्तमी सोमवार
3 फरवरी एकादशी शुक्रवार
11-9 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

15 फरवरी अष्टमी बुधवार
9-38 दिन तक

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी पंचमी सोमवार
10-54 दिन तक
5 मार्च द्वादशी सोमवार

वस्त्रधारण मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

8 अप्रैल पंचमी शुक्रवार
17 अप्रैल चतुर्दशी रविवार
11-59 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

20 अप्रैल तृतीया बुधवार
24 अप्रैल सप्तमी रविवार
7-12 दिन तक
27 अप्रैल दशमी बुधवार
11-49 दिन तक
1 मई त्रयोदशी रविवार
8-11 दिन तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

5 मई द्वितीया गुरुवार
6 मई तृतीया शुक्रवार
8-5 दिन तक
8 मई पंचमी रविवार
10-6 दिन से
13 मई दशमी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदा बुधवार
4-40 दिन तक
22 मई पंचमी रविवार
27 मई दशमी शुक्रवार
29 मई द्वादशी रविवार
6-33 प्रातः तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

2 जून प्रतिपदा गुरुवार
2-29 दिन तक
9 जून अष्टमी गुरुवार
12-19 दिन से
10 जून नवमी शुक्रवार
4-7 दिन से
12 जून एकादशी रविवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

24 जून अष्टमी शुक्रवार
26 जून दशमी रविवार
5-3 दिन तक
29 जून त्रयोदशी बुधवार
2-46 दिन तक

आषाढ शुक्ल पक्ष

3 जुलाई द्वितीया रविवार
6 जुलाई पंचमी बुधवार
5-42 दिन से
7 जुलाई सप्तमी गुरुवार
8 जुलाई अष्टमी शुक्रवार
10 जुलाई दशमी रविवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

20 जुलाई पंचमी बुधवार
4-27 दिन से
21 जुलाई षष्ठी गुरुवार
22 जुलाई सप्तमी शुक्रवार
27 जुलाई द्वादशी बुधवार
7-15 प्रातः तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त चतुर्थी बुधवार
1-21 दिन से
4 अगस्त पंचमी गुरुवार
5 अगस्त षष्ठी शुक्रवार
11 अगस्त त्रयोदशी गुरुवार
3-57 दिन से

भाद्र कृष्ण पक्ष

14 अगस्त प्रतिपदा रविवार
18 अगस्त चतुर्थी गुरुवार
19 अगस्त पंचम शुक्रवार
25 अगस्त एकादशी गुरुवार
5-35 शां से
26 अगस्त द्वादशी शुक्रवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

31 अगस्त तृतीया बुधवार
2 सितम्बर पंचमी शुक्रवार
4 सितम्बर सप्तमी रविवार
8 सितम्बर एकादशी गुरुवार

आश्विन कृष्ण पक्ष

14 सितम्बर द्वितीया बुधवार
15 सितम्बर तृतीया गुरुवार
22 सितम्बर नवमी गुरुवार
23 सितम्बर दशमी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

28. सितम्बर प्रतिपदा बुधवार
29 सितम्बर द्वितीया गुरुवार
7 अक्टूबर एकादशी शुक्रवार
12 अक्टूबर पूर्णिमा बुधवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
19 अक्टूबर सप्तमी बुधवार
9-58 दिन से
20 अक्टूबर अष्टमी गुरुवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

27 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
28 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
2 नवम्बर सप्तमी बुधवार
11-5 दिन तक
4 नवम्बर नवमी शुक्रवार
10-30 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

5-24 दिन तक

20 नवम्बर दशमी रविवार

3-15 दिन से

23 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

1 दिसम्बर सप्तमी गुरुवार

7 दिसम्बर द्वादशी बुधवार

पौष कृष्ण पक्ष

18 दिसम्बर अष्टमी रविवार

5-20 दिन तक

21 दिसम्बर एकादशी बुधवार

22 दिसम्बर त्रयोदशी गुरुवार

पौष शुक्ल पक्ष

1 जनवरी अष्टमी रविवार

6 जनवरी द्वादशी शुक्रवार

माघ कृष्ण पक्ष

18 जनवरी दशमी बुधवार

19 जनवरी एकादशी गुरुवार

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी द्वितीया बुधवार

3-58 दिन तक

29 जनवरी षष्ठी रविवार

2 फरवरी दशमी गुरुवार

8-48 दिन से

3 फरवरी एकादशी शुक्रवार

11-9 दिन तक

5 फरवरी त्रयोदशी रविवार

1-53 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

10 फरवरी तृतीया शुक्रवार

9-52 दिन से

15 फरवरी अष्टमी बुधवार

9-38 दिन तक

19 फरवरी त्रयोदशी रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

24 फरवरी तृतीया शुक्रवार

26 फरवरी चतुर्थी शनिवार

9-50 दिन से

29 फरवरी सप्तमी बुधवार

5-5 शां से

1 मार्च अष्टमी गुरुवार

4 मार्च एकादशी रविवार

चैत्र कृष्ण पक्ष

9 मार्च प्रतिपदा शुक्रवार

सर्वार्थ सिद्धि योग

(किसी खास परिस्थिति वश कोई कार्य मुहूर्त पर कर सकना सम्भव न होने पर सर्वार्थ सिद्धि योग मुहर्त का आश्रय लेना चाहिये।

चैत्र शुक्ल पक्ष

5 अप्रैल द्वितीया भौमवार

13 अप्रेल दशमी बुधवार

15 अप्रैल द्वादशी शुक्रवार

17 अप्रैल चतुर्दशी रविवार

3-50 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

20 अप्रैल तृतीया बुधवार
21 अप्रैल चतुर्थी गुरुवार
6-15 प्रातः तक
24 अप्रैल सप्तमी रविवार
25 अप्रैल अष्टमी सोमवार
7-12 दिन से

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई प्रतिपदा बुधवार
9 मई षष्ठी सोमवार
10-19 दिन से
10 मई सप्तमी भौमवार
10-3 दिन से
11 मई अष्टमी बुधवार
9-14 दिन तक
13 मई दशमी शुक्रवार
6-8 प्रातः तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई प्रतिपदा बुधवार
4-40 दिन तक
22 मई पंचमी रविवार
3-34 दिन तक
23 मई षष्ठी सोमवार
5-6 दिन तक
29 मई द्वादशी रविवार
6-33 प्रातः तक
30 मई त्रयोदशी सोमवार
9-9 दिन तक
31 मई चतुर्दशी भौमवार
11-22 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

5 जून चतुर्थी रविवार
3-49 दिन से
6 जून पंचमी सोमवार
3-27 दिन तक
7 जून षष्ठी भौमवार
2-43 दिन तक

आषाढ कृष्ण पक्ष

24 जून अष्टमी शुक्रवार
11-28 दिन से
26 जून दशमी रविवार
5-3 दिन तक
28 जून द्वादशी भौमवार
29 जून त्रयोदशी बुधवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

3 जुलाई द्वितीया रविवार
7 जुलाई सप्तमी गुरुवार
4-9 दिन से
9 जुलाई नवमी शनिवार
1-10 दिन से
11 जुलाई एकादशी सोमवार
10-42 दिन से

श्रावण कृष्ण पक्ष

16 जुलाई प्रतिपदा शनिवार
9-26 दिन से
21 जुलाई षष्ठी गुरुवार
7-26 शां से
22 जुलाई सप्तमी शुक्रवार
26 जुलाई एकादशी भौमवार
5-51 प्रातः तक
27 जुलाई द्वादशी बुधवार
7-15 प्रातः तक

29 जुलाई चतुर्दशी शुक्रवार
7-54 प्रातः से

श्रावण शुक्ल पक्ष

31 जुलाई प्रतिपदा रविवार
5-57 प्रातः तक
6 अगस्त अष्टमी शनिवार
5-14 दिन से
8 अगस्त दशमी सोमवार
3-36 दिन तक
12 अगस्त चतुर्दशी शुक्रवार
4-49 दिन से
13 अगस्त पूर्णिमा शनिवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

18 अगस्त चतुर्थी गुरुवार
19 अगस्त पंचमी शुक्रवार
22 अगस्त अष्टमी सोमवार
2-18 दिन से
25 अगस्त एकादशी गुरुवार
5-35 दिन से
26अगस्त द्वादशी शुक्रवार
5-4 दिन तक

भाद्र शुक्ल पक्ष

31 अगस्त तृतीया बुधवार
6-21 शां से
9 सितम्बर द्वादशी शुक्रवार

आश्विन कृष्ण पक्ष

13 सितम्बर प्रतिपदा भौमवार
7-1 दिन से
15 सितम्बर तृतीया गुरुवार
16 सितम्बर चतुर्थी शुक्रवार
3-50 दिन तक
19 सितम्बर सप्तमी सोमवार
22 सितम्बर नवमी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सितम्बर प्रतिपदा बुधवार
1-37 दिन तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर प्रतिपदा गुरुवार
17 अक्टूबर पंचमी सोमवार
20 अक्टूबर अष्टमी गुरुवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

30 अक्टूबर चतुर्थी रविवार
11-56 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

12 नवम्बर द्वितीया शनिवार
9-41 दिन से
14 नवम्बर तृतीया सोमवार
2-9 दिन तक
5-24 दिन तक
20 नवम्बर दशमी रविवार
3-15 दिन से

मार्ग शुक्ल पक्ष

27 नवम्बर तृतीया रविवार
6 दिसम्बर एकादशी भौमवार
10 दिसम्बर पूर्णिमा शनिवार

पौष कृष्ण पक्ष

18 दिसम्बर अष्टमी रविवार
22 दिसम्बर त्रयोदशी गुरुवार
1-11 दिन से

पौष शुक्ल पक्ष

25 दिसम्बर प्रतिपदा रविवार
7-41 दिन तक
1 जनवरी अष्टमी रविवार
12-48 दिन तक
3 जनवरी दशमी भौमवार

माघ कृष्ण पक्ष

11 जनवरी द्वितीया बुधवार
19 जनवरी एकादशी गुरुवार
22 जनवरी चतुर्दशी रविवार
4-10 दिन से
23 जनवरी अमावसी सोमवार
3-31 दिन से

माघ शुक्ल पक्ष

1 फरवरी नवमी बुधवार
6 फरवरी चतुदर्शी सोमवार
2-10 दिन से
7 फरवरी पूर्णिमा भौमवार
1-47 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

8 फरवरी प्रतिपदा बुधवार
12-51 दिन तक
10 फरवरी तृतीया शुक्रवार
9-52 दिन तक
15 फरवरी अष्टमी बुधवार
19 फरवरी त्रयोदशी रविवार
20 फरवरी चतुदर्शी सोमवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

26 फरवरी चतुर्थी रविवार
7-56 दिन से
28 फरवरी षष्ठी भौमवार
2-2 दिन से
29 फरवरी सप्तमी बुधवार
5 मार्च द्वादशी सोमवार
6 मार्च त्रयोदशी भौमवार

यात्रा मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

4 अप्रैल पश्चिमोतर
5 अप्रैल पूर्व दक्षिण
7-58 शां तक
8 अप्रैल पश्चिम बिना
9 अप्रैल पूर्व विना
11 अप्रैल पूर्व विना
12 अप्रैल पूर्व दक्षिण
15 अप्रैल पश्चि विना
16 अप्रैल पूर्व विना
17 अप्रैल पूर्वोतर
3-50 दिन तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

20 अप्रैल उतर विना
21 अप्रैल पूर्व पश्चिम
22 अप्रैल पश्चिम विना
23 अप्रैल पूर्व विना
24 अप्रैल पूर्वोतर
25 अप्रैल पूर्व विना
26 अप्रैल पूर्व दक्षिण
27 अप्रैल पूर्व पश्चिम
28 अप्रैल पूर्व पश्चिम
29 अप्रैल पूर्वोतर
1 मई पूर्वोतर विना

वैशाख शुक्ल पक्ष

2 मई पूर्व विना
5 मई पूर्व पश्चिम
6 मई पश्चिम विना
7 मई पूर्व विना
9-18 दिन तक
8 मई पूवोतर
1-4 दिन से
9 मई पूर्व विना
10 मई पूर्व दक्षिण
10-3 दिन तक
12 मई पूर्व पश्चिम
13 मई पश्चिम विना
17 मई पूर्व दक्षिण
6-30 शां तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई उतर विना
19 मई पूर्व पश्चिम
20 मई पश्चिम विना
21 मई पूर्व विना
22 मई पूर्वोतर
23 मई पश्चिमोतर
24 मई पूर्व यात्रा
25 मई पूर्व पश्चिम
26 मई पूर्व पश्चिम
27 मई पूर्वोतर
28 मई पश्चिमोतर
29 मई पूर्वोतर
30 मई पूर्व विना
9-9 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

2 जून पूर्व पश्चिम
3 जून पश्चिम विना
3-22 दिन तक
4 जून पूर्व विना
3-48 दिन से
5 जून पूर्वोतर
6 जून पूर्व विना
3-27 दिन तक
8 जून उतर विना
1-39 दिन से
9 जून पूर्व पश्चिम
10 जून पश्चिम विना
11 जून पूर्व विना
9 बजे दिन तक

आषाढ कृष्ण पक्ष

16 जून पूर्व पश्चिम
17 जून पश्चिम विना
18 जून पूर्व विना
19 जून पूवोतर
20 जून पश्चिमोतर
21 जून पूर्व यात्रा
22 जून पूर्व पश्चिम
23 जून पूर्व पश्चिम
24 जून पूर्वोतर
25 जूनपूर्व विना
26 जून पूर्वोतर
5-3 दिन तक
28 जून पूर्व दक्षिण
9-8 रात से
29 जून उतर विना
30 जून पूर्व पश्चिम

आषाढ शुक्ल पक्ष

2 जुलाई पूर्व विना

3 जुलाई पूर्वोतर
5 जुलाई पूर्व दक्षिण
7-12 शां से
6 जुलाई उतर विना
7 जुलाई पूर्व पश्चिम
8 जुलाई पश्चिम विना
2-37 दिन तक
11 जुलाई पूर्व विना
10-42 दिन से
12 जुलाई पूर्व दक्षिण
13 जुलाई उतर विना
14 जुलाई पूर्व पश्चिम

श्रावण कृष्ण पक्ष

16 जुलाई पूर्व विना
18 जुलाई पश्चिमोतर
19 जुलाई पूर्व यात्रा
20 जुलाई पूर्व पश्चिम
21 जुलाई पूर्व पश्चिम
22 जुलाई पूर्वोतर
23 जुलाई पूर्व विना
26 जुलाई पूर्व दक्षिण
5-51 दिन से
27 जुलाई उतर विना
28 जुलाई पूर्व पश्चिम
7-56 प्रातः तक
29 जुलाई पश्चिम विना
7-54 प्रातः तक
30 जुलाई पूर्व विना

श्रावण शुक्ल पक्ष

2 अगस्त पूर्व दक्षिण
3 अगस्त उतर विना
4 अगस्त पूर्व पश्चिम
7 अगस्त पूर्वोतर
4-14 दिन से
8 अगस्त पूर्व विना
9 अगस्त पूर्व दक्षिण
10 अगस्त उतर विना
11 अगस्त पूर्व पश्चिम
12 अगस्त पश्चि विना
13 अगस्त पूर्व विना

भाद्र कृष्ण पक्ष

14 अगस्त पूर्वोतर
15 अगस्त पश्चिमोतर
18 अगस्त पूर्व पश्चिम
19 अगस्त पश्चि यात्रा
20 अगस्त पूर्व विना
9 बजे दिन तक
22 अगस्त पूर्व विना
2-18 दिन से
23 अगस्त पूर्व दक्षिण
24 अगस्त उतर विना
5-17 दिन तक
25 अगस्त पूर्व पश्चिम
5-35 दिन से
26 अगस्त पश्चिम विना
27 अगस्त पूर्व विना
3-49 दन तक
29 अगस्त पूर्व विना
11-27 दिन से

भाद्र शुक्ल पक्ष

30 अगस्त पूर्व दक्षिण
31 अगस्त उतर विना
4 सितम्बर पूर्वोतर
5 सितम्बर पूर्व विना

6 सितम्बर पूर्व दक्षिण
7 सितम्बर उत्तर विना
8 सितम्बर पूर्व पश्चिम
9 सितम्बर पश्चिम विना
10 सितम्बर पश्चिमोतर
11 सितम्बर पूर्वोतर
12 सितम्बर पश्चिमोतर

आश्विन कृष्ण पक्ष

13 सितम्बर पूर्व यात्रा
14 सितम्बर पूर्व पश्चिम
15 सितम्बर पूर्व पश्चिम
19 सितम्बर पूर्व विना
20 सितम्बर पूर्व दक्षिण
22 सितम्बर पूर्व पश्चिम
23 सितम्बर पश्चि विना
26 सितम्बर पूर्व विना
27 सितम्बर पूर्व दक्षिण

आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सितम्बर उतर विना
1-37 दिन तक
1 अक्टूबर पूर्व विना
2 अक्टूबर पूर्वोतर
3 अक्टूबर पूर्व विना
4 अक्अूबर पूर्व दक्षिण
5 अक्टूबर उतर विना
6 अक्टूबर पूर्व पश्चिम
7 अक्टूबर पश्चिम विना
8 अक्टूबर पश्चिमोतर
9 अक्टूबर पूर्वोतर
10 अक्टूबर पश्चिमोतर
12 अक्टूबर पूर्व पश्चिम

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर पूर्व पश्चिम
18 अक्टूबर पूर्व दक्षिण
8-28 दिन तक
19 अक्टूबर उतर विना
9-58 दिन से
20 अक्टूबर पूर्व पश्चिम
21 अक्टूबर पश्चिम विना
10-47 दिन तक
23 अक्टूबर पूर्वोतर
24 अक्टूबर पूर्व विना

कार्तिक शुक्ल पक्ष

28 अक्टूबर पश्चिम विना
3-59 दिन से
29 अक्टूबर पूर्व विना
30 अक्टूबर पूर्वोतर
31 अक्टूबर पूर्व विना
1 नवम्बर पूर्व दक्षिण
2 नवम्बर उतर विना
3 नवम्बर पूर्व पश्चिम
4 नवम्बर पूर्वोतर
5 नवम्बर पश्चिमोतर
6 नवम्बर पूर्वोतर
7 नवम्बर पश्चिमोतर
8 नवम्बर पूर्व यात्रा
9 नवम्बर उतर यात्रा

मार्ग कृष्ण पक्ष

12 नवम्बर पूर्व विना
9-41 दिन से
14 नवम्बर पूर्व विना
2-9 दिन तक
17 नवम्बर पूर्व पश्चिम

5-18 दिन से
20 नवम्बर पूर्वोतर
21 नवम्बर पूर्व विना
22 नवम्बर पूर्व दक्षिण
11-8 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

27 नवम्बर पूर्वोतर
28 नवम्बर पूर्व यात्रा
29 नवम्बर पूर्व दक्षिण
30 नवम्बर उतर विना
1 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
2 दिसम्बर पूर्वोतर
3 दिसम्बर पश्चिमोतर
5 दिसम्बर पश्चिमोतर
6 दिसम्बर पूर्व दक्षिण
7 दिसम्बर उतर विना

10-58 दिन तक
9 दिसम्बर पश्चिम विना
4-20 दिन से

पौष कृष्ण पक्ष

11 दिसम्बर पूर्वोतर
13 दिसम्बर पूर्व दक्षिण
14 दिसम्बर उतर विना
17 दिसमबर पूर्व विना
18 दिसम्बर पूर्वोतर
19 दिसम्बर पूर्व विना
22 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
1-11 दिन से
23 दिसम्बर पश्चिम विना
24 दिसम्बर पूर्व विना

पौष शुक्ल पक्ष

25 दिसम्बर पूवोतर
26 दिसम्बर पूर्व विना
27 दिसम्बर पूर्व दक्षिण
28 दिसम्बर उतर विना
29 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
30 दिसम्बर पूर्वोतर
31 दिसम्बर पश्चिमोतर
1 जनवरी पूर्वोतर
2 जनवरी पश्चिमोतर
3 जनवरी पूर्व दक्षिण
6 जनवरी पश्चिम विना
7 जनवरी पूर्व विना
9 जनवरी पूर्व विना

माघ कृष्ण पक्ष

10 जनवरी पूर्व दक्षिण
14 जनवरी पूर्व विना
19 जनवरी पूर्व पश्चिम
20 जनवरी पश्चिम विना
21 जनवरी पूर्व विना
22 जनवरी पूर्वोतर
23 जनवरी पूर्व विना

माघ शुक्ल पक्ष

24 जनवरी पूर्व दक्षिण
25 जनवरी पूर्व पश्चिम
26 जनवरी पूर्व पश्चिम
27 जनवरी पूर्वोतर
28 जनवरी पश्चिमोतर
29 जनवरी पूर्वोतर
30 जनवरी पूर्व विना
2 फरवरी पूर्व पश्चिम
8-48 दिन से
3 फरवरी पश्चिम विना
4 फरवरी पूर्व विना

12-53 दिन तक

5 फरवरी पूर्वोतर

1-53 दिन से

6 फरवरी पूर्व विना

7 फरवरी पूर्व दक्षिण

1-47 दिन तक

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

9 फरवरी पूर्व पश्चिम

11-29 दिन से

10 फरवरी पश्चिम विना

11 फरवरी पूर्व विना

15 फरवरी उतर विना

16 फरवरी पूर्व पश्चिम

17 फरवरी पश्चिम विना

18 फरवरी पूर्व विना

19 फरवरी पूर्वोतर

20 फरवरी पूर्व विना

21 फरवरी पूर्व यात्रा

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

22 फरवरी पूर्व पश्चिम

23 फरवरी पूर्व पश्चिम

24 फरवरी पूर्वोतर

25 फरवरी पश्चिमोतर

26 फरवरी पूर्वोतर

27 फरवरी पूर्व विना

29 फरवरी उतर विना

5-5 दिन से

1 मार्च पूर्व पश्चिम

2 मार्च पश्चिम विना

4 मार्च पूर्वोतर

5 मार्च पूर्व विना

8 मार्च पूर्व पश्चिम

चैत्र कृष्ण पक्ष

9 मार्च पश्चिम विना

15 मार्च पूर्व पश्चिम

16 मार्च पश्चिम विना

17 मार्च पूर्व विना

18 मार्च पूर्वोतर

19 मार्च पूर्व विना

20 मार्च पूर्व यात्रा

21 मार्च पूर्व पश्चिम

22 मार्च पूर्व पश्चिम

राशि के अनुसार यज्ञोपवीत मुहूर्त

मेष सिंह धनु

5 मई	(गु)
6 मई	(गु)
9 मई	(चं)
13 मई	
19 मई	(चं)
22 मई	
3 जून	
12 जून	
20 जून	
7 जुलाई	
10 जुलाई	
11 जुलाई	(चं)
18 जुलाई	(सू)
6 अक्टूबर	
9 अक्टूबर	
13 अक्टूबर	

4 नवम्बर	
7 नवम्बर	(चं)
14 नवम्बर	
30 नवम्बर	(सू)
1 दिसम्बर	(सू)
25 जनवरी	
26 जनवरी	
30 जनवरी	
2 फरवरी	
3 फरवरी	
24 फरवरी	(चं)
4 मार्च	
5 मार्च	(चं)

वृष कन्या मकर

5 मई	(सू)
6 मई	(सू)
19 मई	(गु)
22 मई	(गु)
3 जून	(गु)
12 जून	(गु)
20 जून	(गु)
7 जुलाई	(गु)
10 जुलाई	(गु)
11 जुलाई	(गु)
18 जुलाई	(गु)
6 अक्टूबर	(गु)
7 अक्टूबर	(गु)
9 अक्टूबर	(गु)
4 नवम्बर	(गु)
7 नवम्बर	(गु)
14 नवम्बर	(गु)
30 नवम्बर	(गु)
1 दिसम्बर	(गु)
5 दिसम्बर	(गु)
25 जनवरी	(गु)
26 जनवरी	(गु)
2 फरवरी	(गु)
3 फरवरी	(गु)
24 फरवरी	(गु)
4 मार्च	(गु)
5 मार्च	(गु)

मिथुन तुला कुम्भ

5 मई	(चं)
6 मई	(चं)
9 मई	
13 मई	(सू)
19 मई	(सू)
3 जून	(सू)
12 जून	(सू)
20 जून	(चं)
7 जुलाई	(चं)
10 जुलाई	
11 जुलाई	
18 जुलाई	
9 अक्टूबर	(सू)
13 अक्टूबर	(सू)
4 नवम्बर	
7 नवम्बर	
14 नवम्बर	
30 नवम्बर	(चं)
1 दिसम्बर	(चं)
5 दिसम्बर	
25 जनवरी	(सू)
26 जनवरी	(सू)

- 30 जनवरी (सू)
- 24 फरवरी
- 4 मार्च
- 5 मार्च

कर्कट वृश्चिक मीन

- 5 मई
- 6 मई
- 9 मई
- 13 मई
- 19 मई
- 22 मई
- 3 जून (चं)
- 12 जून (चं)
- 20 जून (सू)
- 7 जुलाई (सू)
- 11 जुलाई (सू)
- 6 अक्टूबर
- 7 अक्टूबर
- 9 अक्टूबर (चं)
- 13 अक्टूबर
- 7 नवम्बर (सू)
- 30 नवम्बर
- 1 दिसम्बर (चं)
- 5 दिसम्बर
- 25 जनवरी (चं)
- 26 जनवरी (चं)
- 30 जनवरी
- 2 फरवरी
- 3 फरवरी
- 24 फरवरी (सू)
- 5 मार्च (सू)

राशि के अनुसार विवाह मुहूर्त 2011 के लिये

मेष सिंह धनु

- 5 मई (गु)
- 6 मई (गु)
- 11 मई
- 13 मई
- 16 मई
- 18 मई (चं)
- 21 मई
- 22 मई
- 23 मई
- 28 मई (चं)
- 29 मई
- 30 मई
- 3 जून
- 8 जून
- 9 जून
- 10 जून
- 11 जून
- 12 जून
- 18 जून
- 19 जून
- 20 जून
- 24 जून (चं)
- 25 जून
- 26 जून
- 29 जून
- 30 जून
- 4 जुलाई

6 जुलाई		29 अक्टूबर	(चं)	1 दिसम्बर	(सू)	8 फरवरी	
7 जुलाई		30 अक्टूबर		9 दिसम्बर	(सू)	9 फरवरी	
8 जुलाई		31 अक्टूबर		11 दिसम्बर	(सू)	11 फरवरी	
9 जुलाई		2 नवम्बर		16 जनवरी		16 फरवरी	
10 जुलाई		3 नवम्बर		18 जनवरी	(चं)	17 फरवरी	
11 जुलाई	(चं)	4 नवम्बर		19 जनवरी	(चं)	19 फरवरी	
18 जुलाई	(सू)	6 नवम्बर	(चं)	20 जनवरी	(चं)	20 फरवरी	
23 जुलाई	(सू)	7 नवम्बर	(चं)	21 जनवरी		23 फरवरी	(चं)
3 अक्टूबर		9 नवम्बर		23 जनवरी		24 फरवरी	(चं)
5 अक्टूबर		12 नवम्बर		25 जनवरी		25 फरवरी	(चं)
6 अक्टूबर		14 नवम्बर		27 जनवरी	(चं)	29 फरवरी	
7 अक्टूबर		20 नवम्बर	(सू)	28 जनवरी	(चं)	1 मार्च	
12 अक्टूबर		21 नवम्बर	(सू)	29 जनवरी		2 मार्च	
13 अक्टूबर		23 नवम्बर	(सू)	30 जनवरी		7 मार्च	
22 अक्टूबर		27 नवम्बर	(सू)	2 फरवरी		**वृष कन्या मकर**	
24 अक्टूबर		28 नवम्बर	(सू)	3 फरवरी			
28 अक्टूबर	(चं)	30 नवम्बर	(सू)	4 फरवरी		5 मई	(सू)

6 मई	(सू)	30 जून	(गु)	2 नवम्बर	(गु)	18 जनवरी	(गु)
16 मई	(गु)	4 जुलाई	(गु)	3 नवम्बर	(गु)	19 जनवरी	(गु)
18 मई	(गु)	7 जुलाई	(गु)	4 नवम्बर	(गु)	23 जनवरी	(गु)
21 मई	(गु)	8 जुलाई	(गु)	6 नवम्बर	(गु)	25 जनवरी	(गु)
23 मई	(गु)	9 जुलाई	(गु)	7 नवम्बर	(गु)	27 जनवरी	(गु)
28 मई	(गु)	10 जुलाई	(गु)	12 नवम्बर	(गु)	28 जनवरी	(गु)
3 जून		11 जुलाई	(गु)	14 नवम्बर	(गु)	2 फरवरी	(गु)
9 जून	(गु)	18 जुलाई	(गु)	20 नवम्बर	(गु)	3 फरवरी	(गु)
10 जून	(गु)	21 जुलाई	(गु)	21 नवम्बर	(गु)	4 फरवरी	(गु)
11 जून	(गु)	22 जुलाई	(गु)	23 नवम्बर	(गु)	11 फरवरी	(गु)
12 जून	(गु)	5 अक्टूबर	(गु)	30 नवम्बर	(गु)	19 फरवरी	(गु)
18 जून	(गु)	6 अक्टूबर	(गु)	1 दिसम्बर	(गु)	20 फरवरी	(गु)
19 जून	(गु)	7 अक्टूबर	(गु)	3 दिसम्बर		23 फरवरी	(गु)
20 जून	(गु)	12 अक्टूबर	(गु)	5 दिसम्बर	(गु)	24 फरवरी	(गु)
24 जून	(गु)	24 अक्टूबर	(गु)	9 दिसम्बर	(गु)	25 फरवरी	(गु)
25 जून	(गु)	28 अक्टूबर	(गु)	11 दिसम्बर	(गु)	29 फरवरी	(गु)
29 जून	(गु)	29 अक्टूबर	(गु)	16 जनवरी	(गु)	1 मार्च	(गु)

2 मार्च (गु)

मिथुन तुला कुम्भ

5 मई (चं)
6 मई
11 मई
13 मई
16 मई (सू)
18 मई (सू)
28 मई (सू)
29 मई (सू)
30 मई (सू)
3 जून (सू)
8 जून (सू)
11 जून (सू)
12 जून (सू)
18 जून (चं)
19 जून (चं)
20 जून
24 जून
25 जून
26 जून
29 जून (चं)
30 जून
4 जुलाई
6 जुलाई
7 जुलाई
8 जुलाई (चं)
9 जुलाई
10 जुलाई
11 जुलाई
18 जुलाई
21 जुलाई
23 जुलाई
3 अक्टूबर (सू)
7 अक्टूबर
12 अक्टूबर (सू)
13 अक्टूबर (सू)
22 अक्टूबर
24 अक्टूबर
28 अक्टूबर
29 अक्टूबर
30 अक्टूबर
31 अक्टूबर
2 नवम्बर (चं)
3 नवम्बर
4 नवम्बर
6 नवम्बर
7 नवम्बर
9 नवम्बर
12 नवम्बर (चं)
14 नवम्बर
20 नवम्बर (चं)
21 नवम्बर (चं)
23 नवम्बर
27 नवम्ब
28 नवम्बर
30 नवम्बर (चं)
1 दिसम्बर
3 दिसम्बर
5 दिसम्बर
9 दिसम्बर (चं)
11 दिसम्बर
16 जनवरी (सू)
18 जनवरी (सू)
19 जनवरी (सू)
20 जनवरी
21 जनवरी (सू)

25 जनवरी (सू)
27 जनवरी (सू)
28 जनवरी (सू)
29 जनवरी (सू)
30 जनवरी (सू)
4 फरवरी (सू)
8 फरवरी (सू)
9 फरवरी (सू)
16 फरवरी
19 फरवरी (चं)
20 फरवरी (चं)
23 फरवरी
24 फरवरी
25 फरवरी
29 फरवरी (चं)
1 मार्च
2 मार्च
7 मार्च

कर्कट वृश्चिक मीन

5 मई
6 मई
11 मई
13 मई
16 मई (चं)
18 मई
21 मई
22 मई
23 मई
28 मई
29 मई
30 मई
3 जून (चं)
8 जून
9 जून
10 जून
11 जून
12 जून (चं)
18 जून (सू)
19 जून (सू)
20 जून
24 जून (सू)
25 जून (सू)
26 जून (सू)
29 जून (सू)
4 जुलाई (सू)
6 जुलाई (सू)
7 जुलाई (सू)
8 जुलाई (सू)
11 जुलाई (सू)
18 जुलाई (चं)
21 जुलाई
22 जुलाई
23 जुलाई
3 अक्टूबर
5 अक्टूबर
6 अक्टूबर
7 अक्टूबर
12 अक्टूबर
13 अक्टूबर
22 अक्टूबर (सू)
24 अक्टूबर (सू)
28 अक्टूबर (सू)
29 अक्टूबर (सू)
30 अक्टूबर (सू)
2 नवम्बर (सू)
3 नवम्बर (सू)
6 नवम्बर (सू)

7 नवम्बर (सू)
9 नवम्बर (सू)
12 नवम्बर (सू)
20 नवम्बर
21 नवम्बर
23 नवम्बर (चं)
27 नवम्बर
28 नवम्बर
30 नवम्बर
1 दिसम्बर (चं)
3 दिसम्बर
5 दिसम्बर
9 दिसम्बर
11 दिसम्बर (चं)
16 जनवरी (चं)
18 जनवरी
19 जनवरी
20 जनवरी
21 जनवरी
23 जनवरी
25 जनवरी (चं)
27 जनवरी
28 जनवरी
29 जनवरी
30 जनवरी
2 फरवरी
3 फरवरी
4 फरवरी (चं)
8 फरवरी
9 फरवरी
11 फरवरी
16 फरवरी (सू)
17 फरवरी (सू)
19 फरवरी (सू)
20 फरवरी (सू)
23 फरवरी (सू)
24 फरवरी (सू)
25 फरवरी (सू)
29 फरवरी (सू)
7 मार्च (सू)

राशि के अनुसार प्रवेश मुहूर्त

मेष सिंह धनु

5 मई
6 मई
13 मई
3 जून
20 जून
6 जुलाई
7 जुलाई
7 अक्टूबर
8 अक्टूबर
12 नवम्बर
1 दिसम्बर
25 जनवरी
26 जनवरी
2 फरवरी
3 फरवरी
4 फरवरी

वृष कन्या मकर

5 मई
6 मई
9 मई
13 मई
18 मई
3 जून
6 जून
20 जून
7 जुलाई
11 जुलाई
7 अक्टूबर
8 अक्टूबर
12 नवम्बर
1 दिसम्बर
5 दिसम्बर
25 जनवरी
26 जनवरी
28 जनवरी
2 फरवरी
3 फरवरी
4 फरवरी
24 फरवरी
5 मार्च

मिथुन तुला कुम्भ

- 9 मई
- 13 मई
- 18 मई
- 3 जून
- 6 जून
- 20 जून
- 6 जुलाई
- 11 जुलाई
- 8 अक्टूबर
- 1 दिसम्बर
- 5 दिसम्बर
- 25 जनवरी
- 26 जनवरी
- 28 जनवरी
- 4 फरवरी
- 24 फरवरी
- 5 मार्च

कर्कट वृश्चिक मीन

- 5 मई
- 6 मई
- 9 मई
- 13 मई
- 18 मई
- 6 जून
- 20 जून
- 6 जुलाई
- 7 जुलाई
- 11 जुलाई
- 7 अक्टूबर
- 12 नवम्बर
- 5 दिसम्बर
- 28 जनवरी
- 2 फरवरी
- 3 फरवरी
- 24 फरवरी
- 5 मार्च

शङ्कु प्रतिष्ठा

मेष सिंह धन

- 5 मई
- 6 मई
- 23 मई
- 2 नवम्बर
- 12 नवम्बर
- 30 नवम्बर
- 25 जनवरी
- 26 जनवरी
- 10 फरवरी

वृष कन्या मकर

- 5 मई
- 6 मई
- 9 मई
- 18 मई
- 23 मई
- 6 जून
- 28 अक्टूबर
- 2 नवम्बर
- 12 नवम्बर
- 17 नवम्बर
- 30 नवम्बर
- 25 जनवरी
- 26 जनवरी
- 28 जनवरी
- 10 फरवरी
- 24 फरवरी

मिथुन तुला कुम्भ

- 9 मई
- 18 मई
- 6 जून
- 28 अक्टूबर
- 17 नवम्बर
- 25 जनवरी
- 26 जनवरी
- 28 जनवरी
- 10 फरवरी
- 24 फरवरी

कर्कट वृश्चिक मीन

- 5 मई
- 6 मई
- 9 मई
- 23 मई
- 6 जून
- 2 नवम्बर
- 12 नवम्बर
- 17 नवम्बर
- 10 फरवरी
- 24 फरवरी

अन्तिम संस्कार विधि

यह संस्कारों की कतार में 24वां तथा मनुष्य जीवन का अन्तिम संस्कार है। गीता में लिखा हैः-

जातस्य हि ध्रुवं मृत्यु-र्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मात्-अपरि-हार्येऽर्थे न त्वं शोचितम्-अर्हसि।।

अर्थात्:-जन्म लेने वाले की निश्चय से मृत्यु और मरने वाले की निश्चय से जन्म होता है उदय होने वाले सूर्य का अस्त होना निश्चित है जन्म के साथ मृत्यु जुड़ी हुई है, मनुष्य मरने के लिये ही जन्म लेता है युग बदले अनेकों परिवर्तन हुये और संसार में नित्य परिवर्तन होते रहे हैं और होते रहेंगे परन्तु यह नियम न बदला न बदलेगा कि जन्म के पश्चात् मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् जन्म होता है दिन और रात की भान्ति जन्म और मृत्यु का चक्र चलता है। कौन कैसे और क्यों जन्म लेता और मरता है यह एक रहस्य है परन्तु इतना जानना ज़रूरी है कि मृत्यु अटल है उसके लिये शोक करना निष्फल है।

एक हिन्दू के लिये जैसे जातकर्म, नामकर्ण, चूडाकर्म आदि संस्कार वेद विधि अनुसार किये जाते हैं ऐसे ही अन्तिम संस्कार भी यज्ञ के रूप में किया जाता है इस यज्ञ में पूर्णाहुति के रूप में पंच भौतिक शरीर को पर्ण किया जाता है यह अन्तिम संस्कार रूपी यज्ञ

किस का कहां और कब होगा किसी को मालूम नहीं है।

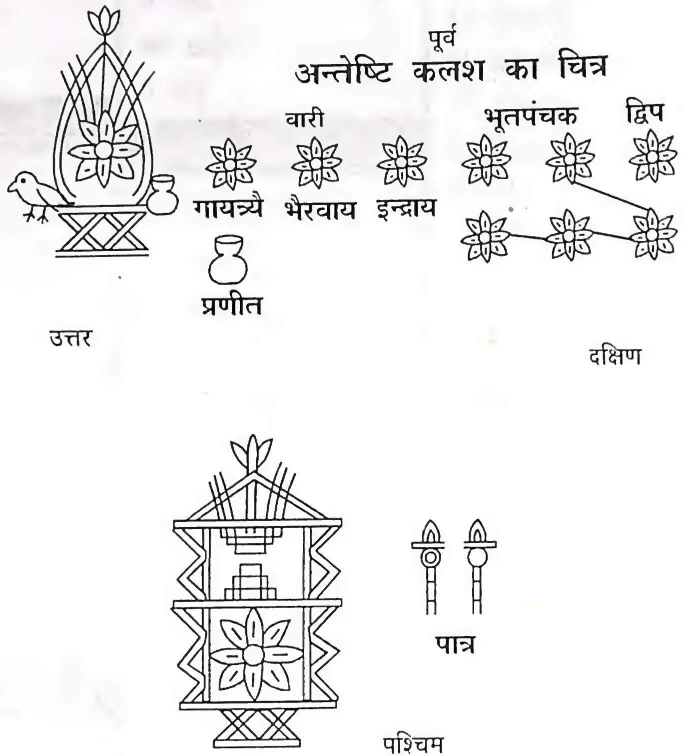

अन्तिम संस्कार की सामग्री

—सफेद लट्ठा लगभग 10 मीटर, सुई धागा, छटांग भर रुई, पुलहोर (न मिलने पर) ऊन अथवा सूत का मोज़ा, शहद 1 तोला, केसर रती भर, घी आधा किलो (असली) धूप, अखरोट 15, यज्ञोपवीत 1, चोंग छोटे 10 न मिलने पर (डोने) दूध दही पाव-पाव भर, जव का आटा आधा किलो, जव दाना आधा किलो, वारी बड़ी 1 अद्द, टाकू पर्वे 5 अद्द, कतरू अथवा बड़ा टाकू, टोकरी बड़ी 1 अद्द, ब्रिय मेव शीरीन् आदि लगभग 1 किलो, सिन्दूर 1 तोला, नारीवन 5 बन्दी, दर्भ के विष्टर 2 अद्द, पवित्र 2 अदद, लकड़ी लगभग 10 मन 4 (सौ किलो।)

कनटोपे पर उल्टा गायत्री मन्त्र लिखें-

ॐ त्-या दचो प्रनः योयोधिहिमधी स्यवदे र्गोभ ण्यं रेर्वतुवि त्सर्त स्वः वर्भु भू ॐ।

अन्त्यदान विधि

मनुष्य के मरणसमुख होने पर अन्त्यदान करना आवश्यक है, अन्त्यदान के लिये यथाशक्ति चालव वस्त्र धन आदि एकत्रित करके अन्त्यदान करने वाले मरणो—न्मुख मनुष्य के दायें हाथ में तिल पानी देकर पढ़ें—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि- वर्धनम् उवारुकम्-इव बन्धानात्-मृत्योर्मुखीय मामृतात् ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्-माम्- अनुस्मरन् यः प्रयाति त्यजन् देहं, स याति परमां गतिम्।। तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य-महीना

पक्ष वार का नाम लेकर पढ़ें—

आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पाप निवारणार्थं विष्णु प्रीत्यर्थ-अन्नं फलं दक्षिणां वस्त्रादि ददानि ददानि ददानि पढ़कर सभी एकत्र किये वस्त्रों पर छींटे देकर—किसी दरिद्र नारायण को श्रद्धा से दीजिये।

अन्तिम संस्कार के विषय में कुछ जानकारी

गुरुजी न मिलने पर आप यह संस्कार खुद भी कर सकते है। जब भी आप समझेंगे कि मनुष्य के प्राण कण्ट पर आये हैं तो मनुष्य को चारपाई अथवा बिस्तरे से उठाकर पृथ्वी पर उतारें, पृथ्वी लेपन कर के दर्भ अथवा घास बिछाकर थोड़ा सा तिल फैंके तथा मृतक को दक्षिण की ओर सिर रख कर उस पर रखें। सिर के नज़दीक ही जलता हुआ दीपक (चोंग) उत्तर की ओर मुंह करके रखें। जब तक क्रिया कर्म का कार्य आरम्भ नहीं होगा तब तक गीता पाठ अवश्य करते रहें या गीता का कैस्ट चलाये। किच्न को साफ करके एक पाव जव के आटे के चुचवरू (रोटी) पाव भर आलू चूर्मा तथा एक किलो चावल का बत्ता बनाये। अपने बेड़े (आंगन) में किसी जगह लेपन करें तथा अन्दर मृतक के सरहाने जलाया हुआ द्वीप लीपन की हुई जगह

पर रखें, धूप जला कर रखें तथा चित्र में बनाये हुये ब्रह्म कलश, भूत पंचक के चित्र जव के आटे से बनाये ब्रह्म कलश क अषृदल पर एक द्वीप में पानी, अखरोट तथा दो दर्भ के तिनके रखें, कलश के नैऋति कोण के पास एक टाकू में दभ के दो तिनके, जल, डाल कर रखें। इस पात्र को प्रणीत पात्र कहते हैं गायत्री अष्टदल तथा अस्त्र अश्टदल पर एक एक दीप रखें दीप में पानी तथा अखरोट रखे भैरव पर वारी रखे। भूतपंचकों पर पांचदीप, पानी, दर्भ के दो दो तिनके डाल कर रखें, जव आटे के तीन पिंड बना कर किसी टाकू में रखे, किसी मिट्टी के बर्तन में थोड़ी सी लकडियां जला कर रखें। अब ब्रह्म कलश के सामने बैठ कर जलते हुये दीप-धूप को नमस्कार करते हुये पढ़ें।

ॐ कारो यस्य मूलं, क्रम-पद-जठरं, छन्द विस्तीर्ण-शाखा, ऋक्-पत्रं, साम-पुष्पं, यजुर्-उचित फलं, स्यात्- अथर्वा-प्रतिष्ठा यज्ञ-छाया, सुश्वेतैर्- द्विजगण-मधुपैर्- गीयते- यस्य नित्यं, शक्तिः सन्ध्या, त्रिकालं दुरित-भय-हरः, पातु नो वेद वृक्षः।

भद्रं पश्येम, प्रचरेम, भद्रं, भद्रं वदेम, श्रृणु याम भद्रं, तन्नो मित्रो वरुणो मां हन्ताम्-आदितिः सिन्धुः पृथिवी उत-द्यौः। ॐ तत्-विष्णोः परमं पदं, सदा पश्यन्ति सूर्यः दिवीव-चक्षुर-आततम्, तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णो-र्यत्- परमं पदम।

गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़ें:- **ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।**

भूतपंचकों के कलश को केवल अर्घ चढ़ाते हुये पढें, **द्रष्ट्रे नमः, उपद्रष्ट्रे नमः-अनु-द्रष्टे नमः ख्यात्रेनमः, उपख्यात्रे नमः। जाताय नमः, जनिष्य-मानाय नमः, भूताय नमः, भविष्यते नमः, चक्षुषे नमः, श्रोत्राय नमः, मनसे नमः, वाचे नमः, ब्रह्मणे नमः, भ्रान्ताय नमः, तपसे नमः।**

प्रणीतपात्र (जो ब्रह्मकलश के दायें तरफ रखा है) में केसर का तिलक और (आगे लिखे तीन मन्त्रों से तीन फूल डालते हुए पढ़ें:-**(1) संव्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः (2) संय्या वः, प्रियास्तन्वः, संप्रिया, हृदयानि वः (3) आत्मा वो अस्तु संप्रियः, संप्रियास्तन्वो मम।**

कलश के पूर्व के तरफ अर्घ सहित तिलक फैंकते हुये पढ़ें:–

ये देवाः पुरः सदोग्नि नेत्रा, रक्षोहणस्ते-नः पान्तु, तेनोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।

उत्तर की ओर. अर्घतिलक फैंकते हुये पढ़ें:–

ये देवा उत्तरात् सदो मित्रा-वरुण-नेत्रा, रक्षोहणस्ते नः पान्तु, ते नो वन्तु, तेभ्यः स्वाहा।

ऊपर की ओर अर्घ फैंकते हुये पढ़ें:–

ये देवा उपरिषदः सोमनेत्रा अव-स्वदन्तो रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नो वन्तु तेभ्यः स्वाहा।

अपने आप को तिलक लगायें।

कलश को दो दर्भकाण्ड डालते हुये पढ़ें:–

ध्रुवा-द्यौर्-ध्रुवा-पृथिवी, ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वम्-इदं जगत् ध्रुवो राजा- विशम्-असि।

कलश को तिलक लगाते हुये पढ़ेंः-

अग्निम्-ईडे, पुरोहितं यज्ञस्य देवम् ऋत्विजम्। होतारं रत्न-धातमम्। यजमान अपने हृदय को जल से छिड़कते हुये पढ़ें—**तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव, समानानां भवति मानः शंस्योर्-अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।**

अनामिका ऊँगली पर पवित्र धारण करते हुये पढ़ेः- **वसोः पवित्रम्-असि शतधारं वसूनां पवित्रम्-असि, सहस्र-धारम् अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः।**

अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़ें—**परमात्मने पुरुषोत्तमाय पञ्चभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।**

दीपक को तिलक अर्घ पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें— **स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरा-पहः। प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।**

धूप को तिलक आदि चढ़ाते हुये पढ़ें—**वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्तमः। आधारः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः।**

सूर्य भगवान् को तिलक आदि लगाते हुये पढ़ें—**नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्षदेवाय भस्कराय नमो नमः, समालभनं, गन्धो नमः अर्घोनमः पुष्पं नमः**

अब यज्ञोपवीत बाँया रखकर सारी क्रिया करें—किसी पात्र में अर्घ सहित जल दायें हाथ के ऊपर से डालते हुये पढ़ें—**यत्रास्ति माता न पिता, न बन्धु, भ्रातापि नो-यत्र सुहृत्-जनश्च। न ज्ञायते यत्रदिनं न रात्रिस्तत्रा-त्म दीपं शरणं प्रपद्ये, आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै दीप धूप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु, दीपो नमः धूपो नमः तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्, तिथौ-अद्य।**

(मृतक का नाम लेकर पितः-**अमुक- गोत्रोत्पन्नः अन्त्यक्रिया निमित्तं एष ते दीप, एष ते धूपः।**

टाकू में तिलक जल आदि डालते हुये पढ़ें— **पाद्यार्थम्-उदकं नमः, शन्नो देवीर्- अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर्-अभिस्रवन्तु नः, भगवन्तः पाद्यम्-पाद्यम्।**

टाकू में रखे हुये विष्टर या दर्भ के दो तिनकों से कलश को छिड़कते हुये पढेंः-**महागणपत्यादिभ्यः कलशमण्डल-देवताभ्यः अस्त्राय गायत्र्यै भैरवाय; महादंष्ट्राय, करालाय, मदोत्कटाय, श्मशानाधिपतये भैरवाय वटुकादिभ्यः पाद्यं नमः।**

पाद्य शेष निर्माल्य में छोड़ कर फिर से टाकू में नया जल अर्ध्य के लिये डालते हुये पढ़ें—**शन्नो देवीर्- अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये शंयोर्- अभिस्रवन्तुनः, भगवन्तः अर्ध्यम्- अर्ध्यम्। कलशमण्डल देवता, अस्त्र, गायत्रि, भैरव, महादंष्ट्र, कराल, मदोत्कट, श्मशानाधिपते, भैरव, वटुका-दयः इदं वो अर्ध्यं नमः—तिलकं नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः वासो नमः। आचमनीयं नमः**

खोसू (कटोरी) से तर्पण करते हुए पढ़ें–

ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्यतावत्-तिथौ-अद्य-मास-तिथि-वार का नाम लेकर **(पितुः अथवा मातुः)** (जिसका देहान्त हुआ हो) **अन्त्य-क्रिया- निमित्तं तिलाम्भसा-स्वर्ग-प्राप्तिर्-अस्तु, परा-तृप्तिर्- अस्तु-एताः कलश देवताः श्मशान-भैरवाः प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।**

अन्त में सब कलशों को फूल चढ़ाते हुये पढ़े–**ॐ तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूर्यः दिवीव चक्षुर-आततम्-तत् विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धिते विष्णो-र्यत्-परमं पदम्।**

टाकू में जो लकडी जल रही है उस में तिल तथा चावल के दाने डालते हुये पढ़ेः-।

पात्रं तिलाऽक्षतै-र्मिश्रं, कुसुमोदक- विष्टरैः अग्ने श्चे-शान दिक्-भागे प्रणीतम्- अभिधीयते। प्रणीतं नै-र्ऋते स्थाप्यं स विष्णु-नात्र संशयः।

अग्नि के सामने, आप अपने दायें तरफ एक चोंग रखिये, इस चोंग में जल विष्टर तिल डाल के रखें, यह "प्रणीत पात्र" कहलाता है, इस में तीन फूल डालते हुये पढ़ें– **सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः, संसृष्टास्तन्वा सन्तु वः, संसृष्टः प्राणो अस्तु वः, संय्या वः, प्रियास्तन्वः, संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो अअस्तु संप्रियः, संप्रियास्तन्वो मम।।**

प्रणीतपात्र में से नव बार जल से अग्नि को छिड़कते हुये पढ़ें–**ऋतन्त्वा सत्येन-अग्निं परिसमूहामि (1) सत्यं त्वर्तेन परिसमूहामि (2) ऋत- सत्याभ्यांत्वा परिसमूहामि (3) ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि (4) सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि। (5) ऋत सत्याभ्यांत्वा पर्युक्षामि (6) ऋतंत्वा सत्येन परिषिञ्चामि (7) सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि (8) ऋत सत्याभ्यां त्वा परिषिञ्चामि** (9) ज्वाला लिंग के ऊपर रखे हुय नारकतरू के पूर्व की ओर पाँच दर्भ के तिनके, दक्षिण की ओर तीन, उत्तर की ओर तीन, पश्चित की ओर पाँच तिनके फैंक कर अपने बायें तरफ एक टाकू में एक चुचवरू उसके ऊपर थोड़ा सा जव रखें फिर स्रुच यानी दो मुख वाले लकड़ी के वुमुनहुर के ऊपर विष्टर रखें और हाथ में उठा कर पढ़ें–**मातुः** अथवा **पितुः अन्त्य क्रिया निमित्तं**, स्रुच दर्भ के विष्टर सहित उल्टा चुचवुरू पर डाल कर पढ़ें–**अग्नये वायवे सूर्याय ब्रह्मणे प्रजापतये कूष्मर्षेभ्य जुष्टं निर्वपामि।**

स्रुच (दूसरे वुमुन हुरु) से घी की आहुतियाँ अग्नि में डालते हुए चुचवरू के टुकड़े वनाकर उसी के साथ डालते हुए पढ़ें–(1) **आयुष्यः प्राणं सन्तनु स्वाहा प्राणात् व्यानं सन्तनु स्वाहा (2) व्यानात् अपानं सन्तनु स्वाहा (3) अपानात् चक्षुः सन्तनु स्वाहा (4) चक्षुषः श्रोत्रं सन्तनु स्वाहा (5) श्रोत्रात् वाचं सन्तनु स्वाहा (6) वाचः आत्मानं सन्तनु स्वाहा (7) आत्मानः पृथिवीं-सन्तनु स्वाहा (8) पृथिव्या अन्तरिक्षं सन्तनु स्वाहा (9) अन्तरिक्षात् दिवं सन्तुनु स्वाहा (10) दिवः स्वः सन्तनु स्वाहा।**

ऋतुतिथ्यादिभ्यः देवताभ्यः स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा, अभिजिते स्वाहा—चुचवरु के छोटे-छोटे टुकड़े भी घी करे आहुति के साथ डालते जायें—**वामे गायत्र्यै स्वाहा, मध्ये भैरवाय स्वाहा, दक्षिणे अस्त्राय स्वाहा, भूतपंचकेभ्यः स्वाहा, ॐ भूर्लोकाय स्वाहा, ॐ भुवोलोकाय स्वाहा, ॐ स्वर्लोकाय स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्व-लोकाय स्वाहा।**

(आज्य पात्र का घी आदि सभी अग्नि में फैंके) अखरोट जो घी पात्र में होगा वह पूर्णाहति का मंत्र पढ़ते हुये स्रुच से अग्नि में डालिये पूर्णाहुतिः डालते हुये पढ़ें—**आश्रावितं अत्याश्रावितं-वषट्कृतं- अवषट-कृतम्- अननूक्तं-अत्यनूक्तं च। यज्ञे-तिरिक्तं कर्मणो यत्-च हीनम्-अग्नि- स्तानि प्रविदन् एतु कल्पयन् स्वाहा** (नोट) अग्नि का अछिद्र मत कीजिये—जब कि यही अग्नि आप ने श्मशान में भी साथ लेना है।

कलशपूजा तथा अग्नि पूजा समाप्त करके वुज़ में लेपन करवा कर मृतक को लायें, पहने हुये कपड़े उतारिये पुरुष हो या स्त्री स्नानपट लगाइये, गर्म पानी से स्नान कीजिये, गुह्यस्थान आदि को मिट्टी तथा पानी से साफ कीजिये, स्नान करके कर्ता आँगन के पूजा स्थान से अस्त्रकलश, भैरवकलश, गायत्री कलश के चोंगू और वारी का जल लाकर गर्म पानी के स्नान के पानी में मिलायें उस जल में दूध, दही, घी सर्षप, तिल डालें, शव को बिठा कर रखिये, लिखित 16 ऋचाओं से आहिस्ता-आहिस्ता बाल्टी में से कर्ता पानी डालता जाये—

(1) ॐ सहस्त्र-शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् स भूमिं विष्वतो वृत्वा-ऽत्यतिष्ठत्- दशागुलम्।। (2) पुरुष एवेदं सर्वं, यत्-भूतं यत् च भव्यम्। उतामृत-त्वस्ये शानो-यत्-अन्नेनाति रोहति।। (3) एतावानस्य महिमातो, ज्यायान् च पुरुषः। पादोस्य विश्वा-त्रिपाद् -अस्या मृतं दिवि।। (4) त्रिपाद्-ऊर्ध्वं उदैत्-पूरुषः, पादो स्येहा भवत् पुनः। ततो विश्वं व्याक्रामत्-सशना-नशने- अभिः।। (5) तस्मात् विराड्-अजायत, विराजो अधि पुरुषः। सजातो-अत्यरिच्यत, पश्चात् भूमिम्- अथो पुरः।। (6) यत्-पुरुषेण हविषा देवा यज्ञम्-अतन्वत। वसन्तो अस्यासीद्-आज्यं ग्रीष्म-इध्मः शरत्-हविः।। (7) तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन् पुरुषं जातम्-अग्रतः। तेन देवा-अयजन्त-साध्या ऋषयश्च ये।। (8) तस्मात-यज्ञात्-सर्वहुतः, संभृतं पृषत्- आज्यम्। पशून्-तान्-चक्रे, वायव्यान्- आरण्यान्-ग्राम्यान् च ये।। (9) तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः, ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजु-स्तस्मात्- अजायत। (10) तस्मात्-अश्वा अजायन्त, ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे, तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः।। (11) यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधा-व्यकल्पयन्। मुखं किम्-अस्य, कौ बाहू, का ऊरू पादा उच्यते।। (12) ब्राह्मणोस्य मुखम्-आसीत्-राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यत्-वैश्यः, पदभ्यां शूद्रो अजायत।। (13) चन्द्रमः मनसो जातः, चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखात्-इन्द्रश्चाग्निश्च, प्राणात् वायुर्- अजायत।। (14) नाभ्या- आसीत्-अन्तरिक्षं, शीर्ष्णो द्योः समवर्तत। पदभ्यां

भूमि दिशः श्रोत्रात् तथा लोकान्- अकल्पय-न्।। (15) सप्तास्या सन्-परिधयः- त्रिसप्त समिधः कृताः। देवा-यत् यज्ञम्- तन्वाना-आबन्धन्-पुरुषं पशुम्। (16) यज्ञेन यज्ञम्-अयजन्त देवा-स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।

मृतक को स्नान करने वाले सामूहिक रूप से उच्चारण करते रहें–"**ॐ श्रीमत् नारायण नारायण नारायण**" अथवा **क्षन्तव्यो मेपराधः–शिव शिव शिव भो। श्री महादेव-शम्भो!** मृतक, पुरुष हो या स्त्री नया स्नानपट बाँधिये, पुरुष को पावों से नया यज्ञोपवीत डालकर बायें बाजू मे रखिये, पुराना यज्ञोपवीत सिर से निकाले, नव द्वारों (नाक के दो नथने दो कान, दो आँखें, दो गुह्यस्थान और मुख को छोटे-छोटे धूप के गोलों से बन्द करके, अनामिका ऊँगली में पवित्र डाले सिन्दूर का तिलक और नारीवन बांधिये, यदि मृतक महिला हो तो नारीवन भी बायें कान में फंसा के रखें, मृतक के मुँह में एक सिक्का डालिये, लट्ठे तथा राम-राम पट्ट आदि से मृतक के शरीर को ओढ कर सिर पर लट्ठे का कनटोपा जिस पर केसर से उल्टा गायत्री मन्त्र लिखा हो रखें यानी मृतक का सिर जिस कपड़े से ढाँपा जाये उस पर उल्टा गायत्री मन्त्र अवश्य लिखें, मृतक के पाँवों के तलों को थोड़ा सा शहद मले तथा घास का पुलहोर पाँवों में डालें पुलहोर में थोड़ी सी रुई भी रखिये (पुलहोर न मिलने पर ऊन या सूत का मोजा डालें-क्रिया करने वाला (यानी कर्ता) बाहिर पूजा स्थल पर निकल कर, चुचवरू के शेष बचे टुकड़े नदुर चूर्मा अथवा आलू चुर्मा भूत पंचकों के चोंग में डालें, अर्थी (यानी विमान) जो नजार ने पहले ही बना कर रखा होगा अथवा पहले का बना बनाया ही प्रयोग में लाना हो उसको अच्छी प्रकार से धोकर उस पर दर्भ बिछा कर उस पर तिल छिड़कें शव को उसी अर्थी पर रखिये, ऊपर सफेद चादर अथवा शाल आदि डालना हो डालिये, अर्थी को फूल की मालाओं से सजायें अर्थी को आंगन में निकाल कर शव का सिर दक्षिण की तरफ होना चाहिये; अर्थी के ऊपर फूल मेवा आदि फैंकिये, अब अर्थी के लिये रत्नदीप धूप कर्पूर जलायें सभी खड़े होकर सामूहिक रूप से आरती करें-

जय नारायण जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे
उद्धर मां सुरेश-विनाशन्-पतितोहं संसारे
घोरं हर मम नरकरिपो! केशव-कल्मष-भारम्
मां-अनुकम्पय दीनं अनाथं,कुरुभव-सागर-पारम्।।
जय जय देव, जया सुर सूदन, जय केशव, जय विष्णो
जय लक्ष्मी मुख-कमल-मधुव्रत, जय-दश-कन्धर-जिष्णो।

घोरं हर मम नरक रिपो! केशव..........यद्यपि सकलं अहं कलयामि हरे, नहि किमपि-सत्वम्
तदपि न मुञ्चति मामिदं-अच्युत पुत्र कलत्र ममत्वं
घोरं हर ममनरकरिपो! केशव-कल्मषभारं............

पुनर्-अपि जननं पुनर्-अपि मरणं, पुनर्-अपि गर्भनिवासम्
सोदुम्-अलं पुनर्-अस्मिन् माधव-माम्-उद्धर-निजदासम्।

घोरं हर मम नरकरिपो...............

त्वं जननी जनकः प्रभुर्-अच्युत-त्वं सुहृत् कुलमित्रम्
त्वं शरणं शरणागत वत्सल, त्वं-भव-जलधि-वहित्रम्।

घोरं हर मम नरकरिपो................

जनक-सुतापति-चरण-परायण शंकर- मुनिवर गीतं
धारय मनसि कृष्ण पुरुषोत्तम, वारय संसृति भीतिम

घोरं हर मम नरकरिपो........

समयानुसार ''जय जगदीश'' भी पढ़े (शंख बजायें) अब खड़े होकर क्रिया करने वाला पढ़े-

तत् सत् ब्रह्म-अद्य तावत्-मास-पक्ष- तिथि-वार तथा नाम गोत्र सहित लेकर-**पितुः** अथवा **मातुः स्वर्ग-प्राप्त्यर्थं धूपं रत्नदीपं कर्पूरं अर्पयामि नमः** (नोटः-यहाँ ब्रह्मकलश का अच्छिद्र न करें) जबकि कलश का चोंग आदि आपने श्मशान पर भी लेना है। कलश के पास तीन जव के आटे के पिंडों में से **एक पिंड हाथ में उठा कर पढ़े-तत् सत् ब्रह्म-वार- तिथि**-मृतक का नाम गोत्र सहित पढ़कर अर्थी पर शव के सिर के तरफ रखते हुये पढ़ें-पिता अथवा माता. ......**अन्त्य क्रिया निमित्तं एष ते बोधः पिण्डः प्रेतः तृप्यतु।**

अब सारा सामग्री कलश का चोंग अखरोट सहित, अस्त्र कलश चोंग 'गायत्री कलश' अखरोट सहित 'भैरव कलश की वारी' सब सामग्री इकठठी करके किसी टोकरी में उठा कर श्मशान पर ले जाइये कलश आदि जो आंगन में डाला है अर्थी निकलने के पश्चात् सब समेट कर निर्माल्य में डालें, पृथ्वी का लेपन कीजिये-चोंग भी श्मशान पर साथ लीजिये, वुज़ में भी एक चोंग जला कर रखें उसके ऊपर कोई टोकरी आदि रखें श्मशान से वापस आने पर उस को बुजायें, क्रिया करने वाला सबसे पहले शव के विमान को अपने दाहिने कन्धे से उठाये उसके पश्चात् दूसरे लोग विमान को उठा कर श्मशान की ओर चले, चलते-चलते रास्ते में सभी साथी सामूहिक रूप से उच्चारण करें-'**क्षन्तव्यो मेपराधः शिव शिव शिव भो! श्री महादेव शम्भो।** श्मशान पर पहुँचने से पहले आधे रास्ते में अर्थी को नीचे करके शव का सिर दक्षिण की ओर रख कर मृतक को सूर्य दर्शन करवा कर जव का दूसरा पिण्ड हाथ में लेकर पढ़ें-**तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वासरे पिता अथवा** जो कोई भी हो **अन्त्य क्रिया निमित्तं एष ते मकरध्वजः पिण्डः प्रेतः तृप्यतु**, फिर से अर्थी उठा कर श्मशान पर पहुँच कर अर्थी को नीचे रखकर जव का तीसरा पिण्ड रखते हुये पढ़ें-**तत् सत् ब्रह्म पितः अन्त्य क्रिया निमित्तं एष ते यम-दूतपिण्डः प्रेतः तृप्यतु।**

श्मशान भूमि की क्रिया

चित्र के अनुसार ब्रह्मकलश-ज्वालालिंग चितावास का नकशा जव के आटे से बनाये, घर से ब्रह्मकलश का अखरोट सहित जो चोंग लाया है उसमें पानी विष्ठर डालकर ब्रह्मकलश के अष्टदल पर रखें-कलश पूजा घर में हम कर चुके हैं यहाँ धूप दीप जला कर चोंग को थोड़ा सा तिलक आदि लगा कर हाथ में फूल उठा कर कलश पर डालें।

प्राणायाम करके अग्नि को प्रणीत पात्र के जल से नव बार छिड़कते हुये पढ़ें-

ऋतन्त्वा सत्येन परिसमूह्यामि, सत्यं त्वर्तेन परषिसमूह्यामि ऋत सत्या भ्यान्तवा परिसमूह्यामि। ऋतन्त्वा सत्येन पर्युक्षामि सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि, ऋतसत्याभ्यान्त्वा पर्युक्षामि, ऋतन्त्वा सत्येन परिषञ्चामि सत्यंत्वर्तेन परिषिञ्चामि।

वुमुनहुरु से अग्नि में एक एक मन्त्र से आहुति डालें-**आयुषः प्राणं सन्तनु स्वाहा, प्राणात्- व्यानं, सन्तनु-स्वाहा, व्यानानात्-अपानं सन्तनु स्वाहा, अपानात्-चक्षुः सन्तनु स्वाहा, चक्षुषः श्रोत्रं सन्तनु स्वाहा, श्रोत्रात् वाचं सन्तनु स्वाहा, वाचं आत्मानं सन्तनु स्वाहा, आत्मानः पृथिवीं सन्तनु स्वाहा, पृथिव्या अन्तरिक्ष सन्तनु स्वाहा, अन्तरिक्षात्-दिवं सन्तनु-स्वाहा, दिवः स्वः सन्तनु, स्वाहा। त्वं सोमा सि सत्पति, त्वं राजोतवृत्रहा त्वं भद्रो असि क्रतुः स्वाहा।** ऋतु तिथ्यादि दे दें (अन्यथा पढ़ें-**ऋतु तिथ्यादिभ्यः देवताभ्यः स्वाहा-ब्रह्मणेस्वाहा अभिजिते स्वाहा**-चुचवरु के छोटे टुकड़े भी घी के आहुति के साथ डालते जायें सभी जनता जो मृतक के साथ आई हो यजमान (क्रिया करने वाले) के पास आकर पंक्तिबद्ध रूप में बैठें जनता अलग-अलग टोलियों में बातें न करें बल्कि यदि आप मृतक के अन्तरात्मा की शान्ति के इच्छुक हैं तो निम्न वेदमन्त्रों से आहुति डालते समय श्रद्धा से सामूहिक रूप में "**स्वाहा**" का उच्चारण करें—यह आहति स्त्रुव (एक मुख वाले) वमुन हुर से (कर्ता) यजमान ही डालें—

(1) ॐ आयुर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा

(2) ॐ प्राणो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(3) ॐ अपानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(4) ॐ ब्यानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(5) ॐ उदानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा।

पात्र का घी आदि सभी अग्नि में डालें-अब मृतक के शरीर को पूर्णाहुति के लिये चित्तावासकलश पर तिलक, फूल, अर्घ, लकड़ी की छोटी-छोटी 9 खूँटियाँ जव का आटा, बत्ता का पात्र, लेपन के पास लाकर रखें, अब पहले चितावास की पूजा करनी है, चित्तावास के चित्र में लिखी रेखायें जव के आटे से बनायें-इस को माया जाल भी कहते हैं, इन रेखाओं के अनुसार खूँटियाँ अपने स्थान पर दबायें (यह माया जाल धागे से भी बनाया जाता है)

टाकू में जल तथा विष्टर (दर्भ के दो तिनके) डालकर तीन फूल डालते हुये पढ़े-

संवः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः (1) संसृष्टा, तन्वः सन्तु वः, संसृष्टः प्राणो अस्तु वः (2) संयावः प्रिया स्तन्वः, संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियास्तन्वो मम (3) दर्भ के दो तिनके हाथ में पकड़कर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ें-**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितु-र्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचादयात्।** फिर से पढ़ें-**तत्-सत्-ब्रह्म अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य-मासस्य पक्षस्य तिथौ- वारान्वितायां- ईशाने गगनयुतस्य ईशानस्य आग्नेये-सुकेतु- युतस्य-रुद्रस्य, नैऋते सजलयुतस्य विष्णोः, वायवे वायु-युतस्य, आत्मनो पितुः अन्त्यक्रिया निमित्तं अर्चा अहं करष्ये ॐ कुरुष्व।** दर्भ के दो दो तिनके ईशानी कोण से डालते हुये पढें :- **चित्तावास देवतानां इदं-आसनं नमः, पाद्यं नमः, अर्घ्यं नमः, गन्धो नमः। अर्धो नमः पुष्पं नमः, वासो नमः। अपोशानं नमः, आचमनीयं नमः।**

इसी चितावास कलश के ऊपर लकड़ी की चिता तैयार करके मृतक को, उस पर रखें, सिर दक्षिण की ओर मुँह पूर्व की ओर रखें। लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़ों के सिरों पर रुई लगा कर घी में डुबो कर रखें, उनको उल्मुक कहते हैं, क्रिया करने वाले को चाहिये एक उल्मुक को टाकू या कतरु में से जलाकर जलते हुये उल्मुक से मृतक के सिर के तरफ से जलाना आरम्भ करें

फिर आरम्भ करें फिर दूसरे साथी उल्मकों से चिता को हर तरफ से जलायें, अब घी का पात्र उमनहुर घी में डाला हुआ अखरोट आदि डालते हुये पढ़ें। **आकूत्यै त्वास्वाहा ईशाने, कामाये त्वा स्वाहा इति वायवे, समृद्धयै त्वा स्वाहा इति नैऋते**-चिता के तीन प्रदक्षिणा करके सभी उल्मक चिता के पूर्व दक्षिण कोण में फैंके, सभी कर्ता तथा अन्यान्य साथी हाथ में यव तथा कुछ फूल उठा कर खड़े रहें और यह पूर्णाहुति का मन्त्र पढ़ें–**आश्रावितं अत्याश्रावितं वषट्कृतम्- अवषट् कृतम्- अननूक्तं अत्यनूक्तं च, यज्ञोतिरिक्तं कर्मणो यत्-च-हीनम्- अग्निस्तानि प्रविदन्-एतु कल्पयन् स्वाहा**-फिर से यव आदि की आहुति उठाकर-कर्ता पढ़े-**अस्मत् त्वम्- अभिजातासि, त्वत्-अहं जायते पुनः**- मृतक का नाम लेकर-**आसौ पिता अथवा माता स्वर्गाय लोकाय स्वाहा** (आहुति डालिये) अब अन्त में मृतक के सिर के नीचे जलता हुआ दीपक तथ आग का टोकू रखिये, जब चिता अच्छी प्रकार से प्रज्ज्वलित हो जये, मृतक का शरीर जब लगभग जल चुका हो-तो कुल्हाड़ी मृतक के सिर के तरफ जमीन में कुछ दबा कर रखें-फिर कर्ता को चाहिये-अस्त्र कलश की वारी को उठा कर उस में नया जल डालिये, चिता के तीन प्रदक्षिणा करते हुये वारी का जल आहिस्ता-आहिस्ता फैंकते हुये अखरी तीसरे प्रदक्षिणा के अन्त में कुल्हाड़ी या पत्थर पर वारी तोड़ दीजिए-उपस्थान करते हुये पढें-**नमो महिम्ने उत चक्षुषे महतां पिता उरु तत् गृणीमः हुतो याहि पथिभि-देवयानैर्- औषधीषु प्रतिष्ठा शरीरैः**

कर्ता दर्भ के दो तिनके हाथ में लेकर पढ़े-**पितुः अथवा मातुः अन्त्य क्रिया निमित्तं चितावास देवतानां पूजनम्-अछिद्रम्-अछिद्रम्- अस्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः** सभी श्मशान पर आई हुई जनता चित्ता की ओर हाथ जोड़ के रहें-सभी सामुहिक रूप में पढ़े– **ॐ यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु य औषधीषुयो वनस्पतिषु यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तुदेवाः।।**

सभी परिजंनों का जहाँ पानी सुलभ हो नहा कर मुख शोद्धन आदि करके बायाँ यज्ञोपवीत रख कर थोड़ा सा तिल हाथ में लेकर तर्पण करना चाहिये तर्पण करते हुये पढे - **ॐ तत् सत् ब्रह्म मास-पक्ष-तिथि-वार का नाम लेकर-पितुः अथवा मातुः अन्त्य क्रिया निमित्तं एतत् तिलोदकम्-एतत् ते उदक-तर्पणम्।**

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

कलश

कलश दो प्रकार के हैंः ब्रह्म कलश और इन्द्र कलश, ब्रह्म कलश का प्रयोग शिवरात्रि, श्राद्ध इत्यादि पर्व पर किया जाता है या जहां पर नव ग्रहों का प्रयोग न हो। यज्ञोपवीत, विवाह, देवगौण, जातकर्म तथा यज्ञ पर इन्द्रकलश का प्रयोग किया जाता है। कलश चूने से बनाने का विधान है। यहां पर मैं जनता की सुविधा के लिये इन कलशों को चित्रित करता हूँ।

ब्रह्म कलश

इन्द्र कलश

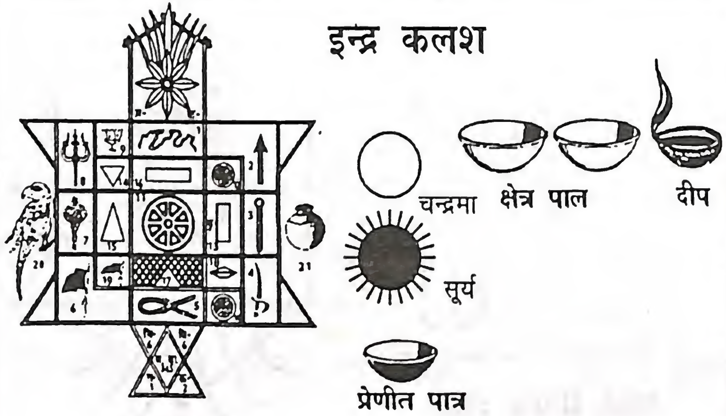

1. इन्द्राय वज्र हस्ताय
2. अग्नये शक्ति हस्ताय
3. यमाय दण्ड हस्ताय
4. नैऋतिये खडगहस्ताय
5. वरुणाय पाश हस्ताय
6. वायवे ध्वज हस्ताय
7. कुवेराय गदा हस्ताय

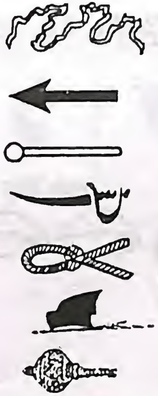

8. ईशानाय त्रिशूल हस्ताय

9. ब्राह्मणे पद्म हस्ताय

10. विष्णवे चक्र हस्ताय

11. अगन्यादित्याभ्यां

12. वरण चन्द्रमुभ्यां

13. कुमार भौमाभ्यां

14. विष्णु बुधाभ्यां

15. इन्द्रा बृहस्पतिभ्यां

16. सरस्वति शुक्राभ्यां

17. प्रजापति शनिश्चराभ्यां

18. गणपति राहुभ्यां

19. रुद्र केतुभ्यां

20. ब्रह्म द्रुवाभ्यां

21. अनन्त अगस्ताभ्यां

देव गौण

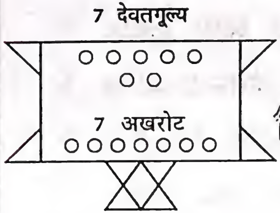

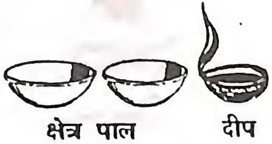

अग्नि कुण्ड के मध्य में

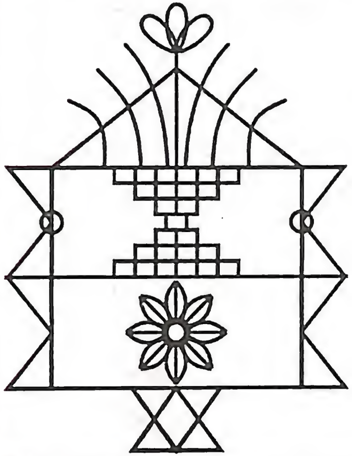

देव गौण पर चौकी के नीचे वाला चित्र

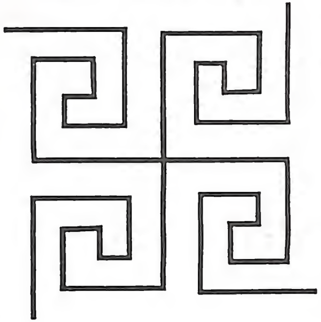

शारदा पढ़िये

शारदा लिपि काश्मीरी पण्डितों की प्राचीन संस्कृति का चिन्ह है, हमारे पूर्वजों ने अथाह प्रयत्न से इस सुन्दर लिपि को बनाया है, काश्मीर के प्राचीन शैव, तान्त्रिक ऐतिहासिक तथा कर्मकाण्ड सम्बन्धित सभी ग्रंथ इसी शारदा लिपि में लिखे गये परन्तु आजकल यह लिपि मृत प्राय हो चुकी है इस का पुनरुद्धार करना प्रत्येक काश्मीरी पण्डित का कर्तव्य है। हम ने शारदा लिपि का प्राईमर बनाया है आप को हमारे कार्यालय से मुफ्त मिल सकता है।

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः		

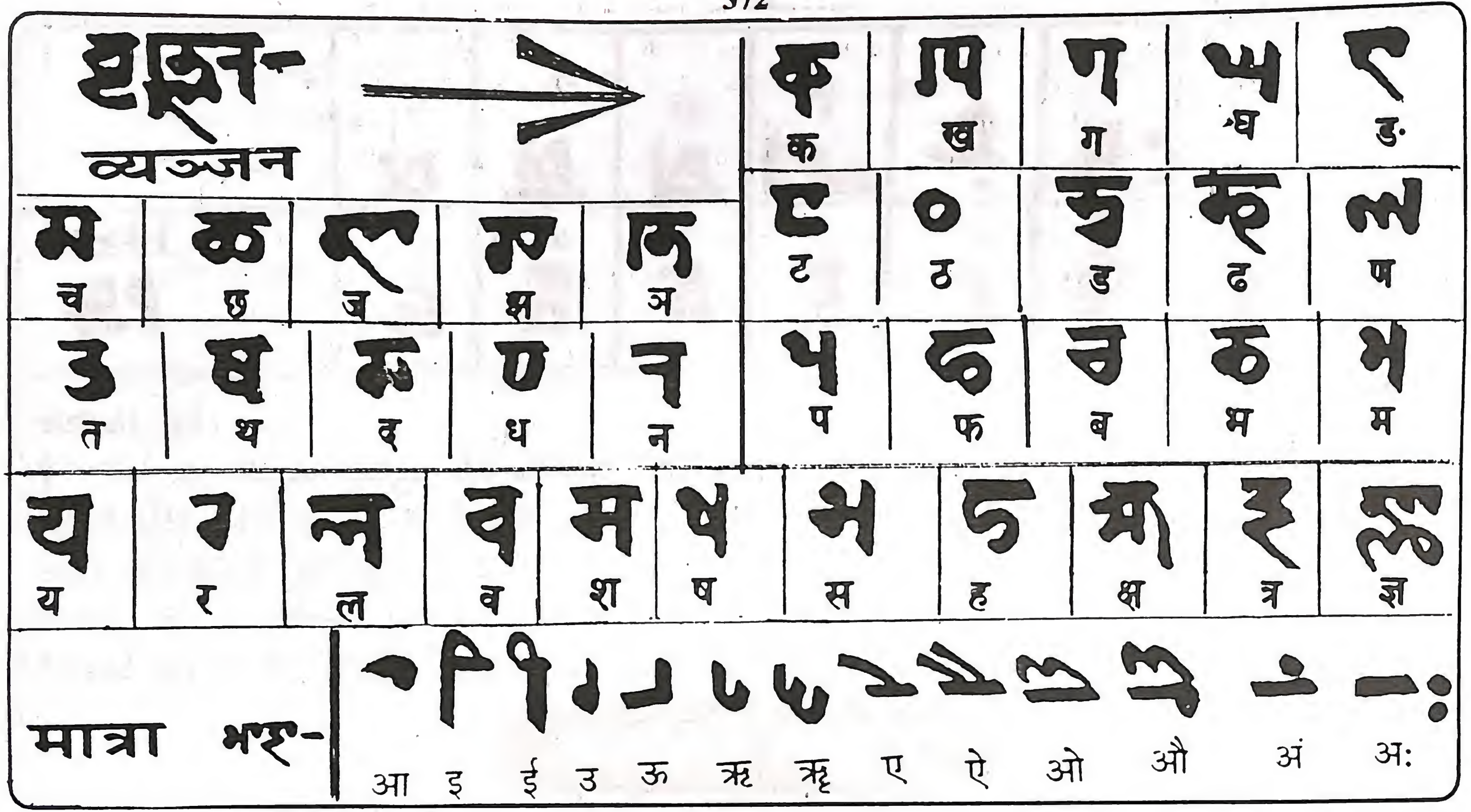
व्यञ्जन
क
ख
ग
घ
ङ
च
छ
ज
झ
ञ
ट
ठ
ड
ढ
ण
त
थ
द
ध
न
प
फ
ब
भ
म
य
र
ल
व
श
ष
स
ह
क्ष
त्र
ज्ञ
मात्रा
आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ अं अ:

यज्ञोपवीत - Get together कुशल होम

हमारे संस्कारों में यज्ञोपवीत संस्कार एक महत्वपूर्ण संस्कार है इस संस्कार को हम बड़ी श्रद्धा तथा निष्ठा के साथ मनाते थे क्योंकि इस संस्कार से हमारे जीवन की नींव डलती है परन्तु विस्थापन के पश्चात् इस संस्कार में ऐसा परिवर्तन आया कि यह संस्कार हमारे समाज पर एक बोज जैसा बनं गया, कारण यह कि हमने स्वयम ही इस धार्मिक तथा वैदिक संस्कार को एक नया रूप दिया। आजकल इस संस्कार में धार्मिक निष्ठा बहुत कम रह गई है तथा शेष रीति रिवाज बड गये हैं जो हमारे समाज के लिये खतरे की घण्टी है आजकल कई महानुभाव इस संस्कार से मुंह मोंडने लगे हैं। हमारा कर्तव्य है कि इस संस्कार को धार्मिक तथा वैदिक सीमा तक ही सीमित रखें तथा निष्ठा पूर्वक इस संस्कार को करते रहें क्योंकि यह आप के बच्चों के उज्वल भविष्य का एक विशेष संस्कार है।

आज कल यज्ञोपवीत संस्कार के साथ Get together का प्रचलन भी आरम्भ हुआ है जो धर्म शास्त्र के विरुद्ध है धर्म शास्त्र में लिखा है:

देव यज्ञे पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणि
तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीव धातनम्।।

अर्थः देव यज्ञ, पितृश्राद्ध, तथ किसी मंगलीक कार्य पर जो मांस का प्रयोग अथवा किसी प्रकार की हिंसा करता है उसको नरक मिलता है।

यज्ञोपवीत भी एक प्रकार का वैदिक यज्ञ है इस शुभ संस्कार के निमित पहले अथवा बाद में किसी प्रकार की हिंसा करना धर्म शास्त्र के विरुद्ध है।

1. यज्ञोपवीत को एक धार्मिक संस्कार तक ही सीमित रखें।
2. यज्ञोपवीत पर किसी प्रकार का स्टाल लगाना धर्म शास्त्र के विरुद्ध है।
3. यज्ञोपवीत की विशेषता समझें तथा अपने बच्चों को भी समझायें।

किसी सत्पुरुष ने कहा भी है:

यज्ञस पत् ब्रोंठ हिंसा करान
ब्राह्मण आसनय वेद परान
बालकस मेखला ज्ञान क्या करे
यस न लोल तस भगवान् क्या करे।

ज़रा ध्यान दें

1. यदि आप शुद्ध तथा सही जन्म पत्री बनवाना चाहते हो
2. यदि आप अपने बच्चों के कुण्डलियों का सही मिलान करवाना चाहते हो
3. यदि आप को अपनी जन्म पत्री दिखानी हो

?तो

इन से सम्पर्क करें

1. भूषण लाल ज्योतिषी
   विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (धार्मिक पुस्तक भण्डार)
   तालाब तिलो (जैन कालोनी के नज़दीक)
   जम्मू फोन : 2555763, 9419119922
2. अवतार कृष्ण ज्योतिषी
   विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (J.K. BOOK SHOP)
   तालाब तिलो, गली नं. 1, जम्मू
   फोन: 2505423, 9419240070
3. अवतार कृष्ण ज्योतिषी
   विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय
   फलेट नं. 10ए, शालीमार गार्डन कॉम्पलेक्स, शालीमार गार्डन, दिल्ली फोन: 9899070805
4. विमर्श ज्योतिषी
   विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय
   चिनार चौक (रूप नगर), जम्मू फोन: 9419103424

OUR PUBLICATIONS FROM

KASHMIRI SAMITI
Kashmir Bhawan Marg Amar Colony,
Lajpat Nagar, IV, New Delhi
Ph. : 26433399, 26465280

Taneja Electricals & Tent House
(PUNJABI & KASHMERI CATERING)
4, Raghunath Mandir, Amar Colony,
Lajpat Nagar New Delhi
Ph. : 26429046

Brahmputra Complex
Shop No. 45, Sec-29, Noida
Ph. : 2453307

Durga Masala Store
131-132, I.N.A. Market, New Delhi - 23
Ph. : 024602813

Krishan Lal Masala Store
271, I.N.A. Market, New Delhi Ph. : 24653227

Raina Store
557, Pocket D, Dilshad Garden, Delhi-95
Ph.: 011-22129518, 9910815500

Rishi General Store
Kashmir Colony, Najab Garh
Ph.: 25024499

Maha Laxmi Store (Masale Waley)
39, INA Market, New Delhi
Ph.: 9811757688, 24633642

Vitasta General Store
Shop No. 5 Phase II
New Palam Vihar, Gurgaon Ph.: 9990904223

Chinar Store
Dwarika Mor, New Delhi
Ph.: 9873456553, 9899667678

~~9720660426~~ 9760426210

376

Raj Store
211, Vepin Garden, New Delhi - 52

K. TRADERS
Om Nagar, Udiwala, Bordi
Ph. : 2504702, 9419123582

Maanav Suvidha Shopee
(Jain masaley Wale)
Opp. Pacca Ghrat Talab Tillo Jammu
Ph. : 2555274 Mob. : 9419833111

Kong Posh Musical Group
104, Phase 1, Purkhoo Camps Jammu
Ph. : 0191-2605427 Mob. : 9419136447

Ram Shyam Genrel Store
Subhash Nagar, Jammu Ph.: 2582917, 2580742

Gupta Stationery Store
City Chowk, Jammu

Kangan Trading Company
Udhewala, Bhori Ph.: 9419130480

Koul Provisional Store
Golpuri, Talab Tillo, Jammu

Vijeshwar Jyotish Karyalya
Talab Tilo, (Near Jain Colony)
Ph.: 2555763, 9419119922

Vijeshwar Jyotish Karyalya
(JK Book Shop)
Talab Tilo, Gali No. 1, Jammu
Ph.: 2505423, 9419240070

Vijeshwar Jyotish Karyalya
Chinor Chowk, Roop Nagar, Jammu
Ph.: 9419103424

- हर काश्मीरी घर में बोलचाल काश्मीरी भाषा में होनी चाहिये।
- काश्मीर को शारदा पीठ कहते हैं अत: शारदालिपि सीखिये।

यत्-चावहा-सार्थम्-असत्कृतोसि
विहारशय्यासन-भोजनेषु।
एकाऽथवा-प्यच्युत तत्समक्षं
तत्-क्षामये-त्वाम्-अहम्-अप्रमेयम्।।

भावार्थ : हे गुरुदेव! विहार शय्या आसन भोजनादि में अकेले अथवा किसी के सामने यदि आप भूल से भी मेरे से अपमानित हुये होंगे उस अपराध के लिये क्षमा मांगता हूँ।

सम्पादक
ओंकार नाथ शास्त्री

संस्थापक
पं. प्रेम नाथ शास्त्री

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग कार्यालय (रजि.)

अजीत कालोनी, गोलगुजराल जम्मू, स्वरदूत : 2555607, 9419133233